ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २४९ म अंक ०१ मई २०१८ (वर्ष ११ मास १२५ अंक २४९)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक दू टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान
विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान
१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११
२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)
२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)
२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२
२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)
२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)
२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)
विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012
2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)
2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह
२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।
2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)
2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)
विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)
२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।
२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।
२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।
२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।
विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)
२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)
२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२
अभिनय- मुख्य अभिनय ,
सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा
श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,
हास्य-अभिनय
सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह
श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर
नृत्य
सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव
श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत
चित्रकला
श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल
संगीत (हारमोनियम)
श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर
संगीत (ढोलक)
श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत
संगीत (रसनचौकी)
श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम
शिल्पी-वस्तुकला
श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज
मूर्ति-मृत्तिका कला
श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित
काष्ठ-कला
श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना
किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति
श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा
विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान
-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३
मुख्य अभिनय-
(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)
हास्य अभिनय-
(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)
शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व.   , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.**   , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री   ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नङेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

कथा-संग्रह

सुभिमानी जिनगी

जगदीश प्रसाद मण्डल

सुभिमानी जिनगी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-65-0

दाम : ₹ 251/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

Subhimani Jingi
Collection of Seed and Short Stories
by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

समर्पण भाव

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन भवै छइ।
तखने मन भवन भव
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी बिचैड़ बिचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचैड़ विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।

कथाक सत्तैर-

केकरा-ले केलौं

मास दिनसँ शीतलहरी चलि रहल अछि। ऐ बेरक शीतलहरी एक दशमलव दू डिग्रीक तापमानमे पहुँच गेल। लोको, मालो-जाल आ जीवो-जन्तुक तापमान केतेक निच्चाँ उतरत से तँ शीतलहरी जानए जे अपना संग आनो-आनकेँ केतेक निच्चाँ उतारलक। ओना, निच्चाँ उतरब तँ मृत्युक कारण छीहे। जहिना ऊपर एक साए आठ डिग्रीक तापमान मृत्युक लक्षण छी, तहिना चौरानबे डिग्रीसँ निच्चाँ उतरब सेहो तँ छीहे। ओना, थर्मामीटर बनने, एक साए आठ डिग्रीक नापकेँ लोक बुझए लगल जे ई मृत्युक तापमान छी, मुदा ई तापमान थर्मामीटर बनला पछातिये आएल से बात नहि, नापक यंत्र पछाइत आएल। पहिने अनुमानित छल, पहिने बेसियो तापमानकेँ लोक कमे कहै छल किए तँ मृत्युक तापमान शेष अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहह।

तिला-संकराँतिसँ एक दिन पहिने घूर लगा कऽ आगि तपैत रही। भिनसुरका समय रहइ, शीतलहरीक पाला सघन रूपमे पसैर अन्हारो केने आ पानिक झीसी जकाँ सेहो झिसिआइत छल। आगू दिससँ आगि तापी तँ पाछू दिस ठंढा जाइत रहए आ पाछू घुमि तापी तँ आगू दिस ठरि कऽ पानि-पानि भऽ जाइत छल। मन कछ-मछ करैत रहए। तहीकाल सिंहेश्वर भाय थरथराइत पहुँचला। लहकल घूर देखते सिंहेश्वरर भाइक देहक कनकनी तँ नहि कमलैन मुदा मनक जरूर कमलैन। अबिते घूर लग बैस बजला-

"किसुन! भोगीलाल भाय अब-तबमे छैथ, देखैले चलह।"

ओना, अपनो बुझल अछि जे भोगीलाल भाय अढ़ाइ-तीन बर्खसँ ओछाइन धेने छैथ। पहिने बुधि विभ्रमित भेलैन जइसँ होशमे कमी एलैन, पछाइत विक्षिप्त जकाँ बजै-भुकैमे भँसियाए लगला। छोट-मोट डॉक्टरी परीक्षण सेहो भेलैन मुदा जेहेन रोग गरसने रहैन तेहेन नइ भेलैन। जइसँ रोग निच्चाँ-मुहेँ नै उतैर ऊपरे-मुहेँ चढ़ैत गेलैन। जेना-जेना रोग शरीरमे बढ़ैत गेलैन तेना-तेना शरीरक क्रिया प्रभावित होइत गेलैन।

सिंहेश्वर भायकेँ कहलयैन-

"भाय, भोगीए भाइक जान टा अब-तबमे छैन तेतबे किए कहै छिऐ। समैये तेहेन बिगैड़ गेल अछि जे सबहक जान अब-तबमे अछि। तखन तँ यएह ने जे भोगीलाल भाय अढ़ाइ-तीन बर्खसँ रोगाएल छैथ तँए ओ बेसी आक्रान्त हेता आ आन-आन शीतलहरीए भरिसँ छैथ तँए कनी कम हेता, सएह ने?"

जखन सिंहेश्वर भाय पहुँचल छला आ ठंढसँ सिरसिराइत छला तखुनका विचार आगि तपला बाद जखन देहक सिरसिरी कमलैन तेकर पछातिक विचारमे मोड़ एलैन। जइसँ बातमे कनेक लोच सेहो आबए लगलैन। ओना, ई बात सभ बुझिते छी जे केकरो कियो प्राण नहियेँ दए सकैए, तखन बँचल प्राणक रक्षा किछु समैक लेल तँ कइये सकैए। सिंहेश्वर भाइक भीतुरका मनमे थोड़ेक दलदली रहबे करैन। बजलौं-

"भाय, जखन जे हेबाक हेतै से हेबे करत। पहिने एक घोंट चाह पीबू।"

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं जे 'एक घोंट चाह पीबू' मुदा लगले मनमे दोसर बात उठि गेल। उठि ई गेल जे शीतलहरी कि कोनो हमरे

आकि सिंहेश्वरे भाय टा ले थोड़े अछि, सभ-ले अछि। परिवारक आनो-आन-ले अछिए। तखन जँ पत्नीकेँ चाह बनबए कहबैन से केहेन हएत। जहिना अपना-ले ठण्ढी अछि तहिना तँ हुनको-ले ने छैन। ओना, पत्नी एतेक अदब तँ रखनहि छैथ जे जँ कहबैन तँ जरूर चाह बनेबे करती। मुदा...। 'मुदा'क माने ई जे एककेँ सुख-ले दोसरकेँ कष्ट देब नीक नहि। लगले मन पाछू उनैट गेल। पाछू उनैटते एकटा विचार मनमे आएल। आएल ई जे जखन चाहक ओरियान परिवारसँ अलग अपनो रखनहि छी तखन पत्नीए-केँ किए कष्ट देबैन। बजलौं-

"भाय, जमाना बदैल गेल!"

'जमाना' सुनिते सिंहेश्वर भाय चौंकला। चौंकते बजला-

"से की, से की किसुन?"

जहिना लहरल आगिमे पानि ढारलासँ एकाएक आगिक लहैर दबि जाइए तहिना जिनगीमे बालपनक क्रिया-कलापक चर्च सेहो सियानीक गरमाएल मनमे पानि ढारिते अछि। बजलौं-

"भाय, अहूँ बड़ बिसराह छी..!"

'बिसराह' सुनिते सिंहेश्वर भाइक मन मानि लेलकैन जे अपनासँ किसुन छबे मासक ने छोट अछि, मुदा साठि बर्खक जिनगी तँ संगे-संग बितैबते आबि रहल छी। जे बिसैर गेलौं ओ अपने मन केना पड़त, तँए किसुन कियो आन थोड़े छी, संग-तुरिये छी, तखन पुछैयेमे कोन हर्ज..! सिंहेश्वर भाय बजला-

"से की बिसैर गेलौं किसुन?"

गड़ देख बजलौं-

"भाय, जखन दुनू भाँइ बैसले छी तखन धड़फड़ीए कथीक अछि। चाहक जोगार घूरे लग करै छी, दुनू गोरे गपो-सप्प करब आ

चाहो बना-बना जेतेक मन फुरत तेतेक पीब। भनसियाक[1] कोन आशा! एक कप पिऔती सएह ने।"

सिंहेश्वर भाय सेहो अपना ऐठाम चाहक जोगार अपनो रखने छैथ। अपन बनौल चाहो आ भोजनो मनोनुकूल होइते अछि। भाय! अपने केहेन लीकरबला चाह पीबै छी से तँ अपने मन ने जानत। पत्नी किए बुझती। तहूमे चाह सनक पेय पदार्थ! कहबो केहेन हएत। अपने मने तँ पत्नियोँ जनिते छैथ जे हार्ड लीकर चाह या तँ पातर पेशाब करौत नइ तँ पेशाबे जरा देत, जइसँ पेशाबे बन्न भऽ जाएत। तहिना जखन अपनो गाढ़ चाह पीबैक मन बनि जाएत तखन चीनीकेँ थोड़े मोजर देबै जे मीठगर चाह भेल कि नहि। मुदा से ओ थोड़े बुझती, ओ तँ सदिखन मीठगर मुँह बना राखए चाहती, जइसँ चीनी चाहमे बेसी देबे करती जे सदिकाल मीठगर गप मुहसँ सुनती...। मुदा सदिकाल जँ पत्नीसँ मीठगरे गप करब तँ तीतगर, नोनगर गप छुटिये जाएत किने। भाय! जिनगी छी किने। जखन दुनू परानी मिलि जिनगी भरिक संगी छी तखन जिनगीक जे तीत-मीठ क्रिया अछि, ओइ सभटाकेँ ने संगे सहैत खाइत-पीबैत जीबैत-मरैत नेने चलब।

चाहक नाओं सुनिते सिंहेश्वर भाय बजला-

"बड़बढ़ियाँ विचार किसुन केलह। भने घूरे लग बैसले छी, घूरेपर चाहो बना लेब आ अहीठाम बैसल दुनू भाँइ मनसँ पीबो करब आ गपो-सप्प करब।"

ओना सिंहेश्वर भाइक मन अपना घरेपर सँ छगाएल छैन तँए विचारमे जोर देलैन। छगाएल ई जे रोगही भौजी–माने सिंहेश्वर भाइक पत्नी–केँ अखन धरि–माने पचपन-साठि बर्खक उमेर धरि–चाह बनबैक इलम नीक जकाँ नइ एलैन अछि। जेना तीमन-तरकारीमे

[1] पत्नी

नोन-मिरचाइ अन्दाजोसँ दए कऽ बना लइ छैथ तेना चाह बनबैक ठेकान नइ छैन। ओना, सिंहेश्वर भाइक चपचपीक दोसरो कारण अछि। जहिना कोनो जीबलाह पुरुख जिनगीक प्रमुखसँ प्रमुख काजकेँ छोड़ि खाइ दुआरे पत्नीकेँ चुल्हिक पाछूमे बैसा अपने भानस करै छैथ तहिना सिंहेश्वरो भायकेँ छैन्हे। मुदा जे छैन से घरे भरिमे छैन से नहि, घरसँ बाहर समाजमे एहेन मानि नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तैसंग समाजिक लोक नहि छैथ सेहो कहब सिंहेश्वर भाइक प्रति गरदैनकट्टी हएत।

गप-सप्पक क्रममे चाहो बनल आ बंगाली दादा जकाँ दू-दू गिलास चाह दुनू गोरे पीबो केलौं। ई डर मनमे किए रहत जे जेठक दुपहरियाक सफर कऽ रहल छी तँए जँ भिनसुरका तोरक अधकिलौआ गिलासक चाहक घानीपर सँ पान साए नम्बर जर्दाक पानक घानी लगा देब तखन कौल्हुक तेल जकाँ पसेना चुबबे करत। मुदा ऐठाम से बात नहि अछि, शीतलहरी-पालाक पलाएल समय अछि, एहेन समयमे सवारी तँ तखने ने सहीसँ सवार कसाएत जखन ओकर मेकप समतूल हएत। दू कप चाह पीला पछाइत मौसमक अनुकूल दुनू भैयारीक भेकम बैलेंस भेल। ओना, सिंहेश्वर भाइक मनसँ भोगीलाल भाइक ऐठाम जाएब, हेरा कऽ गप-सप्पमे बोहिया गेल छेलैन।

चाह पीलाक पछाइत अपना मनमे भोगीलाल भाय नाचए लगला। मनमे उठल भोगी भाय अब-तबमे छैथ। अब-तब भेल-कखन छैथ कखन नहि छैथ। जिनगीक अन्तिम क्षण। तहूमे जखन सिंहेश्वर भाय सुनौलैन तेकर पछातियो केते समय बीत गेल। मन आगू बढ़ल। बढ़िते मनमे विचार उठल जे अपनोकेँ तँ समाजिक लोक बुझिते छी, अढ़ाइ-तीन बर्खसँ भोगीलाल भाय बीमार चलि रहला अछि, तइमे अपने की सभ योगदान देलिऐन। जखन समाजिक लोक बनि समाजमे जीबै छी तखन अपनो ते किछु दायित्वक संग कर्तव्यो

बनिते अछि। कोन मुँह लऽ कऽ देखए जाएब आ देखबए जाएब...।

'देखए जाएब आ देखबए जाएब' मनमे अबिते सौनक मेघ जकाँ विचार हूमरल।

साठिक दशकमे भोगीलाल भाय आयुर्वेदसँ स्नातक केलैन। एक डॉक्टरक रूपमे अपनाकेँ समाजक बीच ठाढ़ करए चाहला। करीब पाँच बर्ख गाम-समाजक बीच डॉक्टरक रूपमे जीवनो बितौलैन। 1962 इस्वीक चुनावमे पंचायितक मुखिया पदक उम्मेदवार भेला। नवयुवक बुझि समाज भोँटो देलकैन, मुखिया बनला। क्रमश: भोगीलाल भाय अपन डॉक्टरी पेशाकेँ कमबैत गेला आ राजनीतिकेँ बढ़बैत गेला। बिनु चुनावेक जहिना सभ मुखिया बनल रहला तहिना भोगी भाय सेहो रहला। किए तँ बीस-पचीस बर्ख तक चुनावे ने भेल।

आइ, करीब अस्सी बर्खक उमेर भोगीलाल भाइक छैन। सम्पन्न परिवार लोको बुझै छैन आ अपनो परिवार बुझिते छैन। मुदा केहेन सम्पन्नता अछि ओ तँ जिनगीए-मे भेटैए। ओना, भोगीलाल भाइक अपनो भैयारी नमगर-चौड़गर रहलैन मुदा भिनौज भेने छोट भइये गेल छैन। मुदा जे छैन, तीन बेटा आ पाँच बेटी तँ अपनो छैन्हे।

आगू बढ़ैसँ पहिने सन्तानक दुनू पक्ष माने बेटा-बेटीक रूपपर थोड़ेक विचार कऽ ली। अपना समाजमे बेटी-जातिक ओहन रूप नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, जहिना माता-पिताक परिवार अपनासँ दूर हटल बुझैए तहिना आब बेटो-जातिमे एहेन विचार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा प्रश्न तँ आगूमे अछिए जे सन्तानकेँ माता-पिताक सेवा करब धर्म छी की नहि? मुदा से की बेटेटा लेल आकि बेटियो लेल।

ओना दिन बहुत ऊपर चढ़ि गेल मुदा सुर्जक धाही नइ उगने शीतलहरीक जबरदस आक्रमण समैयक मुँह-कानकेँ टेँढ़ कइये देने

अछि। जइसँ भिनसुरका समैयक कोन बात जे तहूसँ पहिलुका समय जकाँ अनरोख अखनो बनले अछि। तही बीच रस्ते-रस्ते चलैत लगमे अबिते लबहदवाली भौजी बजली-

"भोगी भैया मरि गेला..!"

'भोगीलाल भैया मरि गेला' सुनि सिंहेश्वर भाय चौंकला। चौंकैत बजला-

"जा! किसुन ई की भेल? आँखि तकैत एक मुँह गपो-सप्प ने भेल!"

ओना, समय दुआरे मन अखनो असकताइते छल मुदा गरदैनमे ढोल तँ बन्हाइये गेल। बजलौं-

"हुनकर विचारमे एते गुण तँ छैन्हे जे जहिना छकट्टी बोली जनै छला तहिना छकट्टी बोल नइ बुझै छला, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।"

परसुका बात सिंहेश्वर भायकेँ मन पड़लैन। बजला-

"किसुन, परसू बेरूपहर जे भोगी भायसँ भेँट करए गेल रही आ गप-सप्प जे भेल तइसँ बुझि पड़ल जे टुटल जिनगीक सनकी रूप पकैड़ लेलकैन, तँए एहेन जिनगीसँ मृत्युए नीक।"

ओना किसुन भाय आ अपने एक्के क्लासक संगी छी, विद्यार्थीए जीवनसँ दुनू गोरे संग रहलौं। अपने समाजक संग परिवारो आ बेकतियोक ओझराएल जाल कहियौ आकि पोखरिक लीढ़-समाढ़, आकि ओकरे घाट कहियौ कि बाट, तेकरे सोझरबै पाछू लगि गेलौं आ सिंहेश्वर भाय अमरलत्ती जकाँ गाछक ऊपरका फुनगीपर देने पसरैत रहला। ओना, दुनू गोरेक बीच कोनो झगड़ा-झंझट कहियो ने भेल, से मिलान सभ दिन रहबे कएल, अखनो अछिए। झगड़ा-झंझट किए होएत, जहिना राजनीति, समाजनीति आ सत्तानीति मुखौटी बनि

मुहेँमे लागल अछि तहिना ने मुखौटिये कारोबार तीनूक हएत। तइले झगड़ा किए आ झंझट किए...। बजलौं-

"सिंहेश्वर भाय, गाममे जखन मैयत[2] भऽ गेल आ अपना सभ बैस कऽ गप-सप्प कऽ रहल छी, एकरा समाज की कहत?"

सिंहेश्वर भाइक विचारक आगू हमर बाते दहा-भँसिया गेल। सिंहेश्वर भाय बजला-

"समाजक आँखिमे की गेजर छै जे नइ देखत, अखनो हुनके देखैले जा रहल छी, रस्तेमे छी, तइ बिच्चेमे मरि गेला, तइमे हमर कोन दोख?"

विचार बदलैत बजलौं-

"भाय, भोगी भाइक उमेर केते भेल हेतैन?"

'उमेर' सुनि सिंहेश्वर भाइक मन फेर उधियेलैन, बजला-

"उमेर की कोनो मरैबला भेल छेलैन, अपना ऐठाम साए बर्खक उमेर ठेकल अछि। तइ बीचक मरब या तँ खिच्चा मरब भेल वा कोशाएल-डम्हाएल भेल, मुदा ओकरा पाकल तँ नहियेँ कहल जाएत, तहूमे सुपक पाकल तँ आरो नइ कहल जाएत।"

सिंहेश्वर भाइक बहकैत विचारकेँ समधानि कऽ पकैड़ बजलौं-

"भाय, तैयो एकटा ठेकान तँ करै पड़त किने? किएक तँ जँ कहियो समाजक डायरी लिखाएत तइमे उमेरोक हिसाब ने हएत जे समाजमे मृत्युक उमेरक की हिसाब अछि। मरबेक उमेरसँ ने जिनगीक उमेर पएब।"

सिहेश्वर भाय भोगी भायसँ अपन बराबरी करैत बजला-

"अखने बिसैर गेलह किसुन, जखन बाले-बोध बिसैर जेबह

[2] मरण

तखन तँ जिनगीए चौपट भऽ जेतह..!"

'जिनगी चौपट भऽ जाएत..!' सुनि देह झनझना गेल। झुनझुनाइत मने पुछलयैन-

"से की भाय?"

सरती हाथ मारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"जहिना बालपनोमे बालपन होइए तहिना अछरोमे अछर तँ होइते अछि। सभसँ पहिने जे 'अ आ' पढ़लह सएह जँ बिसैर जेबह तखन मोटका-मोटका पोथी केना पढ़ि पेबह!"

बजलौं-

"भाय, अखन दुनियाँ जहानक बात छोड़ू, अखन जे समयक समय आगूमे आबि गेल अछि तैपर किछु विचारि लिअ।"

फेर सरती हाथ मारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"आब अखन आगू-मुहेँ नहि बढ़ब, माने भोगी भाय ऐठाम नइ जाइसँ नीक हएत जे अँगना-घरक काज सम्हारि एक्के बेर जाएब आ असमसान घाट होइते घुमि कऽ आएब। तैबीच पत्नीकेँ सेहो ने जानकारी दऽ देब जरूरी अछि जे असमसान होइत आएब।"

पत्नीक नाओं सुनि बजलौं-

"बिनु घरवालीक विचारे जरणो-मरणमे ने जाइ छिऐ?"

नहलापर दहला फेकैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"जँ चेता नइ देबैन जे हम साँझ धरि घुमि कऽ आएब तैबीच अहाँ घरक फल्लाँ-फल्लाँ काज सम्हारि लेब, हम असमसानमे रहब आ ओ घरमे चुल्हि लग बैस कानिते रहती किने। अनके मरबमे ने लोक कनैए। अपना मरबमे थोड़े कानि पौत।"

पाशा बदलैत बजलौं-

"अच्छा छोड़ू, घर-परिवारक गप। जँ भोगी भाइक जन्मकुण्डली लिखित हेतैन तखन तँ सएह पक्का भेल, जँ से नहि हेतैन तखन एकटा जन्मतिथि समाजक डायरीमे तँ कायम करए पड़त किने?"

हमर बातकेँ सूहकारैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"अपना सभ जखन मिडिल स्कूलमे पढ़ैत रही तखन भोगी भाय आयुर्वेद कौलेजमे पढ़ैत रहैथ। अपनो सभ विद्यार्थी रही आ ओहो विद्यार्थीए छला, तँए एक उमेरिये ने सभ भेलौं।"

पुछलयैन-

"तखन तँ ऐगला नम्बर आब अहींक अछि?"

एकाएक सिंहेश्वर भाइक मन बदैल गेलैन। बजला-

"राम-नाम तँ सत् छीहे मुदा से बुझत के! अखन ई सभ छोड़ह।"

सिंहेश्वर भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे फेर सिंहेश्वर भाय भँसिया रहला अछि। बजलौं-

"भाय, भोगी भायकेँ ओना हमहूँ देखैत आएल छिऐन मुदा हुनका ऐठाम आएब-जाएब आ भेँट-घाँटक सम्बन्ध अहाँक बेसी रहल अछि। तँए अहाँ कोन नजरिये भोगी भायकेँ देख रहलयैन हेन, से किछु कहियौ।"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"किसुन, बजैमे भँसिया जाइ छी। बच्चेसँ देखैत एलह जे व्याकरण पढ़ब हमरा कहियो नीक नइ लागल। तँए तूँ प्रश्न पुछह हम जवाब दैत चलै छिअ। तइमे जे कम-बेसी भऽ जाए तँ ओकरा अपवाद बुझि मन हेतह ते मानिहह नइ तँ नइ मानिहह।"

पुछलयैन-

"भाय, प्रश्न केना पुछब से कनी बुझा दिअ।"

सिंहेश्वर भायकेँ गुरुत्वक आभास भेलैन। बजला-

"तूँ ते खेत-पथार आ परिवार छोड़ि सभ किछु बिसैर गेलह। जहिना गुरुजी बच्चामे कहै छेलखुन ने जे समाजक कसौटी भेल समाजक रहन-सहन तहिना बेकतीक सेहो ने भेल...।"

अपना जनैत सिंहेश्वर भाय नीके कहलैन मुदा अपने किछु ने बुझलौं। कहलयैन-

"भाय, पेरासूत जकाँ तेना अहाँ ओझराएल बात कहलौं जे हम बुझबे ने केलौं। अहाँ ने चौक-चौराहा आ हाट-बजार घुमै छी, हम तँ भरि दिन माटि खोधैत रहै छी जइसँ बुधियो ने मटिया गेल अछि।"

दुनू हाथे इशारा करैत सिंहेश्वर भाय बजला-

"देखहक, पहिने तूँ भोगी भाइक उमेरेक चर्च केलह, तँए अन्दाज ई कए लएह जे अपना-सभसँ दस बर्ख बेसी हुनकर उमेर रहल हेतैन।"

पुछलयैन-

"माने?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"सत्तैर-एकहत्तैर बर्ख ते अपनो-सभकेँ ने भेल अछि, ओ अस्सी-एकासी बर्खक भेला।"

'अस्सी-एकासी' सुनि मन मानि गेल। बजलौं-

"हँ, अहिना सोझरा-सोझरा बजियौ।"

सिंहेश्वर भाइक मनमे नव बिसवास जगलैन। बिसवास ई जगलैन जे अनेरे नोन-मिरचाइ मिला कोनो काज वा विचारकेँ बढ़ा-

चढ़ा कऽ बाजब वा नोन-मिरचाइ घटा घटी-बढ़ी करि कऽ बाजबसँ नीक जे जे जहिना अछि तेकरा तहिना बाजब...। बजला-

"परसु जे भोगी भाय भेँट भेला तँ पुछलयैन जे 'भाय, की हाल अछि?"

अपनो मनसूबा जागल, बिच्चेमे बजलौं-

"तैपर ओ की कहलैन?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"सौंसे जिनगीक इतिहास उनटा कऽ राखि देलैन!"

फेर भकचका गेलौं। भकचका ई गेलौं जे उन्टा इतिहास की भेल? पुछलयैन-

"की उन्टा इतिहास कहलिऐ, भाय?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"भोगी भाय कहलैन, ओना अपनो देखैत आएल छी जे अढ़ाइ-पौने तीन बर्खसँ ओछाइन पकैड़ लेलैन। शुरूक किछु दिन तँ अपना जिनगीक किछु नित्य-कर्म तँ अपने होशे करै छला मुदा छह मास जाइत-जाइत ओ[3] खतम भऽ गेलैन।"

अपनो मुहसँ बजा गेल-

"एकरा के काटत।"

'के काटत' सुनि आकि सिंहेश्वर भाइक मनमे अपने किछु उचरलैन, मिरचाइक कड़ू लगलाहा जकाँ पहिने कनी सुसुएला आ सुसुएला पछाइत च्यू-च्यू करैत बजला-

"किसुन, जेना भोगी भाय आयुर्वेद शास्त्र पढ़ने छला तेना

[3] होश

अपन आयुकेँ संयमित नहि रखि सकलाह!"

सिंहेश्वर भाइक 'च्यू-च्यू' सुनि बजलौं-

"आयुर्वेद की कोनो मुखौटी शिक्षा पद्धति छी, ओ तँ गीता जकाँ जिनगीक क्रियाक पद्धति छी किने। तैठाम..?"

आगू बजैले पेटमे बात रहबे करए कि बिच्चेमे सिंहेश्वर भाय बजला-

"जिनगीक पद्धति तँ जीता-जिनगी-ले अछि, आब ओकरा छोड़ह। जहिना समाजक नापी-जोखी ओकर जिनगीक बेवहारमे अछि तहिना ने परिवारिक जिनगीमे बेकतीक सेहो अछि। तइमे भोगी भायकेँ कोताही भेलैन।"

बजा गेल-

"की कोताही भेलैन, भाय?"

"अपने मुहेँ कहलैन जे केकरा-ले एतै केलौं! सभ केलहा जेना परिवारक सभ बिसैर गेल!"

सिंहेश्वर भाइक बात सुनि बजलौं-

"भाय, समय केतबो खराप किए ने अछि मुदा अपनो-सभ तँ समाजे भेलिऐ किने, तँए गप-सप्प छोड़ू आ चलू हुनके ओइठाम।"

'हुनके ओइठाम' सुनिते सिंहेश्वर भाइक आगूमे परसुका देखल एकटा आरो बात आबि गेलैन। बजला-

"किसुन, जेना समांग सभसँ सम्पन्न भोगी भाइक परिवार रहलैन, तइ हिसाबे सेवा कम भेलैन..!"

बजलौं-

"से केना बुझै छी भाय?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"सुमित्रा भौजीक[4] चेहरा सुखा कऽ खढ़ सन भऽ गेल छैन। दुनू आँखिसँ पैछला जिनगीक सभ सुख नोरक धारसँ निकैल-निकैल दुखक धारमे डुमि रहल छैन। बेचारी असगरे की करती! तहूमे जे काज करैक साध छैन सएह ने करती। जे असाध छैन से केना करती। कहैले तीन बेटा तीन पुतोहु, पाँच बेटी आ पाँच जमाए छैन मुदा ने कियो एक घोंट पानि दइबला आ ने..!"

बजलौं-

"तखन तँ भोगी भाइक मरबे नीक भेलैन?"

सिंहेश्वर भाय बजला-

"नीक की नीक जकाँ भेलैन, नीकोमे नीक भेलैन।"

❍

शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018

[4] भोगीलाल भाइक पत्नी

सुभिमानी जिनगी

भोरे सुति-उठि जीवन काका दरबज्जासँ गाम दिसक रस्ता जे फुटल अछि तैठाम अपन डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खिंचैत बुदबुदेला-

"परिवार आकि समाज एक दिस जुटि आगूमे किए ने ठाढ़ हुअए मुदा एक्को इंच पाछू अपन विचारसँ नइ घुसकब।"

ओना, जहिना आन दिन तीन बजे भोरे नीन तोड़ि ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल जीवन काका अपन बीतल दिनक हिसाब जोड़ि अबैबला दिनक मुँह-मिलानी करैत भरि दिनक हिसाब लगा लइ छला तहिना आइयो केलैन। मुदा आन दिनक हिसाब आ औझुका हिसाबमे किछु अन्तर आबि गेल छैन। माने ई जे आन दिन जीवन काका अपन भरि दिनक हिसाब परिवारक लीलामे रखै छला मुदा आइ से नइ केलैन। परिवारक संग समाजोक चलैक रस्तापर ठाढ़ भऽ अपन विचारक डाढ़ि खिंचलैन। ओना, जीवन कक्काक अपन विचार ई छैन जे जहिना सभ दिन नव सुर्जक उदय होइए तहिना अपनो जिनगीमे सभ दिन हुअए। जखने दूध नवनीत[5] बनि घृत बनैक दिशामे ऐ आशाक संग बढ़ैए जे अपनो जिनगी घीवाह बनत आ जखन जिनगी घीवाह बनत तखने ने ओकर सार्थकता हएत।

अपन संकल्पक विचार मनमे रोपि जीवन काका डेढ़ियापर डेढ़हत्थी ठेंगासँ डाँरि खींचि दरबज्जाक चौकीपर आबि बैसला। बैसते व्रती जकाँ अपन व्रत मनमे रोपि दृढ़ हुअ लगला जे दुनियाँ किए ने

[5] मक्खन

एकभाग भऽ जाए मुदा पर्वतेश्वर[6] जकाँ एक्को डेग पाछू नइ घुसकब। पाछू नइ घुसकैक दृढ़ विचार मनमे रोपाइते जीवन कक्काक नजैर अपन तेसर सन्तान- श्यामापर गेलैन। श्यामा..! श्यामा मनमे अबिते विचड़लैन- 'श्यामो तँ हमरे सन्तान छी..!'

श्यामाक प्रति विचार मनमे जगिते जीवन कक्काक देहमे जेना उमंगक फुनफुनी जगलैन। फुनफुनी जगिते देह कँप-कँपा उठलैन जइसँ एक दिस दुनियाँ[7]क भय आगूमे ठाढ़ भेलैन तँ दोसर दिस अपन दृढ़ संकल्प सेहो समकक्ष भऽ जिनगीक सोझमे ठाढ़ भेलैन।

जीवन कक्काक तेसर सन्तान 'श्यामा'क लिंग परिचय अखन धरि स्पष्ट नहि भेल छल। बालपनक जिनगी रहने श्यामाकेँ ने खाइ-पीबैमे कोनो तरहक असोकर्ज आ ने मल-मूत्र तियाग करैमे। बच्चा सबहक संग खेलबो करैए आ पढ़ैले स्कूलो जाइते अछि। ओना, रंग-रंगक समाचार अखबार-रेडियोमे अबिते रहैए जे अमुख डॉक्टर ऐठाम लड़का-लड़की भऽ गेल आ लड़की लड़का...।

दस बर्ख बीतला पछाइत आने बाल-बच्चा जकाँ श्यामाक शरीरमे सेहो किशोरी-रूप झलकी दिअ लगल। शरीरो फौदाए लगलै आ मनक झुकाव सेहो लड़की सभ दिस झुकए लगलै। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, प्रश्न अछि जे बच्चा बाल-बुधि धरि लड़का-लड़की संग-संग संगी जकाँ खेलबो-धुपबो करैए आ खाइतो-पीबितो अछिए। ओकरा सभमे लिंग-भेदक कोनो आशंका मनमे रहिते ने छइ। तत्पश्चात लड़काक झुकाव लड़का दिस आ लड़कीक झुकाव लड़की दिस हुअ लगै छइ। ई अवस्था लड़का-लड़कीक प्रेम-मिलनक अवस्थासँ पूर्वक छी। ओना, श्यामाक शरीर-गठनमे नवपन आएल मुदा आनसँ भिन्न

[6] चन्द्रगुप्त नाटक- जयशंकर प्रसाद

[7] परिवार-समाजक

रूपमे। अखनो ई स्पष्ट नहि भेल जे श्यामा लड़का छी आकि लड़की। ओना, श्यामाक अपन उमेरक आकर्षण लड़की दिस बढ़ि रहल छल जइसँ केश बढ़ाएब, कनियाँ-पुतराक खेल-खेलाएब इत्यादि-इत्यादि श्यामाक मनक संग बेवहारमे आबए लगलै। अखन धरि परिवारोक नजैरमे श्यामाक असल रूप आ गामो-समाजक नजैरमे झँपाएल छल।

आइ आठ दिनसँ जीवन काकाकेँ हुनक पत्नियोँ आ दुनू बेटो मुँह फोरि कऽ तँ नहि, मुदा कात-करोटसँ सुना-सुना बाजए लगलैन-

'श्यामा हमरा परिवारक नहि, हिजरा परिवारक भेल..!'

मंगली काकी–माने श्यामाक माए–जखन असगरमे बैस विचारै छेली तँ देखै छेली जे जहिना जेठ दुनू सन्तानकेँ पेटमे नअ मास सेवलौं तहिना ने श्यामाकेँ सेहो सेवने छी। मुदा..!, ऐमे हमर कोन दोख अछि..? सभ लीला तँ भगवानक छिऐन..!

मुदा लगले जखन बेटा-पुतोहु वा सर-समाज श्यामाक प्रति कहैन जे ई अपना सबहक सन्तान नहि, तखन मंगली काकी सेहो ओही विचारमे भँसिया समाज दिस तकैत श्यामाकेँ अपन नहि बुझि तियाग करैले तैयार भऽ जाइथ..! 'माइक दिल', 'माइक दिल' तँ दिन-राति अनघोल होइते अछि, मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि से के देखत..!

श्यामाक प्रति अखन धरि समाजक अधिकांश लोकक यएह धारणा बनल रहल छल जे श्यामा लड़का छी। ओना दुनू परानी जीवन काकाक मनमे बच्चेसँ शंका उठलैन जइसँ केतेको डॉक्टर आ केतेको ओझा-गुनीसँ श्यामाकेँ देखा-सुना चुकल छला। ओझा-गुनी तँ घरक देवताक दोख लगा अपन-अपन पल्ला झाड़लक। मुदा डॉक्टरी जाँच-परताल करौला पछाइत अपन हारि कबुल कऽ डॉक्टर सभ जीवन काकाकेँ कहि देलकैन जे हमरा साधसँ बाहर अछि मुदा अहाँक

तँ सन्तान छी, अहाँकेँ ते केतौ भगैक रस्ता नहि...।

डॉक्टरी विचारक पछाइत जीवन काका लड़का-लड़कीकेँ मनसँ हटा सन्तानक सीमापर ठाढ़ भऽ गेला। मनमे कखनो काल किन्नर परिवारक रूप-रेखा अबैन। किन्नर परिवारक रूप-रेखा देख मनक संग देहो काँपि उठैन जे ओ परिवार तँ समाजक हँसियापर अछि! अपना परिवारमे बाप-पुरखाक देल बीस बीघा जमीन अछि, किसान परिवार छी, किसानी जीवन अछि। जेकर धर्म रहलै जे अपन परिवारक भरण-पोषणक कोन बात जे दरबज्जापर आएल आनो-आन खगलोकेँ आ बाटो-बटोहीकेँ खाइ-पीबैक परहेज नहि अछि। धार्मिक वृत्ति समाजक परिवारमे रहबे कएल अछि जे जिनका जएह विभव छैन ओ ओहीमे परिवारक सभ मीलि-बैस खाइ-पीबी। व्यास बाबाक समाज तँ आइ अछि नहि, जे बुझत- लूटि लाउ, कुटि खाउ, प्रात भने फेर जाउ...।'

अप्पन आइ धरिक परिवारक जिनगीक धाराकेँ देख जीवन कक्काक मनमे भोरेसँ जहिना दृढ़ता उठलैन जे अपन आँखिक सोझमे अपन सन्तानकेँ भिखमंगा परिवारमे किन्नौं नइ जाए देब, चाहे ऐ खातिर जे हुअए। परिवारे आकि समाजे की कहत। की समाज ई नइ जनैए जे श्यामा हमर तेसर सन्तान छी..?

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर जीवन काकाकेँ अकलवेरा[8]मे उमंगित बैसल देख मंगली काकीक मनमे ओहिना हुमरलैन जहिना जेठ मासक रौदक जरल मेघमे हनहनाइत तूफानी दौरमे करिया मेघ ऊपर चढ़ए लगैए जइसँ धरतियोपर हवा-बिहाड़ि, पानि-पाथर अबैक सम्भावना बनियेँ जाइए तहिना भेलैन। मुदा लगले मन थीर भऽ गेलैन। तैबीच दरबज्जापर पहुँच मंगली काकी जीवन काकाकेँ

[8] अकलबेराक माने ऐठाम भेल, भिनसुरका समैयक जे क्रिया-कलाप अछि तइसँ भिन्न

पुछलकैन-

"चाहे पीब आकि पानियोँ पीब?"

ओना आजुक परिवेशमे एहेन विचार मनुखाह बनि मरखाह बनि सकैए। किएक तँ पानि नहि, पीबैक माने किछु खेलाक पछाइत पानि पीबसँ अछि। मुदा से नहि, कृषक बीच अखनो एहेन चलैन अछि जे सभसँ पहिने मुँह-कान धोनौं वा बिनु धोनौं खाली पानि पीबाक चलैन अछि। बिनु मुँह धोने माने भेल बाइसे मुहेँ बसिया पानि पीब। तँए हुनकर खतियान एहेन बनि गेल छैन जे भोरमे सभसँ पहिने मन भरि पानि पीबी। पछाइत चाह-पान चलत। तैठाम चाहक संग पानिक चलैन किए रहत? मुदा से नहि, मंगली काकीक मन जीवन कक्काक रूप देख थरथरा गेल रहैन तँए बाजल छेली।

जीवन काका मंगली काकी दिस टकटक देखए लगला जे यएह माए अपन कोखिक सन्तानकेँ भिखमंगाक सन्तान बनबए चाहि रहली अछि। मुदा मनक विचारकेँ मनेमे अरोपि बजला-

"चाहो पीब आ किछु गपो-सप्प करब। तँए अपनो चाह एतै नेने आउ। संगे-संग पीबो करब आ...।"

ओना संगे-संग चाह पीबैक साहस मंगली काकीक मनमे घटि रहल छेलैन। तँए बहन्ना बनबैत पहिने हिनकेटा-ले गिलासमे चाह नेने पहुँचली।

पतिक हाथमे गिलास पकड़ा मंगली काकी अपने चोटे घुमि आँगन आबि गेली। आँगन आबि चाह तँ पीबए लगली मुदा मन थरथराइते रहैन। मन थरथराइक कारण रहैन दुनू गोरेक बीचक ने परिवार छी, तखन चाहमे किए..?

मंगली काकी घोंटे-घोंटे चाहो पीबैथ आ मनकेँ घटे-घट सकतेबो करैथ। चाह पीला पछाइत दरबज्जापर आबि जीवन कक्काक

आगूमे ठाढ़ भेली। ओना, तैबीच काकीक मनमे ईहो जगि चुकल छेलैन जे जहिना पति छैथ तहिना ने बेटो अछि। जहिना पतिकेँ खुश राखब अप्पन दायित्व छी तहिना ने बेटोकेँ राखए पड़त। तँए निर्भिक रूपमे मंगली काकी जीवन कक्काक आगूमे ठाढ़ भेली।

पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देख जीवन कक्काक मन चकभौर लिअ लगलैन। जहिना धारक मोनिक चकभौरमे कियो-कियो डुमबो करैए, तहिना अकासमे गीध चकभौर लैत चारू दिशा देखबो करैए आ पाहि लगा पहियेबो करिते अछि। जीवन कक्काक मनमे पहिल दिशाक चकभौरमे जगलैन जे पति-पत्नीक बीचक ने परिवारो छी आ सन्तानो छी। मुदा तँए सोभावमे अन्तर नहि अछि सेहो केना मानल जाएत। पुरुखक सोभाव होइए जे जँ अपने वा परिवारक सन्तानेक आगू अबैत बाधा[9]मे सन्तानकेँ संरक्षण दैत अपने आगूमे ठाढ़ भऽ सामना करब, भलेँ परिणाम जेहेन होइ, मुदा पत्नीक की ई सोभाव नइ अछि जे आक्रमिक आगूमे ठाढ़ भऽ सन्तानकेँ दुनू हाथे दुनू हाथ पकैड़ मारि खुआ दइए। ओना, ऐठाम एहेन प्रश्न अछिए जे संरक्षणक रूप केहेन अछि?

फेर दोसर चकभौर जीवन कक्काक मनमे उठलैन। उठलैन ई जे श्यामाक जहिना 'पिता' भेलिऐ तहिना ने पत्नियोँ 'माए' भेलखिन। तैठाम अप्पन चाह की अछि आ पत्नीक चाह की छैन? केकरो बात सुनला पछाइत ओइपर नीक जकाँ विचारबो तँ जरूरी अछिए। विचारक पछाइत हँ-नइक ने निर्णय करब। आकि कियो बाजल जे 'कौआ कान नेने जाइए' आ ओकरा सुनि अपन कान बिनु देखनहि जँ कौआक पाछू-पाछू दौगब, ई केहेन हएत..?

दू भौक टपैत-टपैत जीवन कक्काक मन कनी थमलैन। ओना, ने

[9] सन्ताप

जीवन काका किछु बजै छला आ ने मंगलीए काकी किछु बजै छेली। मुदा भीतरे-भीतर दुनू बेकतीक मनमे समुद्री तूफान चलिये रहल छेलैन। पत्नीक अलिसाएल-मलिसाएल चेहराक रंग देख जीवन कक्काक मन सेहो पसीज रहल छेलैन। जे एकाएक मन बिहुसि उठलैन। जीवन काका बजला-

"एकटा पनचैती अहाँसँ कराएब अछि, घरक बात छी तँए पहिने घरेक लोक ने ओइपर विचार करत। जँ घरमे नइ फरिछाएत तखन ने समाज आकि संसार देखब।"

पतिक विचार सुनि मंगली काकीक मनमे एकाएक चमक एलैन। चमक अबिते मनमे उठलैन जे परिवारेक विषयमे ने पतियो विचार करए कहि रहल छैथ। जखने परिवारमे पति-पत्नी मिलि, वैचारिक एकरूपता आनि परिवार चलौत तखने ने ओ परिवार अपना बले ठाढ़ हएत। जइसँ जिनगीक धारा एकबट्ट होइत आगू बढ़ैत चलत। ओना, तैबीच परिस्थितिवश तोड़-जोड़ सेहो चलिते रहत। परिस्थितिक अर्थ भेल- 'परि+स्थिति', तँए, जखने परक स्थिति आगूमे औत तखने कनी-मनी डोल-पात हेबे करत...।

मंगली काकी बजली-

"बाजू, की कहै छी?"

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन काका समधानल प्रश्न रखैत बजला-

"अपना दुनू गोरेक बीच केते सन्तान अछि?"

मंगली काकी बजली-

"तीन।"

बजैक क्रममे तँ मंगली काकी बाजि गेली मुदा लगले मन बेटाक

संग समाज दिस बढ़ि गेने तत-मत करए लगली।

पत्नीक ततमती देख जीवन काका बुझि गेला जे पछुआ दाबि रहल छैन। ठिकिया कऽ जीवन काका दोसर प्रश्न रखला-

"एतेटा दुनियाँमे अहाँकेँ सभसँ लग के अछि?"

अतीतोमे जे अतीत अछि। जेकर जेहेन परतीत तेकर तेहने ने अतीतो। किए कियो अपन छोड़ि अनका-ले मरैए आ किए कियो अनका छोड़ि अपना-ले मरैए..? धरती-अकासक बीचक क्षितिजमे जहिना केहनो-केहनो उड़न-चिड़ैया फँसि जाइए तहिना मंगली काकीक मन एकाएक फँसि गेलैन। दुनियाँमे सभसँ लग के? अतीतमे वौआइत मंगली काकीकेँ बिआहक अपन मरबा मन पड़ि गेलैन। मन पड़लैन जे ओही मरबापर ने माए-बापक संग समाजो पतिक हाथ पकड़ा कहलैन जे दुनियाँ मेटि जाए मुदा पतिक संग नइ छोड़ब...।

मंगली काकी बजली-

"बुझलो बात अनठा किए बजै छी। हमरा बकलेल-ढहलेल बुझै छी?"

मंगली काकीक चपचपाएल बोल सुनि अपन चपचपी मिलबैत जीवन काका बजला-

"अहाँ केना बुझि गेलिऐ जे हम अनठा कऽ बजलौं हेन। जे कहैक अछि से पहिने चेतौनी दैत चेता देब।"

जीवन कक्काक वाणीमे जेहेन ओज छेलैन तेहने मनो ओजस्वी छेलैन्हे जइसँ मंगली काकीक मनमे भय सेहो जगलैन। भयकेँ जगिते ज्वर-बुखार नपैबला थर्मामीटरक पारा जहिना गरमी पेब चढ़ैए आ ठण्ढी पेब उतैरतो अछि तहिना मंगली काकीकेँ भेलैन। बजली-

"अहाँसँ हम कोनो हटल छी। जे कहै छी, जेना कहै छी तहिना

ने सुनबो करै छी आ करबो करै छी।"

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे आइ जे समस्या परिवारक सोझामे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ नान्हिटा नहि अछि। पत्नीसँ परिवार होइत समाज धरिक बीचक समस्या छी, तँए नान्हि-नान्हिटा विचारमे ओझराएब उचित नहि...।

जीवन काका बजला-

"सुनबामे आएल अछि जे अहूँ श्यामाकेँ अपन सन्तान नहि बुझि तियाग करैले तैयार छी?"

पतिक बात सुनि मंगली काकी सहैम गेली। करेजक संग विचारो डोलायमान हुअ लगलैन। की बाजब आ की नइ बाजब तैबीच मंगली काकीक विचार ओझराए लगलैन। किछु बजैक साहसे ने भऽ रहल छेलैन।

मंगली काकीकेँ चुपी साधल देख जीवन काका बजला-

"चुप रहने काज चलत! मुँह खोलि बाजू जे अहाँ की चाहै छी। कियो अपने विचारक ने मालिक अछि।"

थरथराइत मने मंगली काकी बजली-

"अपन बेटो आ समाजोक लोक श्यामाकेँ अपन नहि बुझि दोसराक कहि रहल अछि! तैबीच..?"

पत्नीक झूकैत विचार सुनि जीवन काका दृढ़ भऽ बजला-

"चाहे ओ बेटा हुअए वा समाज, कान खोलि कऽ सभ सुनि लिअ जे श्यामा हमर सन्तान छी, सन्तान बनि रहत। ई हमहूँ बुझै छिऐ जे श्यामा नि:सन्तान रहत, मुदा तँए ओ मनुख नहि छी आ मनुखक जिनगी नहि जीब सकैए, हम तेकरा मानैले तैयार नहि छी।"

पतिक दृढ़ विचार सुनि मंगली काकीक मनमे सेहो दृढ़ता आबए

लगलैन, एकाएक अपन कोखिक संतप्त श्यामापर मन एकाग्र हुअ लगलैन। एकाग्र होइते मनमे उठलैन- श्यामेटा एहेन सन्तान थोड़े छी, दुनियाँमे एहेन बहुत लोक अछि जेकरा प्रकृत्ति प्रकोपसँ सन्तानोत्पतिक शक्ति नइ छइ। तँए ओकरा परिवार वा समाजसँ वहिष्कृत करब कहाँ धरि उचित हएत...।

तैबीच जीवन काका बजला-

"पहिने अहाँ ई कहू जे अहाँक मनमे की अछि। की श्यामाकेँ अपन सन्तान नइ बुझि छोड़ैले तैयार छी?"

पतिक दृढ़ विचार पेब बिना किछु आगू-पाछू तकने मंगली काकी बजली-

"श्यामा की कोनो हमरेटा सन्तान छी आ अहाँक नहि छी।"

ढलानपर सँ टघरैत पानिक रोकाबकेँ देख जीवनानुभवी लोक जहिना छील-छील कऽ चिक्कन बना-बना एकबट्ट करैत छिड़ियाएल पानिकेँ धरिया धाराक रूपमे आगू बढ़बै छैथ तहिना जीवन काका मंगली काकीक छिड़ियाएल विचारकेँ समेट बजला-

"पूबक सूर्ज पच्छिम किए ने उगइ, जमीनक पानि अकास सिर किए ने चढ़इ मुदा श्यामाकेँ अपन सन्तान छोड़ि ने अनकर बुझब आ ने अनका हाथ जाए देब।"

विस्मित होइत मंगली काकी बजली-

"लोक की कहत..!"

मंगली काकीक विचार सुनि जीवन कक्काक अन्तरात्मा जेना ओहन बिजलोका जकाँ चमकलैन जेहेनमे ठनका खसैए। बजला-

"लोक की कहत! लोक पहिने अपन ठेकान करह। जेकरा अपन ठेकान नइ से अनकर ठनका रोकि सकैए आकि अपनाकेँ बँचा

सकैए।"

पतिक विचार सुनि मंगली काकी सिरसिराए लगली। एकाएक देहमे सिरसिराएल कँपन हुअ लगलैन। कँप-कँपाइत पुछलखिन-

"की लोकक ठेकान?"

पत्नीक जलियाएल विचार सुनि जीवन कक्काक मनमे कुवाथ नहि भेलैन। तेकर कारण अछि जे जीवन कक्काक विचारक सागरमे लहैर जकाँ उठि गेल छेलैन। लहराइत विचारमे आबि रहल छेलैन जे जँ मनुख छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघ अपन जिनगीक रस्ताक बाधाकेँ अपना आँखिये ठिकिया मनसँ हटबए चाहत तँ ओ जरूर हटा जिनगीकेँ बाधामुक्त कऽ सकैए। जखने जिनगी बाधामुक्त भेल तखने ने ओ जिनगी घोड़ाक चालिमे सरपट दौड़ लगौत...।

जीवन काका बजला-

"जे समस्या अपना परिवारमे उपस्थित भऽ गेल अछि ओ खाली अपने परिवार-टा मे भेल आकि आइये भेल अछि आ पहिने नइ भेल हएत से केना बुझै छिऐ? सभ दिन होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। महादेवकेँ सेहो अर्द्धनारीश्वर कहल जाइ छैन। जखने अर्द्धनारीश्वर तखने ने सन्तान विहीन! कार्तिक आ गणेश तँ तखन भेलैन जखन महादेव आ पार्वती दुनू दू छला। मुदा जखन दुनू सटि एक भेला तखन कोनो सन्तान नइ ने भेलैन। तँए की हुनका देववंशसँ कियो हटा देलकैन आकि हटा देतैन?"

ओना, मंगली काकीकेँ महादेव-पार्वतीक ओ कथा (माने अर्द्धनारीश्वरबला कथा सुनल रहैन मुदा एना भऽ कऽ नहि, ई नइ बुझल रहैन जे अर्द्धनारीश्वर की। तँए, धार-कातक पँकियाएल चपचपीमे जहिना चँङ्गुराएल चिड़ौयो आ पैरबला जानवरक संग लोको चपि कऽ गड़ि जाइए, तहिना मंगली काकी सेहो चपि कऽ गड़ि मुँहपर

हाथ लैत बजली-

"ऐँ.अ..अ..!"

जीवन काकाकेँ जेना सहगर खेतक लभगर हाल भेटलैन तहिना बजला-

"ऐँ-टेँ नइ करू! वएह शिवजी महादेव छैथ जे देखलखिन जे जे कृष्णजी महिला संगठनक नेता छैथ ओ महिला छोड़ि पुरुखक प्रवेश रोकने छैथ, तखन ओ की केलैन से बुझल अछि?"

विचारक बोनमे हेराएल-भोथियाएल बेटोही जकाँ मंगली काकी बजली-

"नइ! अहूँ ने तँ कहियो कहने छेलौं।"

जीवन काका बजला-

"कोनो कि एकेटा गप अछि जे ओ छुटि गेल ते बड़ जुलुम भऽ गेल। जखने जागी तखने परात..!"

उत्सुकाएल मंगली काकी बजली-

"पहिने शिवशंकर दानीक कथा कहि दिअ।"

पत्नीक चपचपी देख चपचपाइत जीवन काका बजला-

"शिवसँ शिबानी बनि कृष्णजीक महिला संगठनमे शामिल भऽ गेला..!"

मंगली काकीकेँ जेना एकाएक भक् खुजलैन तहिना बजली-

"एहेन बात जे अहाँ पेटमे रखने छेलौं आ कहियो एतबो सिनेह नइ भेल जे हमरो कहितौं..!"

पत्नीक झुझुआइत मनकेँ जीवन काका पकैड़ बिच्चेमे बजला-

"पेटमे कि एतबे अछि। अच्छा जखन अहाँ पेटक बात लिअ

चाहै छी ते सुनू। ई तँ शिवशंकर महादेवक विषयमे कहलौं। आब सुनू महाभारतक विषय।"

'महाभारत'क नाओं मंगली काकी सुनने जरूर छैथ आ द्रौपदीक चिरहरणक सिनेमो देखने छैथ। तँए, महाभारतक नओं सुनि आरो जिज्ञासा बढ़ि गेलैन। बजली-

"सुनाइये दिअ। जिनगीक कोनो ठेकान अछि, जँ मन लगले चलि जाएत तखन तँ अनेरे ने भूत बनि लपकबै।"

मुस्की दैत जीवन काका बजला-

"जखन महाभारत होइत रहै ने, तइमे एकटा वीर रहै शिखंडी, ओहो अपने श्यामा जकाँ छल। ओ की केलकै से बुझल अछि?"

मुड़ी डोलबैत मंगली काकी बजली-

"नइ..!"

जीवन काका बजला-

"कृपाचार्योकेँ आ कृतवर्मोकेँ छेरा-छेरा भरौलक!"

मंगली काकीक मनमे जेना आत्मबल फुलाए लगलैन तहिना बिहुसैत बजली-

"अरे वा..!"

जीवन काका मंगली काकीक मनमे पसि बजला-

"ऐँ., एतबेमे हदिआइ छी! भगवान राम जखन बोन जाए लगला तँ अन्तिम विदाइ अयोध्यावासी लैत-दैत पुरुख-नारी कहि तँ सभकेँ विदा कऽ देलखिन आ अपने दच्छिन मुहेँक रस्ता धेलैन, आ बीचमे किछु गोरे ओहिना ठाढ़े रहि गेल, ओ की केलक से बुझल अछि?"

मंगली काकी बजली-

"नइ..!"

जीवन काका बजला-

"ओ सभ–जे ठाढ़ छल से–के सभ छल? जे पुरुख-नारीक बीचक अछि। जेकरा शखा-सन्तान नइ हएत। जखन रामचन्द्रजी, लक्ष्मण आ सीताक संग घुमि कऽ अयोध्याक आड़िपर पहुँचला तखन वएह सभ दुनू भाँइक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे 'अहाँ हमरा किए ने विदाइ देलौं? जइ आशामे अहीं जकाँ चौदह बर्ख हमहूँ सभ टपला खेलौं?"

मंगली काकीक मनो आ शरीरो जेना शान्त भऽ गेलैन। बजली-

"जे अहाँ करबै सएह ने हमहूँ करब।"

रणभूमिक संगी पेब जीवन काका बजला-

"श्यामा हमर सन्तान छी। अपना जीबैत ओकरा भीख माँगैत देखब, की ओहन लाजक विचार लोक अपने नइ करत। दुनियाँ एक दिस भऽ जाए, मुदा...। जाबे धरि श्यामा पढ़ए चाहत, समांग बुझि सहयोग देबइ। जहिया ओ पढ़ाइ छोड़त तहिया अपना आँखिक सोझमे ओकरा मनोनुकूल जीबैक साधन बना देबइ। अपना पैरपर ठाढ़ कऽ समाजक ओहन मनुख बना देबै जे अपन श्रमसँ अपन सुभिमानी जिनगी बना जीबत आ ओकर रक्षा करैत रहत।"

❍

शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018

बाबाक बाग-बगिया

दस कट्ठाक कलम-बाग बाबाक आइ सुखि रहल छैन, टुटि-टुटि झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। बाबाक बाग-बगियाक ओ रूप नहि रहल जे कहियो छेलैन।

गोबरधन दासक जन्मक तीन सालक पछाइत पिताक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। बपटुग्गर गोबरधन दास अपन माइक संग दिन काटए लगला। एगारह बर्खक जखन गोबरधन दास भेला तैबीच माइयोक मृत्यु भऽ गेलैन। एगारह बर्खक गोबरधन दासक मनमे उठलैन- जेकरा माए-बाप, स्त्री-बच्चा छै से ने परिवार आ परिवारक मायामे ओझराएल रहत, हमरा कोन माया अछि जे समाजक वा परिवारक कोनो बान्ह-छान लागत...।

लगले फेर गोबरधन दासक मनमे उठलैन जे अपना सन कि कोनो हमहींटा छी आकि आरो लोक अछि। जहिना दुनियाँमे सभ अपने सन अछि तहिना ने हमहूँ छी। नइ रहब ऐ गाममे। जेकरा लाब-लस्कर[10] छै तेकरा ने माया-मोह रहतै, हमरा किए रहत। एकटा टुटल घर अछि, सेहो घराड़ी अपन नहियेँ छी, जेकर छिऐ ओ कखनो लऽ लेत। जाबे देने अछि ताबैये तक ने अपन घर अछि, जहिया जमीनबलाक मन हेतै तहिया लऽ लेत।

संजोग बनल, किछुए दिनक पछाइत कुम्भ मेलाक संग त्रिवेणी स्नानक समय आएल। गोबरधन दासक मनमे उठल जे बाबाजी

[10] खेत-पथारक संग परिवार-दियाद-वाद

सभकेँ गाड़ीमे टिकट नहियेँ लगै छै, हमहूँ कोनो बबाजीक जत्थाक लाट पकैड़ लेब, बिनु टिकटे त्रिवेणी घाट पहुँच जाएब। गंगामे स्नान करि माता-पितासँ लऽ कऽ पूर्वज धरिक स्मरण करैत डूम लऽ लेब। घुमतीकाल फेर कोनो बबाजियेक लाट पकैड़ लेब, मन हएत तँ बबाजीए बनि जाएब नइ तँ केतौ कोनो नोकरीए पकैड़ लेब। जखन हाथ-पएर दुरुस्त अछि तखन गुजर नइ चलत! चलबे करत। भेल तँ छह सात बर्खक खेल अछि। जखने जुआन हएब तखने बिआह-दान करैक छूट भेटिये जाएत। पछाइत बुझल जेतइ...।

दुनू दिसक बाट गोबरधन दासक मनमे उठि गेलैन। माने बबाजियो बनैक आ परिवारिको बनैक। मुदा बबाजीक लाट पकड़ैले ते बबाजी बनइ पड़त। माने कोनो साम्प्रदायिक गुरु मंत्रक संग कण्ठी लेला पछातिये ने बबाजी हएब। खाएर.., काजो तँ कोनो तेहेन कठिनगर नहियेँ अछि। हल्लुके अछि। मुदा हल्लुको काज एते धड़फड़ीमे हएत केना? परसूए लोक गाड़ी पकड़त, आइ बीतिये रहल अछि, अदहासँ बेसी समय बीति चुकल अछि। अखन विचारिये रहल छी। भेल तँ बीचमे मात्र काल्हि भरि समय अछि। तेहीमे बटखरचोक ओरियान करए पड़त। अनका जकाँ माँगि-माँगि खाएब सेहो केहेन हएत। अखन जनैम कऽ ठाढ़े भेलौं अछि, अखने जँ आत्मामे आगि लगा लेब–माने माँगि-माँगि खाएब शुरू कऽ लेब, एकरा लोको नीक थोड़े कहत। आ जँ माँगि-माँगि खेनिहार नीको कहत तँ अपन मन थोड़े नीक कहत। जेकरा माँगि-माँगि खाइक आदत छै आकि ठकि-फुसिया कऽ खाइक आदत छै, ओ भलेँ नीक कहि सकैए मुदा से नीक थोड़े भेल।

एक संग गोबरधन दासक मनमे तीनटा प्रश्न उठि गेलैन। पहिल- कुम्भ मेलामे त्रिवेणी-स्नान करब, दोसर- कण्ठी बान्हि बबाजी बनब आ तेसर- रस्ताक खर्चक ओरियान...।

परसू भोरे लोक गाड़ी पकड़त। बीचमे एक दिन बँचैए जइमे तीनू काज केना सम्हरत? आ जँ नहि सम्हरत तखन जाएब केना? मुदा जे राम से राम जाएब जरूर...।

लगले गोबरधन दासक मनमे उठलैन जे जखन जाइक विचार मनमे रोपा गेल तखन जाएब जरूर। अखनेसँ ओइ पाछू लगि जाइ छी। होइतो अहिना छै जे कोनो काजकेँ निआरला पछाइत ओइमे लगि गेलासँ काजक सिद्धिक सम्भावना बनियेँ जाइ छइ। नइ ओइठाम बनै छै जैठाम काजक निआर खाली विचारेक निआर रहल, माने निआर मात्र गप-सप्पक क्रममे रहल।

गोबरधन दासक मन कहलकैन जे कोनो काजक क्रमिक सूत्र होइए। जँ ओइ सूत्रकेँ पकैड़ चलल जाए तँ कोनो-ने-कोनो सूत्रक श्रोत भेटिये जाएत। जखने स्रोत्र भेटत तखने ओइमे लगि-भीर पड़ि जाएब। अखन ने बुझि पड़ैए जे काज जपाल जकाँ भारी अछि, मुदा पुरबैक जोगारोक समैयो तँ अछिए। भेल तँ जे काज अनका हाथमे रहल आकि अनकर हथौटी काज जे अछि ओ ने अपना साधसँ बाहर अछि। मुदा जँ अपन काजकेँ अपन हथौटी पहिरा अपना हाथे करए लगब तखने ओ अपना साधमे आबि जाएत। जखन अपना हाथमे अबैक सूत्र भेट जाएत तखने ने ओ सुढ़िया जाएत। से नहि तँ एक-एक काजक आ बीचक एक-एक समस्याक विचार करब जरूरी अछि। अखन ने तीनटा काज अछि तँ भारी बुझि पड़ैए। मुदा जखने तीनू काजकेँ तीन टुकड़ी बना करए लगब तखने ने हल्लुक भऽ जाएत।

काजकेँ हल्लुक होइत देख गोबरधन दासक मन हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते एक-एक काज आ एक-एकटा समस्याकेँ बिलगौलैन।

पहिल- जखन बबाजी बनि घरसँ निकलैक अछि तखन पहिने

बबाजी हएब जरूरी भेल। मुदा ओहो तँ अनके हाथक काज भेल। पहिने गुरुकेँ टोहियाएब अछि। मुदा गुरुकेँ टोहियेला पछातियो ओ चेला बनौता कि नहि, से तँ हुनका मनक ने भेल। अपना मनक तँ एतबे ने भेल जे अपनेसँ टोहिया हुनका ऐठाम पहुँचब। एक तँ गुरु तकैमे समय लागत तैपर ओ लगले भेटता कि नहि। भेटला पछातियो चेला बनौता कि नहि। तेतबे नहि, जँ चेला बनाएब गछियो लेता आ ऑफिसक हाकिम जकाँ मास दिनक समय दऽ मासे-मास दौड़ाइयो सकै छैथ। तखन परसुका गाड़ी केना पकड़ब? आ जँ परसू गाड़ी नइ पकड़ब तँ कि हमरा गरजे लगले-लगले कुम्भ-स्नान हएत..?

गोबरधन दासक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइक कारण एकटा आरो भेल, ओ ई जे गोरबधन दास तँ आइ ने 'गोबरधन दास' भेला, मुदा आइसँ पहिने 'गोबरधना' छला। खेतकेँ गोबरेला पछाइत ओइमे अन्न वा कोनो आने फसल जहिना बेसी उपजैए तहिना गोबरधनासँ बदलैत गोबरधन दासक मनमे कुम्भ स्नानक विचार एलासँ भेलैन। कुम्भे ने कलश सेहो छी जेकरा पेब मनुखो कलशैए।

एकाएक गोबरधनक मनमे उठलैन- किछु बीत जाएत मुदा परसुका गाड़ी जरूर पकैड़ लेब। संकल्पेक संग ने बिकल्पक रस्ता लोक तकैए। जँ संकल्पे नहि तखन विकल्पक जड़ि केतए..! से विकल्प गोबरधनकेँ भेटलैन। विकल्प ई भेटलैन जे गुलाव केतबो नीक फूल किए ने हुअए मुदा ओकर धड़क भेख[11] थोड़े बनत। ओ तँ बनत करबीर, तुलसी, बेली, जुही, कुश इत्यादियेसँ। आगू-पाछू करैत गोबरधनक मन एकाएक बिहुसि उठलैन। बिहुसैक कारण भेलैन जे जखन संगेमे वैद तखन मरब बेकूफी। भेल तँ बेली फूलक एकटा

[11] कण्ठी

डारिक कण्ठी बना ओइमे प्रेमसँ जनेउ पहिरा माला बना लेब। जखने जनेउ कण्ठी पहिरत तखने माला बनि जाएत। ओकरे पूजो करब आ जपबो करब। जेही हाथे कण्ठी बनाएब तेही हाथे गरदैनमे धारणो कऽ लेब। बस भऽ गेलौं बबाजी। बबाजियो बनब कि बड़ भारी अछि। रौदियाह समय होइते सहरगंजा लोक कण्ठी पहिर लइये आ बरसाती उजैहिया देखते ओकरा तोड़ि माछ खाए लगैए। भेल तँ एतबे ने सालमे करए पड़त जे एक बेर पहिरब आ एकबेर उतारि कऽ कोठीक कान्हपर राखब। जइ दुनियाँमे एहेन-एहेन खेल अछि तेही दुनियाँमे ने अपनो छी। अपने हाथे बबाजी हएब...।

गोबरधनक मन मानि गेलैन आ कण्ठी पहिर 'गोबरधन गोबरधन दास' बनि गेला।

गोबरधन दास बनला पछाइत बटखरचापर नजैर उठौलैन। नजैर उठिते मनमे एलैन जे जखन गामे छोड़ि जा रहल छी तखन थारीए-लोटा केकरा-ले रहए देब। एकटा बेच कऽ बेसाहि-बेसाहि खाएब आ दोसर अपना काज-ले राखब।

'एकटा बेच लेब दोसर अपना-ले राखब' एतए तकक विचार सरपट दौड़मे गोबरधन दासक मनमे आबि गेलैन मुदा कोन राखब आ कोन बेचब, माने थारी राखब कि लोटा तइमे ओझरा गेला। मनमे उठलैन जे जँ लोटा नइ राखब ते पानि कथीमे पीब, आ जँ थारी बेच लेब तखन खाएब कथीमे? एकटा भेल पानि पीबैक वौस, दोसर भेल खेनाइ खाइक वौस। खगता दुनूक अछिए। जँ दुनू बेच लेब, तेतेक खगतो नहियेँ अछि आ दुनू राखि लेब तखन बेसाहब कथीसँ? संकल्प जेना गोबरधन दासक मनकेँ हौंर देलकैन। जहिना छाँछमे मोहीसँ मक्खन मथल जाइए, भलेँ ओ अपन नाओं छाँछे किए ने रखि लिअए, तहिना संकल्प गोबरधन दोसक मनकेँ मथलकैन। मथिते संकल्पक

संग विकल्पक कारण जगलैन जे मात्र खाइये बेरमे ने थारीक खगता हएत, ओ तँ केरो पातसँ काज चलि सकैए, नइ केरा पात भेटत तँ कुटो-कागज चलि सकैए। मुदा लोटाक खाँहिस तँ पानियों पीबै काल हएत, परो-पैखाना जाइ काल आ नहेबो काल हएत। मानि लिअ नहेबा काल जँ थारी लऽ कऽ नहाएब तँ नहियों कोनो बात मुदा पैखाना करए जँ थारीमे पानि लऽ कऽ जाएब, तेकरा जे देखत ओ की कहत..? जँ लोक नहियोँ किछु कहत तँ थारी भरि पानि लइयो केना जाएब? लैयो जाएब तँ ओ सभटा हाथमे केना औत..?

विचारक मथानी गोबरधन दासक मनकेँ मोहि-मोहि मना लेलकैन जे थारी भेल पसारी, जेकर विकल्पो ढेरी अछि मुदा लोटा बिना नइ बनत। तहूमे जखन बबाजी बनि घरसँ निकलैये चाहै छी तखन जँ पानि पीबैले एकटा लोटो संगमे नइ राखब से केहेन हएत।

लोटापर विचार अबिते गोबरधन दासक मनक समस्यामे एकटा समस्या आरो उठि गेलैन। यात्राक लेल लोटा, लोटकी नीक आकि कमण्डल? लोटा तँ गृहवासूक छी, माने घर-परिवारमे रहैबला, हम तँ घरो आ परिवारो छोड़ि यात्री बनि जा रहल छी। यात्रीक जेतेक हल्लुक जिनगी रहत ओते ने ओ सुरक्षित। किए तँ गाड़ी-सवारीमे जेरगर धिया-पुताबला जे रहल ओकरा ने कोनो स्टेशनपर एकटा बच्चा हेराइए ते कोनोपर जोड़ा लगा कऽ, आ केतौ-केतौ धोखा-धोखीमे घरोवाली हेरा जाइ छै चाहे अपने हेरा जाइए। तहिना बेसी मालो-असबाव लऽ कऽ चलनिहारकेँ ने होइए जे केतौ कियो एटैची चोरौलक तँ केतौ बैग, केतौ ई छुटल तँ केतौ ओ। मुदा बबाजी बनि जखन घर छोड़ब तखन ओतबे समान ने राखब नीक हएत जेतेकेँ सम्हारि कऽ लऽ चलब। तँए लोटासँ नीक लोटकी हएत आ तहूसँ नीक कमण्डल। कमण्डलकेँ मोटरीक डोरीसँ तेना बान्हि देबै जे हेराएत तँ सभ संगे जाएत नइ जँ नइ हेराएत आकि चौरौल जाएत तखन सभ संगे ने

रहत...।

मुदा लगले गोबरधन दासक मनमे उठि गेलैन जे जँ किसान खेती करैये काल ई ठेकान नइ कऽ सकल जे की नीकक खेती कऽ रहल छी आ की अधलाक। मुदा जखन ओ तैयार भऽ खेबापर अबैए तखन जँ कहबै जे ई अशुद्ध भेल आ ऐमे पौष्टिक तत्त्व छइहे नहि। तँ एकरा सोलहन्नी उचित कहब केतेक नीक? तँए जइ खेतिहरकेँ जेहेन खेतमे उपजत ओकर शुद्ध भोजन, माने मेहनतक भोजन वएह ने भेल। हमरो बाप-दादाक देल कमण्डल नहि लोटा अछि तँ हमरा-ले यएह ने नीक भेल। तहूमे ई केहेन हएत जे अपन बेच लेब आ अनकर कीनब।

गोबरधन दासकेँ कुम्भ स्नान-ले घरसँ निकलैमे आब मात्र एकटा समस्या रहि गेलैन। ओ छी कुम्भ-स्नान। मुदा से तँ ओतए पहुँचला पछातिये सम्भव अछि। मन मानि गेलैन जे परसुका गाड़ी जरूर पकैड़ लेब।

चारि बजे भोरमे गाड़ी स्टेशनसँ छुटत। 'चारि बजे भोर' मनमे अबिते गोबरधन दासकेँ एकटा विचार जगलैन जे जाबे तक कुम्भ-स्नान करैक विचार मनमे नइ उठल छल, तैबीच जे केलौं आकि बजलौं से केलौं-बजलौं मुदा आब जखन अपने आत्माकेँ साक्षी रखि अपने हाथे कण्ठी-माला बना अपन गरदैनमे पहिर लेलौं तखन हृदय शुद्ध भेबे कएल। तँए शुद्ध हृदय जाबे खूब शुद्ध नइ बनत ताबे शुद्ध-अशुद्ध नीक जकाँ केना बुझब। से बिनु बुझने शुद्ध-विचार आकि शुद्ध बोल केना आबि सकैए? एकटा बात माए-बहिनसँ पुछै छिऐन जे जखन नैहर छोड़ि सासुर बासक लेल विदा भेली तखन दादी नइ कहने रहैन जे बुच्ची मुँहक बोलकेँ समेट फुच्चीमे रखिहह आ जेतबे खगता हुअ तेतबे निकालिहह। तहिना ने हाथोक लेल कहने रहैन। मुदा

अखन की देखै छी? खाएर.., गोबरधन दासकेँ ओइ सभसँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपनासँ। तहूमे कुम्भ स्नानक विचार मनमे प्रबल रूपसँ जगिये चुकल छैन तँ स्नानक पछाइत आरो बुझता।

चारि बजे गाड़ी पकड़ैले साढ़े तीन बजे घरसँ निकैल गोबरधन दास विदा भेला। तखने गाड़ी पकड़ेतैन। ओना, एते गुण तँ गाड़ीमे ऐछे जे समयसँ पहिने नइ अबैए, भलेँ देरी जेतेक होउ। गोबरधन दासक अपन समय बिसबासू बनले रहैन, लगले मन आगू बढ़लैन। आगू ई बढ़लैन जे जखन वंशकर्ता वा कुलकर्ता पूर्वज जे छला ओ सभ तीन बजेसँ पहिनहि उठि अपन नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ अपन जिनगीक पाछू लगि जाइ छला। हमहूँ जखन कुम्भ स्नानक रस्ता पकैड़ लेलौं तखन आब हमरो ने हुनके देखौंस करए पड़त।

स्टेशनपर गाड़ीकेँ अबिते गोबरधन दास गाड़ीमे कुम्भ स्नान करैबला बबाजी-सभकेँ टोहियाबए लगला। जेरगर यात्री देख कोठरीमे चढ़ला। यात्री सबहक बीच गोबरधन दास तका-तकी करए लगला। बजैथ किछु ने। नइ बजैक कारण रहैन जे गाड़ीमे चढ़ैसँ पहिनहि ने रस्ताक सम्बन्धमे आकि गाड़ीक सम्बन्धमे किनकोसँ पुछितैथ। मुदा से सभ तँ समस्या रहल नहि। स्टेशनसँ गाड़ी चलि देलक। इलाहाबाद होइते पार करत, रस्तेमे उतैर त्रिवेणी घाटपर गोबरधन दासकेँ पहुँचैक छैन।

तक्का-तक्कीमे गोबरधन दास सिमरिया पुल टपि गेला। माने गंगा टपि गेला। गंगा टपिते मनमे उठलैन जे आब चुप्पा-चुप्पीसँ काज नइ चलत। बगलमे जे बबाजी बैसल रहैन तिनका पुछलखिन-

"महात्माजी! अपने किए घर-परिवार छोड़ि तीर्थ करए जाइ छी?"

जीवन दास महात्मा उत्तर देलकैन-

"पत्नी मरि गेली। असगरे कमा कऽ आनब आकि भानस करि कऽ खाएब।"

उत्तर सुनि गोबरधन दासक मनमे उठलैन, हमहीं ने नीक छी जे घरवाली-ले कनबो तँ नहियेँ करब। बजला-

"जखन मरबापर दुनू गोरे सप्पत-किरिया खेने रही जे कहियो संग नइ छोड़ब से केना संग छोड़ि देली?"

सोझमतिया जीवन दास गोबरधन दासक प्रश्नपर धियान नइ दैत बजला-

"अहूँ कुम्भे स्नान करए जाइ छी?"

गोबरधन दास-

"हँ।"

'हँ' सुनि ओ महात्मा अपन मुड़ी डोला चुप भऽ गेला। बगलमे बैसल दोसर बबाजीकेँ गोबरधन दास पुछलखिन-

"गोसाँइ साहैब! अपने किए बबाजी भेलिऐ?"

परिवारिक तामस नीक जकाँ कर्म दासकेँ अखनो तक नइ मेटाएल छेलैन। बजला-

"अपना घराड़ी नइ अछि, अनके जमीनमे बाबू ई कहि घर बान्हने रहैथ जे जाबे जीब ताबे अहाँक चाकरी करब, जहिया मरि जाएब तहिया अपन घराड़ी लए लेब।"

गोबरधन दास बजला-

"पिताअपने जिनगी भरिक कहा-बद्धी केने छला, बाल-बच्चाक नहि?"

कर्मदास-

"से जँ केने रहितैथ तँ पैछला साल ओ मुइला। आ हुनका

मुइलाक किछुए दिनक पछाइत घराड़ीबला घराड़ी छोड़ैक चेतौनी किए देलैन।"

गोबरधन दास-

"माए छैथ की नहि?"

कर्मदास-

"गुण भेल जे बाबूसँ पहिने माइये मरि गेल छेली।"

गोबरधन दास-

"की गुण भेल?"

कर्मदास-

"भरि दिन बाबू कमाइ छला आ हम घर-अँगनाक काजो करै छेलौं आ भानसो करै छेलौं। जइसँ भानस करैक लूरि भऽ गेल। गामेमे एकटा ठकुरवाड़ी अछि, ओहीमे रहै छी।"

गोबरधन दास गपो-सप्प करै छला आ मने-मन विचारितो छला जे जे दुखनामा हिनका सबहक छैन ओ तँ अपन नइ अछि। स्वेच्छासँ बबाजियो भेलौं आ कुम्भो स्नान करए जा रहल छी।

गाड़ी इलाहाबाद पहुँच गेल। उत्तर भारतमे बबाजी सभ-ले गाड़ी फ्री अछिए। दच्छिन भारतमे ने गाड़ीसँ टी.टी. उतारि दइए। गाड़ीसँ उतैरते गोबरधन दास देखलैन जे प्लेटफार्मसँ त्रिवेणी घाट धरि बबाजीए सभसँ भरल अछि। बबाजीक करमान देख गोबरधन दासक मनमे उठलैन- जिनका गाम-घर आकि परिवार-समाजसँ मोह छैन ओ ने हेरेता-ढेरेता, आ जे बबाजी बनि घरसँ निकलले छैथ ओ केना हेरेता, केतए करता। भने अपन जान हल्लुक अछि।

तीन दिन गोबरधन दासकेँ कुम्भ मेलामे केना बीत गेलैन से नहि बुझि सकला। मुदा एते अपन नियम बनौने रहला जे अपने जे बेसाहैले

पाइ रखने रहैथ ओहीसँ बेसाहि-बेसाहि खेबो करैथ आ दिन-राति घुमबो करैथ। ओना, भूखल-दुखल-ले केतौ अन्न तँ केतौ वस्त्रक दान होइते छल मुदा से सभ लइसँ गोबरधन दास परहेज रखने रहला।

आइ चारिम दिन मेलाक उसरन भेल, सभ यात्री घरमुहाँ विदा भेला। पैछला सभ संगी गोबरधन दासक हेरा गेलैन। विदा होइते बगलमे जे बबाजी रहैन हुनका पुछलखिन-

"गोसाँइ साहैब, अहाँ मेरियामे छी कि असगरे?"

जिनगी दास बजला-

"जखन दुनियाँमे असगरे जन्मो नेने छी आ जीबैक भरोसो रखने छी तखन असगर की आ लसगर की?"

जिनगी दासक विचारमे गोबरधन दासकेँ की भेटलैन से तँ ओ जनता मुदा एते तँ बजबे केला-

"हमहूँ असगरे छी, अहीं संग हमहूँ चलब। रहैक स्थान केतए छी?"

जिनगी दास कहलकैन-

"काशी, कबीर आश्रम।"

जिनगी दासक संग गोबरधन दास काशी आबि आश्रममे रहए लगला। आइ पनरहम दिन छिऐन। पनरहे दिनक आश्रमक विचारो आ क्रियो-कलापसँ गोबरधन दासक मन एते सबल भऽ गेलैन जे पुन: अपन गाम अबैक विचार मनमे जगि गेलैन।

सोल्हम दिन महंथजीक चरण छुबि असीरवाद लैत चरणक चरणामृतकेँ जीवनामृत मानि गोबरधन दास अपन घरक बाट पकैड़ विदा भेला। गामक सिमानपर अबिते मन ततमत करए लगलैन। एक मन जहिना मनाही केलकैन जे जइ गामकेँ छोड़ि देलौं तइ गाम पुन:

घुमि कऽ नहि जाएब..? तहिना दोसर मन कहलकैन- 'तखन करब की?'

गामक बगलेक गाम हरिपुरमे गोकुल दासक स्थान अछि। स्थान कि अछि जे असगरेक परिवार बना ओइठाम गोकुल दास रहै छैथ। हेराएल-भोथियाएल बबाजियो आ बाटो-बटोही सभ अबैत-जाइत रहैए। जखन जे रहल तखन तेकरे सबहक सहयोगसँ दूटा गाइयोक सेवा करै छैथ आ मण्डूल दवाइक कारोबार सेहो करै छैथ। जखन जे रहल तेकरे सभकेँ एक परिवार जकाँ मानि-मिलि झामकेँ कुटि-कुटि मण्डूल बनबै छैथ। जइसँ केतेको रोगक इलाज गोकुल दास करैत रहला अछि। तँए महात्माक संग वैद सेहौ छैथ। कोसिकन्हासँ लऽ कऽ सहरसा-पुर्णियाक संग नेपालोक कहाली सभ अबैत रहै छैन। मणडूलक प्रसिद्धिसँ स्थानमे नीक आमदनियोँ होइत रहल अछि।

सुबहक समयमे गोबरधन दास गोकुल दास ऐठाम पहुँचला। काशी स्थानक अनुभव गोबरधन दासकेँ रहबे करैन, अपन नियमानुकूल अभिवादन करैत बजला-

"गुरु-गोसाँइ, अपनेक दरबारमे हम चौकीदार बनि रहब।"

सभ स्थानक अपन-अपन नियम अछि, अपना नियमानुसार गोकुल दास पुछलकैन-

"बेरागी! अखन अहाँक बालपन अछि। तँए, पुरनिक पात परक पानि जहिना गोली बनि-बनि गुड़कैत रहैए आ जेतेकाल पातपर रहल तेतबे काल ओ अपन स्वच्छ रूप रहि चमकैत रहैए मुदा पातसँ निच्चाँ होइते ओकरा धरती सोंखि निपत्ता कऽ दइ छै, तहिना अखन अहाँक अवस्था अछि। तँए अपन नियमकेँ जँ अपने रक्षा करैक भार उठाबी तखन किछु भऽ सकैए।"

गोकुल दासक विचार सुनि, नवकवरिया गोबरधन दास टाँहि-दे

बजला-

"स्थानक जे नियम हएत तेकरा हम सोल्होअना अंगीकार करब।"

खिलैत गोबरधन दासक चेहरा देख फुलैत गोकुल दास बजला-

"बाउ, दुनियाँमे बहुत लोको छैथ आ बहुत रंगक व्रतो अछि! तँए... ।"

बिच्चेमे गोबरधन दास टोक देलकैन-

"की व्रत?"

गोकुल दास बजला-

"कियो झूठ नइ बजैक व्रत लइ छैथ तँ कियो झूठेक ठीकेदारी करै छैथ, कियो चोरिकेँ अधला बुझि परहेज करैक व्रत लइ छैथ आ कियो चोरिकेँ खनदानी पेशा बुझि परम्पराक निर्वाह सेहो करै छैथ।"

गोकुल दासक विचार सुनि गोबरधन दासक मन लाल-पीअर हुअ लगलैन। जइसँ चेहराक रंग कखनो फुलित, कखनो प्रफुलित, कखनो फलित आ कखनो कलित हुअ लगलैन। जे गोकुल दास बुझि गेला। तँए अपन विचारकेँ रोकि चित्रकूटक घाट पकैड़ लेलैन। जइ घाटपर पहुँचल यात्रीक यात्रा केहेन होएत, ई तँ पहुँचल फकीरे ने बुझि पबता। मुदा गोबरधन दासक बालपन से-सभ नहि बुझि बिहुसैत बाजल-

"गोसाँइ साहैब! अपनेक जे आदेश हेतै से शिरोधार्य जरूर करैत रहब।"

मुस्की दैत गाकुल दास कहलकैन-

"स्थानक कोनो व्रत बान्हल नइ अछि, जेहने हम छी तेहने बनि अहूँ रहू।"

समय बीतल, गोकुल दास गौलोक गेला। समय सेहो आगू बढ़ि थोड़-थाड़ लतैर-चतैर गेल। शुरूहेसँ गोकुल दासक संग गोबरधन दास गाँजाक संग अफीम सेहो अपन जिनगीक क्रियामे जोड़ि नेने छला। खान-पान, रहन-सहन सभ किछु गोकुल दासक अपना ऊपर गोबरधन दास उतारि नेने छला।

गोकुल दासकेँ मुइला बाद महंथाना-ले माने मुख्य कर्ता बनैले पुर्णिया-स्थान जकाँ मारि-पीट सेहो नहियेँ भेलैन। किए तँ सबहक स्थान बुझि सभ अपन-अपन दुख-भूख लऽ कऽ अबिते-जाइत रहै छैथ। स्थानक मुख्य कर्ता गोबरधन दास भेला।

स्थानक प्रमुख कर्ता बनला पछाइत गोबरधन दास गाइयोक संख्या बढ़ा लेलैन आ वैदागिरीक क्षेत्र सेहो बढ़ि गेलैन। जइसँ स्थानक चला-चलती आरो बढ़ि गेल। आमदनी तेजीसँ बढ़ल। रंग-रंगक भनडारा, रंग-रंगक लोक सबहक आबाजाही सेहो बढ़ल। अफीम खेला पछाइत गोबरधन दास गाँजा पीबै छला आ मन जखन फ्रेश होइ छेलैन तखन मुँह-मंगा दान करए लगै छला। जइसँ पाइ-कौड़ीक कोनो थिरी-थमन नइ रहलैन मुदा बाड़ी-फुलबाड़ी लगबैले जे एक बीघा जमीन स्थानक आगूमे कीनलैन से जरूर बँचल रहलैन।

साठि बर्खक उम्रसँ जखन गोबरधन दास ऊपर टपला तखन एकटा विचार मनमे जगलैन। विचार जगैक कारण भरिसक आगूक मृत्युपर नजैर पड़ब छेलैन। किए तँ गोकुल दास सेहो सत्तैर-बहत्तैर बर्खक अवस्थामे मरल रहथिन। गोबरधन दासक मनमे जगलैन जे जँ दसो कट्ठाक बाग-बगिया लगा ऐगला पीढ़ी-ले नइ देने जेबै तखन अपन कृत्तिपने की रहत। यएह सोचि दस कट्ठामे गोबरधन दास बाग-बगिया लगौलैन।

जहिना ऋृषि-मुनि जिनगीकेँ देख मनन करैत आबि रहला

अछि, तहिना गोबरधन दास सेहो केलैन। पाँच कट्ठामे रंग-रंगक पैघ गाछक फलबला वृक्ष आ पाँच कट्ठामे ओहन फल लगौलैन जे फलक साइजमे तँ एकरंगाहे छल मुदा गाछ-बिरीछ जकाँ नहि, बल्कि झाड़ीदार पौध सन। ओना किछु फलक गाछ साले भरिक पछाइत फल दिअ लगलैन, मुदा दसम बर्ख पुरैत-पुरैत सभ बोन-झारसँ लऽ कऽ वृक्ष-बन धरि फड़ए लगलैन। ओना अन्तिम वृक्षक जे फल छल, ओ जखन फुलेक अवस्थामे रहै तही बीच गोबरधन दासक मृत्यु भऽ गेलैन।

❍

शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018

अब-तब

फागुनक आखरी समय। परसूए फगुआ छी। ओना वसन्त पंचमीक जँ हिसाब जोड़ब तँ डेढ़ माससँ ऊपरे वसन्तक आगमनक समय बीति गेल मुदा शीतलहरी चपेटक जे रूप माघमे छल तोहूसँ बिकराले रूप अखन भऽ गेल अछि। तेकर कारण भेल जे भण्डार कोण[12]क हवा तेहेन बरफ-वारी कऽ काल्हि बरिसौलक जे शीतलहरी आरो मोटा कऽ धुना गेल। ओना, धुनाएल शीतलहरी जे अन्हार जकाँ छल तइमे किछु कमी जरूर भेल मुदा बरफाएल तेहेन हवा बनि गेल अछि जे माघोसँ बत्तर हाल मौसमक बनि गेल अछि। जइसँ वसन्तक जुआनीक कोनो रूप-रंग देखमे नइ आबि रहल अछि।

दिन अछैते माने चारिये बजे बेरु-पहरमे अल्लूलाल बाँसक सुखाएल पातो आ कड़चियोक घूर अपना दरबज्जापर पजाइर देलैन।

घूरक धुआँ देख टोलबैया बुझि गेल जे अल्लूलाल भैया घूरमे पजार दऽ देलैन। टोलक सभ एकाएकी ससैर-ससैर घूर लग आबए लगल। सभसँ पहिने कोबीकान्त आएल। तइ पाछू टमाटरनाथ आ बैगनराम सेहो पहुँचल।

जहिना जमगर घूर तहिना जमगर तापस तपनिहार सभ चारूकात बैसला, समय-सालपर गप-सप्प शुरू भेल। गप-सप्प नीक जकाँ पाहि पकड़बो ने केने छल कि बिच्चेमे धनियाँलाल दौड़ल आबि फरिक्केसँ हकाएल जकाँ बाजल-

[12] उत्तर-पच्छिम कोण

"अल्लूलाल काका, अदौरी बाबा अब-तबमे छैथ..!"

'अब-तब'क माने घूर लग बैसल सभ-कियो अपना-अपना काने सुनबो केलक आ अपना-अपना बुधिये विचारबो केलक आ अपना-अपना मने अरथो बुझलक। सबहक मन अपन-अपन, तँए अपना-अपना मनमे सभ सभरंग बुझलक। होइतो अहिना छै किने जे जँ कियो केकरो नीक केने रहल तँ ओकर नीकक छाँह[13] मनमे अबै छै आ जँ अधला केने रहल तँ अधला अबै छै, सबहक अपन-अपन जिनगी, अपन-अपन जीबैक ढंग तँए अपन-अपन सबहक सम्बन्ध। अपन-अपना सम्बन्धे सभ अपन-अपन विचार केलक।

धनियाँलाल दिस मुड़ी उठा कऽ तकैत टमाटरनाथ पुछलखिन-

"की 'अब-तब'मे छैथ अदौरी बाबा?"

अपना ऐठाम अदौरी अदौसँ भोज्य पदार्थमे रहल अछि। बेकतीगत[14] रूपमे सेहो आ समाजिक रूपमे सेहो रहल अछि। समाजिक रूप भेल सामुहिक भोज। ओना, बेकतीगत रूपमे बेकतीगत भोज सेहो होइए, माने एक-आध गोरेकेँ नौत देलिऐन आ भोजक रूपमे ओकरा प्रस्तुत केलौं। मुदा अखन से नहि। भोजनमे भात-रोटीक संगी बना अदौरीकेँ सेहो उपयोग करैत एलौं अछि आ कैयो रहल छी। ओना, एक रूपमे रहितो अदौरी बहुआयामी भोज्य-पदार्थ सेहो छीहे। जेना असगरो अदौरीकेँ दालि जकाँ झोरदार तीमन सेहो बनाएले जाइए। जहिना बरीक झोरदार तीमन भेने बरीकेँ फुटा झोरीकेँ फुटा माने दुनू रूपमे फराक-फराक चलैन सेहो भोज-काजमे अछिए। मुदा जे से.., अदौरीक बेवहार हम सभ दुनू रूपमे कइये रहल छी। माने ई जे झोरदार बना तीमन जकाँ सेहो आ कम झोरदार माने

[13] परछाइ

[14] देहा-देही

रसदार तरकारीक रूपमे सेहो।

अदौरीक आगमन अपना सबहक भोजनमे ओइ दिन शामिल भेल जइ दिनमे दालिक चलैन चलि चुकल छल। दालियो दालिक रूपमे आबि चुकल छल। तइसँ पहने ओहो उसने रूप पकड़ने छल। उसना भेल जे दलिहनकेँ–माने बदाम, राहैड़, खेरही इत्यादिकेँ–गोटे रूपमे उसैन खाएब। ओना चाउरकेँ सेहो अगबो उसैन कऽ माने भात बना खाएले जाइए आ तैसंग दूध-चीनी मिला सेहो खाएल जाइए, जेकरा खीर कहै छिऐ। आ तैसंग नोन-तेल, मिरचाइ इत्यादि मिला सेहो खाएले जाइए। तहिना दलिहनकेँ सेहो अछिए। मुदा सोल्होअना नहि, चाउरक खिच्चैड़ जकाँ तँ जरूर अछि मुदा दूध-चीनी मिलौल खीर जकाँ नइ अछि। ओना, बनौल नहि जा सकैए सेहो नहियेँ कहल जाएत। किएक तँ जहिना चाउरक भुसबा, चाउरक पहिल ठोस[15] मिठाइ छी तहिना दालिक कुटुर-मुटुर नइ छी सेहो केना नइ कहबै। ओना, दुनूक चलैन एक्के दिन शुरू भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, किए तँ भुसबा जेतए गुड़सँ बनैए, तेतए कुटुर-मुटुर चीनीसँ बनैए। गुड़ पहिने भेल तँए भुसबा पुरान अछिए। खाएर जे अछि, मुदा ऐतिहासिक रूपमे अपन स्थान अदौरी-वंशक नइ रहल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जहिना अपना ऐठामक भोजन-विन्यास अपन इतिहास ठाढ़ केने अछि तहिना ने गामक घरो आ घरमे रहनिहार घरवारियोक इतिहास नइ ठाढ़ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना भोज्य पदार्थमे दुनू दृष्टिये- एक दृष्टि भेल नव भोज्य-विन्यासक खोज आ दोसर भेल पदार्थकेँ नव विन्यास बनाएब। जेना, दालिक अदौरी आइक समयमे लगलो बनि सकैए किए तँ जात वा मिलमे पीसा

[15] रूख

दालिकेँ अदौरी बना लेब तेहेन बात पहिने नइ छल। दालिसँ अदौरी बनैमे जेकर सहारा पानि अछि, आ अदौरीसँ बरी बनैमे केते समय लगल अछि, ओ तँ ठीक-ठीक नहियेँ कहल जा सकैए मुदा तँए ठिकिया कऽ कहल नहि जा सकैए सेहो तँ नहियेँ अछि। भोजमे जहिना-जहिना विन्यास सभ परैस-परैस भोजन करौल जाइए तहिना-तहिना विन्यासो समयक संग आबि-आबि शामिल होइत गेल। गाममे घरोक इतिहास तहिना रहल अछि। एक दिस बाधमे जहिना रखबार बाँस-खढ़क–फुसि-फाइसिक–घर बना दिवस गुदस करैए तहिना दोसर दिस सभ सुविधा सम्पन्न घर नहि अछि तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। अही बीचमे ने जिनगीक इतिहास सेहो चलिये आबि रहल अछि।

टमाटरनाथक प्रश्न सुनि धनियाँलालक मनमे उठल- ई टमटरा कोनो आइक बतबनौन अछि, अही दुआरे अदौरी बाबा एकर कोनो मोजर नइ दइ छथिन। सभकेँ–माने बैगन, अल्लू, कोबी इत्यादिकेँ–अदौरी बाबा अपन पार्टनर बनौलैन मुदा एकरा कहियो अपन मेजन[16] छोड़ि संगी नइ बनौलैन किए? अही दुआरे। कहू! जे 'अब-तब'क माने नइ बुझत ओ 'कब-तब'क माने थोड़े बुझत। आ जे अपन-सन बात अपने नइ बुझत ओ हमरा बुझौने बुझत..!

ओना, धनियाँलालक तामस टमाटरनाथपर ईहो रहै जे जानियेँ कऽ तँ हमर जनम मसाला वंशमे भेल अछि, तँए की अपन गुण-धर्म छोड़ि देब। ई[17] तँ किछु छीहे नहि। आड़ि परहक बगुरक गाछ जकाँ अछि जे जेमहर-जेमहर सुर्ज घुमता तेकर उनटा अपन छाँह बढ़ौत..!

ओना, टमाटरोनाथक मन चेतल। चेतल ई जे अखन अल्लूलाल

[16] मेजन आ मसाला एकरंगाहे अछि, कनियेँ अन्तर छइ।

[17] टमाटरनाथ

भैयाक ऐठाम ने बैस कऽ घूर तपै छी, जैठाम सभकेँ-सभ माने कोबी, बैगन सभ कियो छैथ, तखन हमहीं किए अनेरे बकठाँइ जोती। प्रश्न अदौरी बाबाक छिऐन, अपन ओ बुझता...।

मुदा धनियाँलालक मनमे थोड़ेक तामस बढ़िये गेल छल, किएक तँ मने-मन टमाटरक जिनगीक गति-विधि आँकि नेने छल। आँकि ई नेने छल जे, हमर तँ वंशे मसल्ला-चटनीक रहल। ओना, धनियाँ पूर्ण रूपे मसल्ले छी, सुआद गुणे पातकेँ चटनियोँ बनौल जाइए आ तीमनो-तरकारीमे देल जाइए। ई तँ बलिहारी हमर भेल, से टमाटरकेँ थोड़े हेतैन। कखनो नून-मिरचाइक संग चटनी बनि जाइ छैथ तँ कखनो गुड़क संग खटमिट्ठी! तेतबे नहि ने, कखनो बैगनकेँ धोखा दऽ कऽ दोसर संगीक संग भऽ तरकारी बनि जाइ छैथ तँ कखनो ओहिना–माने बिनु आगिक मुँह देखनहि जीविते–सलादक रूपमे थारीमे चलि जाइ छैथ..!

टमाटरनाथकेँ मुँह बन्न केने देख धनियाँलाल सेहो अपन मुँह बन्न करैत ओम्हरसँ आँखि हटा अल्लूलाल दिस देलक।

धनियाँलालक नजैर पड़िते अल्लूलाल पीड़ाएल मने बजला-

"धनियाँलाल बौआ, अदौरी कक्काक सम्बन्धमे की बाजल छेलह?"

धनियाँलालकेँ जेना बुकौर लागि गेल। ओना, अल्लूलालक मन भीतरे-भीतर कलैप रहल छेलैन। कलैप ई रहल छेलैन जे अदौरी काका सन लोक जे समाजो[18] आ करो-कुटुमक बीच लब्ध प्रतिष्ठ भोज्य विन्यास बनि अपन इतिहास बनौने छैथ, आइ ओ इज्जत हीन बनि सभ दिससँ कटि-कटि मरि रहला हेन! समाजक संग कर-कुटुमकेँ के कहए जे परिवारोक भोज्य विन्याससँ माने तीनू दिससँ क्षणे-क्षण,

[18] समाजिक भोज

पले-पल कटैत पनरहअना कटि चुकल छैथ! मात्र एकअना आब जीवित रहि गेल छैथ। आखिर ऐमे अदौरी कक्काक कोन दोख भेलैन जे मरि रहला अछि! की ओ मरैबला छैथ? की लोकक खान-पानमे बढ़ोत्तरी नइ भेल अछि? की अदौरी दूषित भोज्य पदार्थ छी..? तखन हुनका एहेन बेलना किए बेलए पड़ि रहल छैन जे अछैते औरदे कण्ठ लगमे प्राण चलि आएल छैन..!

मनक संग अल्लूलालक विचार सेहो थोड़ेक आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते मनमे उठलैन जे निरदोस अदौरी काका दालिक चपेटमे चपटा गेला अछि। मरब अनिवार्य छैन। लोकक खानो-पान एहेन बनि रहल अछि जइमे अदौरीकेँ महत्तहीन मानि-मानि भोज्य विन्याससँ निकालि रहल अछि। की सभ कियो बिसैर गेला जे दादी-नानी केना तेबखाकेँ पहिने कनी रौद चटा जाँतमे दरैड़ भरि दिन पानिमे स्नान करा डोमरौउ बासनमे पोखरिक घाटपर खोंइचा बेरा, पानि गाड़ि, रौदमे सुखा, जाँतमे पीसै छेली। पछाइत पवित्र-पानिमे सानि अदौरी खौंटे छेली आ घरमे जोगा-जोगा राखि मासक मास दिन खाइ छेली। की लोक ईहो बिसैर गेला जे अदौरी सुखि कऽ शुद्ध अन्नक रूप पकैड़ लइए..! जहिना अन्नकेँ समय-समयर फटकलो जाइए आ रौदमे सुखौलो जाइए, जइसँ ओ सालक-साल अपन रूपमे जीवित रहैए तहिना ने अदौरीक सेहो अछि।

ओना, दलिहनमे तेबखा रहितो अपन गुण-धर्ममे आन दालिसँ भिन्न सेहो अछिए। भिन्न ई अछि जे जैठाम आन-आन दालिमे लसपन नइ अछि वा तेतेक कम अछि जे छिलका आ अन्न अलग भऽ जाइए मुदा तेबखामे से नइ अछि। ओकरामे लसपन एतेक अछि जे एक तँ जातमे दरड़ने नइ दर्ड़ल जाएत, तैपर खोंइचा आ गुद्दा तेना सटि जाइए जे फटकने नइ फटकल जाएत। तँए कनी आन दालिसँ मेठनियाँ अछिए। ओही मेठनियाँक चलैत तेबखा अदौरीक रूपमे प्रतिष्ठित

भोज्य विन्यासमे शामिल भेल। ओना तेबखा अपन चालिमे कट्टर सेहो अछिए। कट्टर ई अछि जखन दालिक उजैहिया चढ़ल आ दालि सभ तेलमे छन-छना बरी बनए लगल तखन तेबखा तेल स्नानक लोभ नइ केलक। तँए बरीसँ बरा गेल। मुदा ओ[19] की सोझे कट्टर अछि, हवा-बिहाड़ि देखने थोड़े डेरा जाइए। नहि। केहनो विपरीत हवा-पानिसँ लड़ैले सदिखन तैयार रहैए। अधिकांश दालि जखन बरी बनि गेल आ तेबखाकेँ धकिया देलक, तखन ओहो हनुमानजी जकाँ एक्केबेर समुद्रमे कुदि बर बनि गेला। बरीसँ बर नमगरो-चौड़गर आ स्वादिष्टो होइते अछि। बरी तँ दहीं-दिसिया छी जे तेलो आ पानियोंक संग रहैए, मुदा बर तँ बर छी, तँए ने ई बड़ भेल। ओ बर तँ बड़ बनल गामक भत-भोजमे, मुदा गामो तँ गामे छी किने। गामक किछु भाग बजरियाए नै गेल अछि सेहो नइ ने कहल जा सकैए। ओहो तँ बजरियाइये गेल अछि तँए अदौरी, बर भलेँ छुटि जाए वा कमि जाए मुदा डोसा तँ प्लेटमे एबे करत किने।

ओना, गामो-समाजक भोजमे बदलाउ नइ आएल अछि सेहो थोड़े नइ कहल जाएत। भलेँ हम सीता मैयाकेँ जनकपुरक फुलबाड़ीमे फूले लोढ़ैक गीत किए ने गाबी, मुदा तेकरा लोक बुझि केतेक रहल अछि आ मानि कऽ मानि दए मानि केतेक रहल अछि..? आइक परिवेशमे समाजक भोजक ई रूप बनि गेल अछि जे बजारसँ समान कीनि चौबीस घन्टाक पेसतर नमहर-सँ-नमहर[20] भोज कए लइ छी मुदा भत-भोज सएह नइ ने छी। एकटा अदौरी विन्यासक प्रक्रिया आठ दिनक अछि। अहिना आनो-आन विन्यासक प्रति कर्म अछि। जेतेक समय लगा भोजैत भोजनक पंचदान करै छैथ ओतेक ने

[19] तेबखा
[20] खेनिहारक दृष्टिये

हुनकामे अन्य पंचक प्रति सिनेहो जगै छैन आ पंचो अपन रचल-बसल पूर्वजक इतिहासकेँ गहराइसँ देखै-सीखै छैथ।

धनियाँलालकेँ किछु ने बजैत देख अल्लूलाल बुझि गेला जे बेचाराकेँ बुकौर लागल छइ। बजला-

“बौआ, समय तँ देखते छहक जे केहेन दुर्काल अछि। तेहेन धुनि लागल अछि जे पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन सभ दिशा अन्हराएल अछि। जैठाम नजरिये अन्हरा जाएत तैठाम कियो केते दूर देखत।”

ओना, अल्लूलालक पेटमे आरो बात छेलैन जे बजैक क्रममे बजितैथ, मुदा बैगनरामक कान तेते भरि गेलैन जे अल्लूलालक विचारक बिच्चेमे बजला-

“धनियाँलाल, पहिने ई कहह जे अदौरी कक्काक प्राण छुटि गेलैन आकि हुकहुकियो बँचल छैन?”

धनियाँलाल बाजल-

“काका, साँस तँ कनी-कनी चलै छैन, मुदा देहपर जे माछी बैइसै छैन से नइ बुझि पबै छैथ!”

बैगनराम-

“बाजब केहेन छैन?”

धनियाँलाल-

“बाजब की रहतैन, बोलती बन्न भऽ गेल छैन!”

‘बोलती बन्न’ सुनि बैगनरामक मन तरैस कऽ पसीज गेल। मन पड़लै अपन जीवन साथी। समाजक[21] महापर्व[22]मे दुनू गोरे संगे-संग प्रतिष्ठित संगी बनि केता युगसँ संगे आबि रहल छेलौं, आइ संगी मरि

[21] लोकक
[22] भोज

रहल अछि! आब असगरे..! ओना, आरो-आरो संगी सभ छथिये मुदा जहिना गाछक फड़ हम छी तहिना ने अदौरी काका सेहो मनुखक कलाकारीक गाछक फल छैथ। ओना, कहैले आकि खाइयो-ले रंग-रंगक अदौरी, तेबखाक कोन बात जे आनो-आनो दालियो आ अदहा-छिदहा चाउरो पीस कऽ मिला बनौल जा रहल अछि, आ लोको खाइते अछि, मुदा जँ अदौरीक वंशपर नजैर दइ छी तखन ओहिना बुझि पड़ैए जेना चानक बीच बसल अशोभक गाछक निच्चाँमे बैसल बुढ़िया दादीकेँ सूत कटैत देखै छिऐन।

तैबीच अल्लूलाल बाजल-

“बैगनराम, जे राम से राम! हिया नइ हारह, जहिना अदौरी काका अन्तो-अन्त तक अपन चालि पकड़नहि रहि गेला तहिना अपनो सभकेँ निमाहब..!”

मिरमिराइत बैगनराम बाजल-

“हँ, से तँ बरबेस भैया कहलह, मुदा किछु भेला तँ संगिये भेला किने। हुनका संगे अपन जान नइ जाएत, मुदा संगीक प्राण प्राणमे मिलल नइ रहत सेहो केहेन हएत। ई तँ अपनो मन मानैए जे ऐगला पीढ़ी बिसरनमा अबैए, लगले बिसैर जाएत।”

बैगनरामक मनक क्लेश पेब अल्लूलालक मन सेहो क्लेशसँ कलैप उठलैन, बजला-

“बैगनराम! तूँ छोट भाए समतूल भेलह। मुदा जहिना हमहूँ कोनो गाछक फल छी, कोबी जकाँ फूल आकि पालक जकाँ पातक साग नहि, तहिना ने तोहूँ छह!”

सह पेब सहैट कऽ बैगनराम बाजल-

“हँ से तँ छीहे भैया, एकरा के काटत!”

बैगनरामक विचारमे सक्कतपन देख अल्लूलालक मन सेहो थोड़ेक सकताए लगल। ओना, बैगनरामक अपेक्षा अल्लूलाल सभ दिन सकताएले रहला, मुदा बैगनरामक वैचारिक सक्कतपन अल्लूलालक आशकेँ बढ़ा देलकैन। बजला-

“बैगनराम! जहिना तोरा आगिमे पका, सिलौटपर रखि लोढ़ीसँ थकुचि-थकुचि भुरता बनबै छह, तइसँ की हमर गनजन कम अछि?”

‘गनजन’ सुनि बैगनराम नजैर उठा अल्लूलालपर दैत बजला-

“से तँ ठीके, मुदा..?”

‘मुदा’ सुनि अल्लूलाल भरोष दैत बजला-

“जीता-जिनगी अहिना होइ छै, तइले अनेरे चिन्तो करब नीक नहि। जहिना एक दिस लोक तोरा सिलौट-लोढ़ीपर भुरता बनबै छह तहिना ने तेलमे तरि-बघैर मान-प्रतिष्ठा सेहो दइते छह।”

अल्लूलालक विचार सुनि बैगनरामकेँ सबुर भेल। बजला किछु ने मुदा मनक मुसुकपनी मुँह होइत जरूर निकलए लगलैन। तैबीच धनियाँलाल बाजल-

“अल्लूलाल काका, आब ते देखते छहक जे प्राण छुटला पछातियो तीन-तीन दिन लहास घरमे, परदेशिया अबै दुआरे पड़ल रहैए, तँए जँ अदौरी बाबाक प्राण रातिमे छुटि जेतैन तैयो काल्हि भरि दिन जिगेसा-पातीमे बितबे करतैन।”

मुड़ी डोलबैत अल्लूलाल बजला-

“भने मन पाड़ि देलह। काल्हि भोरे भेँट करबैन।”

❍

शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

अगिलह

पूर्णिमाक हिसाबसँ चारि दिन पहिनहि चैत मास चढ़ल। फागुनक पूर्णिमा-पाबैन[23] पाँचमे दिन भेल मुदा सकराँइतक हिसाबसँ अखन फागुने छी आ पनरह दिन आरो रहत तेकर पछाइत चैतक आगमन हएत।

आने साल जकाँ अहू बेर आमक गाछियो आ कलमो अदहा-छिदहा मोजरबो कएल अछि आ अदहा-छिदहा नहियोँ मोजरल अछि। एहेन कोनो अही बेर भेल से बात नहि, किए तँ आन फल आकि फसल जकाँ आम तँ नहि, जे सभ साल किछु-ने-किछु फड़बे करत। आम तँ आम छी जे गोटे साल दूअना, गोटे साल चारिअना, गोटे साल आठअना आ गोटे साल बारहअना फड़त। ओना, कहब जे अनुकूल मौसम पौने सोल्होअना फड़त से अपना जिनगीमे कहियो ने देखलौं अछि। हँ, एते जरूर देखलौं जे 1962 इस्वीमे करीब चौदहअना गाछ फड़ल। समय अनुकूल भेनौं सोल्होअना कहियो ने फड़ल अछि। तहूमे सभसँ तारीफ ईहो अछिए जे सोलहन्नी कलमी आमक कलम आ सोलहन्नी सरही आमक गाछी नहियेँक बरबैर अछि। मुदा कलमक माने भेल जइमे सोल्होअना कलमीए आम होइ। तहिना सरही गाछीक माने भेल जइमे सोलहोअन्ना सरहीए आमक गाछ होइ। ओना, कलमोमे गोटि पङ्करा सरही आमक गाछ रहितो ओ कलमे कहबैए।

[23] फगुआ

कलमी-सरही आमक बीच अपन खास सम्बन्ध छै, जे आन-आन चीजक गाछ-बिरीछमे नइ अछि आ पशु-पक्षीक तँ बाते भिन्न। ओ अछि जे जड़ि सरही आमक रहल माने नीचला भाग सरही आ धड़सँ ऊपर कलमी आमक रहल। एहनो सम्बन्ध कलमी-सरही आमक गाछक बीच अछि। ओना, सरहीमे सेहो केतेको नीक आम अछि, नीकक माने भेल जेकर रूपो नमहर होइ आ गुदगर-रसगर सेहो हुअए आ तैसंग खाइयोमे नीक। जँ सरही आमक गाछकेँ कलम लगा लगौल जाइए, जइमे दुनू दिस माने जड़ियो दिस आ धड़ो-मुड़ी दिस सरहीए भेल, मुदा जँ खुदा-न-खास्ते ओही गाछमे निच्चाँ दिससँ गोटे डारि निकैल गेल आ फड़ल, तखन सरहियो आम एक्के गाछमे दू रंगक फड़ि जाइए। जइसँ गाछक अनुमान करब कठिन भऽ जाइए। तहूमे जँ एकटा मीठगर आम भेल आ दोसर खटगर तखन तँ ओ परिवारे जकाँ आरो तेसर विवाद ठाढ़ कइये दइए। किए तँ एक गाछक फल रहितो रंगो-रूप आ गुणो-सुआदमे तेते फरैक जाइए जे परिवारक फरीक जकाँ बनि जाइए।

मुदा जे अछि, जेतए अछि, से तेतए रहह। फागुन-चैतक बीच पड़ल औझुका दिन गुणगुनाए लगल। गुणगुनाए ई लगल जे आमक गाछ माघमे गुजरैए, फागुनमे मोजरैए आ चैतमे टिकुला भऽ चैतेक अन्तमे अपन पहिल पाबैन[24] चटनीक संग सेहो मनैबते अछि। मुदा ऐबेर चारि दिन चैत चढ़ला उपरान्तो आ चारि दिन फागुन बीतला पछातियो गाछक मज्जर ओहिना मुनल अछि जेना मज्जरक शिशुपन होइ। तँए फुलाएल गाछ बुझि मज्जरक सखी-सहेली[25] अखन लगमे किए औत। ओना, ई चैत मलेमास लगल महिना छी, जेठमे मास

[24] जुड़शीतल

[25] छोट-छोट माछी-मच्छर

दिनक मलेमास पड़त। माघमे आन साल जकाँ शीतलहरी नइ भेने रौदमे सेहो कनी-मनी तीखपन आबिये गेल छल जइसँ समैयोमे किछु कड़कड़ाहट जरूर आबिये गेल अछि। उत्तर दिशासँ मधुमाछियो आ चिड़ैयो-चुनमुनीक आबाजाही दच्छिन-मुहेँ जरूर हुअ लगल मुदा आम-जामुनक फूल सिकुड़ले अछि फड़ैक तँ बाते फराक।

सुभहक समय, पक्षधर काका सबेरे ओछाइपन सँ उठि गाछी पहुँच गाछ सभकेँ निहारए लगला जे केहेन आम ऐबेर फड़त। किए तँ आन बहुतो फल अछि जे कैयो बेर फुलाइ-फड़ैए मुदा आम तँ सालमे एक्केबेर फड़ैए। ओना, आरो केतेको एहेन फल अछि जे सालमे मात्र एक्केबेर फड़ैए…।

नोकरीदार आदमी पक्षधर काका, मासे-मासे गाम अबै छैथ। गाम अबिते अपन खेतो-पथारक जुति-भाँति लगबै छैथ आ अपन अरजल जे बीघा भरिक गाछी छैन तइमे छुट्टीक बेसी समय सेहो बितबै छैथ। ब्लौक ऑफिसक नोकरी, स्टाफक कमी दुआरे काजक बेसी भार तँए मासमे एकटा सी.एल. आ एकटा रबि मिला दू दिनक छुट्टीमे पक्षधर काका मासे-मास गाम अबै छैथ। सएह आएल छैथ आ गाछ सभकेँ निहारि-निहारि देख रहला अछि। ऐगला मासमे सेवा निवृत्त हेता आ जेठसँ गामेमे रहता।

अपन जिनगीक पहिल बुझू आकि अन्तिम, पक्षधर काकाक यएह कमाइ–माने बीघा भरि जमीन कीनि अपना हाथे गाछी लगाएब–रहलैन। ओना, पक्षधर काकाकेँ पिताक देल पाँच बीघा जोतसिम खेत सेहो छैन, मुदा दस कट्ठाक जे गाछी-कलम रहैन ओ बाढ़िमे तेना घेरा गेलैन जे तीन मास धरि जड़िमे पानि लागल रहने सभटा सुखि गेलैन। तँए, अन्न-पानि उपजबैबला खेत कीनैक विचार मनमे तेना नइ उठलैन जेना गाछी-कलम लगबैक उठलैन। छोट

परिवार, दरमाहासँ कहियो अभाव नइ रहलैन। जइसँ मनमे अतृप्ति कहियो ने भेलैन। तहूमे दुनू कन्यादान सस्तेमे निपैट गेलैन, तँए आन कन्यागत जकाँ पक्षधर कक्काक देहो-पीठ नहियेँ सड़कलैन। आजुक परिवेशमे भलेँ बिनु दहेजक बिआहकेँ लोक सस्त कहैए मुदा ओ सस्त नहि जिनगीक कृत्तिक बेवहारिक रूप अदौसँ रहल अछि। दुनू बेटीसँ जेठ बेटा- ज्ञानधन, जे अपना विचारे बी.ए. केलाक बाद हाइ-स्कूलमे शिक्षक छैन। अपन पिताक देल पाँचो बीघा जोतसिम जमीन बटाइ लगौने छैथ।

शुरूक जिनगीमे, जखन माता-पिता पक्षधर कक्काक जीविते रहैन आ धिया-पुता नहि भेल छेलैन, तही समयमे जे दरमाहासँ बचत भेलैन ओही रूपैआसँ एक बीघा खेत सड़कक कातेमे कीनि लेला। ओना खेत गहींर छल, जेकरा साले-साल भरबैत बीस सालक नोकरी चलि गेलैन। तैबीच ईहो भेलैन जे बाल-बच्चाकेँ पढ़बै-लिखबैसँ लऽ कऽ बिआह-दान करैत पचीस बर्खक नोकरी खपि गेलैन। असगरे दुनू परानी–माने पक्षधर काका आ विचारी काकी–दरबज्जाक ओसारपर बैसल रहैथ, बेरुका तीन-चारि बजेक समय रहै, चाह पीब दुनू परानी अपन जिनगीक खोद-वेद करए लगला। विचारी काकी बजली-

“एते दिनक नोकरी तँ माता-पिताक सेवासँ बाल-बच्चाक सेवामे चलि गेल, आब अपना सेवा-ले किछु करू।”

विचारशील पत्नीक विचार सुनि पक्षधर कक्काक मनक भूलल-विसरल सरिताक वेगमे पत्नीक विचारकेँ बसा आगूक बाट दिस ताकए लगला। एकाएक विचारक धारमे गति एलैन, जइसँ पत्नीक विचारमे सहमत जतबैत पक्षधर काका बजला-

“बेस बात कहलौं! ओना, अपनो विचारमे छल जे अन्न-पानिक खेत अछिए मुदा कलम-बाग नइ अछि।”

पतिक मुहसँ ‘कलम-बाग’ सुनि विचारी काकी चौंकली, मुदा लगले मनमे भेलैन जे अनेरे किए चौंकै छी। जखन बजनिहार सोझहेमे छैथ तखन किए ने मुँह खोलि पुछिये लिऐन। लगले मन घुमलैन, घुमिते बजली-

“कनी सोझ मुहेँ बजियौ।”

हिमालय पहाड़सँ दच्छिन मुहेँ आ उत्तर मुहेँ साइयो धार बहैए। जइमे छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ रंग-रूपक धार अछि। ओना, पहाड़क एक झड़नासँ झहरैत जलधर एक धारा बनि आगू बढ़ैए, जइमे अनेको जलधर मिलैत-जुलैत मोटाइत आगू बढ़िते अछि। तहिना अनेको शुद्ध निर्मल क्षीणकाय धारा सेहो अपन रूप-रंग बना नहि बहैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओहने क्षीणकाय धाराक धारवाह[26] पक्षधर काका सेहो छैथ। जेहने अपन जीबैक सुबल रखने छैथ, तेहने कुबलसँ परहेज नइ केने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जइसँ अपन जिनगीकेँ अपन विचारी-हाथमे समैट अपन जीवन यात्रा करिते आबि रहला अछि।

पत्नीक विचार सुनि, पक्षधर काका अपन हाथक आँगुरपर हाँइ-हाँइ हिसाब जोड़ए लगला। आँगुरपर-आँगुर चलिते ठोरपर पटपटी आबिये गेल रहैन। विचारक एक सिमानपर जा हिसाबकेँ अँटका पक्षधर काका बजला-

“बारह बर्ख नोकरी बाँकी अछि, जहिना एतेटा जिनगी नोकरीमे बीतल तहिना आब आधा समय सरकारक काज करबै आ आधा अपन करब। सरकारकेँ जँ स्टाफक अभाव छै तँ ओ अपन स्टाफ बढ़ा लिअ। मुदा आठ घन्टासँ एक्को मिनट बेसी समय ऑफिसमे नइ देब। एक घन्टा जे गाम अबै-जाइमे लगैए से समय अपना समयमे सँ

[26] यात्री

लगाएब।”

पतिक विचारकेँ विचारी काकी नीक जकाँ नइ बुझि सकली, मुदा तैयो बजली-

“बारह बर्ख नोकरीकेँ कम बुझै छिऐ?”

विचारक आवेगमे पक्षधर काका बढ़ि रहल छला, जइसँ गतिहत मन गतिशील भइये रहल छेलैन। बजला-

“कम किए बुझबै, मुदा बड़ बेसी भेल सेहो केना मानब..! फले सबहक गाछकेँ देखै छिऐ जे अनरनेबा सन-सन फल साले भरिमे[27] फड़ैए, आमक गाछकेँ पान सालक पछाइत फड़ैक गात बनैए, मुदा ताड़ तँ बारह बर्ख बीतला पछातिये ने फड़ब शुरू करैए। जँ ताड़क फल-जोकर गाछ रोपए चाहब, तइले ते एक्को क्षण गमाएब फलसँ दूर रहब हएत किने?”

विचारी काकी बजली-

“नीक नाहाँति अहाँक बात नइ बुझलौं।”

ओना, विचारी काकीक बात पक्षधर काकाकेँ केतेक नीक लगलैन आकि अधला लगलैन से तँ पक्षधर काका जानैथ, मुदा बुझि पड़ल जे अपन जिनगीक कलम-बाग दिस नजैर दौड़ रहल छैन। तैबीच पक्षधर काका बजला-

“बातक बात ने ओहिना बुझब मुदा काजक तँ काजसँ हएत। जाबे सरकारी नोकरीसँ सेवा निवृत्त हएब, तैबीच बीघो भरि जँ गाछी-कलम लगा लेब तहीसँ जीवन कटि जाएत।”

बारह बर्ख पूर्व पक्षधर काका अपन गाछी-कलम लगा चुकल छला। आइ ओहीमे घुमि-घुमि देख रहल छैथ। अपन लगौल बीघा

[27] एक्के बर्खमे

भरिक कलम-गाछी पक्षधर कक्काक छैन। ओना पिताक अमलदारीमे दसे कट्ठाक रहैन, मुदा नइ रहैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, ई जरूर भेलैन जे बाढ़िक पानि गाछीमे जमने पक्षधरे कक्काक नहि, गामक केतेको लोकक गाछी-कलम नष्ट भेलैन। गामक पानि, गामक सड़क बनने बन्हा गेल, जइमे बरखोक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो आबि उपो-उप भरि देलक, जइसँ चौर-चाँचर जकाँ पानि बसि गेल। जखन उपजाउ जमीन चौर-चाँचरक रूप लेत तखने ओकर उपजाक संग गाछो-बिरीछ आ चिड़ैयो-चुनमुनी बदलिये जाएत। तैसंग पशुसँ मनुख धरिक जिनगीमे सेहो बदलाव ऐबे करत।

गुलाबखास आमक गाछकेँ पक्षधर काका निहारि-निहारि देख रहल छला। देख रहल छला जे गाछ तँ खूब मजरल अछि मुदा अखन धरि मज्जर फुलाएल किए ने? ओना, पक्षधर काका अपन नजैर गाछक मज्जरपर देने छला मुदा मन समयक हिसाबपर पहुँच गेलैन। चारि दिन चैतकेँ चढ़ना भऽ गेल मुदा अखन धरि मज्जरक कोढ़ी फलकल किए ने? जरूर किछु कारण अछि। केतौ-ने-केतौ कोनो रोगक प्रकोप जरूर भेल अछि। जे मज्जर फागुनमे फुला कऽ चैतमे दाना[28]क रूप पकैड़ लइए, ओ चारि दिन चैतकेँ बीतला पछातियो अखन धरि फुल किए ने भेल? एकाएक पाछू नजैर घुमेला। पाछू दिस नजैर घुमबिते पक्षधर कक्काक मनमे उठलैन जे मासे तँ ने पछुआ गेल अछि? साले-साल तँ नहि मुदा तीन सालपर जहिना मलेमास बनि, बिनु हिसाबेक निकैल जाइए तहिना ने दाहा-मुहर्रम पाछू मास मास दिस धुसैक जाइए। मन कहलकैन- बैशाखक पछाइत ऐगला मास एक मासक मलेमास हएत, माने भेल जे एक मास पाछूक मासक मौसम भरिसक छी। तखन तँ भेल जे चारि चैत नहि, चारि फागुन

[28] आमक दाना/फल

छी। माने फागुनक शुरूआतक समय छी। माघमे पल्लव गुजरबे करैए, जइमे फलक मज्जरो आ पल्लवक कलशो छिपल रहैए, ओही छिपलमे सँ कोनो-कोनो मजैर फड़बो करैए आ कोनो-कोनो कलैश-कलैश बढ़बो करैए...।

विचारिते-विचारिते पक्षधर कक्काक मन मानि गेलैन जे समयक हिसाबसँ मज्जरमे फूल नइ पकड़लक हेन। ऐमे गाछक कोनो दोख नइ अछि। आगू बढ़िते पक्षधर कक्काक नजैर सपेता आमक गाछपर गेलैन। सपेता गाछ लग पहुँचते पक्षधर कक्काक मनमे उठलैन, गाछीमे सभसँ निम्मन आम यएह अछि। मुदा लगले मनक विचारक आगू दोसर विचार आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। ठाढ़ ई भेलैन जे अही आमकेँ लोक मालदहो कहैए। मुदा, की दुनू एक्के छी? दुनू तँ एक तखने ने हएत, जखन दुनूक सभ गुण एकरंग होएत तखन ने दुनू एक हएत। जँ से नहि, तखन नामे किए एक हएत। हँ! ई भऽ सकैए जे एक सपेता दोसर मालदह भेल। दुनूक नामो तँ भिन्न अछिए। तहीकाल सात-आठ बर्खक एक बचिया पक्षधर कक्काक लगमे आबि कहलकैन-

"बाबा, बाबी गामपर अबैले कहलैन अछि।"

पक्षधर काका बजला-

"किए?"

बच्चिया कहलकैन-

"पाहुन एला हेन।"

'पाहुन' सुनि पक्षधर काका गुन-धुनमे पड़ि गेला। गुन-धुनक कारण भेलैन जे परिचित पाहुन छैथ कि अपरिचित। ओना, पाहुनकेँ दरबज्जापर आएब शुभ भेल। मुदा ओइ शुभमे परिचित-अ-परिचित पाहुनक अन्तरो अछिए। दरबज्जापर पाहुन एला अछि, मुदा अपनो तँ काजेमे छी। केहेन पाहुन छैथ जइले अपन काज बाधित करब। तहूमे

नोकरीक अन्तिम मास छी, छुट्टी बीतते ऑफिस नइ जाएब सेहो केहेन हएत। एते-दिनक नोकरी जखन नीकेसँ निमाहि चुकलौं तखन अन्तिम मासमे कोनो नोछार लगा लेब, सेहो केहेन हएत। जखने कोनो नोछार लगत तखने देखल आम देखले रहि जाएत।

अपन बाधित होइत विचारकेँ नीक जकाँ पक्षधर काका समेटबो ने केने छला कि विचारक आगू पत्नी आबि गेलखिन। पत्नीपर खौंझ उठलैन, खौंझ ई उठलैन जे जँ पाहुन अगुताएल आएल रहितैथ तँ भेँट करैक बात करितैथ। वएह बच्चा संगे नेने अबितैन। एतबो अपना उकीत नइ भेलैन जे जाबे हम घुमि कऽ जइतौं तैबीच आगत-भागत[29] करैत कहितथिन जे जाबे अहाँ चाह पीब ताबे कलम-बाग देख आबि जेता।

गुन-धुन करैत पक्षधर काका गाछ देखब छोड़ि घरमुहाँ भेला। मुदा मनमे फेर वएह बात उठि गेलैन। केहेन पाहुन छैथ? पाहुन बनि भगवान रामो अयोध्यासँ मिथिला आएल रहैथ...।

ओना, पाहुनक प्रति पक्षधर कक्काक मन थीर रहबे करैन, मुदा अपन बाधित होइत समय देख मन झुझुआइते रहैन जे काजक समय ने अकाजमे चलि जाइन। मुदा लगले पक्षधर कक्काक मन आगू बढ़लैन। आगू बढ़िते विचार उठलैन जे काजक आ अकाजक समय तँ एकरंग काज करैक दौरमे होइए, ऐठाम तँ से नइ अछि। एक दिस दरबज्जापर पाहुन आएल छैथ दोसर दिस अपने गाछी-कलम देख रहल छेलौं। दुनू काजक बीच, धरती-असमानक अन्तर अछि। मनुख-मनुख भेला, गाछी-कलम गाछ-बिरीछ भेल।

पक्षधर काका दरबज्जासँ कनी फरिक्के रहैथ कि दरबज्जाक कुरसीपर सँ उठैत चाहक गिलास नेने मुनीलाल डेढ़ हाथ जोड़ि पक्षधर

[29] चाह-पान

काकाकेँ प्रणाम करैत बाजल-

"भाय साहैब, गोड़ लगै छी।"

ओना, पक्षधर कक्काक नजैर सेहो मुनीलालपर पड़लैन। मुदा नजैर पड़िते, मनमे जेना अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन। भनकसँ पता चलि गेल छेलैन जे मुनीलाल पचपन बर्खक अवस्थामे दोसर बिआह करत। जे सभ किछु ठीक-ठाक भऽ गेल छइ। अन्तिम विचार करए आएल अछि। तँए मुनीलाल सन पाहुन देख पक्षधर कक्काक मनमे ओते जिज्ञासा नइ भेलैन जेते नव पाहुन वा मराएल-हेराएल पाहुनकेँ देख खुशी होइ छेलैन। ओना, ने अपना मुहेँ मुनीलाल बिआहक सम्बन्धमे कहने छेलैन आ ने अपना काने पक्षधर काका सुनने छला, तँए खुलि कऽ किछु बाजबो उचित नहि बुझि पक्षधर काका दरबज्जापर आबि बिनु किछु असीरवाद देने चौकीपर बैस बजला-

"बौआ! की हाल-चाल? ऐगला मास सेवा-निवृत्त भऽ जाएब।"

ओना, पक्षधर काका दुनू पक्षक विचार रखि बाजल छला मुदा मुनीलालकेँ अपन काजक उत्साह छेलै तँए सेवा-निवृत्तिक विचार छोड़ि बाजल-

"भाय साहैब, हाल-चाल सभ नीके अछि। एकटा विचार कहए एलौं।"

'एकटा विचार कहए एलौं' सुनि पक्षधर कक्काक मन चनकलैन, मुदा अपनाकेँ सम-गम रखैत बजला-

"की?"

मुनीलाल-

"भाय साहैब, अहाँकेँ तँ बुझले अछि जे पैछला साल पत्नी मुइली। पैछले महिना साल लगि गेलैन। दोसर बिआह करए चाहै

छी।"

मुनीलालक विचार सुनि पक्षधर कक्काक मन लहैर गेलैन। लहैरैक कारण भेलैन जे मुनीलालकेँ दूटा बेटा, जे दुनू पढ़ि-लिखि परिवारक संग बाहर रहैए आ पैंतीस बर्खक जेठ बेटी विधवा भऽ अपने ऐठाम रहै छइ। जेकरा सखा-सन्तान नइ छइ। ओना बेटीकेँ वैधव्य भेला पछाइत माने पति मुइला पछाइत मुनीलाल अपनो आ गामो-समाजक केतेको गोटे दोसर बिआह करैले कहबो केलखिन मुदा सावित्री एकेठाम सभकेँ कहलकैन- 'सृष्टि-कर्ता जे भोग उठा लेलैन, तइ भोगक पाछू आब नइ पड़ब। दुनियाँ बड़ीटा अछि। भीख-दुख मांगि गुजर करब मुदा दोसर पुरुखक मुँह नइ देखब।'

पक्षधर काका मुनीलालक आँखि दिस तकैत बजला-

"आब तोहर उमेर बिआह करैबला छह जे बिआह करबह?"

"भैया! अहाँ तँ सभ हाल जनिते छी, बिनु घरनी घर भूतक डेरा।"

मुनीलालक बात सुनि एकाएक पक्षधर कक्काक नरसिंह तेज भऽ गेलैन। नरसिंह तेज होइते देहमे कम्पन्न आबए लगलैन। बजला-

"जँए सभ हाल जनै छी, तँए ने मनाही करै छिऔ। एतबो ने तोरा शर्म होइ छौ जे पैंतीस बर्खक बेटीक मुहसँ की निकलल आ अपना मुहसँ कि निकलैए। परिवारो आ समाजोमे किए अगिलह जकाँ काज करै छेँ।"

अपन विचारमे सोंगर लगा मजबूत करैत मुनीलाल बाजल-

"भैया, देवन भाय जे पचपन बर्खमे दोसर बिआह केलैन?"

पक्षधर काका देवन भाइक पक्ष लैत बजला-

"जहिना देवनक परिवार तहिना तोरा परिवार छौ। जहिना तूँ

पिसिऔत भाए छिएँ तहिना ओहो ममियौत भाए छी। तोरा की बुझि पड़ै छौ जे देवनकेँ नीक बुझि नीक केलिऐ आ तोरा अधला बुझि अधला कहै छियौ..!”

मुनीलाल अपन आँखि तेज करैत मधुर स्वरमे बाजल-

“आँखिक सोझमे दू रंग करबो केलौं आ दुसबो करै छी..!”

मुनीलालक विचारकेँ अपना विचारमे समैट पक्षधर काका बजला-

“अखन धरि नजैरमे एतबो पानि नइ एलौं हेन जे बुझबिही देवनकेँ पत्नी मुइने परिवारमे कियो ने रहलै। तैसंग ईहो जे जेकरासँ ओ बिआह केलक, ओहो वेचारी असगरे विधवा परिवारमे छलि, तैठाम जँ दुनूक सम्बन्ध भेल तँ ई बिसवास दुनूक बीच जगिये गेल ने शेष जे जिनगी अछि ओ मिलि-जुटि कटि जाएत।”

पक्षधर कक्काक विचार सुनि मुनीलाल चुपचाप उठि कऽ विदा भेल। पक्षधर कक्काक मन कड़ुआइये गेल छेलैन तँए किछु ने बजला। मुदा उधेड़-बुनमे पड़ल विचारी काकी एक नजैर मुनीलालपर दैत आ दोसर पक्षधर कक्काक मुँहपर दैत देखए लगली।

❍

शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018

कुकुरपन

आठ-नअ बजे चौकपर सँ घुमलौं। गामक लोक तँ मोजर नहियेँ दइए मुदा ओकरे मोजर देने मोजर हएत सेहो तँ नहियेँ अछि। अपन मोजर मोजराबैले लोकक बिनु कहनौं चौक-चौराहाक पनचैतीमे मुड़ियारी दइते छी। किए ने मुड़ियारी देब? चौक-चौराहा कि कोनो एके गोरेक छी आकि सबहक छी, तहूमे जे चौकपर बैइसैए तेकर तँ आरो बेसी भेबे कएल।

ओना, आन दिन सात-आठ बजे सबेरे चौकपर सँ घुमि जाइ छेलौं मुदा आइ कनी देरी भऽ गेल। देरीक कारण भेल जे बुधनी काकीक पनचैती चौकपर आबि गेलैन। बुधनी काकी बेटापर पनचैती बैसौलैन। एकेटा बेटा बुधनी काकीकेँ छैन तँए भीनो हेबाक विकल्प नहियेँ छैन। ओना, आब एहनो देखते छी जे बेटाक कोन बात जे लोक दुनू परानियोंमे–पति-पत्नीक बीच–भीन होइते अछि। बुधनी काकीकेँ जँ दुइयो तीनटा बेटा रहितैन तखन ने कोनो विकल्प भेटितैन, मुदा से रहलैन नइ। नौऊए-कौऊए एकटा बेटा, एकटा पुतोहु छैन। बेटी सासुरे बसै छैन।

चौकपर पहुँचते बुधनी काकी नाओं धऽ-धऽ बजली जे फल्लाँ-फल्लाँकेँ कहै छिअ जे हमर बातो सुनह आ पनचैतियो करह। तइमे हमरो नाओं बाजि चुकल छेली, तँए अपनाकेँ गमैया पंच, माने चुनावसँ जीतल नहि होइतो समाजिक पंच तँ भेबे केलौं किने, एकटा वकालतनामा लगौने तँ वकील कोर्टक लड़ाइमे मोकिरक संगी बनि

ठाढ़ होइते छैथ, ऐठाम तँ सभ सबहक चिन्हरबे छी, तहूमे जिनकर झंझट छिऐन से अपना मुहेँ मनोनीत कइये देलैन अछि।

पंचक बीच बैसते बुधनी काकीकेँ पुछलयैन-

“काकी! एकेटा बेटा, एकेटा पुतोहु अछि तखन झगड़ा केकरासँ भेल?”

डाँटैत बुधनी काकी बजली-

“एकटा रावण ते ओतेटा लंकाकेँ आगिमे झड़का देलक आ हमर एकटा-बेटा-पुतोहु कम अछि?”

मनमे अपसोच भेल, अनेरे जागल बिढ़नीक छत्तामे गोला फेकलौं। सोझ-साझ पुछितिऐन जे काकी की भेल। से तँ केलौं नहि...।

अपन विचारकेँ समटैत बजलौं-

“काकी, पहिने अपन बात बजबै तखने ने पंच पनचैती करता।”

चाहे दोकान परक गप छी। पान-सात गोरे जे रही सएह बुधनी काकीक पंच भेल रहिऐन। माइये-बेटाक विवाद, तँए सबालो नमहर नहियेँ छल। ओना, जँ एहेन-एहेन विवाद-सभ परिवारमे उठए लगै तखन एहेन अनुमान हएब सोभाविके अछि जे देशेटा खण्डित नहि अछि, समाजो आ परिवारो अछिए। जँ से नइ अछि तखन एक परिवार रहितो माए-बेटामे विवाद हएब केतेक नीक भेल। जखन ओही परिवारक नीक[30] माइयो चाहि रहली अछि आ बेटो। एक रस्ता रहितो एँड़ी-दौड़ी लगैक की कारण अछि। एँड़ी-दौड़ी तँ विपरीत दिशासँ अबैत यात्रीक बीच लगैए। एकमुँहरी चालिमे एना किए हएत। एकमुँहरी चालिमे विवाद तखने ने हएत जखन एकमुँहरी घूर-बहूर

[30] कल्याण

हएत।

ओना, बुधनी काकी असगरे अँगनासँ बजैत चौकपर तक आएल छेली, संगमे दोसराइत कियो ने छेलैन..! बुधनी काकी पंचवेदीमे बजली-

“हमर छौड़ा भारी मौगमेहरा बनि गेल अछि!”

काकीक बातक कोनो भाँजे ने पेलौं। मुड़ी उठा अपन संगी–राधेश्याम–पर नजैर देलौं। संगीपर नजैर दइक कारण भेल जे बुधनी काकी की कहली से अहाँ की बुझलिऐ। मुदा राधेश्यामो हमरे जकाँ अकबकाएल छला, तँए ओहो मुड़ी गोंतने बैसल छला। मने-मन ईहो हुअए जे केहेन घटिया पंच हमसभ छी जे जखन पनचैती बैसौनिहारक बाते नइ बुझि पेब रहल छी तखन पनचैती की करब! मुदा से पंचक बीच पंचकेँ बाजबो केतेक उचित हएत। हम नइ बुझलौं तँ पछातिये गप-सप्प खुजला बाद बुझि लेब मुदा बैसलौं हेन पनचैतीए करैले आ अपने पनचैतीक मुद्दा बनि झंझटक जड़ि जँ बनि जाइ सेहो केहेन हएत..! नजैर खिरा-खिरा आनो-आन पंच सभपर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे सभ हमरे जकाँ लाल-बुझक्कर सभ छैथ। बजलौं-

“काकी, एना झाँपि-तोपि कऽ बाजब तखन पंच की पनचैती करता। साफ-साफ बजबै तखन ने पंच विवादक बात बुझता आ बुझि कऽ निराकरण करता।”

बुधनी काकीक मन जेना कनी शान्त भेलैन। बजली-

“बौआ सभ, तोरो सभकेँ माए-बाप छेथुन, तूँ सभ केना माए-बाप बुझि दुनूक विचारसँ चलै छह। आ हमर जे छौड़ा अछि से मौगीक बात सुनि मौगमेहरा बनि कहैए जे ‘तूँ बुझबे ने करै छीही’, से केहेन भेल?”

बुधनी काकीक बात सुनि मन ठनकल। ठनैकते उठल- जे बात

बुधनी काकी बजली, ई की कोनो बुधनीए काकी-टाक छैन आकि समाजक चलैनमे आबि रहल अछि। जे समाजक चलैनमे प्रवेश केने जा रहल अछि ओ ओहिना थोड़े भऽ रहल अछि आकि ओइ पाछू कोनो परिवेशो क्रियारत अछि। परिवेशो तँ परिवेश छी, नीकक नामपर अधला बनि जाइए आ अधलाक नाओंपर नीकक कण्ठ मोकैए। सघन बोनमे हेराएल एहेन-एहेन प्रश्न समाजक चलैनमे सघन रूपमे नहि पकड़ने अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अछिए। अछिए नहि, घनघोर रूपमे पसैरियो रहल अछिए। मुदा बीचमे एकटा गड़ भेटल, गड़ ई भेटल जे जेकरा[31] विषयमे बुधनी काकी बजली ओ सोझहामे नइ छल। तँए पंचक भारपन देखैत बजलौं-

"काकी! अहाँ मुद्दै भेलिऐ, मुद्दालहक परोछमे किछु बाजब केहेन हएत?"

हमर बात बुधनी काकीकेँ जँचलैन। जँचैक कारण अपन बेटा-पुतोहुक मोह भेलैन आकि हमरा विचारक प्रभाव पड़लैन से तँ ओ जनती। मुदा एते जरूर भेल जे पंचवेदीसँ उठि-पुठि कऽ अँगनमुँह होइत बुधनी काकी बुदबुदेली-

"भिनसुरका समय छी, काज-उदमक बेर छी, तँए अपन छोट काज-ले एते पंचकेँ बरदाएब नीक नहि, मुदा सभ अपन-अपन कानपर रखै जैहह।"

न्यायालयमे जहिना कहियो न्यायाधीश अपन बाध्यता देखा समय लइ छैथ तहिना न्याय पौनिहारो अपन बाध्यता देखा समय नइ लइ छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तहिना अपनो मनमे भेल। बुधनी काकीकेँ अरियातैत बजलौं-

"काकी, अहाँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नइ राखू। निचेनसँ

[31] बेटाक

अहाँक पनचैती हेबे करत।"

बुधनियोँ काकीकेँ जेना नीक लगलैन तहिना कनियेँ-कनियेँ घुनघुनाइत अँगनाक बाट पकैड़ आगू बढ़ली।

चाहे दोकानपर रही। जे चाह पहिने पीने रही से चाहेक दोकानपर सठि गेल, तँए गामपर सँ जे चाह पीबैले अबैकालक मन छल, फेर तेहने भऽ गेल। दोकानदारकेँ कहलिऐ-

"तोहर चाह तोरे दोकानपर पचि कऽ बिला गेल। दोहरा कऽ एक गिलास आरो पीयाबह जे खनहन मने गामपर जाएब।"

चाह पीब घर दिस विदा भेलौं। विदा होइते बुधनी काकी मनमे नाचि उठली। कहू जे जइ परिवारमे माए-बेटाक चीन-पहचीन मेटाएल जा रहल अछि ओ परिवार केते दिन ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ ससरत?

तरे-तरे मन मलिन हुअ लगल। मुदा लगले मनमे खुशी उपकल जे बुधनी काकी सन लोककेँ बुझा-सुझा विदा केलौं, ईहो की नान्हिटा बात तँ नहि भेल। बाल-बोधकेँ कोनो बात बुझाएब जेते सहज होइए, बुढ़-पुरानकेँ बुझाएब ओते सहज थोड़े अछि। जइ हिसाबसँ जिनगीक हर क्रिया आ क्रियाक ढंग बदैल रहल अछि तइमे परिवारकेँ टुटब सोभाविके अछि। मुदा परिवार नाश भऽ जाए सेहो तँ केतौसँ उचित नहियेँ कहौत। तखन तँ भेल जे दुनूक बीच सामंजस रहैत केना चलत।

घरपर पहुँचबो ने कएल रही, रस्तेमे रही कि किछु फरिक्केसँ हल्ला होइत सुनलिऐ। मन टनटना गेल। टनटना ई गेल जे जँ भरि गाम झगड़े हएत तँ फरिछौत के? दरबज्जाक अगुआरेमे रही कि पत्नीकेँ देखलयैन जे सुधनी भौजीसँ गारि-गरौवैल कऽ रहली हेन। सुधनियो भौजी किछु बाँकी नहि रखि रहल छेली। जहिना-जहिना पत्नी गारिक बौछार छोड़ने जाइ छेली तहिना-तहिना सुधनियो भौजी उनटा गारि

बरिसबै छेली..!

ओना, झगड़ाक जड़ि किछु ने बुझल छल मुदा गारि-गरौवैल सुनि मन तरैंग गेल। आगू बढ़ि पत्नीक पक्ष लैत अपनो सुधनी भौजीकेँ अनधुन गारि पढ़ए लगलयैन। सुधनियो भौजी, एक-एककेँ उनटबैत गेली।

जहिना शान्त मनमे तामस उठला पछाइत गारि उठैए तहिना गारा-गारीसँ मन शान्तो तँ होइते अछि। सएह भेल। गारि-गरौवैल तँ थमि गेल, मुदा सोहन भाय बिचमानि करैत सौंझुका पनचैतीक समय बना देलखिन।

मन जखन शान्त भेल तखन इच्छा भेल जे झगड़ाक जड़ि खोधी जे किए पत्नी झगड़ब शुरू केलैन। जँ कोनो तेहेन बात छेलैन तँ हमरा कहितैथ। सुनला पछाइत जे नीक बुझितिऐ से करितौं। मुर्गी आकि नढ़िया-कुकुर जकाँ एकक मुहसँ अवाज निकैलते दोसर-तेसरक संग समूहे अवाज दिअ लगैए तहिना जँ विवेकी मनुखो करए, ई केते उचित भेल। मने-मन ग्लानि हुअ लगल। मुदा आब ग्लानि भेनहि की हएत। मुद्दा तँ पनचैतीक बनि गेल अछि। पनचैतीमे जाइए पड़त आ अपन कएल काज कहइ पड़त। समस्या उत्पन्न होइसँ पहिने किछु विचार नइ केलौं आ जखन समस्या ठाढ़ भऽ गेल तखन उपाये की..!

फेर मनमे भेल जे धिया-पुता जकाँ लगले खेलौं आ लगले बिसैर गेलौं, तेहने ने भेल। कहू जे दसे मिनट पहिने पंचवेदीसँ आएले छेलौं आ लगले बिसैर गेलौं! जँ पत्नीए सुधनी भौजीसँ कहा-कही करै छेली तँ अपने दुनूक बीचमान बनि बात बुझि निराकरण करितौं तँ अपनो ने पंचक प्रतिष्ठा भेटैत। कहू जे लगलेमे पंचक प्रतिष्ठा आबए लगल आ लगले ओकरा समाप्त करैत अपराधी बनि गेलौं, ई केहेन भेल? आब जँ दोसर कोनो अपराधमे पनचैती करए जाएब आ जँ अपराधीए कहि

दिअए जे जे अपने अपराध करैबला अछि ओ निर्अपराध बुझि केना सकैए, तखन केहेन मुँह हएत..!

मन घोर-घोर हुअ लगल। मुदा उपायो तँ दोसर रहल नहि। पंचवेदीमे जाइये पड़त। पत्नीकेँ सोर पाड़ि पुछलयैन-

"किए झगड़ा केलौं?"

पत्नी बजली-

"दुनू गोरे, हमहूँ आ सुधनियो दीदी, कलपर पानि भरए गेल छेलौं। परसू तिलासकराँइत पाबैन छेलइ।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ से तँ छेलैहे। मुदा तइले किए कहा-कही भेल?"

पत्नी बजली-

"अपना सभ गाममे परसू पाबैन भेल आ नेपालमे काल्हि भेल। सएह बजलौं।"

बजलौं-

"हँ से तँ भेबे कएल। ऐबेर एना भेल भारत-नेपालक बीच भेल मुदा पौरुकाँ तँ अपनो सभ गाममे दू-दिना पाबैन भेबे कएल छल।"

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं, मुदा लगले मन घुमल। मन घुमिते विचार उठल जे मकर संक्रान्ति सन पाबैन, माने जे सालक दिशा निर्देश करैए। तिले संक्रान्ति दिनसँ ने सुर्ज मकर रेखा छुबि उत्तरायण होइ छैथ। आ से जँ दू-दिना भेल तखन तँ सालक सभ तिथियो आ पाबनियोँ डोलम-डोल भइये जाएत! जखने जड़िये डोलि गेल तखन डारि-पात तँ डोलबे करत। सुधनी भौजी आ पत्नी बीचक झगड़ा तँ एक-दोसरक बिच्चेटाक नहि, दुनियाँ भरिक छी...। मुदा लगले मन कहलक- अनेरे कोन चमरछोंछमे पड़ि गेलौं..!

तरे-तर मन बिसाइन-बिसाइन हुअ लगल। मुदा आब उपाये की, जँ केकरो कहबो करबै जे बिनु बुझलमे एना भऽ गेल तँ कोन पंच हमरा बातकेँ मानत। ओ तँ कहबे करत किने जे एहने-एहने काज ने बुधियार सभ करैए। दोसरकेँ गारियो पढ़ि देत आ कहत जे हमरा तँ किछु बुझले ने छल। तखन गारि किए पढ़लिऐ..!

केतबो मनकेँ जीत दिस तर्कसँ बढ़बए चाही मुदा ओ पछैर कऽ निच्चाँ खसि पड़ए। कोनो गड़ नहि देख जोरसँ पत्नीकेँ कहलयैन-

“अपन घरक मोटा उठबे ने करैए आ देश-दुनियाँक मोटा जे उठबए गेलौं से अहाँ सन भेल?”

पत्नियोकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

“कोनो कि आइयेटा सुधनी दीदीसँ पाबैन-तिहारक गप-सप्प भेल आकि सभ पाबनियो आ आनो-आनो उपास-फलहारमे होइते आबि रहल अछि। जखन दुनू गोरे कलपर एकठाम भेलौं तखन मुँह सीब लइतौं आकि हाल-चालमे हाले-चालक गप करितौं।”

पत्नीक विचारमे केतौ एहेन गड़े ने भेटल जे अपन दोख हुनकापर ठेलि अपने निरदोस बनितौं। बजलौं-

“पाबैनक गप-सप्पमे गारि-गरौवैल किए भेल?”

पत्नी बजली-

“जहिना काबिल लोक एकटा विचारकेँ दस दिसक तर्कसँ बान्हि-छानि जीयतगर बनबैए तहिना ने अपन विचारकेँ जीयतगर बनबैले सुधनियो दीदी आ अपनो, अपन-अपन जुक्ति लगेलौं। तैबीच जँ जोरसँ कहा-कही होइत गारि-गरौवैल भऽ गेल तइमे हमर कोन दोख?”

पत्नीक विचारमे केतौ लहछीए ने लगै छल जे अपन दोख हुनका

कपारपर रखि अपने पंचवेदीमे गलती मानि लेब। किछु छी तँ समाजेक बीच छी किने। ओ थोड़े कहता जे गलती केलौं तँ गामेसँ चलि जाउ। पहिल गलती छी जँ बहुत कहता तँ चेतौनी दैत कहता जे एहेन गलती आगू दिन नै करब। मुदा अपन मन तैयो झखिते रहए जे पत्नीक बीचक जे गारि अछि ओ तँ ई कहिते शान्त भऽ जाएत- ‘स्त्रीगण बीचक बात छी, लगले गारि-गरौवैल करत आ लगले मिलान कऽ कनफुसकी करए लगत, तँए ओहन-ओहन पनचैती करैले पंचकेँ ओते समय छइ। छोड़ू एहेन-एहेन गप्पक पनचैतीकेँ।’ मुदा अपने जे सुधनी भौजीकेँ गारि पढ़लयैन, जे सोहनो भाय अपना काने सुनबो केलैन आ अपना मुहेँ मनाही करैत सौंझुका पनचैतीक सिमान खिंचलैन, तेकर की हएत?

जेम्हरे नजैर दी तेम्हरे रस्ता बन्न देखिऐ। कोनो उपाय सुझबे ने करए। जहिना पानिमे हेराएल पाइकेँ लोक हँथोरिया दऽ दऽ तकैए जे भेटबो करै छै आ नहियोँ भेटै छइ। मुदा जखन सौरखी आकि करहरकेँ ऊपरका पात देख डन्टीकेँ पकैड़ पानिमे हौंथरैत ताकल जाइए तँ किछु-ने-किछु, माने सौरखी चाहे करहर भेटबे करै छइ। तहिना ने मनुखो पात भेल आ ओकर मनुखता भेल सौरखी-करहर, जेकरा पकड़ैले पहिने ओकर जड़ि पकड़ए पड़त...।

मनमे एकटा जुक्ति फुरल। फुरल ई जे पनचैती तँ पंचवेदीमे होइए किने। अखन तँ से नइ बनल अछि। अखन तँ मात्र पनचैती आ समयक रेखा खींचल गेल अछि। से नइ तँ पहिने सुधनीए भौजीकेँ किए ने कहि पंचवेदी बनबसँ रोकि दिऐन। ओना, अपनो मनक तामस सोल्होअना नइ मेटाएल छल मुदा एहेन बेरमे रखबो तँ नीक नहियेँ होएत।

सुधनी भौजीक आँगन गेलौं। पुछलयैन-

“भौजी, अनेरे दुनू गोरे पंचक मकड़जालमे किए फँसब। देखते छिऐ जे पंच सभ केहेन मुँह देख मुंगबा परसैए।”

पनचैतीक बात सुनैसँ पहिनहि सुधनी भौजीक मनसँ झगड़ा मेटा गेल छेलैन। मेटाइक कारण भेलैन जे स्त्रीगण बीच अहिना होइते अछि। कोनो कि आइये भेल कि सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि आ जाबे धरि धरतीपर स्त्री जाति रहत ताबे धरि होइते रहत। तइले पर-पनचैतीक कोन खगता..! सुधनी भौजी बजली-

“पनचैती कथीक हएत। दिनक दोख छल, भेल आ मेटा गेल।”

सुधनी भौजीक निधैनी बात सुनि मनमे सवुर भेल। सवुरक कारण ईहो छल जे असगरे ने सोहन भाय पनचैतीक समय बनौलैन। पनचैती-ले पहिने पंचवेदी बनत तखन ने पनचैती हएत। अखन से तँ नइ बनल अछि आ सुधनियो भौजी बनबए नहियेँ चाहि रहली हेन। बजलौं-

“भौजी, किछु छी तँ अपन दुनू गोरेक परिवार पड़ोसी परिवार छी किने, तँए मिलि-जुलि कऽ रहलासँ बेसी नीक हेबे करत..!”

सूहकारैत सुधनी भौजी बजली-

“ई की कोनो नवका गप छी जे नइ बुझब।”

सुधनी भौजीक विचार सुनि मन हल्लुक भेल। सोचलौं जे सोहनो भायसँ मुँह-मिलानी कइये ली। कोटक सोलह लगलाहा केस जकाँ अनेरे लटकल रहब नीक नहि...।

सोहन भाइक ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जाक आगूमे सोहन भाय हाँइ-हाँइ कुट्टी कटैत रहैथ। लगमे पहुँचते पुछलयैन-

“भाय, एना जे हाँइ-हाँइ कुट्टी कटै छी, आ जँ हाथमे कुट्टी कट्टा लगि जाए तखन तँ सभ काज अनेरे ढंस भऽ जाएत।”

दुनू हाथ बागि सोहन भाय बजला-

“हाँइ-हाँइ ऐ दुआरे कुट्टी काटए पड़ि रहल अछि जे ई काज साँझू पहर करै छी, अखुनका दोसर काजक बेर अछि। मुदा तोहर पनचैती दुआरे सौंझुका काज अखने पुरबए पड़ि रहल अछि।”

सोहन भाइक सौंझुका भार उतारैत बजलौं-

“अहाँ ने सौंझुका समय पनचैतीक बनौलिऐ, मुदा सुधनी भौजी पनचैती-ले तैयार कहाँ छैथ।”

सोहन भाइक जान जेना हल्लुक भेलैन। नमहर साँस छोड़ैत बजला-

“भने पनचैती टरि गेल। मुदा तोरा संग भैयारीक सम्बन्ध अछि तँए कहि दइ छिअ जे एहेन-एहेन कुकुरपन चालि छोड़ह। नहि तँ समाजमे कहियो मुँह उठा कऽ ताकल नइ हेतह।”

❍

शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018

हेराएल जिनगी

अंगरेजकेँ देशसँ भगला पछाइत दस सालक बाद कमलपुर गामक कल्याण कक्काक परिवारमे हीराननक जन्म भेल। तेसर बेटाक रूपमे हीरानन छल, तइसँ जेठ बौआनन आ हेरानन छल।

सौन मासक सुहावन समय, तैपर समगम मौसम। समगम मौसमक माने भेल- ने अधिक पानि भेने दहार आ ने नइ पानि भेने रौदी। ओना, दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे रहैन जे ऐबेर बेटी हएत। तँए दुनू परानी आपसमे विचारि नेने छला जे बेटीक नाओं 'बुधियारि' राखब। मुदा से भेलैन नहि। दुनू परानीक मनमे रहैन जे भगवान सभकेँ बेटा-बेटी दइते छथिन तँए दूटा बेटा देलैन आ तेसर बेटी देता...। ओना, भगवानोक नेत एकरंग नहियेँ छैन। केकरो घर भरि बेटा दइ छैथ तँ केकरो घर भरि बेटीए दइ छैथ। मुदा ईहो दोख तँ हुनका नहियेँ देल जेतैन जे एकरंग बँटवारा करैत जेते बेटा तेते बेटियो नइ दइ छथिन। सेहो दइते छथिन। माने चारि सन्तानमे दू बेटा, दू बेटी सेहो दइते छथिन।

हीराननक जन्म भेने दुनू परानी कल्याण कक्काक मनमे ओतेक खुशी नइ भेलैन जेते पहिल बेटा भेने वा दू-चारि बेटीक पछाइत बेटा भेने होइ छइ। तैसंग दुखो ओते नहियेँ भेलैन जेते बेटी-पर-बेटी होइत गेलासँ होइए। किछु भेल तँ बेटे भेल किने। दुनियाँमे के एहेन अभागल अछि जेकरा बेटा आ सम्पैत अधला लगै छइ। मुदा गामक जनिजातिमे तेसरे हवा चलि रहल छल। ओ चलि रहल छल जे

भगवन्ताकेँ भदबारिमे महींस बिआइए आ अभगलाकेँ बोहु...। भदबारि भादो मास भेल। किएक तँ बर्खाक शुरू मास 'सौन' भेल, भादो ढेनुआर भेल आ आसीन उतार। अखन साउने छी। ओना, बरखा सेहो हेबे करैए मुदा ओ होइए गोटि-पङ्गरा। झड़ी जकाँ सदिकाल झड़झड़ाइत नइ रहैए। तइले भादो अछि। मुदा तहूमे ई निसचित रूपे नहियेँ कहल जा सकैए जे झड़झड़ेबे करत। किए तँ जेना कालिदास मेघकेँ दूत बना अखाढ़ेमे पठबै छैथ तेना पठौलासँ सौनो भादव जकाँ बिचले मास भेल, तँए भदबारि जकाँ झड़झड़ाइयो नइ सकैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे होइए ओ साल-सालक किरदानीक खेल छी। ऐबेर से नइ भेल। ऐ बेरक सौन कालिदासक अखाढ़केँ जन्म मास नहि मानि अपने जन्ममास बनि गेल।

समगम सुहावन सौन मासक सतमीकेँ हीराननक जन्म भेल। ओना धानक खेती अदहासँ बेसी गाममे भाइयो गेल छल आ जे बाँकी अछि ओहो लगले-सुढ़िमे आठ-दस दिनक पछाइत भऽ जाएत। नीक समय भेने धानक बीरार नीक जकाँ उमझल अछि। रोगो-वियाधि बिआमे नइ अछि आ जर्मिनेशनो नीक भेल तँए बीआ पुरहगर अछिए। तँए जहिना खेतबला-सभकेँ खुशी तहिना खेती लगौनिहारो-सभकेँ खुशी छइहे। ई तँ भेल खेती-खोलाक उपजा-बारीक गप मुदा मनुखक उपजा-बारीक की स्थिति अछि तइ दिस ने देखब। किए तँ मनुखो तँ अही माटि-पानिक ने उपज छी।

दस बर्ख अजादीक भऽ गेल, गुलामीक पंजासँ निकैल स्वतंत्र हवाक साँस देशो लेलक आ देशवासी सेहो लेलैन। तहूमे अजादी लेनिहार सेनाक संख्यामे दू-चारि प्रतिशत घटबी किए ने भेल हुअए मुदा छियानबे-अनठानबे प्रतिशत तँ जीवित छथिये, जिनका मनमे अखनो ई बसले छैन जे अजादी पबिते–माने गुलामीसँ मुक्त होइते,

धुआँ-धार देशोक कल्याण हएत आ देशवासीक सेहो। तइले अपन आँट-पेट देखलासँ ने भाँजपर चढ़त।

देश आ देशवासीक प्रश्न अछि तँए आनो-आनो गुलाम देश, जे स्वतंत्र भेल, ओ पहिने केहेन स्थितिमे छल आ स्वतंत्र भेला पछाइत साले-साल कोन रूपमे आगू बढ़ल आ दस बर्खक अजादीक पछाइत केतेपर पहुँचल। ई तँ भेल एक देशकेँ दोसर देशक तुलना, मुदा एक-एक देशवासीक जिनगीक तुलना करब जँ छोड़ि देब तखन तँ जड़िये हेरा जाएत! एक-एक जन मिलि ने देश ठाढ़ केने छी आ ओइ बीच अपनाकेँ ठाढ़ करैत आगू-मुहेँ, अजादीक दिवाना जकाँ, कदम-कदम बढ़ैक परियास कऽ रहल छी। तइमे के केतए ठाढ़ छी से जँ नइ देखब तखन तँ अनेरे ने दिशाहीन देखबक संग मुँह ताकब सेहो हएत। जखने मुँहतक्की भेल तखने ने मनुखक कदम, कदमक गाछ जकाँ छुच्छे जमीनपर ठाढ़ भऽ सुखि-सुखि-टुटि-टुटि कऽ झड़ैत-झड़कैत रहब। जखन से भेल तखने ने गति मत हति मन बति जाएत?

कल्याण कक्काक परिवार दस बीघा जमीनबला, गामक मध्यम किसान परिवार छैन। मध्यम श्रेणीक परिवार दुनू मानेमे छैन। सम्पैतिक मानेमे सेहो आ जातिक मानेमे सेहो। सम्पैतिक मानेमे ई जे पान साए परिवारक गाममे पौने चारि साए परिवार सम्पैत-विहीन अछि। जइमे किछु गोरेकेँ बाड़ीक संग घराड़ियो छैन, किछु गोरेकेँ घराड़ीए-टा छैन आ किछु गोरेकेँ सेहो ने छैन। तहिना किसानोक परिवार अछि। पाँच गोरेकेँ बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन आ बाँकीकेँ बीस बीघासँ निच्चाँ छैन। ओना, ओहू पाँचो परिवारमे–माने जिनका बीस बीघासँ ऊपर खेत-पथार छैन, पाँचोकेँ पाँच रंग सम्पैत छैन। तीन गोरेकेँ बीस-तीस बीघाक बीच खेत छैन, बाँकी दूमे एक गोरेकेँ साए बीघासँ ऊपर आ एक गोरेकेँ साए बीघाक निच्चाँ छैन। तहिना बीस बीघाक निच्चाँ जे परिवार अछि, ओइमे खाली पाँचेटा

परिवार ओहन अछि जे हालेमे भिनौजी भेने दुनू तीनू भाँइक बीच एकरंग जमीन छैन बाँकीकेँ सभरंग। ओना, ओहूमे तीन रंगक किसान भेला। जेठरैयत, मध्यम आ सीमान्त। माने जिनका दस बीघासँ ऊपर जमीन छैन ओ जेठरैयैत किसान भेला, दस बीघासँ कम आ चारि बीघासँ ऊपरबला मध्यम किसान भेला आ चारि बीघासँ कमबला सीमान्त। तैबीच एकटा बात ईहो तँ अछिए जे पैघ किसान माने बीस बीघासँ ऊपरबलाकेँ समांगो[32] बेसी छैन सेहो नहियेँ छैथ। समांगक हिसाबसँ सेहो परिवार सभ गजपट अछिए। बेसियो सम्पैतबलाकेँ समांग कम छैन आ कम्मो खेतबला वा बिनु खेतोबलाकेँ समांग बेसी अछिए।

जहिना कल्याण कक्काक परिवार सम्पैतिक हिसाबसँ मध्यम परिवार छैन तहिना जातियोक हिसाबसँ मध्यमे परिवार छैन। ओना, मोटा-मोटी तीन रंगक जाति समाजमे अछि। पहिल ऊँच जाति, दोसर मध्यम जाति आ तेसर नीच जाति। ऊँच जाइतिक बीच सेहो केते रंगक भेद-भावक दूरी अछिए। जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैतीमे स्पष्ट झलैक जाइए। तैसंग जीविको आ बेवसाइयोमे सेहो झलैकते अछि। तहिना मध्यम परिवारक बीच सेहो अछिए। ओना, आर्थिक रूपमे जे मध्यम छैथ ओ जाइतिक रूपमे सेहो ऊपर-निच्चाँ भइये गेल छैथ। गाममे मध्यम परिवारक संख्या जहिना आर्थिक रूपे तहिना जाइतिक रूपे बेसी अछिए। से दुनू रूपमे- आर्थिको रूपमे आ जाइतिक बेवहारक रूपमे सेहो।

तेसर जे सम्पैतियोक रूपे आ जातियोक रूपे छैथ ओ जाइतिक रूपे नीच जाति, हरिजन वा अछोप जहिना कहबैत छैथ तहिना आर्थिक रूपे सेहो बोनिहार वा मजदूर वा सर्वहारा सेहो कहैबते छैथ।

[32] परिवारिक जन संख्या

ओना, ओहू बोनिहार-मजदूर वा सर्वहाराक बीच सेहो एकरूपता नहियेँ अछि। जाइतिक जे ऊँचपन-नीचपनक आड़ि अछि ओ टुटि कऽ एकबट्ट भइये गेल अछि। ऊँचो जातिमे बोनिहार-मजदूर छैथ आ मध्यमो तथा नीचलो जातिमे सम्पैतिक हिसाबसँ अगुआएलो किसान-सभ छथिए।

नीच जाति, माने अछोप-हरिजन जाइतिक बीच सेहो अनेको जाति आ अनेको धर्म अछि जइमे सभ बँटाएलो छथिए। ओना, बेवहारो आ बेवसायमे सेहो बँटाएल छथिए। खाएर जे छैथ, मुदा एते तँ स्पष्ट पहचान अछिये जे जीवन-मरणमे सेहो एकरूपताक संग बहुरूपता सेहो अछिए। एकरूपता भेल ई जे एक जाइतिक भोजो-भात आ कथो-कुटुमैती ओहीक बीच होइए। ओना, बीचमे ई दीगर भेल जे नीच जाइतिक सम्बन्ध[33] उच्च जातिसँ नइ अछि वा मध्यम जातिसँ नहि अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए, जइसँ जीवन-मरणमे संगी बनियेँ जाइ छैथ। ओना, जीवन-मरणमे संग पूरब समाजिक भेल, जैपर समाज ठाढ़ भऽ आगू-मुहेँ बढ़त, मुदा एहेन सम्बन्धक बीच सेहो केतेको दराइर अछिए। आर्थिक सम्बन्ध रहितो समाजिक बेवहारमे दूरी बनलो अछि आ दिन-दिनक चहल-पहलक हवामे बनियोँ-बिगैड़ रहल अछि।

गाम-गामक अपन-अपन माटियो-पानि एक गामसँ दोसर गामक बीचक दूरी सेहो बनौनहि अछि। बजैक क्रममे सभ मिथिलेक गाम भेल आ एके जिला-जबारक सेहो भेल, मुदा कोनो गामक माटि बेसी उर्वर अछि आ कोनो गामक उस्सर। आ तैसंग एहनो तँ अछिए जे या तँ बाउलसँ बलुआएले अछि वा ऊससँ ऊसराहे अछि। तँए, कोनो गाम बारहो मास फलो-फूल आ अन्नोक उपजसँ सम्पन्न अछि

[33] दोस्ती

आ कोनो गामक बालुक रेतसँ रस्तो-पेरा बन्न अछि आ उपजा-बारीक तँ बाते नहि..!

ई तँ भेल मिथिलाक माटिक सम्बन्ध। मुदा पानियोक सम्बन्ध एके-रंग अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोनो गाममे धारक[34] छुतियो ने अछि आ कोनो गाममे सत-सतटा धार बहैए। सभ रंगक माटि-पानि रहने सभ रंगक भौगौलिक रूप सभ गामक बनले अछि। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ ई जे एक-दोसर पड़ोसी गाम जे अछि ओ ओहन नहियेँ अछि जइमे एक गाममे सत-सतटा धार बहैए आ दोसर गाममे धारक छुति नहि। इलाका-इलाकाक बीच एकरंगाह सम्बन्ध सेहो अछिए।

कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे धार-धुर तँ नहि अछि मुदा माटियोक सेखी नीक नै छइ। तेकर कारण अछि कमलपुरक बगलेक गाम होइत एकटा बरसाती धार बहैए। बरसाती धार भेल जे बरखा भेला पछाइत धार होइत पानि बहने जीवित (जीयाल) धार बनि जाइए आ बरखा सटकने धारक गति सटकए लगैए आ सटकैत-सटकैत सुखि जाइए। मुदा जे होइए, एते तँ कमलपुरकेँ केनहि अछि जे भदबारिमे बाढ़िक रूप बना कमलपुरोक खेतक रस चुसि, उर्वरा शक्तिकेँ धोइ-पोछि शक्तिहीन बना देने अछि। ओना, कोनो-कोनो गामकेँ बाढ़ि पाँक आनि जोरगर सेहो बनैबते अछि। मुदा से कमलपुरमे नहि अछि। जहिना कमलपुरक माटि शक्तिहीन अछि तहिना पानिक समुचित बेवस्था नइ रहने सेहो उस्सर जकाँ अछिए।

हजार बीघामे पसरल कमलपुर गामक खेती-बाड़ी सोल्होअना बर्खापर आश्रित अछि। ने गाममे नहर पानिक बेवस्था अछि आ ने एकोटा बोरिंग। बरखोक हिसाब ओहन नहियेँ अछि जे सभ साल

[34] नदीक

नियमित रूपसँ एकरंग बरसबे करत, जइसँ किसान अपन मनक आँकड़ा–खेती करैक तरीकाक संग ओकर उपजो–ठीक-ठीक बैसा करत। गोटे साल खूब बरखा भेने गाममे दहार भऽ जाइए आ गोटे साल कम बरखा भेने रौदी सेहो भइये जाइए। तैसंग कोनो साल समुचित बरखा भेने नीक ऊपज नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामक भौगौलिक बनाबट सेहो एकरंग नहियेँ अछि। आधासँ बेसी जमीन नीचरस अछि। जइमे अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि एने छह-छह मास तक पानि बसल रहैए। ओहू पानिक एक हिसाब नहियेँ अछि। खेत-पनियासँ लऽ कऽ भरि डँरपनियाँ तक भऽ जाइए। 'खेतपनियाँ' भेल जे जइ खेतमे ओतबे पानि रहल जइसँ धानक उपज भऽ गेल। ओना, धानेटा ओहन अन्न अछि जे पानिमे उपजैए। आन-आन अन्नकेँ हालेटा चाही, जमकल पानि नहि चाही। जखने खेतमे पानिक जमाव हएत तखने ओ फसल नइ उपजत।

मोटा-मोटी कमलपुर गाम ओहन अछि जइमे सोल्होअना खेतिये-बाड़ीपर निर्भर अछि। जे कि गोटे-गोटे साल उपजा-बारी नीक होइए, नहि तँ धारे-कोन खेतियो होइए आ धारे-कोन उपजो होइए। 'धार-कोन' भेल, सोलहअनाक बदला चौदहअना, बारहअना, आठअना, चारिअना। सोलहअना खेतियो आ सोलहअना उपजो नइ भेने गामक जे सम्पैत[35] अछि ओ सोल्होअना उपयोगी नहियेँ भेल। सोल्होअना उपयोगीक अर्थ भेल जेतेक सम्पैत अछि आ ओकर जे उपजक रेशियो[36] अछि तेते नइ हएब। खाएर जे अछि मुदा कमलपुरबलाक जीवनक तँ यएह आधार छिऐन।

[35] खेत

[36] उपजाक अनुपात

कल्याण काकाकेँ आठ बीघा जमीन पैत्रिक छेलैन आ अपन मेहनतक बले परिवार चलबैत दू बीघा आरो कीनलैन। जइ हिसाबसँ गामक किसानक जमीनक फेर-फार भेल तइ हिसाबसँ कल्याण कक्काक नहि भेलैन। फेर-फार भेल, मलगुजारीक अभावमे जमीन निलाम हएबक संग बर-बेमारी, पढ़ाइ-लिखाइक संग बिआह-दानमे बेचब-बिकनब। आठ बीघा जमीन जे कल्याण काकाकेँ छेलैन ओ ऊँचाइ-नीचाइक हिसाबसँ तीन मेलक छेलैन। किछु नीचो छेलैन, किछु मध्यमो छेलैन आ किछु ऊँच-उपराइर सेहो छेलैन। जइसँ एते लाभ होइते छेलैन जे जइ साल रौदी भेल तइ साल नीचला खेतमे नीक उपज भऽ जान्हि आ जइ साल दहार भेल तइ साल ऊपरका खेतमे नीक उपज भऽ जाइ छेलैन। समतल परिवार, सभ अपन-अपन किसानी जिनगीसँ जुड़ि मेहनत करै छला आ बिना कोनो बाहरी दाब-चापसँ स्वतंत्र जिनगीक परिवार बना जीबैत आबि रहल छला।

कल्याण काका अपने साधारण पढ़ल-लिखल लोक छला। किताबो पढ़ि लइ छला आ नाम-गामक संग जोड़-घटाउ, गुणा-भाग सेहो भऽ जाइ छेलैन। जइसँ खेतोक नाप-जोख आ अनो-पानिक तौल-जोख कइये लइ छला। अपन पढ़ब-लिखब कल्याण कक्काक मनकेँ एते आकर्षित कइये नेने छेलैन जे पढ़ाइ-लिखाइकेँ परिवारक अनिवार्य काज बुझै छला। दुनू शासनक– अंग्रेजी शासनसँ लऽ कऽ देशी शासनक बीचक सीमापर कल्याण कक्काक जिनगी रहलैन। माने उतरैत अंग्रेजी शासन आ चढ़ैत देशी शासन। जइसँ देशक गुलामीक संग स्वतंत्र जिनगीक बीचक जिनगी कल्याण कक्काक रहबे केलैन। ओना, स्वतंत्र जिनगी लोक अपने निर्माण करै छैथ, मुदा तइमे बाहरी प्रभाव–माने शासनक प्रभाव नहि पड़ैत अछि, सेहो कहब अनुचिते हएत। शासने-सूत्रसँ सत्ता चलैए आ ओही सत्ताक बीच जीवन चलैए। ओही जीवन-जापनक बीच परिवार अछि। जे वंशगत

आधारपर ठाढ़ होइत आबि रहल अछि। परिवारक अर्थ भेल देशक सभसँ छोट अंग– माने सभसँ छोट संस्था, जेकर संचालन-सूत्र[37] परिवारे-जनक ऊपर रहितो अछि आ रहितो आबि रहल अछि।

1947 इस्वीसँ पूर्व कल्याणपुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल मात्र छल। ओना, किछु परिवार एहेन जरूर छल जे खानगी पढ़ाइक बेवस्था अपना दरबज्जेपर केने छला आ किछु गोरे अपन धिया-पुताकेँ बाहर भेज पढ़ौलैन, मुदा ओ गोटि-पङ्गरा परिवार छल। गामक हिसाबसँ माने समाजिक रूपमे सिरिफ एकटा लोअरे प्राइमरी स्कूलटा छल। कमलपुरसँ कोस भरि हटल, दोसर गाममे मिडिलो स्कूल, हाइयो स्कूल आ संस्कृत महाविद्यालय सेहो छल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत कल्याणपुरमे सेहो मिडिल स्कूल खुजल। जइमे चारि क्लासक पढ़ाइ शुरू भेल। चौथासँ लऽ कऽ सतमा धरि। चौथा-पाँचमामे विद्यार्थीकेँ फीस नइ लगै छेलै आ छठमा-सतमामे अढ़ाइ रूपैआ महिनाक हिसाबसँ फीस लगै छेलइ। जे सातम दशकमे बन्न भेल। बिहारमे जनवादी सरकार बनला पछाइत हाइयो स्कूलक फीस बन्न भेल, जइसँ मैट्रिक तकक शिक्षा सभकेँ उपलब्ध भेल।

कल्याण कक्काक पहिल आ दोसर बेटा, माने बौआनन आ हेरानन हाइ स्कूल तक जरूर पहुँचल मुदा मैट्रिक पास नइ केलक। एगारहम क्लास मैट्रिक होइ छल, जइमे दू सालक सिलेबस रहइ। माने दसमा-एगारमाक एक्के सिलेबस रहइ। दसमा तकक परीक्षामे विद्यार्थीकेँ नहि रोकल जाइ छल, माने फेल नइ कएल जाइ। एगारहमाक परीक्षा सरकारक अन्तर्गत होइ छल, जे साले-साल होइ छल। नअ विषयक पढ़ाइयो आ परीक्षो होइ छल। नम्बरक हिसाबसँ

[37] चलैक ढंग

श्रेणीक बँटबारा छल। नअ रंगक नअटा विषय छल जइमे एक्को विषयमे फेल केने विद्यार्थी फेल होइ छल।

पाँच बर्खक हीरानन जखन गामक स्कूलमे प्रवेश पेलक तखन आन-आन विद्यार्थीसँ नीक वातावरण परिवारमे भेटलै। नीक वातावरणक माने भेल जे अधिकांश लोकक परिवार ओहन छल जइमे शिक्षाक प्रवेश नइ भेल रहइ। मुदा हीराननकेँ से नहि, साक्षर पितो आ जेठ दुनू भाइयो परिवारमे रहथिन। ओना, कल्याण काका जहिना बौआनन आ हेराननकेँ अक्षर-अंकसँ लऽ कऽ किताब पढ़नाइ सिखेलखिन तहिना हीराननकेँ सेहो सिखौलैन। जइसँ स्कूलमे हीरानन आन विद्यार्थीक अपेक्षा तेजगर-बुधिगर छल।

मिडिल स्कूलक अन्तिम परीक्षा तकमे हीरानन प्रथम होइत रहल। हाइ स्कूलमे प्रवेश पबिते, पाँचटा मिडिल स्कूलसँ आएल पाँचटा प्रथम विद्यार्थीक बीच हीरानन आबि गेल। ओना, हाइ स्कूलक फीस जहिना समाप्त भेल तहिना अंग्रेजी विषयकेँ सेहो कम कएल गेल। अधिक-सँ-अधिक विद्यार्थी अंग्रेजीमे फेल करै छल। एक तँ विदेशी भाषा-साहित्य, दोसर बाल-मनक ऊपर आरो-आरो विषयक दाब छेलैहे। तइ बीच एकटा आरो भेल, ओ भेल परीक्षामे चोरीक आगमन। माने चीट-पुरजीसँ देख कऽ लिखब।

ओना, अंग्रेजीक पढ़ाइ हाइ स्कूल (आठमा) सँ शुरू होइ छल, मुदा तेकरा पाछू घुसका मिडिल स्कूलमे सेहो आनल गेल। माने छठा क्लाससँ अंग्रेजी शिक्षा शुरू भेल। भाषा आ विषयक समस्या हाइ स्कूलमे जबरदस छल। जहिना भाषा-साहित्यक रूपमे अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, मैथिली छल तहिना विषयक रूपमे आर्ट-साइंस-कामर्सक अनेको विषय सेहो छेलैहे।

प्रथम श्रेणीमे हीरानन मैट्रिक पास केलक। तइमे किछु पढ़बोक

जोग छेलै आ किछु चोरियोक। ओना, परीक्षामे केतबो चोरी किए ने बढ़ल मुदा तैयो प्रथम श्रेणीक रिजल्ट कमे होइ छल। दोसर श्रेणीक रिजल्ट बेसी होइ छल। कल्याण कक्काक परिवारमे पहिल-पहिल प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण विद्यार्थीक जन्म भेलैन। तँए परिवारमे सबहक मन उत्साहित भइये गेल छेलैन। तैबीच शिक्षण संस्थानक क्षेत्रमे सेहो उछाल आएल। जेकरा हम सभ आइ मधुबनी जिला कहै छिऐ ओ दरभंगा जिलाक अनुमण्डल छल। साठिक अन्तिम दौर आ सत्तैरिक दशकक शुरूआती दौरमे शिक्षाक प्रति जागरणक एकटा नव रूप उभरल। जइसँ स्कूलोक संख्या बढ़ल आ कौलेजोक। स्वतंत्रतासँ पूर्व (1947) दरभंगा जिलामे मात्र दूटा कौलेज, एकटा दरभंगामे सी.एम.कौलेज आ दोसर मधुबनीमे आर.के. कौलेज छल, तइमे उछाल आएल। एकाएक चारिटा कौलेज– बाबूबरही, सरसो, झंझारपुर आ निर्मलीमे खुजल। ओना, क्षेत्रक हिसाबसँ निर्मली सुपौल जिला छी जे ओइ समय सहरसा छल।

विज्ञानक विद्यार्थीक रूपमे हीराननक प्रवेश निर्मली कौलेजमे भेल। घरसँ अढ़ाइ कोसपर कौलेज...।

हीरानन जखन हाइये स्कूलमे छल तखने बिआह सेहो नेपालक सप्तरी जिलामे भऽ गेल छेलइ। ओना, जइ इलाकामे हीराननक बिआह भेल ओ पहिने भारतेक सटल राज्य छल। जेकरा मिथिला राज्य कहल जाइए। ओना, ओहू समयमे आ अखनो किछु लोकक मनक धारणा एहेन छैन्हे जे सम्पैतसँ अधिक महत शिक्षाकेँ दइ छैथ आ किछु लोकक एहेन धारणा छैन्हे जे सम्पैतकेँ अधिक महत दइते छैथ। मध्यम श्रेणीक परिवार रहने दुनू दृष्टिसँ, शिक्षो आ सम्पैतोमे नीक परिवार हीराननक छेलैन्ह। तँए अपनासँ बीस सम्पैतियो आ शिक्षोबला परिवारमे हीराननक बिआह भेल। ओना, मध्यमो आ

ऊँचो[38] परिवारमे एकटा जबरदस रोग प्रवेश कइये चुकल छल जइसँ स्वस्थ मनुखक निर्माणमे बाधा भेल। माने ई जे श्रमहीनता बढ़ल। नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक हाथे खेतीसँ परिवार धरिक काज लेने रोग बढ़बे कएल।

बी.एस-सी. करैसँ पहिने हीरानन एम.एस-सी. करैक हिम्मत (साहस) तँ हारि चुकल छल मुदा एते मनमे आशा रहबे करै जे हाइ स्कूलमे सांइस टीचर बनबे करब। मुदा से भेलै नहि।

तैबीच पिताक मृत्यु माने कल्याण कक्काक, सेहो भऽ गेलैन आ परिवारमे तीनू भाँइक बीच भिनौजी सेहो भऽ गेलइ। दस बीघाबला किसान परिवारक हीरानन, साढ़े तीन बीघाबला भऽ गेल। हीरानन अपना हाथे कहियो खेती-बाड़ीक कोनो काज केने नहि, जन-बोनिहारक हाथे काज होइत आबि रहल छल, तैसंग जहिना हीराननक अपन जीवन-स्तर कौलेजिया विद्यार्थीक बनि गेल छेलै तहिना पत्नीक मनमे सेहो रंग-रंगक कामना छेलैन्हे। दुनू परानीमे किनको ओहन ऊहि नहि जागल छल जे मनुखक बुधि आ ओकर काजपर नजैर जाइत। गोबर-माटिसँ नीपल-पोतल जकाँ देखा-देखी समाजो आ परिवारोक सीख-लीख पकैड़ चलि रहल छल। तैपर मिथिलांचलक किसानक जिनगीक दुर्भाग्य रहल जे मौनसुन आधारित जिनगी रहल। जे कहियो बाढ़िक चपेटमे तँ कहियो रौदीक चपेटमे पड़ैत आबि रहल अछि।

एक बाढ़ि आ एक रौदीक माने साल भरिक रौदी, तहिना एक बाढ़िक माने ओहन बाढ़ि जइमे साल भरिक उपजा प्रभावित होइए, प्रभाव पाँच बर्ख धरि परिवारकेँ प्रभावित करैए। माने ई जे एक सालक नोकसानकेँ पुरबैमे पाँच बर्ख लगि जाइए, तखन ओ पूर्ववत

[38] बेसी सम्पैतबला

अवस्थामे अबैए। मुदा तइ बीच ईहो समस्या तँ अछिए जे पाँच बर्खक सुभ्यस्त (खुशहालीक) समय हएत तखन ने, जँ दोहरा गेल वा दोसर-तेसर साल फेर ओहन समस्या आबि गेल तखन तँ समस्या आरो जटिल भइये गेल।

ओना एक सालक बाढ़ि-रौदीक चर्च भेल मुदा बाढ़ियो-रौदीक की कोनो आड़ि-धुर, सीमा-सरहद अछि, जे एतबे हएत। ओकरो रूप तँ साधारणसँ बिकराल धरिक अछि। माने छोट-बाढ़िसँ जहिना साल भरिक फसिल प्रभावित होइए तहिना एहनो बाढ़िक रूप तँ अछिए जे घरो-दुआर खसबै-दहबैए आ गाम देने धारो फोरि दइए। तहिना रौदियोक अछि। छोट रौदी भेने सालक उपजा जरैए आ नमहर भेने पोखैरो-झाँखैर सुखबैए आ गाछो-बिरीछ सुखैबते अछि।

समय बीतल। दुनू परानी हीरानन पचपन बर्ख टपला पछाइत बचपन दिस देखब शुरू केलैन। परिवारमे तीन सन्तान छैन। दू बेटी आ एक बेटा। जेठ बेटी, माझिल बेटा आ छोट बेटी छैन। जेठ बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेलैन। बेटा सेहो हायर सेकेण्ड्री पास कऽ लेलकैन आ छोट बेटी आठमामे पढ़ि रहल छैन।

दस बजेक समय। खेतसँ हीरानन आबि दरबज्जाक चौकीपर बैसला। हीयहारिणी सेहो आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एली तँ पतिकेँ चौकीपर बैसल देखलैन। सहैट कऽ पतिक लग आबि बजली-

"मन बड़ खसल अछि?"

अपन परिवारिक स्थितिक बीच हीराननक मन बिचैड़ रहल छेलैन, जइसँ चेहराक ऊपरका सुर्खी मलिन भऽ गेल छेलैन। हीरानन बजला-

"मनेटा नहि परिवारो खसि रहल अछि..!"

ओना हीरानन अपना विचारे माने पढ़ल-लिखल लोक जकाँ

बाजल छला, मुदा पत्नी से नइ छथिन। साधारण नाओं-गाओं लिखै-पढ़ै धरिक ज्ञान छैन। मुदा दुनूकेँ पचपन बर्खक जिनगीक अनुभव, एकटा नव रूपमे ज्ञानकेँ जगाइये देने छैन। हीयहारिणी बजली-

"से की?"

हीरानन बजला-

"आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे आब जीब कठिन अछि।"

'जीब कठिन अछि' सुनि हीयहारिणी चौंकैत बजली-

"से की?"

नमहर साँस छोड़ैत हीरानन बजला-

"सुनीता बिआह करै-जोकर भऽ गेल जे अहूँ कहै छी, आ समाजोक लोक कहै छैथ आ करो-कुटुम कहिते छैथ।"

हीयहारिणी बजली-

"से तँ भइये गेल अछि।"

हीरानन-

"अपनो आँखि अछि, अपनो देखै छी। मुदा सोझे देखने थोड़े हएत। जे परिवेश बनि गेल अछि आ जे परिवार अछि तइमे दस लाखक काज भेल। तैसंग सुधीर[39] सेहो कहैए जे एम.बी.ए.मे नाओं लिखाएब। केना पार लागत। लऽ दऽ कऽ साढ़े तीन बीघा खेत अछि। ओकरो मूल्य कमियै गेल अछि। किसान जगैत तखन ने किसानी जिनगी जगैत जइसँ खेतक मोल बढ़ैत, से तँ भेल नहि..!"

हीयहारिणी-

"तखन?"

[39] बेटा

हीरानन-

"तखन की, पाछू उनैट तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जिनगीए जेना हेरा गेल।"

पतिक बात सुनि हीयहारिणी किछु बजली नहि, मुदा जहिना सूर्यास्तक पछाइत अकासमे रंग-रंगक तरेगन उगए लगैए तहिना दुनूक मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलैन। जइसँ दुनूक मन अन्हार राति जकाँ सियाह होइत कारी-सियाह भऽ गेलैन।

❍

शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018

आशापर पानि फेर गेल

परिवारमे जहिना कोनो विद्यार्थी कौलेजमे शिक्षा ग्रहण करए लेल प्रवेश करैए वा कोनो फलक गाछमे पहिल नव फल लगैए वा फूलक गाछमे पहिल फूल लगैए जइसँ जेहेन खुशीक लहैर जगैए तहिना ललित भाइक मनमे खुशीक लहैर जगलैन। जीवनमे जहिना नव कृत्ति वा नव बेवसाय एने मनमे आशाक किरण छिटकैए तहिना ललित भाइक मनमे आशाक किरण छिटकए लगलैन...।

ललित भाइक जीवन किसानी-जीवन छिऐन। पनरह बीघा खेत छैन आ भैयारीमे असगरे छैथ। ओना, तीन पीढ़ीसँ ललित भाइक ई पनरह बीघा खेत आबि रहल छैन। तेकर कारण अछि जे जहिना ललित भाइक बाबा भैयारीमे असगरे रहथिन तहिना पिता सेहो भेलखिन। गामक लोक एक-पुरखियाह परिवार बुझै छैन। परिवारमे बेटा-पक्ष तँ सभ दिन असगरक रहलैन मुदा बेटीक बाढ़ि नइ रहलैन से बात नहि अछि।

बी.ए. पास केला पछाइत ललित भाय किसानी जीवन धारण केलाह। ओना, आन-आन जकाँ ललित भाइक मनमे कहियो नोकरी-चाकरी नइ एलैन, जइसँ पढ़ैक क्रममे कहियो मनमे ई नइ जगलैन जे धुरफन्दा चालि पकैड़ नीक रिजल्ट पाबी। धुरफन्दा चालि भेल-नोकरीक हिसाबे पैरबी-पैगामसँ परीक्षाक रिजल्टक जोगार बैसाएब। ललित भाइक मनमे बच्चेसँ एहेन विचार जमि कऽ घर कए लेलकैन जे ज्ञान-ले पढ़ै छी। ओना, सभ ज्ञाने-ले पढ़बो वा लिखबो करै छैथ।

तँए, ललित भाय ने कहियो ट्यूशनक भीर गेला आ ने नोट-चन्द्रिकाक भाँजमे पड़ला। सभ दिन मौलिक किताब कीनि पढ़लैन। शिक्षा ग्रहण करैसँ पूर्व जहिना ललित भाइक मन असथिर रहैन तहिना पढ़ाइक पछातियो असथिरे छैन। जहिना बिजनेसी परिवारमे बच्चाक मन असथिर बनल रहैए जे पढ़ाइक पछाइत माने स्कूल-कौलेज छोड़ला बाद, अपन पितृवत् बेवसायिक जिनगी पेबे करब, तहिना किसानोक परिवारमे अछिए। नोकरीदार परिवारमे वा पेशेवर राजनीतिक परिवारमे एहेन विचार जागह वा नहि जागह, मुदा वेपारी आ किसानी परिवारमे जागब सोभाविक अछिए। जहिना नोकरी करैबला परिवारमे दोसरक मातहतीक आशा बनैए– से चाहे सरकारीबला हुअ वा गैर सरकारी नोकरीबला, तहिना राजनीतिक परिवारमे सेहो होइते अछि। ऐठाम राजनीतिक परिवारक माने देश सेवा वा देश-भक्तिसँ नहि, बल्कि बेवसायिक प्रवृत्तिसँ अछि। देश-भक्तिक तँ विराट रूप अछि। विराट रूप ई भेल जे जहिना देशक अजादी-ले कियो फाँसीपर लटैक गेला तँ कियो जेलमे यातना सहैत अपन जीवन अन्त केलैन, तहिना कियो कश्मीर सन बर्फीली जगहमे पूस-माघ मासक जाड़क दिन कटै छैथ, तँ कियो समुद्रक पानिक तरमे अपन कर्तव्यक पालन सेहो कइये रहला अछि। मुदा की एतबे देश-सेवा आ देश-भक्ति भेल?

..जे शिक्षक स्कूलमे अपन कठिन श्रमक ज्ञान संचरण करैत अपन जीवन नव पीढ़ीक निर्माणमे लगा रहला अछि वा जाड़-बरसातमे आकि रौदमे जे किसान हर-कोदारि चला अन्न-पानि पैदा कए रहला अछि वा जे कियो पहाड़सँ पाथर काटि-तोड़ि कऽ सड़कक निर्माण कए रहला अछि वा जे कियो कोयलाक खानसँ कोयला निकालि सम्बन्धित खगताक पूर्ति कए रहला अछि, की हुनका सभकेँ देश-भक्त नहि कहबैन? देश-भक्त तँ वएह ने भेला जे देशक कोनो अंगमे अपन अंश-दान जोड़ि जीवन-बसर कऽ रहल छैथ।

जहिना कोनो देश एक-एक जन-गणक छी तहिना देशक एक-एक अंगकेँ समृद्ध बनाएब सेहो एक-एक जन-गणक दायित्वो छीहे। जखने दुनूक बीच सामंजसक मूर्ति बनि स्थापित हएत तखने देशमे समृद्धता औत, देश समृद्ध बनत। जखने देश समृद्ध बनत तखने जन-गणक बीच सेहो समृद्धता एबे करत, जइसँ मनुखक जिनगी अधिक-सँ-अधिक सुखमय आ आनन्दमय बनत। जे सभ कियो चाहितो छी।

नोकरीपर आश्रित परिवार जहिना आगू-पाछू आ ऊपर-निच्चाँ होइत चलैए तहिना राजनीतिक-परिवार सेहो चलिते अछि। आगू-पाछू वा ऊपर-निच्चाँ भेल- जहिना ऊपर श्रेणीक नोकरी करैबलाक बेटा, अनेको कारणे निच्चाँ श्रेणीक नोकरीक जीवन बना आगू बढ़ै छैथ, तहिना राजनीतिक परिवारमे सेहो होइते अछि, पैछला पीढ़ी आ भविसमे ऐगलो पीढ़ी ऊपर-सँ-निच्चाँ आ निच्चाँ-सँ-ऊपर सेहो होइते चलै छैथ। तँए बेवसायिक आ किसानी जिनगीक अपेक्षा राजनीतिक आ नोकरशाहीक परिवारक जीवन धारामे ई अन्तर अछिए। ओना, कुसमय भेने ओहू दुनू परिवारमे ऊपर-निच्चाँ नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैत अछि। मुदा दुनूक बीच तात्त्विक अन्तर अछि। नइ चाहितो लोक करिते छैथ। ओना, ईहो अकाट्य नहियेँ अछि। किएक तँ मनुख अपन विचारानुकूल जीवन धारण करैत पीढ़ीगत जीवनसँ अलग होइत नव जीवन धारण करिते आबि रहल छैथ। जे समैयक गतिक संग गतिशीला गतिमानो तँ बनियेँ सकै छैथ।

ओना, धरतीपर जतेक मनुख छैथ सभकेँ अपन-अपन मनराजो छैन जे राजा मनो छैन्हे। जइ मन राजाकेँ मना चलए लेल तृप्तिक खगता छैन्हे। मुदा परिवारिक-समाजिक जीवनमे मनक तृप्तिक अनेको बाधा नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, जइसँ अतृप्त जिनगीकेँ तृप्तिक बाट भेटै छै ओ भेल सभसँ ऊपरक वस्तु, जेकरा धर्म सेहो कहै छिऐ आ लोक अपन जीवनकेँ ओही धारा दिस

मोड़ि सेहो चलिते छैथ। मुदा परिवारिक जीवन तँ सामुहिक जीवन छी, भलेँ ओ वंशगते आधारित किए ने हुअए। जहिना परिवार मनुखक समूह छी तहिना पहाड़पर सँ झहरैत अनेको झरना आगू बढ़ैत समूहक रूप पकैड़ धार वा धारा नइ छी सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो तँ छीहे। ओना, परिवारक बीच दुनू धारा चलैए। एक नोकरशाही परिवारमे जहिना उच्चकोटिक कलाकार आकि गुणमान नइ होइ छैथ सेहो तँ नहियेँ अछि। गुणमन्तक संग धनमन्त वा जनमन्त नहि छैथ, सेहो केना कहल जा सकैए। ओना, स्कूल-कौलेजमे कलाकेँ अवैज्ञानिक विषय मानि कलाक छात्रकेँ अवैज्ञानिके मानल जाइए। मुदा दुनूक बीच व्यक्त आ अव्यक्त ज्ञानक दूरी तँ अछिए। माने एकटा भेल साइंस, जइमे फिजिक्स-कैमेस्ट्री इत्यादिक पढ़ाइ अछि, दोसर भेल कॉमर्स, जइमे बिजनेस पद्धतिक पढ़ाइ अछि आ तेसर भेल आर्ट, जइमे साहित्यसँ इतिहास-भूगोल धरिक पढ़ाइ अछि। मुदा तीनू विषयक बीच व्यक्त-अव्यक्त ज्ञान अछि कि नहि अछि ई तँ प्रश्न अछिए।

जहिना नदी पहाड़पर सँ उतैर धरतीपर आबि सामूहिक रूप धारण करैत एक स्वच्छ जलधारक रूपमे प्रवाहित होइत चलैए तहिना एक्के नोकरशाह परिवारमे रंग-रंगक विचारक लोकक सामंजसो अछिए जे अपन-अपन इष्टिक अनुकूल जीवन धारण केने चलिते अछि। एहेन खाली नोकरशाहे परिवारमे अछि सेहो बात नहि, वेपारियो परिवारमे अछि आ राजनीतिक वा किसानोक परिवारमे सेहो अछि। मुदा अछि ओ बिरल संख्यामे। अबिरल ओहन संख्या बेसी अछि जइमे एहेन स्वच्छ, निर्मल आ पवित्र धाराक प्रवाह नइ अछि। एकर माने ईहो ने भेल जे बाँकी सभ गदियाएले वा पँकियाएले अछि। ईहो तँ सोभाविके अछि जे पहाड़पर सँ झहरैत झरनाक पानि पाथरे-पाथरक रस्तासँ बहैत धरतीपर बल-बालुक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ैए तँए ओइमे स्वच्छता छै।

स्वच्छताक माने रंगक रूपमे अछि जे मीठगरो आ सादो तँ अछिए। मीठगरक माने भेल जे दोष रहित अछि। मुदा मटियाह पहाड़सँ निकलल धारा अपन रंग पकड़बे करत। जइमे पंकपन आ गदपन सेहो रहिते छै, जे धरतीपर उतैर अमृत-मृत्तिकाक बीच जे धारा प्रवाहित होइए, तइ दुनूक रंग-रूपमे अन्तर भइये जाइए। किएक तँ हिमालय पहाड़पर जहिना वर्फक ढेर अछि तहिना माटियोक ढेर अछिए। तँए ओकरा दोषपूर्ण कहल जाए सेहो सोलहन्नी उचित नहियेँ हएत किने। खाएर...। ओइसँ ललित भायकेँ अखन कोन मतलब छैन। अपन परिवारिक जिनगी छैन आ खेती जीवन-धार छैन, ओहीमे परिवारजन सभ-तूर उमैकतो छैथ आ नहा-सोना मन पवित्र सेहो बनैबते छैथ। पवित्र भेने जहिना सबहक मनमे तृप्ति अबैए तहिना ललितो भायकेँ अबिते छैन। तँए, अपनाकेँ जगल बुझिते छैथ। मुदा तृप्तियो तँ तृप्ति छी किने, जे स्थायी आ अस्थायी दुनू अछि। जे अस्थायी तृप्ति अछि ओकर वृद्धि रुकि जाइ छइ। खाएर, तृप्ति-अतृप्तिक बीच जे अछि से अछि मुदा छी तँ दुनू भैयारीए। एक समुद्रमे मिलैए, दोसर क्षणिक अछि। क्षणभंगुर जकाँ लगले ताड़क गाछपर आ लगले साहोरक गाछपर चढ़ैत-उतरैत खसितो-पड़ितो रहिते अछि। लगले ताड़क गाछपर चढ़ि हकबाहि करए लगैए आ लगले साहोरक गाछपर सँ 'साहोर-साहोर' सेहो करिते अछि। मुदा जेकरा स्थायी तृप्ति कहै छिऐ ओ क्षीर सागर होइत अलौकिक सागरमे पहुँच जाइए।

जिनगीक शुरुहेमे ललित भायकेँ नवपनक रोग जहिना धेलकैन तहिना अखनो धेनहि छैन। नवपनक रोग भेल दैनंदिनक जिनगीमे किछु-ने-किछु नव उपार्जन करैक इच्छा। जँ से नहि तँ जिनगी या तँ ठमैक जाएत वा ऐगला हवाक झोंकक परिवेशमे पाछू ससैर जाएत। मुदा हवो तँ हबे छी, कखनो तेज गतिये चलि ठाढ़ो मनुखकेँ खसा दइए आ कखनो किछु ने बिगाड़ि पबैए। तहूमे मनुख तँ अखज वंशक

छीहे। जे, या तँ फेर उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइए वा केहनो हवाक झोंकमे अपन ठौर पकड़ने ठाढ़े रहैए।

एक तँ किसानी जीवन गुलाब फूलक गाछ जकाँ अछि जे डारियो छोड़ैए आ जड़िसँ गाछो छोड़िते अछि। जइसँ मात्र गाछेटा झमटगर नइ होइए बल्कि गाछक समूहे झमटगर बनि जाइए। तेहने अछि किसान आ किसानी जीवन। आ ओही परिवारक छैथ ललित भाय।

दस बर्ख पूर्व, जहिया ललित भाय जखन हाइ स्कूलमे प्रवेश केने छला तहियो मनमे यएह रहैन जे अपन भविस किसानी जिनगीमे अछि, किए तँ वंशगत अपन किसानी परिवार रहल अछि। दोसर जीविकाक जे साधन अछि ओ किसानोन्मुखी अछिए। किएक तँ कल-कारखानाक विकास दस सालक बीच जइ तेजीसँ रूप बदललक अछि ओ किसानी जिनगीक परिवेशे बदैल देलक अछि। ओना, अपन जिनगीक जे समृद्धताक कारक तत्त्व अछि ओइपर जहिना प्राकृतिक कुठाराघात भेल तहिना मानवीय कुठाराघात नै भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। दुनू दिससँ होइत रहल अछि। जहिना एक दिस धार-धुरसँ गामक-गाम नष्ट भेल आ ओइसँ जे गामवासीक गति भेल से तँ वएह ने नीक जकाँ बुझि रहल अछि। तहिना दोसर दिस महेशवाणीए आ नचारीए ने गबै छैथ..! खाएर जे जेतए अछि से तेतए अछि। ललित भाय गाममे छैथ, जइ देने आइ धरि कोनो धार बहबे ने कएल अछि। ओना, बाढ़ि-बरखा होइते अछि। जखन ललित भाय असगरेमे बैइसै छैथ आ अपन बालपनक रूप देखै छैथ तखन ईहो मन पड़िये जाइ छैन जे गामक स्कूलमे जखन छेलौं स्कूलक आगूमे जे फुलवाड़ी छल तइमे पुबरिया-दछिनबरिया कोण परक कियारी हमरे छल, जइमे गेन्दा, गुलाब सभ लगबै छेलौं। ओ आइ परती मैदान बनि क्रिकेटक फील्ड बनि गेल अछि..!

भरलपर ने मन भरिआइए मुदा जरलपर तँ जड़िऐबे करत। जखने मन जड़ियाएत तखने बोखार चढ़त आ जेना-जेना बोखारक ज्वर तेज हएत तेना-तेना ओ बकबे करत।

रेडियो, अखबार, पत्रिका सभमे सुर्जमुखी खेतीक चर्च जोर पकड़लक। जखन हवा बहै छै तखन घरमे रहू कि ओसारपर रहू, हवाक सिहकी वा झोंक लगबे करत, लगिते अछि। से ललितो भायकेँ लगलैन। प्रचारेक हवामे ललित भाय धँसि गेला। मुदा डुमै-ले नइ धँसला, हेलैले धँसला। भाय! के एहेन अभागल हएत जे पोखैरसँ धार होइत समुद्रमे नइ हेलए चाहत। ओहुना लोक जगरनाथपुरीक समुद्रक कातमे ढुसि-स्नान करिते अछि। यएह छी शाब्दिक ज्ञान आ अनुभवात्मक ज्ञानक बीचक दूरी।

दस कठबा चौमास जे ललित भाइक अपन दरबज्जाक आगूमे छैन, ओइमे सुर्जमुखीक खेती करैक विचार ललित भाय मनमे रोपलैन। खेती करैक विचारकेँ नीक जकाँ पत्रिको आ रेडियोओक माध्यमसँ सुनि-पढ़ि मन सक्कत बनाइये नेने छला। समस्तीपुर फार्मसँ बीआ आनि नियत समयपर खेती करैक जोगार ललित भाय केलैन। ओना, समयमे किछु ढीलपन छेलइ। ढीलपन ई जे वसन्तक आगमनक बीस दिनक पछातियो खेतीक अनुकूल मौसम नहि बनि पएल छेलइ।

शिवरात्रिक प्रात। आइ ललित भाय सुर्जमुखीक खेती करता। माने बीआ माटिमे देथिन। खादक संग कीटनाशी दबाइ खेतमे मिला चुकल छला। खुरपीसँ अपने रोपता। किए तँ गाममे बोनिहार रहितो काजक अनुभवी नइ अछि। केतेक माटिक तरमे बीआ पड़त आ केतेक दूरीपर पाँत लगौल जाएत से ललित भाय किताबसँ सीखि नेने छला। दोसर कियो करताइत रहबे ने केलैन। काल्हि साँझूए पहर

ललित भाय कहलैन-

“बौआ किसुन, काल्हि नव काज लऽ कऽ नव किसानक रूपमे अवतरित हएब।”

पुछलयैन-

“से की यौ भाय?”

ललित भाय कहलैन-

“बीस सालक अपन किसानी जीवनमे सेरसो-तोर आ तोरीसँ आगू तेलहनमे नइ बढ़ल छेलौं, मुदा ऐबेर दस कट्ठा सुर्जमुखीक खेती करब।”

सुर्जमुखीक खेती तँ कहियो ने केने रही मुदा तैयो जहिना गीत-गाइनक पलङ्गाइ होइए तहिना बजलौं-

“भाय, शुद्ध सेरसो-तोरक जे तेल होइए तहूसँ बेसी पौष्टिक सुर्जमुखीक तेल होइए। तेतबे नहि, तोर-तोरीसँ सुर्जमुखीक उपजो बेसी होइए आ दानामे तेलक मात्रा सेहो सेरसो-तोरीसँ बेसी होइए।”

हमर बात ललित भाय कोन काने सुनलैन से तँ ललित भाय जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे अपन काजक प्रशंसे सुनि रहल छला तँए मन भीतरे-भीतर खुशी होइते छेलैन।

दोसर दिन भोरे ललिते भाय मन पड़ला। अबैले कहने छैथ। सात बजेसँ काजमे हाथ लगेता। जाएब अछि। मुदा लगले मन मनाही केलक जे केकरो काज करैक काल महाकाल छी, तँए ओइठाम जा काजमे बाधा उपस्थित करब नीक नहि। अपना लूरिये की अछि जे घन्टो-दू-घन्टा रोपैमे मदतिये करबैन। नीक हएत जे साँझू-पहर घुमै-फिरै बेरमे जाएब आ रोपलकेँ देखब।

मास दिन बीत गेल। बीत-बीत भरिक गाछ भऽ गेल।

ढकनाएल पातसँ खेत लह-लहा उठल। ओना, एते सतरकी ललित भाय केनहि छला जे जखने गाछ जनैम कऽ धरियाए लगल तखने दड़ी सभकेँ नीक जकाँ देख खोभि नेने छला। तँए कोनो पतिआनीमे एक्को गाछक कमी नहि भेल।

पहिल पटौनी कऽ लेलैन। खेतक उपजाक ओहन रूखि बनि गेल जे साक्षात् लक्ष्मीक वासभूमि बनि रहल छैन।

दू मास बीतैत-बीतैत सौंसे खेतक गाछ भकरार भऽ फुला गेल। मुदा वाह रे हम सभ..! जहिना भोला बाबाकेँ भाँग-धथुरसँ पूजा करै छी तहिना सुर्जमुखी फूलो तँ छीहे। ओतेटा फूल कोन देवताक चानिपर अँटतैन! तँए छोड़िये देब नीक।

दानासँ फूल भरए लगल। ललित भाय नियमित लोक छथिए। तहूमे गीताक बात सेहो मानिते छैथ जे मनुख कर्मे तकक भागी अछि। पछाइत ओकर हिस्सा कटि जाइ छइ। तँए साँझ-भोर दू बेर नित्य खेतक चारू आड़ि घुमि-फीरि देखबे करै छैथ।

मिथिलांचलक के कहए जे सौंसे दुनियाँक सुग्गाक आगमन खेतमे भऽ गेल! सुग्गाक उपद्रव ललित भाय देख रहल छला। मुदा उपाय नइ सुझि रहल छेलैन। हमरा देखते बजला-

“किसुन, आशापर पानि फेर गेल..!”

पुछलयैन-

“से की भाय?”

ललित भाय बजला-

“एक्को कनमा दाना नइ हएत, सभटा सुग्गा खा गेल!”

बजलौं-

“किनकोसँ पुछि नइ नेने छेलिऐन?”

सुखाएल मुहेँ ललित भाय बजला-

“किताबेक बातमे रहि गेलौं। नइ बुझि पेलिऐ।”

❍

शब्द संख्या : 2047, तिथि : 9 मार्च 2018

ई कथा-

‘आशापर पानि फेर गेल’

सगर राति दीप जरय- 97म कथा गोष्ठीकेँ

समर्पित

कथा लेखन क्रम 2014 सँ...

269. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
270. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
271. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
272. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
273. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014
274. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
275. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
276. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
277. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
278. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
279. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014
280. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
281. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
282. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
283. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
284. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
285. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
286. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
287. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
288. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014
289. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
290. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
291. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
292. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
293. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014

294. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
295. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
296. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
297. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
298. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
299. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
300. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
301. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
302. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
303. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
304. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014
305. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
306. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
307. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
308. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
309. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014
310. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014
311. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
312. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
313. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
314. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
315. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
316. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014
317. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
318. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
319. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
320. मरूभूमि- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
321. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014

322. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
323. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
324. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
325. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
326. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
327. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
328. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
329. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
330. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
331. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
332. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
333. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
334. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
335. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014
336. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014
337. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
338. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
339. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
340. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
341. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014
342. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
343. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
344. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014
345. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014
346. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014
347. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014
348. ढकरपेंच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014
349. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014

350. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
351. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
352. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
353. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
354. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
355. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
356. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
357. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
358. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
359. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
360. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
361. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
362. उकड़ू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
363. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
364. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
365. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
366. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
367. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
368. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
369. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
370. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
371. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
372. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015
373. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
374. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
375. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
376. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
377. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015

378. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
379. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
380. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
381. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
382. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
383. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
384. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
385. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
386. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
387. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
388. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
389. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
390. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
391. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
392. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
393. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
394. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
395. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
396. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
397. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
398. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
399. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
400. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015
401. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
402. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
403. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
404. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
405. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015

406. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015
407. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
408. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
409. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
410. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
411. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
412. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
413. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
414. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
415. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
416. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
417. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
418. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
419. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
420. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
421. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
422. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
423. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
424. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
425. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
426. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्वर 2015
427. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
428. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015
429. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016
430. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016
431. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016
432. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016
433. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

434. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016
435. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
436. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
437. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
438. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
439. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
440. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
441. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
442. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
443. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
444. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
445. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
446. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
447. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
448. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
449. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
450. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
451. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
452. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
453. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
454. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
455. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
456. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016
457. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
458. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
459. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
460. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
461. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

462. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
463. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
464. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
465. कन्हा भैंट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
466. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
467. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
468. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
469. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
470. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
471. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
472. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
473. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
474. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
475. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
476. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
477. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
478. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
479. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
480. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
481. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
482. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
483. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
484. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016
485. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
486. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
487. भैंसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
488. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
489. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

490. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
491. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
492. मनकें फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017
493. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
494. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
495. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
496. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
497. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
498. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
499. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
500. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
501. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
502. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
503. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
504. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
505. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
506. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
507. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
508. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
509. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
510. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
511. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
512. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017
513. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
514. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
515. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
516. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
517. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017

518. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
519. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017
520. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017
521. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017
522. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017
523. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017
524. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
525. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
526. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
527. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
528. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
529. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
530. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
531. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
532. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017
533. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017
534. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017
535. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017
536. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017
537. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017
538. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018
539. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018
540. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018
541. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018
542. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018
543. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018
544. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018
545. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018

546. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018
547. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018
548. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018
549. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018
550. देखल दिन- शब्द संख्या : 2582, तिथि : 27 मार्च 2018
551. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1904, तिथि : 30 मार्च 2018
552. संकट- शब्द संख्या : 2593, तिथि : 4 अप्रैल 2018
553. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2816, तिथि : 10 अप्रैल 2018
554. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018
555. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018
556. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018
557. प्रवल इच्छा- (जारी...)


जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत। **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

प्रकाशित पोथी : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता-बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. सुभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह।

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन-847410, बिहार। **मो.** 9931654742

E-mail; jpmandal.berma@gmail.com

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

ISBN : 978-93-87675-65-0

₹ 251

साहित्य

अर्द्धांगिनी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

अर्द्धांगिनी

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलबाड़ी लगौनिहार
तथा
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

कथाक सत्तैर-

ISBN : 978-93-87675-15-5

दाम : ₹ 250/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

ARDHANGANI
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

ग्राम्यजीवनक सत्यक संवाहक : अर्द्धांगिनी

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-कविता-नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ ई अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहला अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ व्याख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीवनक यथार्थकेँ यथावत् चित्रित कऽ मानवीय संवेदनाकेँ उद्बुद्ध करब हिनक रचना सबहक प्रधान विशष्टता रहलनि अछि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास एहि तीनू कारकसँ सम्बलित हिनक रचनावलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तेकर समाधानक दिशा भेटैत अछि। वर्त्तमान जीवनमे होइत नित्य नूतन परिवर्त्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करब हिनक कथाक विषय-वस्तु रहलनि अछि जेकरा ई सहज रीतियेँ प्रस्तुत करैत रहल छथि।

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा छी। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा-निराशा, सुख-दुःख, हर्ष-उल्लास आ जीवन-संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक ओ राजनीतिक जीवनमे होइत परिवर्त्तन सभकेँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा ई अपन कथा सभकेँ प्रवाहमयता, रोचकता ओ विश्वसनीयताक संग प्रस्तुत करबामे सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेला अछि।

हिनक कथासंग्रह अर्द्धांगिनी बीस गोट कथाक समुच्चय छी। एहि कथा सभमे नोकरिहाराक जीवनक संत्रास, परिश्रमी कृषकक उल्लास, सांस्कृतिक पावनि-तिहारमे पैसल अन्धबिसवासक प्रति जुगुप्सा, ग्राम्य जीवनमे जातीय बेवसायक महत्व, क्रमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्या आदिक सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक लोकमंगलक कामना देखि पड़ैत अछि। युगीन समस्या ओ समस्याक कारण एवं तेकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता

हिनक वस्तु-विन्यासकेँ प्रेरक-प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जइमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।

एहि संग्रहक पहिल कथा थिक 'दोहरी मारि', एहि कथामे पुरुख पात्र गुलाबक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि। अवकाश प्राप्त प्रोफेसर गुलाब कतोक वर्षसँ डाइबीटीज ओ ब्लड-प्रेसर सदृश बीमारी सभसँ ग्रस्त छथि। गामक घर-घराड़ी पर्यन्त बेचि शहरमे बनौल मकानमे पति-पत्नी एकाकी रहै छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहै छन्हि तँए हिनकालोकनिक सुधि लेनिहार कियो नहि छन्हि। नागर जीवनक चाकचिक्यसँ सम्मोहित भऽ ई शहरी जीवनमे बसि तँ गेल छथि, मुदा चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गन्दगी आदि समस्यासँ ग्रस्त शहरी ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण वातावरणक प्रति आकर्षण जगैत छन्हि। हद तँ तखन भऽ जाइत अछि जखन पुत्र द्वारा ई समाद भेटैत छन्हि जे पौत्रक मूड़न घरपर नै भऽ कऽ वैष्णो देवीमे हेतनि, जइ लेल हुनकोलोकनिकेँ ओहीठाम एबाक आमंत्रण भेटैत छन्हि आ ओ अपनाकेँ अशक्य बूझै छथि।

एहि कथाक माध्यमे मण्डलजी साम्प्रतिक जीवनमे उपकल विस्थापनक समस्याक कारणे अवस्था दोषग्रस्त बुजुर्ग पीढ़ीक बेथाकेँ अभिव्यक्ति प्रदान केलनि अछि। एहि समस्याक कारणे नोकरी-चाकरी भेला उत्तर लोक शहरमे बसि ग्राम्यजीवनक सौहार्दसँ तँ वञ्चित होइते छथि संगहि वृद्धावस्थामे जखन परिवारोक लोक हुनक संग छोड़ि दइ छथिन तँ अपनाकेँ वंचित अनुभव करए लगैत छथि।

अही समस्याकेँ संग्रहक दोसर कथा “केना जीब” मे सेहो उठाओल गेल अछि। एकर पुरुख पात्र सेहो अवकाशप्राप्त प्रोफेसर छथि। ई बेटाकेँ पढ़ा-लिखा कऽ विदेश पठयबामे सफल तँ होइ छथि मुदा बेटा विदेशी सभ्यता ओ संस्कृतिक रंगमे रमि जाइ छन्हि आ हिनकालोकनिक खोजो-पुछारि नहि कऽ पबैत छन्हि। परिणामत: दुनू परानी एकाकी जीवन बितेबाक हेतु बाध्य होइ छथि। एहेन स्थितिमे हिनकालोकनिक लग एकमात्र अवलम्ब बचि जाइत छन्हि- जिजीविषा ओ संघर्ष। यएह जिजीविषा ओ संघर्ष करबाक

मानसिकता एहि कथाक युग जीवनक अनुकूल संदेश छी जे एकरा पूर्व कथासँ भिन्न आ स्तरीय बनबैत अछि। एहि कथाक वृद्ध दम्पत्ति कखनो हतास आ निराश नहि देखि पड़ैत छथि।

संग्रहक तेसर कथा ग्राम्य जीवनक परिश्रमी कृषकक गाथा छी जे अपन परिश्रमक बलेँ अपन भाग्यविधाता बनल अछि। नवान शीर्षक एहि कथामे मिथिलाक लोक जीवनक विभिन्न खण्डचित्र उपस्थित कएल गेल अछि यथा वृक्ष-लतादिक पहिल फड़ देवताकेँ चढ़ाएब, गाए बिआएलापर महादेवकेँ दूधसँ अभिषेक करब आदि। ग्राम्य जीवनमे पसरैत जातीय ओ साम्प्रदायिक विद्वेष दिस सेहो एहिमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा एहि कथामे मिथिलाक लोकजीवनक आर्थिक स्थितिकेँ बदहाल करएबला जइ समस्यापर विशेष दृष्टिनिक्षेप कएल गेल अछि, से छी बाढ़िक समस्या। एहि समस्याक कारणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक बेवस्था अस्त-व्यस्त भऽ जाइत अछि। तथापि एहि कथाक नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नव किस्मक धान उगबए लगैत अछि, तीमन-तरकारीक नगदी फसिल उपजाबए लगैत अछि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीवनकेँ खुशहाल बना लइए, वस्तुत: एहि वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक कृषक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उदेश्य छन्हि।

संग्रहक चारिम कथा छी “तिलासंक्रान्तिक लाइ” एहि कथामे ग्राम्यजीवनमे पसरल अन्धबिसवासपर प्रहार कएल गेल अछि। तिलासंक्रान्तिक एकटा एहन पर्व छी जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनौल जाइत अछि। एहि दिनसँ सुरूज उत्तरायण भऽ जाइत छथि आ क्रमश: शीत ऋतु वसन्त आ गृष्म दिस बढ़य लगैत अछि। मिथिलाक प्रशस्त भोजन चूड़ा-दही एहि दिन गरीबो-गुरबा धरि खाइते अछि। चूड़ा ओ मुरहीक लाइ, तिलबा आदि देवताकेँ चढ़ाय प्रासाद रूपेमे ग्रहण करब एहि पावनिक कृत्य होइत छैक। शीत ऋतु रहलाक बादो मिथिलाक ग्राम्यजीवन एहि पर्वक ओरियौनमे मास दिन पूर्वहिसँ लगि जाइत अछि। मुदा एहि पर्वक प्रसाद ग्रहण करैक हेतु प्रात: स्नान जरूरी बुझल जाइ छैक। मिथिलामे ई अपवाद सेहो पसरल छैक जे एहि दिन जे कियो भोरे नदी वा पोखरिमे डुम दइत छथि हुनका नदी-देवता तत्काले लाइ धरा दइत छथिन। अही अपवादपर बिसवास कऽ गोपला नामक एकटा नेना बारहे बजे

रातिमे नदीमे डुम देबए चलि जाइत अछि आ ठंढसँ ग्रस्त भऽ जाइत अछि। ग्राम्यजीवनक अन्धबिसवासी समाजकेँ एहि कथाक माध्यमसँ ई संदेश देल गेल अछि जे वस्तुत: ई पावनि प्रकृति-परिवर्त्तनपर आधारित अछि आ एहिमे बिनु पाखण्ड कएने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समैपर स्नान करैक चाही, नै कि अन्धविश्वासमे पड़ि रोगग्रस्त भऽ जेबाक चाही। हड़ीवालीक उक्ति-

“अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छेलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब।” अन्धविश्वासक प्रति बेस प्रहार कएलक अछि। कथामे एहि पावनिक तैयारीमे जुटल लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि।

पाँचम कथा “भाइक सिनेह” भाए-भैयारीक आपसी कलह ओ आर्त्यानक प्रेमक कथा छी। शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू भाँइ एक दोसराक प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति ओ बन्धुत्वक भाव रखैत छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारमे भिन्न-भिनाउज भऽ जाइत छन्हि। भिन्न-भिनाउजक मूलमे अर्थसत्तापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भाव जगैत छन्हि तँ दुनू एक-दोसराक दुःख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। एहि कथामे कृषक जीवनमे पारस्परिक सहयोग, सद्भाव ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन देखि पड़ैछ।

संग्रहक छठम कथा “प्रेमी” वस्तुत: प्रेमकथाक रूपमे लिखल गेल अछि मुदा एहि कथामे रचनाकारक उदेस समाजिक जीवनमे व्याप्त दहेज प्रथाक कुरीतिकेँ समाप्त करैक संदेश सएह अभिव्यक्त भेल अछि। पक्षधर आ ज्ञानचन दू गामक छथि। दुनूमे प्रगाढ़ दोस्ती छन्हि। ज्ञानचनक पौत्र परीक्षा देबाक हेतु पक्षधरक गाम अबैत छथिन जेतए परीक्षावधि धरि ज्ञानचनक पौत्र लोचन आ पक्षधरक पौत्री सुकन्याक बीच संवाद होइ छन्हि आ दुनू परस्परानुरक्त भऽ जाइ छथि। लोचनकेँ विदा करैक क्रममे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घर धरि चलि जाइत अछि जे ओइ गाममे गुलञ्जरक वस्तु भऽ जाइ छैक। विजातीय रहलाक बादो पक्षधर आ ज्ञानचन पारस्परिक मैत्रीकेँ सम्बन्धमे बदलि एकटा आदर्शक स्थापना करैत छथि। पक्षधरक उक्ति- “जइ समाजमे मनुखक खरीद-बिक्री गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए, की ओइ समाजकेँ पंच-तत्त्वक बनल मनुख कहल जा सकै छइ? जँ से नहि तँ हमर कियो मालिक नइ छी। कियो

ओंगरी देखौत तँ ओकर ओंगरी काटि लेबइ। आइए दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देख-सुनि अबै छी।" मे दहेज प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-बिआह, विजातीय बिआहक अवरोधक तत्त्वपर प्रहार कएल गेलैक अछि।

संग्रहक सातम कथा "बपौती सम्पैत" कृषक जीवनमे जातीय व्यवसयक महत्तवक अवधारणापर आधारित अछि। सम्प्रति कृषक-मजदूरक पलायनसँ जे गामक अर्थ-बेवस्था चरमरा गेल अछि तकरा सुधारबाक हेतु एहि कथामे चिन्तनक एकटा दिशा भेटैत अछि। कथानायक गुलटेन अपन पिताक सिखौल बेवसायसँ नीक जकाँ परिवारक परिपालन करबामे सक्षम अछि। तँए कथाकारक उदेश्य ग्राम्य स्वावलम्बनकेँ पुन: स्थापित करैक हेतु मार्गदर्शन करब बुझना जाइत अछि।

आठम कथा "डंका" लोकजीवनक अवमूल्यनकेँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य पात्र भैयाकाका गामक रक्षा करैक संकल्प लऽ अपनो गाममे अखड़ाहाक प्रचलन शुरू करैत छथि जइसँ पास-पड़ोसक गाम किंवा जमीन्दारक पहलमान हुनकालोकनिकेँ अबल बुझि प्रताड़ित नहि कऽ सकनि। एहि तरहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका व्यग्रता छन्हि मुदा साम्प्रतिक जीवनमे स्वार्थक प्रवेशसँ ओ ई जानि विचलित भऽ जाइ छथि जे आब गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ दूर, लोक अपनो सर-संबन्धीक खोज-पुछारि करबासँ कतरेबाक मूल्य रहित संस्कार पालए लगल अछि। हिनक उक्ति- "माए-बाप, भाए- बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार एहि रूपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना-भूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य...।" मे समस्त कथासार अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

नवम कथा "संगी" शिक्षा जगतमे भेल अद्य:पतनक कथा छी जइमे स्कूल-कौलेजमे शिक्षाक बेवसायीकरणक फलस्वरूप सामान्य जनसँ छीनल जाइत शिक्षाक समस्यापर विमर्श भेल अछि, जेकर समाधानक हेतु दूटा संगी पारस्परिक परिणयपूर्वक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ै छथि। कथाक घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जाइछ, जे प्रभावान्वतिकेँ कमजोर करैत अछि।

ठकहरबा पूर्णत: राजनीतिक कथा थिक। एहिमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे पुलिस ओ नेतालोकनिक भ्रष्ट चरित्र, मतदानमे गड़बड़ी आदिक चित्रण करैत

लोकजगतमे क्रमश: पसरैत भ्रष्टाचारक अतिरेकक चित्रण भेल अछि जइसँ कोनो वस्तुक विश्वासनीयतापर प्रश्नचिन्ह लागि गेल अछि। ई कथा लोकतंत्रमे लोक आ तंत्र दुनूक स्खलनपर सोचबाक हेतु विवश करैत अछि।

"अतहतह"मे मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे बरियाती पक्ष द्वारा सरियाती पक्षकेँ देखार करैक हेतु खाद्य वस्तुपर जोर देबाक परिष्कारक रूपमे सरियाती पक्ष द्वारा तेकर बदला लेबाक कथा कहल गेल अछि। एहि कथामे बरियाती पक्षकेँ पानिक संग दबाइ पिआ ओकरा सभकेँ देखार करैक प्रयास कएल गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल होएबाक कारणे प्रतीयमान नहि भऽ सकल अछि। अवश्ये एहिमे बर पक्षमे शराब पीब कऽ बरियाती जेबाक आधुनिक प्रचलनक विरुद्ध आक्रोशक अभव्यक्ति भेल अछि। मण्डलजीक ई कथा कन्यादान-वरदानमे दुहू पक्षक सम्मान रक्षाक पारस्परिक दायित्वक प्रति कान्तासम्मित उपदेश दैत अछि।

बारहम कथा "अर्द्धांगिनी" एहि पोथीक नामकरणक अधार बनल अछि। एहि कथामे अवकाशप्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण भेल अछि। अपन कमाइक बलेँ ओ आजीवन अपन पत्नीक दासीसँ आगू बुझबाक हेतु तैयार नहि होइत छथि मुदा जखन नोकरी समाप्त भऽ जाइ छन्हि तखन पत्नीक आवयकतापर धियान जाइ छन्हि आ अर्द्धांगिनीक महत बुझि पबैत छथि। लेखक नारीक सेविका स्वरूपकेँ मर्यादित कऽ ओकरा पुरुखक समानान्तर मूल्य प्रदान करैक पक्षपाती छथि, जेकर अभिव्यक्ति एहि कथाक लक्ष्य बुझना जाइत अछि।

तेरहम कथा छी "ऑपरेशन" एहि कथामे मइटुग्गर नेनाक सामाजिक स्थितिपर विमर्श कएल गेल अछि। जखन कोनो नेनाक माए असमए कालकवलित भऽ जाइ छै, तँ समाज ओकरा अलच्छ करि कऽ बूझए लगैत छैक आ केकरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक विकासक चिन्ता नहि रहैत छैक। मुदा जौं ओइ बच्चाक पिता दोसर बिआह कऽ ओकर प्रतिपालनक हेतु स्थानापन्न माताक बेवस्था करैत छथि तँ वएह समाज बेर-बेर ई जनबाक प्रयास करैत अछि जे सतमाए ओकर पालन नीक जकाँ कऽ रहल छैक वा नहि। समाजक ई बेवहार ओकर क्रूर मानसिकताक परिचय दैत अछि जइसँ नेना आ ओकर पिता आहत होइले बाध्य होइत छथि। लेखक समाजक एहि विरूपित मानसिकतापर

व्यंग्य करब एहि कथाक उदेश्य रखलनि अछि। अही माध्यमसँ अस्पतालक दुर्व्यवस्था तथा प्राइवेट प्रैक्टिसक कारणपर सेहो विमर्श कएल गेल अछि।

चौदहम कथा "धर्मनाथ" ढहैत जमींदार परिवारक गाथा छी। एहिमे दहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक जागरण कथाकारक उदेश्य बुझना जाइत अछि। एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ पिताक अमलदारीमे धरि हुनक परिवार देहेजक संतोष्क रहल अछि आ खेत बेचि-बेचि कन्यादान करैत अपन कुलाभिमानक रक्षा करैत रहल अछि। मुदा ई मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ क्षत-विक्षत भऽ गेल छै आ धर्मनाथ एहि स्थितिमे नहि रहि पबैत छथि जे पुत्रीक बिआह जमीन्दारे परिवारमे करैक हेतु धन जुटा पाबथि। अन्तत: ओ प्रोफेसर रामरतन सन दहेजविरोधी व्यक्तिक सहायतासँ एकटा कर्मयोगी बालकसँ अपन बेटीक बिआह ठीक कऽ लैत छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ चुनौती दैत छथि। परिणामत: हुनक पिता अपन कुलाभिमानपर प्रहार होइत देखि मृत्युकेँ प्राप्त कऽ लैत छथि। धिया-पुताक थपड़ी बाजा-बजा ई कहब जे-

"बाबा मुइला पुड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।" वस्तुत: परम्परा आ अन्धविश्वासँ जकड़ल सामाजिक बेवस्थाक विनाशक प्रति उत्सव थिक जे दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ संकेतित करैत ई ईंगित करैत अछि जे जौं लोक मिथ्याभिमानक तियाग नहि करता आ दहेज देब-लेबकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक मानदंड बनौने रहता तँ अद्य: पतन अवश्यम्भावी अछि।

"सरोजनी" प्रेम बिआहपर आधारित कथा थिक। नायिका सरोजनी जमीन्दार घरक कन्या छथि। हिनक भाय हृदयनारायण बिलैतिन कन्यासँ प्रेम बिआह कऽ लेने छथिन। ईहो अपन बालसखा रमेशक संग बिआह कऽ लइ छथि। रमेश हिनके नोकर घूरनक शिक्षित पुत्र छथि। आर्थिक ओ सामाजिक दुनू स्तरपर असमान लोकक विजातीय बिआहक समर्थनक ई अधार जे "अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझैबैन। पुतोहु इसाइ भेलैन से बड़ बढ़ियाँ। अखन धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैए, नाँगैटकेँ वस्त्र नै दऽ सकैए, बेघरकेँ घर नै बना सकैए, मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैए, लुटैत इज्जतकेँ बँचा नै सकैए, ओइ समाजकेँ विरोध करैक कोन अधिकार छइ?"

उपदेशात्मक ओ असहज तथा सिने जगतक वस्तु जकाँ असहजतासँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। तथापि कथाकार जातीय बेवस्थापर आधारित वैवाहिक पद्धतिकेँ गुण ओ प्रेमपर आधारित करैक समर्थन कऽ एहि प्रथामे युगानुरूप परिवर्त्तनक आकांक्षी बुझना जाइत छथि। विश्रृंखलित होइत वैवाहिक बेवस्थाक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करब एहि कथाक उदेश्य बुझना जाइत अछि। संग्रहक सोलहम कथा 'सुभद्रा' विधवा बिआहक समस्यापर आधारित अछि। दैवयोगसँ सुभद्राक पतिक देहान्त हवाइ दुर्घटनासँ भऽ जाइत छन्हि। ओ अभिशप्त जीवन बितेबाक हेतु बाध्य भऽ जाइत छथि। एकर कारण ई अछि जे ओ जाहि जातिसँ अबैत छथि तइमे विधवा बिआहकेँ मान्यता नहि छैक। कथाकार रूपलाल बाबा नामक एक गोट गाँधीवादी चरित्रक अवतारणा करैत छथि जे नारी समुत्थानक प्रति समरपित छथि। हिनक मान्यता छन्हि जे जहिना पत्नीक मुइला उत्तर पतिकेँ दोसर बिआह करैक अधिकार छैक तहिना पतिक मुइला उत्तर पत्नियोकेँ दोसर बिआहक अधिकार भेटबाक चाही। रूपलाल बाबा सुभद्राक पिताकेँ मानाय सुशील नामक युवकसँ ओकर बिआह सम्पन्न करबैत छथि। एहि तरहेँ समाजमे विधवाकेँ मान्यता भेटैत छैक। आदर्शवादी संकल्पनापर आधारित ई कथा वस्तुत: एहि सामाजिक समस्याक प्रति कथाकारक प्रगतिवादी मूल्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

"सोनमाकाका" एहि संग्रहक सतरहम कथा छी। ई कथा मानव धर्मपर आधारित अछि। एकर प्रधान पात्र सोनमाकाका स्वयं पत्नीक बीमारीसँ त्रस्त छथि। ओकर इलाज करा जखन गाम घूमैत छथि तँ रामकिसुन नामक एकटा बिगड़ल बेकतीक मृत्युक समाचार भेटैत छन्हि। ओ व्यसनक चक्रमे पड़ि तेतेक निर्धन भऽ गेल छल जे ओकरा कफनो धरिक उपाय नहि छेलैक। सोनमाकाका समाजक सहायतासँ ओकर संस्कार करबैत छथि आ ओकर अनाथ बालककेँ अपन बेटीक संग बिआह करा ओकर जीवनकेँ सामान्य बनेबाक प्रयत्न करैत छथि। कथाकार एहि आदर्श पुरुखक स्थापना कऽ ई सिद्ध' करए चाहैत छथि जे जौं समाज चाहए तँ केहनो पैघ समस्याक निदान भऽ सकैत छैक।

अठारहम कथा "दोती बिआह" परित्यक्ताक पुनर्विवाहपर आधारित अछि। एकर प्रमुख पुरुख पात्र उमाकान्त छथि जे पचास वर्षक आयुमे पत्नीक देहावसानक कारणे एकाकी जीवन जीबाक हेतु बाध्य छथि। जीवन संगिनीक

अभावमे हिनक दिन काटब पहाड़ भऽ गेल छन्हि। दोसर दिस यशोदिया नामक एकटा युवती छथि जनिक पति दिल्लीमे नोकरी करैत छेलखिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यक्त कऽ कतौ पड़ा जाइत छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घुमि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोट सम्भ्रान्त बेकतीक आश्रममे रहि जीवन-यापन करए लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग बिआह करा दैत छथिन जइसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटैत छन्हि आ टूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। एहि कथाक माध्यमे कथाकारक ई उदेश्य स्पष्ट होइत छन्हि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित रखबाक हेतु पति-पत्नीमे कियो जौं एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक बेथामे पड़ल रहैत अछि जेकर निदानक हेतु समतूल युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उनैसम कथा “पड़ाइन” ग्राम्य जीवने पसरल अराजकताक कथा छी जेकरा कारणे बलगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटयबापर लगल रहैत अछि। एहि कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बेइमानी-शैतानी, चोरि, बलपूर्वक दोसरक जताति नष्ट करब आ माए-बहिनक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतए परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पैतशाली बनि नीक जकाँ गुजर करए लगैत अछि। एहि कथामे कथाकारक उदेश्य ग्राम जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि मुदा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे एहिमे स्वाभाविकताक अभाव बुझना जाइत अछि।

“केतौ नै” कथा संग्रहक अन्तिम कथा छी जे वस्तुत: यात्रा-वृत्तान्त छी। एहिमे जनकपुर यात्राक वर्णन आएल अछि। गामक एकटा टोली जनकपुरमे बिआह पंचमीक मेला देखबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि मुदा बिआह पंचमी दिन ई लोकनि धनुषा दर्शन करैक हेतु जाइत छथि आ ओतए गाड़ी खराब भऽ जेबाक कारणे बिआह पंचमीक रातिमे पुन: जनकपुर घुमि नहि पबैत छथि जइसँ हुनकालोकनिकेँ जनकपुरक कार्यक्रम देखबाक अवसर नहि भेटि पबैत छन्हि। अन्तत: हारि-थाकि कऽ सभ सोचैत छथि जे केतए एलौं तँ केतौ नहि। दुर्योगवशात् मनोरथपूर्त्तिमे बाधा होएबाक एहि कथामे वस्तुत: जनकपुर यात्राक एक गोट मनोरम वृत्तान्त भेटैत अछि।

एहि तरहेँ अर्द्धांगिनी कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य जीवनक विभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तेकर समाधान सबहक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी व्याख्या छी।

एहि संग्रहक कथा सभ वर्णन-प्रधान देखि पड़ैत अछि। कथाकारक शैली एहेन छन्हि जे ओ कोनो घटनाकेँ प्रस्तुत करबासँ पूर्व ओकर पूर्ववीठिकाकेँ ततेक सघन कऽ दैत छथि जे पाठक तइमे तल्लीन भऽ जाइत छथि। एहि प्रकारक वर्णन-विन्यास हिनक औपन्यासिक वृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि जइमे वर्णनक हेतु पयाप्त अवसर रहैत छैक।

मनोविश्लेषण मण्डलजीक कथा सबहक अन्यतम विशिष्टता छियनि। ई जाहि कोनो पात्रकेँ प्रस्तुत करैत छथि तेकर अन्तस्तलमे प्रेवेश कऽ ओकर भावराशिकेँ अभिव्यक्त कऽ दैत छथि जइसँ पात्रक चरित्र स्वत: स्फुट हुअ लगैत अछि। उदाहरणार्थ “बपौती सम्पैत” कथामे गुलटेनक मानसिक स्थितिकेँ अभिव्यक्त करैत ई पाँती द्रष्टव्य अछि- “मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठामक फाट सीने दोसरठाम मसैक जाइ छै तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू-मुहेँ नै ससैर रुकि गेलइ। चिन्ताकेँ अँटैकते गुलटेनक मनमे खुशी एलइ। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवताकेँ होइ छैन ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी? ई दुनियाँ केकरा-ले छइ? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी नइ कि उपभोग करैक...।”

मण्डलजी कथाक भाषामे मैथिलीक गमैया बोली-वाणीक सहज स्वरूप अभिव्यक्त भेल अछि। ई पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग केलनि अछि जइसँ प्रत्येक पात्रक बौद्धिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट होइत चलि जाइत अछि। हिनक कथा सभमे कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक भाषाहिक अनुगमन करैत अछि जइमे सहजता अछि। कनेको कृत्रिम प्रयोगसँ ई बँचैत रहल छथि। हिनक भाषामे तद्भव ओ देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक रहलनि अछि। उदाहरणक हेतु माल-जाल, लेब-देब, दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, बाल-बोध, बेटा-पुतोहु, भोज-काज,

अन्हड़-बिहाड़ि, दार-मदार, सुक-पाक, भूखल-दुखल, चीज-वौस, घुसका-फुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ई अन्यतम विशिष्टता छी जे ई कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिव्यक्त करैक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करैत छथि जाहिसँ वस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाइत अछि यथा-

“जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बुझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक वोनाएल रूप देखलक। कौलेजकेँ बीचमे देख नजैर सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघरबला स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकैल अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जा मिलैए तहिना ने टटघरोक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत।” आदि।

एतावता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णनक दृष्टिएँ मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थवादी चित्र, घटनाक दृष्टिएँ आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मनोविश्लेषणक प्रति प्रतिबद्ध तथा उदेश्यक दृष्टिएँ लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा लेखन हिनक रचना सभसँ सम्बलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्त्व सभ अनन्त-काल धरि मिथिलाक लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत।

-डॉ. योगानन्द झा

कबिलपुर, लहेरियासराय

दरभंगा- 846001 (बिहार)

दोहरी मारि

दस सालसँ डायबीटीज आ साढ़े-सात सालसँ ब्लड-पेसरक शिकार सरसठिम सालक प्रोफेसर गुलाब पाँच साल पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेला। सूर्यास्तक समए, सोफापर प्रोफेसर गुलाब ओंगैठ पाँचो आलमारीक पोथीपर नजैर खिड़बैत रहैथ। पत्नी चाह नेने कोठरीक मुँह टपिते छेली आकि भुक-दे मड़कड़ी बरल। ओना, अन्हारक आक्रमण तइ रूपे नइ भेल छेलै मुदा किड़ी-फतिंगीक आवाहन बाहरसँ घरक कोठरी दिस हुअ लगल छेलइ। टुटल ऐगला दाँतक मुहसँ मुस्की दैत लालमनि पति दिस कप बढ़बैत बजली-

“कौफी सधि गेल छेलए। पहिलुके चाहपत्ती घरमे छेलै सएह बनेलौं। मुदा चाहक गन्ध केनादन लगल।”

पत्नीक बात सुनि गुलाबक मन अमताए लगलैन। मुदा जहिना पाकल अमतीक खट-मधुर सुआद होइए तहिना प्रोफेसर गुलाब अपन चौहु टुटल मुहसँ मुस्किया देलैन। मन कलैप उठलैन। एहेन समए भऽ गेल जे एक कप चाहोपर...। ठीके बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन- ‘करनी देखब मरनी बेर।’

पत्नीक हाथसँ कप पकैड़ गुलाव मुँहमे लगौलैन। मुँहमे चाह अबिते ठोर बिजैक गेलैन। हाँइ-हाँइ कऽ चाह तँ घोंटि गेला मुदा जाकरी पत्तीक सुआद मनकेँ हौंड़ देलकैन। चाहक कप टेबुलपर रखि उठि कऽ ठाढ़ होइते रहैथ आकि बुझि पड़लैन जे रद्द हएत। दुनू हाथसँ छाती दाबि पुन: सोफापर बैसला।

चौसैठ वर्षीए लालमनि गैस्टिकसँ आक्रान्त। पेटक गैससँ मन अस-बिस करैन। जोरसँ ढेकार भेलैन। मन हल्लुक होइते पतिक पीठ ससारए लगली। रसे-रसे प्रोफेसर गुलाबक मन खनहन हुअ लगलैन। मन खनहन होइते पत्नीकेँ पुछलखिन-

“मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?”

दुनियाँक रागसँ ऊपर उठि लालमनि चहैक उठली-

“की गड़बड़ आ की नीक, कोनो की तेहैया बोखार छी जे तीन दिन जाइते चलि जाएत, निरक्टौवैल भऽ कऽ छुटि जाएत। गोटीक चाह करैए। जाइ छी एकटा गोटी खा लेब, ठीक भऽ जाएत।”

कहि लालमनि दोसर कोठरीक रस्ता धेलैन। प्रोफेसर गुलाबक नजैर चाहक कपपर गेलैन। मुदा चाहक कपपर नजैर नै अँटैक पोथीक आलमारीपर पहुँच गेलैन। अखनुक जे जिनगी अछि से आइ धरि किए ने बुझलौं? जँ अपने नइ बुझलौं तँ जिनगी भरि पढ़ौलिऐ की? आकि दीमक बनि पोथीकेँ माटि बनौलिऐ? तैबीच ब्लड-पेसरक जोर पबिते गरजला-

“एकटा गोटी खाइमे केते देरी लगैए?”

पतिक बात सुनि लालमनि बुझि गेली जे ब्लडपेसरक झोंक छिऐन। धड़फड़ाइते कोठरीमे आबि मुस्की दैत आलमारीसँ गोटी निकालए बढ़ली। गोटी निकालि, गिलासमे जगसँ पानि लऽ पतिक हाथमे दैते रहैथ कि सिरमाक बगलमे मोबाइल टनटनाएल।

गुलाब हाँइ-हाँइ कऽ गोटी मुँहमे लैत पानि गुलगुलबैत मोबाइलपर हाथ बढ़ौलैन। मोबाइल उठा देखलैन। बेटा-लीलाकान्तक नाओं देख पत्नी दिस मोबाइल बढ़बैत बजला-

“ननुगर बेटाक फोन छी। लिअ...।”

प्रोफेसर गुलाब अपनाकेँ बेटा रूपमे देखलैन। मन पड़लैन माए-बाप। की जिनगी छल, की आइ अछि। जाधैर पिता जीबै छला परोपट्टाक किसानक समाज रूपी समुद्रमे बसल छला। माल-जालसँ लऽ कऽ बीआ-बालि धरिक कारोबार छेलैन। लेब-देब छेलैन। सोझे लेब-लेब नै छेलैन। लेब-लेबसँ बेसी देब-देब छेलैन। खीरा-झिंगुनी आकि नव कोनो अन्न, फल-फलहरी होइ, बीआक मूल्य कहाँ लइ छेलखिन। मुदा हमरा कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एक तँ कौलेजक नोकरी भेटल तैपर सँ पिताक देल घर-घराड़ी धरि उजाड़ि देलौं! की हम दरमाहाक पाइसँ जीवन नै चला सकै छेलौं..?

तरे-तर अपन पैछला विचारपर सेवा-निवृत्त प्रोफेसर गुलाब गरमा गेला। मुदा जहिना खढ़-पातक धधरा धुधुआ कऽ उठैत आ लगले पझा कऽ तेहेन

छाउर बनि जाइत जेकरा हवाक सिहकियो उड़िया दैत, तहिना प्रोफेसर गुलाबक मन लगले खढ़क झोली जकाँ ठंढा गेलैन। मन घुमलैन, किछु मजबुरियो भेल। एक तँ परोपट्टामे बहरबैया जमीनपर लड़ाइ सुनैग गेल, दोसर अपन पितियौत कारी भायकेँ बटाइ खेत करए कहलयैन तँ कहलैन जे ‘एक बाबाक अरजल सम्पैत छी, सेहो कीनल नहि, दान देल, तइ जमीनक उपजा बाँटि बँटेदार बनब। अहाँ कियो आन छी। जहिना सभ दिनसँ एक परिवार बनल रहल अछि तहिना रहत। जखने हम बाँटि कऽ देब तखने बँटेदार भऽ जाएब। किसान जँ बँटेदार भऽ जाए तँ ओकर प्रतिष्ठा बँचलै केना। पाबैन-तिहारसँ लऽ कऽ परिवारिक काज-उद्यम धरि–जहिया गाममे रहब, अपन परिवारक समांग जकाँ रहब, मौका-मुसीबतमे दरभंगा जाएब तँ अपन घर जकाँ हमहूँ रहब।’ ..कहलैन तँ विचारणीय बात मुदा से उचित भेल? बजारक चमक-दमक देख अपनो मन उधियाएल। महग बुझि घराड़ियो बेच मकान बना शेष बैंकमे रखि लेलौं..!

प्रोफेसर गुलाबक फेर मन घुमलैन, की आजुक बजारवादक नींव हमहीं सभ ने तँ देलौं? आइ की देखै छी, भरि मन चाहो नै पीब सकलौं। हुनके (पत्नीए) की दोख देबैन, तीन दिनसँ बजारमे करफू लगल अछि। दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी सभ बन्न अछि। सौंसे बजार भकोभन लगैए। बन्दूकधारी पुलिस आ पुलिसक गाड़ी छोड़ि सड़कपर ऐछे की? पनरहे दिन मेहतरक हड़ताल भेल, गन्दगीसँ बजार भरि गेल। बेमारीक प्रकोप बढ़ि गेल! तहिना पानिक अछि। ताड़ी-दारू, चोरी-डकैती, लूट-पाट आ अपहरण तँ आम भऽ गेल अछि। एक दिस गाम छोड़लौं, दोसर दिस बेटा-पुतोहु राँचीमे सभ बेवस्था कऽ लेलक। दुनू परानी रोगसँ अथबल बनल छी, केना दिन कटत? की अछैते औरुदे परान तियागि ली? हे भगवान जनिहह तूँ?

जहिना पूसक ओस सदिकाल प्रकृतिकेँ ठंढ बनौने रहैए तहिना हृदए शीतल भऽ गेलैन। पत्नी दिस आँखि उठा कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन जे जहिना हमर मन जिनगीसँ निराश भऽ कानि रहल अछि तहिना हुनकर (पत्नीक) मन बेटाक फोन सुनैले फूलक कोढ़ी सदृश बिहुँसि रहल छैन। मन आरो बेथित भऽ गेलैन। जहिना असमसानक बरियातीक मन खाएब-पीबसँ हटि मृत्युक घाटपर बैस गंगा (नदी, सरोवर) मे डुम दऽ पवित्र होइले कछमछाइत तहिना प्रोफेसर गुलाब बाबूक मन जिनगीक घाटपर बौआ गेलैन। राजस्थानक पुष्कर जकाँ

अनेको घाट। उन्मत्त मन आलमारीक पोथी दिस पड़लैन। सतरहम शताब्दी धरि अर्थशास्त्र आ राजनीतिशास्त्र सझिया भाए छल। संगे-संग जीवन-यापन करै छल। से भीन भऽ गेल! हम सभ खुट्टा गाड़ि राजनीतिशास्त्रकेँ धेलौं। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिकेँ अधिकार-कर्तव्य सिखबैत रहिऐ। मुदा जइ अवस्थामे अखन दुनू परानी जीब रहल छी ओ कोन अधिकार-कर्तव्य छी? की बारह बजे रातिमे डाक्टर ऐठाम जा सकै छी? जँ से नहि, तँ की बेमारी हमरा मुकदमाक तारीख जकाँ भरि रातिक मोहलत दऽ देत?

जिनगीक काँट-कूश फानि लालमनि मोबाइल कानमे सटौने पतिसँ फुट भऽ सुनैक विचार केलैन। मुदा मुहसँ निकैल गेलैन- “बौआ, नूनू।”

“हँ, हँ। पाँचम दिन बौआ- कल्पनाथक मूड़न छी।”

टाबर हटने मोबाइलक लाइन कटि गेल। मुदा लालमनि से नइ बुझि सकली। बुझि पड़ैन जे कम जोरसँ बजने नै सुनैए, छातीसँ जोर लगा जोर-जोरसँ बाजए लगली-

“सभ परानी नीके छह किने?”

‘सभ परानी’क नाओं सुनि कोठीक चाउर जकाँ प्रोफेसर गुलाबक मन गुमसरए लगलैन। जहिना सड़ल आ नीकक मध्य अपन-अपन सेनाक बीच रणभूमिक दृश्य होइए तहिना प्रोफेसर गुलाबो बाबूकेँ भेलैन। मुदा जहिना बेटा-पुतोहुपर खौंझ उठलैन तहिना पत्नीक अनभिज्ञतापर हँसी सेहो लगलैन, माने पत्नीक हँसी दौगल आबि हृदैकेँ सूतल आदमी जकाँ डोलबए लगलैन। बजला-

“सभ परानीक कुशलमे अपनो लगा कऽ कहलयैन आकि अपनाकेँ छोड़ि?”

बाजि तँ गेला मुदा लगले मन धिक्कारए लगलैन। पत्नी अज्ञानी रहि गेली, तइमे हमर कोनो दोख नहि? दिनमे डेरासँ बाहर रहै छी मुदा बाँकी समए..? अपने कएल लोककेँ काज अबै छइ।

..जेते अपना दिस देखैथ तेते ओझरी लगए लगलैन। एक कालखण्डक पढ़ल-लिखल कर्त्ता–परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक–रहितो आइ धरि ऐ विषयकेँ बुझैक कोन बात जे मनोमे नै आएल!

..प्रो. गुलाबक मन कानए लगलैन। अपने रोपल गाछी भुताहि भऽ

गेलैन। दलकैत मनमे उठलैन- गाछी तँ फूल-फलसँ लऽ कऽ बगुर धरिक होइए मुदा कहबैत तँ अछि सभ गाछिए। तहिना तँ जिनगियो अछि! ..भदबरिया अन्हार जकाँ इजोत केतौ देखबे ने करैथ। तैबीच पत्नी मोबाइल बढ़बैत कहलकैन- “देखियौ ते, की भऽ गेलइ। बजबे ने करैए।”

पत्नीक बात सुनि पुन: प्रोफेसर गुलाबक मनमे आशा जगलैन। हाथमे मोबाइल लऽ बजला-

“टाबर चलि गेल, तँए नै अवाज अबैए। फेर टाबर औत तँ अवाजो औत।”

लालमनि टाबर बुझबे ने करैथ। बजली तँ किछु नहि, मुदा जहिना दोकानसँ कोनो वस्तु झोरामे अनैत काल, झोरा मसैक गेलासँ वस्तु गिरए लगैत, छिड़ियाए लगैत तहिना पतिपर भेल आक्रोश लालमनिक मनसँ ससरए लगलैन...।

एमहर, गुलाबबाबूक मनमे उठलैन, पाँचम दिन पोता–कल्पनाथक मूड़न छी। मूड़न की छी संस्कार छी। संस्कार तँ समाजमे भेटै छै, देल जाइ छइ। राँचीक समाज आ मिथिलाक समाज तँ एक नइ छी। तहूमे शहरक समाज तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि। पुन: मोबाइलमे रिंग भेल। रिंग होइते पत्नीकेँ कहलखिन-

“आबि गेल टाबर। लिअ।”

“पाँचम दिन कल्पनाथक मूड़न बैष्णो देवी स्थान कश्मीरमे रखने छी। अहाँ दुनू गोरे भोरुके गाड़ी पकैड़ चलि आउ। परसूका टिकट बनबा देने छी।”

बेटाक फोन सुनि प्रोफेसर गुलाबक छाती छहोंछित्त भऽ गेलैन। मुँह मलिन हुअ लगलैन, दुनू आँखिसँ नोरसँ ढबकए लगलैन, देहक पानि उतरए लगलैन, मन्हुआएल स्वरमे पत्नीकेँ केँ कहलखिन- “कनी मोबाइल लाउ।”

मोबाइल दइसँ पहिने लालमनि बेटाकेँ कहलखिन-

“बाउ, बाबूसँ गप्प करह।”

“बौआ।”

“हँ बाबू। अपने असिरवाद देबै...।”

पोताकेँ असिरवाद देबाक बात सुनि, गुलाबकेँ वकार नै फुटलैन। हुचकी सुनि लीलाधर पुछलकैन- “बाबूजी, अपने कनइ किए..?”

खखसैत गुलाबबाबू बजला-

“मोबाइल छोड़ि असिरवादो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बजारमे करफ्यू लागल अछि। सिपाहीसँ सड़क भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना निकलब?”

“कौलेजोमे छुट्टी लऽ नेने छी। टिकटो कटा नेने छी तहन.. ?”

ꟷ

शब्द संख्या : 1368

केना जीब

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन, सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल छला। दुनू बेकतीक मन खटाएल रहैन। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छला जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़ैक अस्पतालक सीटपर चिकैर-चिकैर कानि रहल छैथ। सत्तैर बर्खक अवस्थामे संगी अपने दौग-धूप कऽ रहल छैथ! मुदा अस्पतालक डाक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लगल छथिन! तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नहि, आ दोसर पहुँचो नीके छैन। संगिनीक घटनाकेँ सरस्वती लगसँ तँ नइ देखने छेली मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेली। सुनिते करेज तेना दहैल गेलैन जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी बढ़लैन ओ असथिरे ने भऽ रहल छेलैन। जेना नस-नसमे भयक भूत समा गेलैन। अन्हारक वाण जकाँ चारूकातसँ मृत्युक तीर बेधए लगलैन। जहिना वैरागी रागसँ डरैत आ जोगी भोगसँ तहिना मृत्युक भयसँ सरस्वती डरए लगली।

पाँच साए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रोफेसर शंकर कुमारकेँ बेअसर बुझि पड़लैन। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक असरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै ने दैन। कछ-मछ करैत शंकर पत्नीकेँ कहलखिन-

“एकबेर चाह...।”

सरस्वतीक मन ‘चाह’ पीऐसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझैन। अपन आज्ञाक उल्लंघन होइत देख शंकरक मन महुराए लगलैन। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत तहिना। बेअसर सरस्वतीकेँ देख डेग भरि पाछू घुसैक शंकर मुस्की दैत दोहरा कऽ बजला-

“चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि,

खाली अहाँ देखा-देखा देब।”

जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पतिपर जीत देख ढेंग सन देहकेँ उठा सरस्वती कीचेन दिस बढ़ली।

चाह बना शंकर कीचेनेमे पीबए लगला। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको ने होइन। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे अबै ने दैन। जहिना घी नइ अरघनिहारकेँ थारीमे देखते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जी-मन पचपचाए लगैन। चाह पीब दुनू गोरे कोठरीमे आबि फेर सोफेपर पड़ि रहला। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइ छैथ तहिना दुनू गोरे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगला।

सरस्वतीक नजैर पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलैन। की छेलए माए-बापक राज..!

खेनाइ, खेलनाइ, पढ़नाइक संग पाबैनमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ.., बस यएह छल जिनगी। मनमे सुख-दुखक जन्मो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए नोकरनी आएल छल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कथुक अभाव नहि। नोकरे पानियोँ भरै छल आ भानसो करै छल। अपनो प्रोफेसरे छला। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छला। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छला। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलैन। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि तइसँ इमानदार कमेनिहारक धिया-पुता-ले शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहियेँ मुदा पिताक देल सम्पैतसँ एते जरूर केलैन। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलैन। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लगत? ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत रहैए। देह भारी बुझि पड़ैए। तैपर परिवारक सभ काज! ऐ उमेरमे बुढ़-कनियाँ बनि जीब रहल छी। ..तरे-तर सरस्वतीक देहसँ पसेना चलए लगलैन। अनासुरती मुहसँ निकललैन-

“ऐ जीवनसँ मरब नीक।”

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलैन। अखन धरि चेतनाहीन भेल शंकरो अपन पैछला जिनगी देखै छला। गामक स्कूल...। केते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती माताक जय’ कहि

आँगनसँ निकैल सरस्वतीक मन्दिरमे लऽ गेल छला। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नहि। डेरामे गाड़ल देवता तँ नइ अछि मुदा देवालमे टाँगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनौल मुरती तँ अछिए। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नहि, मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छिऐन। धुमन-सररक धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़ैबते छिऐन। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ैबे केलिऐन। पिताजी जेतेक हमरा पढ़ौलैन आ एक सीमा धरि पहुँचा देलैन, तहिना तँ हमहूँ केलिऐन। नोकरी भेलापर ताधैर पत्नी गाममे रहली जाधैर बाबू-माए जीबैत रहला। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहैथ। संगे तँ नहि खाइ, मुदा एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिए-सँ कनभेन्टमे नाओं लिखेलौं तहिए-सँ एके शहरमे रहनौं फुट-फुट रहए लगलौं! समैक संग शिक्षो बदलल। ..एकाएक शंकरक नजैर आगू बढ़ि अपन जिनगीक अवस्थापर पड़लैन। चारिम अवस्था। जइ अवस्थामे सभ कथुसँ सम्पन्न भऽ अभावकेँ निर्मूल-नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइ छइ। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुखक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसरकेँ नीक-अधला, सुख-दुखमे संग दैत अछि। जैठाम एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खेबो करैए, दसगरदा उत्सवो हँसी-खुशीसँ मनबैए, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैए, जुड़शीतलमे इनार-पोखैर उड़ाहबो करैए, शिव-पार्वती बना बजाक संग गामो घुमैए...। बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसैर गेल। आइ जँ हम अमेरिका जा रहए लागी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ केतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा सभ-ले किछु शेष नै बँचल अछि! ..प्रोफेसर शंकर कुमारक निराश मनमे एलैन ‘करनी देखिहह मरनी बेर।’ जिनगीमे केतए चूक भेल? जँ चूक नइ भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात ‘ऐ जीवनसँ मरब नीक’ सुनि धड़फड़ा कऽ उठि प्रोफेसर शंकर कुमार बजला-

“अखन सुतैबेर अछि जे सुति रहलौं?”

“सूतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।”

“तँ की भुखले रहब?”

शंकर कुमार बाजि तँ गेला मुदा मन पाछू घुमि कऽ तकलकैन। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी, तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहेन रोग भेल जाइ छैन जे भुखले मरब। जँ खाएब नहि, तँ रातिमे नीन केना हएत? जँ नीन नइ हएत तँ जीब केतेक दिन?

पत्नी- "केता-दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?"

'नोकर' सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेला। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नहि। मनमे जोर मारलकैन जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु–दुनू इंजीनियर–अनके नोकरी करैए आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करै छेलौं, बेसी तलब उठबै छेलौं तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छल जे पत्नी थेहगर छेली आ बेटो-पुतोहुक आशा छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेली जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर केते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छैथ। तकलीफ हेतैन तँ बजबे करती। भलें हमरा बुते पुरौल हुअए वा नहि। पहिले जकाँ पाँच-रूपैआ-दस-रूपैआमे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कौलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतइ। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तेहेन समए आबि गेल जे कहीं सम्पैते ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए! ..जानपर नजैर पड़िते शंकरक आँखि ढबढबाए लगलैन। जाने नइ तँ जहान की? ..जहिना वीणाक तार टुटलापर अवाज खनखना कऽ निकलै छै तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार सरस्वतीकेँ कहलखिन-

"अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै-जोकर अपनेसँ टभका लइ छी।"

मने-मन सरस्वती बजली-

"केना जीब?"

❍

शब्द संख्या : 1039

नवान

बाध दिससँ भोरे बड़का काका आबि नादिमे कुट्टी-सानी लगा, गाए बाहर कऽ केटली नेने कलपर पहुँचला। जइ कलपर आन समैमे–जाड़-बरसातमे–हेँक-हेँक भेल रहै छल ओ सोल्हन्नी रूख बुझि पड़लैन। समैक गरमियोँमे अन्तर बुझि पड़लैन। जाड़क मासक दस बजे दिनक समए, पाँच बजे भोरेमे बुझि पड़लैन। सोहनगर समए बुझि वसन्तपर नजैर गेलैन। आमक मंजरक महमही फल रूपमे महमहा रहल अछि। मनमे उठलैन जे वसन्त ऋतु बर्खक पहिल ऋतु होइतो शरद-शिशिर सन ऋतु केना आगू अबैए..?

हाँइ-हाँइ कऽ केटली अखाइर लोटामे पानि नेने चूल्हि लग आबि बड़का काका चाह बनबए लगलैथ। केतलीमे चाहकेँ खौलैत देख मनमे उठलैन- अहिना समुद्रोमे लहैरक ज्वार-भाँटा उठैए। एते गहींर समुद्र, जइमे करोड़ो-अरबो पानिक तह रहैए तइ ऊपरमे किएक एते जोरसँ लहैर उठै छइ? ..मन औनाइते रहैन कि चाहक गन्ध लगलैन। गिलासमे चीनी दऽ चाह छनलैन। केटली अखाइर कऽ रखि चाहक गिलास नेने दरबज्जाक चौकीपर बैस पीबए लगला। मन तेना औनाइत रहैन जे चाहो नीक-नहाँति नहियेँ पीअल होइन। तखने हहाएल-फुहाएल अबैत रविया कनी फरिक्केसँ टोकलकैन-

"गोड़ लगै छी काका।"

असिरवाद दैत बड़का काका बजला-

"कनीए पहिने अबितह तँ चाहो पीऐबतियह, आब तँ हूसि गेलह।"

"नइ काका, हुसलौं नहि, नीके भेल। एक चुटकी विष्णु भगवानकेँ चढ़ाइए कऽ मुँहमे पानि लेब।"

'विष्णु भगवान'क नाओं दिस बड़का-कक्काक धियान नै गेलैन। बजला-

"तूँ तँ अनेरे वौआइबला आदमी नै छह?"

"हँ काका, काजे एलौं हेन।"

"भोरे कोन काज बजैड़ गेलह?"

"नोत दइले एलौं।"

'नोत' सुनि बड़का काका तारतम करए लगला। अखन तँ, ने बिआह-मूड़नक दिन अछि आ ने केशे कटौल देखै छिऐ जे बरखियो-तरखीक करैत। मुदा रवि चौलो तँ कहियो नइ केलक जे आइ करत। सभ दिन शिष्ट बुझि श्रद्धाक नजैरसँ देखैए। मन पाड़लैन- जेठ मास परिव तिथि। आमो पाकब नहियेँ शुरू भेल अछि जे अमैयो भोज करैत। पनरह दिनक पछाइत अमैया भोज चलत। तहूमे नवको गाछी-कलम तँ केतौ नहियेँ नजैरपर अबैए। तीन दिन रोहैणोकेँ चढ़ैमे बाँकीए अछि। खिच्चा आम पाकि कऽ केहेन हएत। धिया-पुता ने चोकर-मोकर खाइए। भोज-काज ओइसँ केना हएत। भोज-काज-ले तँ नीक आम चाही। मन आगू बढ़लैन। तीमन-तरकारीक तँ भोज नै होइए। ओ तँ ओहिना पहिल फड़ महादेवो स्थानमे चढ़बैए आ हितो-अपेक्षितकेँ देल जाइत अछि। ओना लोक कटहरोक भोज करैए, मुदा ओ तँ आमोसँ पाछू पकैए...। भऽ सकैए जे गाए बिआएल होइ। मुदा गाइक दूध तँ छाँकी देल जाइ छइ। ओना, कियो-कियो रकतमाला स्थानमे चढ़बैए। पाल खेलापर राजाजीकेँ गाँजा चढ़बैए आ बिएलापर कुशेश्वर स्थानमे घी चढ़बैए। हमरा किएक नोत देत? पुछबो केना करबै? दही-दूधक चर्च तँ खाधुर लोक करैए। ..हँ-निहँसक बीचमे पड़ल बड़का काका सोचलैन जे हमहीं सवाल पुछिऐ आ वएह ने किए जवाब देत जे अनेरे अपसियाँत होइ छी। मुस्की दैत बजला-

"आरो के सभ नोतहारी रहथुन?"

बड़का काक्काक प्रश्न समाप्तो नइ भेल छेलैन तइ बिच्चेमे रविया बाजल-

"अहींटा छिऐ काका। पहिल नवान छी, केते गोरेकेँ नोत देबैन। कोनो कि उपनैन छी जे गिनती पुरबए पड़त।"

'नवान' सुनि बड़का काका आरो ओझरा गेला। केना ने ओझरैतैथ। किछु दिन पूर्व धरि तँ वएह सभसँ पहिने नवानक चर्च करै छेलखिन। जहियासँ बाढ़ि आबि-आबि अगहने उसाइर देलक तहियासँ बाजब छोड़ि देलखिन।

..अमती काँट जकाँ एकटा डारि छोड़बैथ तँ दोसर लगि जाइन। मिरचाइक घोँदा जकाँ ओझरी देख बड़का-कक्काक मन असोथकित भऽ गेलैन। आँखि बन्न हुअ लगलैन।

बड़का-कक्काक बन्न होइत आँखि देख रविया कहलकैन-

"काका, ओरियान-पाती करैक अछि। अखन जाइ छी।"

रविया विदा भऽ गेल, मुदा कक्काक आँखि बन्ने होइत गेलैन। मनमे उपकलैन, भने पतरो कीनब छोड़ि देलौं। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक पतरा गाममे आबए लगल अछि। सेहो जँ भिन्न-भिन्न लेखक जकाँ एक्के ढंगसँ बुझौल जाइत तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सेहो नहि। सभ तरहक पतरा कीनि अपनेसँ निर्णए करैक ज्ञानो नहियेँ अछि। मनमे खुशी उपकलैन। जे पाबैन क्षण-पल गनि निर्धारित होइए ओ तीन-दिना हुअ लगल। एक-दिना पाबैन दू-दिना भऽ गेल आ दू-दिना तीन-दिना। तहूमे तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू छुछुनैर सभ गामे-गाम फड़ि गेल अछि जे एक डारिए समाजकेँ थोड़े चलए देत। समाजो तेहने गँड़िखच्चर अछि जे अपन वर्चस्वक दुआरे उचित-अनुचितक, जाइज-नाजाइजक विचारे ने करत। कियो जातिक सिपाही, तँ कियो सम्प्रदायक सिपाही बनि मोछ टेढ़ करैत रहैए! केकर के सुनत? एहेन परिस्थितिमे चुप्पे रहब नीक। ..फेर मनमे उठलैन जे एते ओझरीमे ओझराइक कोन जरूरत अछि। जहन रविया नोत दइए गेल अछि तहन किएक ने स्नान कऽ ओकरे ओइठाम जा बुझि ली।

चारिम सालक बाढ़ि दुनू परानी-रवियाक जिनगीकेँ मोड़ि देलक। एहेन विकराल बाढ़ि जिनगीक पहिल छेलइ। पाँच बीघा जमीनबला रविया पुरान ढर्राक किसानी जिनगीकेँ बदलैत रहए। लगभग चारिअना बदैलियो गेल छेलइ। उन्नत किस्मक तरकारी आ फल-फलहरीक खेती अपनाए नेने रहए। ओना, अन्नक खेतीमे कोनो सुधार नइ कऽ सकल रहए आ मालो-जाल तहिना रहइ। बाधक सभ जजात दहा गेलइ। गाछीक बड़का आम-जामुनक गाछ छोड़ि सभ सूखि गेलइ। अंगूर, अनारस, नेबो, लताम, धात्री, अनरनेवा इत्यादि सभ नष्ट भऽ गेलै, घरोक सभ समान नष्ट भऽ गेलइ। बाढ़िए दिनसँ दुनू परानीक मन टुटए लगलै। जेना-जेना पानि सटकैत जाइ तेना-तेना सूखल गाछ आ घरक सड़ल समान सभ देख-देख दुनू परानी-रविक मन टुटिते गेलइ। मुदा जिनगीक आशा दुनूकेँ अन्हारसँ इजोत दिस धकेल देलकै। नव उत्साहक संग दुनू परानी

आँखि उठा आगू देख डेग बढ़बए लगल।

सबेरे स्नान कऽ बड़का काका रविया ऐठाम पहुँचला। आँगन नीपि बुधनी नहाइले विदा भेली कि बड़का काकापर नजैर पड़लैन। हाँइ-हाँइ कऽ गोबराएल हाथ धोइ धड़फड़ाएले आँगन आबि ओसारपर कम्मर बिछा पतिकेँ कहली-

"काका एलखिन।"

दरबज्जापर आबि बड़का काका कनडेरिये आँखिए हिया-हिया कऽ आँगन, दरबज्जा आ बाड़ी दिस देखए लगला। आँखिपर सँ मनक बिसवास उठए लगलैन जे सत्ते देखै छी आकि फुइस। जइ जेठमे पियाससँ धरतीमे दरारि फटि जाइत अछि, हाथ-हाथ भरि जीह बाहर करैत माल-जाल अधसुक्खू भऽ जाइत अछि, ठेहुन भरि मोट गाछक निच्चाँ सुखाएल पातक पथार लगि जाइत अछि, तैठाम वसन्तक-बहार देख रहल छी! मनमे ई सभ नचिते रहैन कि पानक खिल्ली सिक्कीक चँगेरीमे सेरिया कऽ ओसारक चक्कापर रखि रविया आगू आबि कहलकैन-

"अँगने चलू ने काका। अनठिया जकाँ डेढ़ियापर किएक ठाढ़ छी।"

रवियाकेँ मनमे अपन सेहवाल गाए आ दस कट्ठा गरमा धानक बोझ देखबैक इच्छा रहइ। मुदा कक्काक मनमे एलैन जे आँगन तँ औरतक होइ छै, पुरुखक नहि। पुरुख तँ केवल खाइकाल चाहे कोनो काजक काल आँगन जाइत अछि। मुदा बुधनियो तँ अँगनेक ओसारपर कम्मर बिछौने। ओ एना उट-पटाँग किएक केलक? ओसारक एक भागमे दू कसतारा दही, दू-चँगेरा आम, एक चँगेरा चूड़ा, स्टीलक अढ़ियामे तरकारी इत्यादि सेहो आनि-आनि बुधनी रखली। सभ कथुकेँ देखेबाक इच्छा पेटमे रहैन। सभ गोरे अपन-अपन विचारमे मगन आ काजोमे जुटल। ..अगहन जकाँ लरती-चरती देख बड़का-कक्काक मन असथिर होइत रहैन। अस्सियो बर्खक ओ औरत जिनका पति छैन अपनाकेँ केते सुन्दर बुझै छैथ, मुदा सोलह बर्खक विधवा अपनाकेँ की बुझै छैथ? जे जेठ गरमीक विराट मास छी से वसन्ती हवा केना बहा रहल अछि! सालक एक्को दिन ओहन अछि जइ दिन अनेक ऋतु नै भ्रमण करैत हुअए! चुप-चाप आँखि नचबैत देख बड़काकाकाकेँ रविया टोकलकैन-

"काका, जहिना पाँच अंग उठलासँ शरीरक वसन्त अबैए तहिना ने वसन्त-पंचमीसँ वसन्त ऋतुक आगमन होइए। आगू-आगू चलू, सभ किछु देखा दइ छी।"

रवियाक बात सुनि बड़काकाकाकेँ खुशी भेलैन मुदा मनमे 'नवान' शब्द घुरियाइत रहैन। मन नचैत रहैन अगहनक नवानपर। बजला-

"पतरा देखब छोड़ि देलौँ तँए सभ बात नजैरपर नै अबैए। कनी-मनी मन अछि जे नवान तँ अगहनमे होइ छइ, माने कातिकक इजोरिया पखसँ लऽ कऽ अदहा पूस धरिमे!"

कक्काक बातसँ रवियाक मनमे खुशी नइ भेल, बाजल-

"काका, नवान की?"

"नव अन्नक ग्रहण।"

"सएह छी काका।"

"चलह कनी देखा दएह।"

धान देखबैत रविया कहलकैन-

"चौरीमे एक बीघा खेत अछि। सत-सत-अठ-अठ बर्खपर हँसुआ खेत पहुँचै छल। सेहो दूध-महक डाढ़ीए होइ छल। गोटे साल आध-मन कट्ठा तँ गोटेबेर तीन-पसेरी कट्ठा धान होइ छेलए। तहूमे तेते चिलमिल, कोढ़िला आ करमी लत्ती भऽ जाइ छल जे ऊपरका खेतीसँ दोबर खर्च होइ छेलए। उपजा देख मन होइ छल जे बेचिए लेब नीक हएत। मुदा लेबालो नहि। के अनेरे पूजी दुइर करत। सबहक एक्के गति। गामक अदहा हिस्सा जमीन एहने अछि। बर्ख दसम मनमे उठल जे चौथाइ खेतमे डबरा खुनि माछ पोसब। नवका-नवका माछक थड़ सभ हेचरीमे बिकाइत अछि। ओकरे पोसब। सदिकाल रेडियोओसँ आ अखबारो-पत्रिका सभमे माछ पोसैक लाभ देखौल जाइ छइ। खूब लाभकारी अछि। सएह केलौँ। दू कट्ठा ऊपरका खेत बेच चौरीमे डबरा खुनेलौँ। हेचरीसँ थड़ आनि देलिऐ। ले बलैया! कोसी नहरमे पानि एलइ। फाटक खुजले छोड़ि देलकै। भरि मुँहखर पानि चौड़ीमे पसैर गेलइ। बीच बाधमे खेत अछि। डबराक महारोपर जाएब कठिन भऽ गेल! एक दिन नहाइ-बेरमे केरा थम्हक बेरही बना कऽ गेलौँ तँ देखलिऐ जे सौंसे चौरी सलाढ़ लगल अछि। एक्कोटा

थड़क दर्शन नइ भेल।"

"देख कऽ बड़ दुख भेल हेतह?"

"एँह, की कहब काका! अपनेटा होइत तहन ने, सौंसे बाधे झलकैत रहइ।"

"तब तँ निचला खेतक संग दू कट्ठा ऊपरको चलि गेलह?"

"ओतबे गेल। साले-साल मलगुजारियो भरए पड़ैए। तेहेन पाहीपट्टीक पट्टी अछि जे अग्गह-सँ-बिग्गह भरए पड़ैए। गामक खेतक कोनो एक्के रंग मलगुजारी अछि। अन्हरा राज छइ। जइ खेतमे उपजा नै होइए ओकरे मलगुजारी बेसी अछि। हँ, तँ कहै छेलौँ जे ओइ एक बीघा चौरी खेतमे डबरा भरा देलापर तेसराँ आ पौरुकाँ पच्चीस क्विन्टल आ सताइस क्विन्टल धान भेल। उपजबैक ढंगो नै छल। थोड़े-थोड़े आब सीखने जा रहल छी। ऐबेर दुनू सालसँ नीक धान अछि। अखन काटि-काटि अनिते छी। तैयार पछाइत करब। चलू, गाएकेँ देखियौ।"

सेहवाल गाए। ललौन-कारी। केतौ-केतौ चितकाबर। पतरकी नाँगैर। साढ़े चारि फुट खड़ाइ आ आठ फुट नमती। निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि काका तजबीज केलैन मुदा नजैरपर चढ़बे ने करैन जे कोन किस्मक गाए छी। थने कहै छै जे भरि बाल्टीन खुआउ आ भरि बाल्टीन दूहि कऽ लऽ जाउ। गाम दिस नजैर दौगेलैन। कहाँ केतौ ऐ कटिंगक गाए छइ! कियो-कियो जे अनबो केलैन ओ महींसक खाँढ़क जरसी छैन। सेहो तँ गनले-गूथल अछि। पहिलुका गाए सभ जे अछि ओकर खाँढ़े बिगैड़ गेलइ। तेहेन-तेहेन दानी सभ साँढ़ दान केलैन जे टाएरक बरदक वंश कोल्हुक रस्ता धेलक।

रविया-

"काका, की सभ देखै छिऐ?"

बड़का काका-

"हौ रवि, कोन चीज नै देखैबला छह। केतए-सँ अनलह?"

"चारिम साल जे बाढ़ि आएल से मालो-जालकेँ नष्ट कऽ देलक। खुट्टेपर बान्हल गाए-बरद मरि गेल। धिया-पुता मात्रिकमे रहए तँए बँचि गेल। बाढ़िक

पछाइत सासु भेँट करैले समाद पठौलैन। हमर मन नै मानलक। पत्नीए-केँ कहलिऐ जाइले। एक तँ नैहर दोसर धियो-पुताकेँ देखना साल भरि भऽ गेल छेलइ। गेल। ओतै एकटा गाए आ खेती करैले बरदो आ मन तीनेक अन्न देलखिन। किछुए दिनक पछाइत गाए उठल...।"

मुस्की दैत पुन: बाजल-

"जहिना बाढ़ि एने मूस पतरा गेल तहिना अनेरुआ साँढ़ो सभ। मन भेल जे साँढ़ लग लऽ जाइऐ। मुदा मनमे उठल, अनेर खाइत-खाइत तँ बुधियारो लोक सनैक जाइत अछि, साँढ़-पारा तँ जानिए कऽ पशु छी। साँढ़ लग नै लऽ जा डाक्टरकेँ बजा अनलयैन। वएह पाल देलखिन तेकरे बच्चा छी। गाए तेहेन दुधगैर जे अपन जीह दागि बच्चाकेँ पोसलौँ। वएह गाए छी। पाँचम दिन बिआएल हेन।"

पाँचम दिन सुनिते बड़का-कक्काक मन फेर ओझरा गेलैन। मनमे नाचए लगलैन जे गाए तँ नअ दिनपर शुद्ध होइए। अशुद्ध दूधक दही खुऔत आकि केकरोसँ दूध आनि पौड़ने अछि। मुदा पुछबो केना करबै! ओहन खाधुर थोड़े छी जे खाइसँ पहिने पते लगा लेब। ..शुद्ध-अशुद्धक विचार बड़का-कक्काक मनमे संघर्ष करए लगलैन। एक दिस देखै छैथ जइ गाइक दूध, गोंत, गोबर सभ शुद्ध होइए, एते तक जे दूधक लाटमे छुतहर चैलो शुद्ध भऽ जाइत अछि, दूध तँ अमृतोसँ पैघ होइए। दोसर दिस देखै छैथ जे सभ अशुद्ध गाइक दूधसँ परहेजो करैए। ओना देस-देसक आ कोस-कोसक चलैन सेहो एक-दोसराक विपरीतो चलैए...।

विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देख बड़का काका निर्णए केलैन जे पुछनहि शुद्ध-अशुद्ध। जँ बुझले नइ रहत तहन शुद्ध-अशुद्ध की। मनमे खुशी एलैन, बजला-

"दूध केते होइ छह?"

दूधक नाओं सुनि रवियाक मन, फूलक पहिल सुगन्ध जकाँ महैँक उठल। बाजल-

"काका, की कहू! दुहैत-दुहैत आँगुर भरा जाइए। बेराबेरी दुनू बेकती दुहै छी। ओना, अखन पाँचे दिन भेल अछि। तहूमे दू दिन अदहे-छिदहे दूहलौँ।

पहिलौठ रहने थनमे गुदगुदीक चलते हरपटाए लगए। मुदा परसूसँ दूधो फाटब बन्न भऽ गेल अछि आ गाइयो असथिर भऽ गेल।"

"दूध बेचबो करै छह?"

"अखन तक तँ नै बेचलौं हेन मुदा एते दूध दुइए गोरे बुते केना सठत।"

कहि रवि आगू बढ़ल। आमक कलम। चारूकातक हत्तापर लताम, दारीम, नेबो, शरीफा रोपल। गाछक बीचमे अनारस, हरदी-आदी सेहो रोपल देख खुशीसँ गदगद होइत बड़का काका बजला-

"रबी, तेहेन वृन्दावन सजौने छह जे एत्तए-सँ जाइक मने नै होइए।"

कक्काक खुशी देख रविया हँसैत कहलकैन-

"काका, बाढ़िक नोकसानसँ मन टुटि गेल। आगू नाथ ने पाछू पगहा देख मनमे आबि गेल जे सभ खेत-पथार बेच गामसँ चलि जाइ। मुदा फेर मनमे आएल जे गामसँ केतए जाएब। गाम-घर बाढ़िमे दहाइत अछि, रौदीमे जरैत अछि। मुदा शहरो-बजारक दशा तँ सएह देखै छी। दिन-दहारे डकैती, हत्या, अपहरण, सदिकाल होइते रहै छइ। तेतबे नहि, केतौ भाषाक तँ केतौ सम्प्रदायक जहर वायुमण्डलकेँ दुषित केने अछि।"

रवियाक बात सुनि मुड़ी डोलबैत काका बजला-

"हँ, ई तँ लाख रूपैआक बात कहलह। हम तँ बुढ़ा गेलौं। दू-चारि सालक मेहमान छी। भने भगवान आँखिक इजोत लए लेलैन। ने किछु देखब आ ने दुख हएत। छोड़ह दुनियाँ-दारीकेँ अपन कहअ।"

बड़का-कक्काक जिज्ञासा देख रविया बाजल-

"काका, घर-सँ-बाहर धरि एक्के रंग बुझि पड़ल। की करी की नै करी, से मनमे एबे नै करए। बड़ी-कालक पछाइत मन पड़ल अपन देश आ पूर्वज। जहिए-सँ मनुख ऐ धरतीपर अछि तहिए-सँ ने हमर-अहाँक वंश सेहो छैथ। जँ से नइ रहितैथ तँ अखन केना रहितौं। तहिना तँ अपन देशो (मिथिला) अछि। अदौए-सँ मिथिलाक चर्च वेद-पुराणमे अछि। तैबीच लाखो भुमकम, अन्हड़-बिहाड़ि, पानि-पाथर आ बाढ़ि आएल होएत। केना अपन पूर्वज सहलैन? की अपनो सभमे ओइ वंशक खून नै अछि? मनमे उत्साह जगल।"

बड़का काका-

"वाह! अच्छा, ऐ बगीचाक विषयमे कहअ?"

रविया-

"काका, तेसर साल मद्रासी वेपारी ट्रकपर फल-फलहरीक गाछ बेचैले आएल। हमहूँ पनहरटा गाछ कीनि कऽ रोपलौं। वएह छी। पौंरकों-तेसरों मोजरल रहै मुदा मोजर तोड़ि देलिऐ। एकटा-दूटा आम फड़ैत मुदा गाछक सेखीए चलि जाइत। बढ़नमो खूब अछि। तीने सालक गाछ छै, साए-सवा-साए कऽ फड़ल अछि। अपने ऐठामक गुलाबखास जकाँ अछि मुदा पकैए ओइसँ पहिने। यएह आम खुआएब। आब आगू चलू तरकारीक खेत दिस।"

खेतक आड़िपर अबिते कक्काक नजैर चोन्हरा गेलैन। तरहत्थीसँ आँखि पोछि देखलैन तँ मनमे शंका उठलैन। जइ जेठमे धार-पोखैर-इनार सूखि जाइत अछि, बाध-वोनमे लू चलैत रहैए, खेतसँ धधड़ा जकाँ ताव उठैत रहैए ओइ खेतकेँ हरिअर वस्त्र पहिरा गहना-जेवरसँ सजा नायिका जकाँ मलड़बैत अछि, ई नान्हिटा काज नइ छी। मुदा काजो ओहन अछि जे सोझे स्वर्ग बनबैए। जिज्ञासा भरल नजैरसँ काका पुछलखिन-

"रबी, की सभ लगौने छह?"

रवि बाजल-

"केते कहब काका, एकबेर घुमिए कऽ देख लियौ। सुरुजो बारहसँ निच्चाँ उतरैपर छैथ। चलू भोजन कऽ लिअ।"

"मन भरि गेल, रवि। खाइक छुधा मेटा गेल। होइए जे जहिना कृष्ण वृन्दावनमे रहैथ तहिना हमहूँ एतै रहि जाइ।"

❍

शब्द संख्या : 2306

तिलासंक्रान्तिक लाइ

धानक लरती-चरती पतराइते गमैया विद्यालयमे तिलासंक्रान्तिक पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। विद्यालय-ले ने जगहक कमी आ ने पढ़ौनिहारक। इनार-पोखैरक घाट सन पवित्र स्थान आ बिनु आरक्षणवाली अनेको महिला शिक्षिका। शिक्षिको सभ इमानदार। ने ट्यूशन फीस लैत आ ने दरमाहा। पढ़बैले एते उताहुल जे खेनाइयो-पिनाइक चिन्ता नहि। छोट दिन होइतो भानस-भातक कौड़ियो भरि ढेकार नहि। पाबैनक विषयो नमहर तँए पूरा विषयक शिक्षक तँ नहि, मुदा टुकड़ी-टुकड़ी कऽ अपना-अपना ढंगसँ अपन-अपन हिस्साक विषय पढ़बए लगली।

पाँच दिन पहिनहि केदार कलकत्तासँ गाम एला। ओना ओ दुर्गोपूजामे सभ साल एबे करै छैथ, तिलोसंक्रान्ति सेहो नहियेँ छोड़ै छैथ। केना छोड़ता? आब कि कलकत्ता ओ कलकत्ता रहल जे तीन-तीन दिन गाड़ीमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकैड़ जाएत। आब तँ छह घन्टाक रस्ता अछि। तहूमे केदार अपने गाड़ियो रखने छैथ, चाह-नाश्ता कलकत्ताक डेरामे करै छैथ आ कलौ गाममे। हुनके सबहक तँ ई दुनियाँ आ देश छिऐन। एक तँ बैंकक मैनेजरक दरमाहा, दोसर कुरसीक कमीशन आ तैपर सँ अपनो बैंकक शाखा खोलने छैथ। कमीशने वेतन तँए स्टाफोक कमी नहियेँ छैन। शहरो कलकत्ता सन, जैठाम भीखमंगो करोड़पति अछि।

"गाममे जँ कियो मरद छैथ तँ केदारे छैथ। आँखि उठा कऽ हुनका दिस के तकतैन। तिलासंक्रान्तिमे अखनो सतरहटा अँचार आ बीकानेरी पापड़ केदार छोड़ि के खाइत अछि? विधि पूर्वक जँ पाबैन करैए तँ केदार छोड़ि दोसर के?"– पोखैरक घाटपर दतमैन करैत जगदरवाली कछुबीवालीकेँ कहलखिन।

साड़ी-साया रखि कछुबीवाली घाटपर बैस झुटकासँ पएर माजै छेली।

मन चिन्तामे बझल छेलैन। काल्हिए पाबैन छी। ने चूड़ा कुटलौं हेन आ ने मुरही भुजलौं! जाबे चूड़ा-मुरही नै हएत ताबे लाइ कथीक बनाएब। गलती अपनो भेल जे अगते-ओरियान नै केलौं...।

चिन्तित कछुबीवालीक मनमे फेर उठलैन- एक दिनक पाबैन-ले मास दिन पहिनेसँ ओरियान करए लागब, से एतबे काज अछि? काजक दुआरे एक्को दिन ने समैपर नहाइ छी आ ने खाइ छी। जेकरा काज नै छै ओ सालो भरि पाबैने करए। कोनो की हम जनै छेलिऐ जे पनरह दिन पहिनेसँ शीतलहरी लादि देतइ, जे चूड़ा-मुरहीक तारल धान भारलो ने जाएत? जइ देवताकेँ पाबैन करबैन हुनका एतबो बुत्ता नै छैन जे अपनो पाबैनक ओरियानक चिन्ता करतैथ। ..फेर मनमे एलैन जे चूड़ा-मुरही तँ दोकानो-दौरीमे बिकाइत अछि। कीनि लेब। मुदा लाइ केना हएत, चूड़ा-मुरही तँ अखड़ा होइए! अमैनियाक जरूरत नै अछि। मुदा लाइ। केहन-कहाँ हाथे, केहेन-कहाँ बरतनमे बनौने हएत? तहूमे आइ-काल्हिक बनियाँ सभ तेहेन गैखोर भऽ गेल अछि जे गुड़क बदला छुए-मे बना पाइ टलिया लैत अछि। दिनेमे मुरही-चूड़ा लऽ आनब आ रातिमे खेला-पीला पछाइत बना लेब...।

कछुबीवालीक मन असथिर होइते रहैन कि जगदरवालीक बात मन पड़लैन। क्रोध फेर आपसी रस्तासँ घुमि गेलैन। तुरुछ भऽ उत्तर देलखिन-

"सतरह रंगक आकि पचासे रंगक अँचार जे केदरबा खाएत तइमे कछुबीवालीक जीहोक पानि मेटेतै?"

श्यामाकाकी चुपचाप नहा कऽ घर दिसक रस्ता धेली। अपना धुनिमे श्यामाकाकी। ने समाजसँ कोनो मतलब आ ने समाजक काजसँ। समाजक काजे बेढंग अछि। केकरो कोनो ठेकान छै जे की बाजत आ की करत! कोनो ठेकान नै छइ। एक्के मुँह जेते लोकसँ गप करत, एक्के गपकेँ तेते रंगसँ बाजत। लगले किछु लगले किछु। तहूमे आब तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू सभ भेल हेन जे जुड़शीतलक मुइल नढ़ियाकेँ जहिना कुत्ता सभ अपना-अपना दिस दाँतसँ पकैड़-पकैड़ घिचैत रहैए, तहिना भऽ गेल अछि। नइ तँ केतौ एना हुअए जे एक्के गाममे एक्के पाबैन दू-दिना, तीन-दिना दुनू होइ! तखन तँ जेकरा जे मन फुरै छै से, से करैए। सभ करत अपना मने आ हम करब लोकक मने। अपन जिनगी अछि अपन दुख-सुख अछि। अपनासँ पलखैत हएत तँ दोसरो बच्चा दिस

देखब। नइ तँ अपन के सम्हारि देत..? यएह विचार सभ श्यामाकाकीक मनमे नचैत रहैन। चूड़ो-मुरहीक लाइ भाइए गेल। तिलबो बनाइए लेलौं। कुरथियो-तेबखाक दालि अछिए। लोको सभ जीहक चसकी दुआरे कियो खेरही तँ कियो राहैड़ तँ कियो बदामक दालिक खिचड़ी बनबैए। ..एते बात मनमे उठिते काकीक विचार रूकि गेलैन। कुरथीक तुलना राहैड़ आ खेरहीसँ करए लगली। पूसक संक्रान्तिक दिन पाबैन होइए आ राहैड़ चैत-बैशाखमे होइए, जखन कि बदाम फागुन आ खेरही जेठ-अखाढ़मे होइए, तइ हिसाबे कुरथीए ने नवकी कनियाँ बनि घर एली। ..ई बात मनमे अबिते काकीक मन आगू बढ़लैन। हमरा सन दही केकर हेतइ? कियो लोहा महींसक दूध पौड़ने हएत तँ कियो पोखैर-इनारक पानिक...। मुहसँ हँसी निकललैन। जेहने लोक सभ ठक भऽ गेल अछि तेहने देवियो-देवता सभ। अनदिना कियो दूधमे पानि फेँटि कऽ बेचैए तँ बेचैए, पाबैनमे जे हुनको सभकेँ खुअबै छैन से ओ अपने नइ बुझै छैथ। किएक ने हरहरी बज्जर खसा दइ छथिन। एते दिन हुनको सभकेँ शक्ति छेलैन आब ओहो सभ डलडाक मधुर खा-खा पेट बिगाड़ि लेलैन अछि। ..फेर मन अपना दिस घुमलैन। खिचड़ीमे जमीरी नेबो नीक आकि घी? मुदा ऐ प्रश्नपर मन नै अँटकलैन। मन कहलकैन खाइबेर-मे बुझल जाएत। फेर मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत आँखि उठा कऽ तकली तँ दिनकरपर नजैर पड़लैन। मने-मन प्रणाम कऽ बजली-

"एहनो जाड़मे अहाँ चास-वासकेँ भरि देने छिऐ। अपना-ले कोठी माल-जाल-ले टाल, खेतक-खेत तरकारी, बाधक-बाध गहुम, दलिहन-तेलहनसँ सजल खेत। हे दिनकर! बहुत जाड़ सहि जीब रहल छी, कल्लह फेरू।"

आँखि निच्चाँ होइते श्यामा काकीक मनमे एलैन। आइए ने सीमापर माने मकर रेखापर दिनकर जेता। काल्हिसँ तँ तिले-तिल बढ़बे करता।

पाबैनक छुट्टीमे ज्योतिषी-काका गाम कि एला जे काकीकेँ आफद भऽ गेलखिन। ओना, साल भरिसँ काकियोक मन बदैल रहल छैन। काकी जेते बुधियार भेल जाइ छैथ तेते काकासँ मन-भेद भेल जाइ छैन।

ज्योतिषी-काकाकेँ काकीक ओइ किरदानीसँ हृदैमे चोट लगलैन। जइ दिन काकी हुनकर कमाएल रूपैआ चोरा कऽ बुधिक सर्टिफिकेट कीनि लेलखिन, ओही दिनसँ काकीक आफद काका आ कक्काक आफद काकी भऽ

गेलखिन।

विद्यालयसँ अबैतकाल बाटेमे कक्काक नजैर पाबैनपर गेलैन। कनीकाल गुम्म भऽ उत्तर-दच्छिनक सीमापर आँखि रोपलैन। आँखि रोपिते हृदैमे हँसी उठलैन- जे लोक दक्षिणायणमे मरैत अछि तँ नर्क जाइत अछि आ उत्तरायणमे मुइलापर स्वर्ग। स्वर्ग तँ मनुख निर्मित छी जखन कि मकर संक्रान्ति ग्रह-नक्षत्रक प्रक्रिया छी। दुनू एकठाम केना भऽ गेल? बाटेसँ ई ज्योतिषी-कक्काक मनकेँ हौंड़ने रहैन। आँगनमे पएर रखिते काकी टोकि देलखिन-

"तलब भेटल की नहि? अखन धरि कोनो ओरियान नइ भेल अछि।"

काकीक बात सुनि कक्काक मन लहैर गेलैन। आँखि गुड़ैर काकीकेँ देख ओसारक चौकीपर झोरा रखि हाथ-पएर धोइले कल दिस बढ़ला। मनमे उठलैन- सभ काजक बेर फँड़बन्ही करती आ टाका बेरमे हम मन पड़ै छिऐन!

काका अप्पन धुनिमे आ काकी पाबैनक धुनिमे। तिलासंक्रान्ति सन पाबैन दंगलक अखाड़ापर उतरैबला अछि, ओइले अखन धरि हाथ-पर-हाथ जोड़ि बैसल छी...।

मुदा पहिलुके नजैर काकीकेँ डोला देलकैन। करेज काँपि उठलैन। मन निर्णए कऽ लेलकैन जे परिवारक गारजन पुरुख होइ छैथ, मान-अपमान पुरुखक कपारपर चढ़त। हम तँ अनेरे तबाह छी। जे आनि कऽ देता ओ बना कऽ आगूमे धऽ देबैन।

कलपर पानि पीब, आँगन आबि ज्योतिषी-काका चौकीपर बैस तमाकुल चुनबए लगला। अपन भलाइ सोचि काकी बाड़ी दिस टहैल गेली। मुँहमे तमाकुल लैत काका आँखि घुमा कऽ पत्नी दिस ताकए लगला। मन खुट-खुट करैत रहैन जे फेर ने केम्हरोसँ आबि किछु फरमा दइथ। मुदा सोझमे नइ देख मन असथिर भेलैन। मनमे उठलैन, काल्हि मकर संक्रान्ति छी। जैठामसँ सुरूज दच्छिन-मुहेँ नै बढ़ि उत्तर-मुहेँ घुमता। उत्तरायण होइते सुर्ज जीव-जन्तुमे अपन प्रकाशसँ नव स्फूर्ति पैदा करैए। मौसमक बदलाव हुअ लगैए। ऐसँ परिवर्त्तनक रूप देख पड़ैए मुदा लोकमे परिवर्त्तन की औत? जे दछिनपंथी विचार बेवहारिक रूपमे पर्वत सदृश अपन रूप बनौने अछि से चूड़ा-लाइ खेने भेट जाएत?

संक्रान्तिक पहिल संध्या अबैत-अबैत भोरमे नहेबाक कार्यक्रम तैयार भऽ

गेल। ऐ प्रश्नपर विद्यालयक सभ शिक्षिका एकमत भऽ गेली। मुदा कार्यक्रममे एकटा फनिगा आबि गेल। फनिगाक गन्धसँ वातावरणमे गन्ध पसैर गेल। गन्ध ई जे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी चुड़लाइक छिट्टा रखने छथिन! जे पहिने नहाइले जाएत ओकरा देथिन।

टेल्हुक धिया-पुतासँ लऽ कऽ ढेरबा धरि अपन दावा ठोकए लगल जे पहिने हम नहाएब आ कमलेसरी महरानीक चुड़-लाइक छिट्टा आनब। अपन-अपन शक्तिकेँ जगबैत संकल्पित सभ हुअ लगल।

जारैन तोड़ि कऽ अबैकाल अझप्पे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरीक चुड़लाइक छिट्टा-दे गोपला सुनलक। मुदा किछु दोहरा कऽ नइ बुझए चाहलक। माथपर ठहुरीक बोझ रहइ। मुदा भार मनसँ हटि चूड़ा-लाइक छिट्टापर पड़लै। बड़का छिट्टा, जेहेन भत-भोजमे भात झँकैले होइ छइ। भरिए दिन ने पाबैन छइ। केते खाएब। मनमे खुशीक अँकुरा उगलै। ..घरपर आबि गोपला जारैनक बोझ रखि मने-मन संकल्प केलक जे सभसँ पहिने हम घाटपर जाएब। गहींर गोपला, विचारकेँ गोपनीय रखलक। माइयो-बापकेँ नै कहलक।

बारह बजे रातिमे नीन टुटिते गोपला माए-बापकेँ बिनु किछु कहनहि पोखैर दिस विदा भेल। माए बुझलैन जे लघी-तघी करए निकलल। बुधू नीनभेर, तँए बुझबे ने केलैन। जहिना प्रेमीकेँ अपन प्रिय छोड़ि दुनियाँमे किछु नै देख पड़ैत, तहिना लाइक छिट्टा छोड़ि गोपला किछु नै देखैत। दुलकी मारैत पोखैर दिस बढ़बो करै आ आँखि-कान उठा-उठा आगुओ ताकै जे कियो दोसर ने तँ बढ़ि गेल। ने कानसँ कोनो भनक बुझि पड़ै आ ने अन्हारमे किछु देखए, बढ़ैत गेल।

किछु-काल देख माए बान्हपर आबि तकलक तँ गोपलाकेँ नै देखलक। मनमे टराटक लगए लगलै, जे एते अन्हारमे गोपला केतए चलि गेल। भरिसक भकुआएलमे केम्हरो चलि ने तँ गेल। मुदा अन्हारमे देखबे केते दूर करब। ओह! से नहि, तँ हुनको[1] उठा दुनू गोरे चोरबत्तीक हाथे ताकी। सएह कैलक।

पनरह-बीस दिनसँ शीतलहरी चलैत। लागल-लागल पछबो संग दइत। घूरक आगियो मलिमुँह भेल। गोपलाकेँ ने रस्ता अन्हार बुझि पड़ै आ ने पोखरिये

[1] पति

दूर, ने जाड़ बुझि पड़ै आ ने पोखैरमे पानि। साक्षात् ब्रह्ममे लीन भक्त जकाँ गोपलो लाइमे लीन भऽ गेल। पोखैर पहुँच घाटक तरमे गोपला हँथोरिया दिअ लगल। जाधैर लाइक आशा मनमे रहै ताधैर खूब हँथोरलक। होंथरैत-होंथरैत देह बर्फ जकाँ जमि गेलइ। जाड़ बुझि पड़ए लगलै। सौंसे देह थरथर काँपए लगलै। गोपलाक मन मानि गेलै जे मरि जाएब। पोखैरसँ ऊपर भऽ घर दिसक रस्ता धेलक। ताधैर चोरबत्तीक हाथे आगू-आगू माए आ दू लग्गा पाछू पिता पेना नेने अबै छेलखिन। फरिक्केसँ माए थर-थर कँपैत गोपलाकेँ पुछलक-

"गोपाल!"

'गोपाल' सुनि बुधबाकेँ खौंझ उठलै। बाजल-

"मिरगी उठल छेलौ जे पोखैर आएल छेलँह!"

थरथराइत गोपलाकेँ माए अपन आँचरसँ देह पोछए लगली। बेटाक दशा देख पिताक मन पघिलए लगलैन। जहिना गंगा स्नानक पछाइत नीक विचार मनमे उपकैए तहिना बुधूक मनमे उपकलै। सोचए लगल, आइ जँ मरि जाइत तँ दिनमे केकरा तिल-चाउर दितिऐ, के तिल बोहैत! दछिनबारि टोलमे सबहक बेटा-पुतोहु बाप-माएकेँ छोड़ि परदेश चलि गेल अछि। बुढ़िया सभ नवकी कनियाँ जकाँ अपनेसँ तिलकोर तड़ै जाइ छैथ। तिलकोरक तरुआ केहेन होइ छै ई तँ बुढ़िए कनियाँ सभ बुझै छथिन...।

जिबठ बान्हि बुधबा गोपलाकेँ पजिया कऽ पकैड़ कोरामे लऽ डेगगरसँ आँगन दिस बढ़ए लगल। आँगन आबि पुआर धधकौलक।

जहिना गोपलाक देह भीजल तहिना देहमे सटल गंजियो-पेन्ट। मुदा कपड़ा बदलैक साहस नइ भेलइ। देह कठुआएल, हाथ बिधुआएल, ओंगरी ठिठुरल! मुदा कनीए-कालक पछाइत गोपला टनकल। दुनू परानी बुधबो जाड़सँ ठिठुरले छल। तीनू टनगर भेल। टनगर होइते गोपला माएकेँ कहलक-

"आँगी-पेंट आनि दे।"

गोपला पेंट-शर्ट पहिरए लगल। तीनूक सिरसिराएल देह आगिक गरमी पाबि वसन्ती हवामे टहलए लगल। बुधबा पत्नी दिस देख हाथ पकड़ैत, पहुँचल फकीर जकाँ बाजल-

"आइ, गोपला हाथसँ चलि जाइत! सबहक आँगनमे पाबैनक उत्साह

रहितै आ अपना दुनू गोरे बेटाक सोगमे कनैत दिन बितैबतौं!"

पतिक बात सुनि आशा चौंकल। जेना भुमकमक धक्का धरतीकेँ लगैत तहिना आशाक हृदैमे धक्का लगलै। धड़फड़ा कऽ उठि कोठीपर रखल मुजेलासँ दूटा गोल-गोल लाइ लेने गोपलाक हाथमे देलक। हाथमे चूड़ाक लाइ अबिते गोपला हबक मारलक। मुदा तेहेन सक्कत जे ठोर चँछा गेलै, मगर दाँतसँ लाइ नै कटलै। माएकेँ कहलक-

"लाइ कहाँ टुटैए।"

बेटाक बात सुनि आशाक मनमे खुशी उपकल। अपन कारीगरीकेँ परीक्षामे पास होइत देख मुस्की दैत पतिक आँखिमे आँखि मिला बाजल-

"तेहेन पाकमे लाइ बनौने छी जे बिना सिलौट-लोढ़ीसँ सुनत!"

बेटा दिस होइत बुधू बाजल-

"आइ तँ केतौ नाचो-ताँच ने होइ छै तखन किए तूँ रातिमे एते दूर चलि गेलैं?"

बिच्चेमे आशा बजली-

"लघी-तघी करैले उठल हएत, भकुआएलमे वौआ गेल।"

हाँइ-हाँइ गोपला मुँहक लाइकेँ चिबा कऽ घोंटि माए दिस तकैत बाजल-

"लोक सभ साँझमे बजै छेलै जे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी लाइ रखने छथिन। उहए अनैले गेल रहौं।"

गोपलाक बात सुनि बुधूक मन महुरा गेलइ। मनमे उठलै- जे अपना कमेने नै हएत ओ भोला बाबा बरदक...। मुदा क्रोधकेँ ऐ दुआरे मनमे दबने रहल जे गामक लीला सभ आँखिक सोझमे नाचए लगलै। जे सभ जुआनीमे, मद-मस्त भोम्हरा जकाँ जिनगी बितौलैन, बेटा-पुतोहुक अछैत मुहसँ धुँआएल चूल्हि फूकए पड़ै छैन, जइसँ दुनू आँखिमे नोर टघरैत रहै छैन। मुदा ओ सभ तेकरा हृदैक बेथा नहि, धुँआ लागब बुझै छैथ। ..बुधूक हृदए पसीज गेल। मन कहलकै- मुरखो अछि तैयो तँ बेटे छी। बरखे ने चौदहटा भऽ गेलै मुदा भरि दिन तँ असकरे लग्गी लऽ कऽ वोनाएल रहैए। ने खाइक ठेकान रहै छै आ ने नहाइक। तखन बुधिसँ भेँट केना हेतइ..?

बेटाक बात सुनि माइक मन उमैड़ गेलैन। बुझबैत बजली-

"रौ बौआ! अपना की कोनो चीजक कमी अछि। जेते रंगक धान गिरहतकेँ होइ छै तेते अपनो ने होइए। सतरियाक चूड़ो कुटने छी, लाइयो बनौने छी आ सतरिये चाउरक खिचड़ियो रान्हब।"

पछुआरक रस्तापर गल्ल-गुल्ल सुनि आशा घरसँ निकैल डेढ़ियापर पहुँचली कि महरैलवालीक बाजब सुनलैन। डेढ़िएपर ठाढ़ भऽ आरो कान ठाढ़ केली। महरैलवाली हर्ड़ीवालीकेँ कहलखिन-

"हम तँ आध पहर रातिए नहेलौं। अखन धरि अहाँ पछुआएले छी।"

हर्ड़ीवाली-

"अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छेलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब।"

दुनू गोरेक गपकेँ दबैत तमोरियावाली जोर-जोरसँ पुतोहुकेँ कहैत रहथिन-

"तीन दिनसँ बोखार छेलह तखन एहेन समैमे भोरे किए नहेलह?"

मुदा पुतोहु उत्तर नै देलकैन। आशाकेँ मन पड़लैन जाड़सँ कँपैत गोपला।

❍

शब्द संख्या : 2056

भाइक सिनेह

बारहसँ बेसी राति ढहि चुकल मुदा एक नै बजल छल। अगहन मासक अन्हरियाक चतुर्दशी। एक तँ डम्हाएल अन्हार तैपर झक्सी जकाँ ओस खसैत। आँखिक रोशनी एते दुबरा गेल जे अपनो देह भरि नै देख पबै छेलौं। जाड़क राति, तँए लोक सबेरे सीरक सेरिया कऽ ओछाइन पकैड़ लइ छल। पहिल नीन पूरि कऽ टुटिते शिष्टदेवक मन छोट भाएपर पहुँचलैन। सभ तरहेँ श्रेष्ठ रहितो आँखिक सोझहेमे परिवार टुटि गेल। जिनगी तँ ओहन जाल नहि, जइमे ओझराएब अनिवार्य अछि। विधाता तँ सभ किछु दऽ मनुखकेँ पठबै छथिन तहन किए लोक मकड़ा जकाँ अपने करनीसँ ओझरा जाइत अछि! आ विवेकमे केना भूर भऽ जाइ छै जे हंस नइ बनि कऽ कार-कौआ बनि जाइत अछि! खाएर.., परिवार भलेँ फुट भऽ गेल हुअए मुदा विचारनाथ तँ छोटे भाए छी, आ अपने पितातुल्य छिऐ। ई कियो बुझए वा नइ बुझए मुदा अपने तँ जरूर बुझै छी। अखन धरि जेते दुनियाँ आ उगैत सुरूजक दर्शन हमरा भेल अछि ओतेक तँ विचारनाथकेँ नहियेँ भेलैहेँ। परिवार टुटैक दोख केकरा लगतै? पितातुल्य तँ परिवारमे अपने छिऐ। मनुखक जिनगीक गाड़ी समैक संग चलैत आएल अछि आ आगुओ चलिते रहत...।

सोचैत-विचारैत शिष्टदेवक हृदए बर्फ जकाँ पघिल-पघिल पानि हुअ लगलैन। पिपनीमे अँटकल नोरक बून सरस्वती नदीक धार जकाँ पहाड़पर सँ समतल भूमिमे बहए लगलैन। नोरक संग भाइक सिनेह सेहो उमड़ए लगलैन। जिनगीक सभ बाटमे विचारनाथ पाछू अछि तँए ओकर बाँहि पकैड़ आगू खिंचब। अपना पाँच समांग कमेनिहारक परिवार अछि। ओ दुइए परानी अछि। घरक कोनो वस्तु निकालि कऽ देलासँ पत्नी देख लेती मुदा खरिहाँनक धानक बोझ तँ नइ देखती। बिनु ठेकानल रातिमे शिष्टदेवे जकाँ विचारनाथक नीन सेहो

टुटल। नीन टुटिते मनमे उठलै जे जइ भैयाक संग चन्देसर, विदेसर आ जागेसर स्थान संगे जाइ छेलौं आ महादेवोक दर्शन करै छेलौं, मेलौ घुमै छेलौं। की बेटो-भातिज संगे जाएत? एहेन टूट परिवारमे केना भेल? जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहियासँ जहिना भैयाक संग रहैत एलौं तहिना भीन होइसँ पहिनौं धरि ओहिना रहलौं। मुदा कोन रोग परिवारमे केमहरसँ घुसि आएल जे दुनू भाँइ महींसक सींग जकाँ भऽ गेल छी? मुदा भैयाक दोख कहाँ केतौ छैन। दू परिवारसँ दुनू दियादिनी आबि दुनू भाँइकेँ दू दियाद बना देलक! दुनू भाँइमे जेठ-छोटक बेवहार कहाँ अछि। दुनू भाँइ तँ भैये-बच्चा छी मुदा दियादिनीमे से कहाँ छइ? माए तुल्य भौजीक दोख केना लगेबैन मुदा की ओ छोट दियादिनीकेँ छोट बहिन बुझै छथिन..? मनुखोक अजीब गति अछि। जाधैर सम्मिलित परिवार रहैए ताधैर दुनियाँक सभ रोग परिवारकेँ पकड़ने रहै छै मुदा परिवार टुटिते रोग पड़ा जाइ छइ। खाएर जे हौउ, जाधैर जीबै छी ताधैर भैयाकेँ भैये बुझबैन, भलेँ ओ जे बुझैथ। जहिना आमक वंशकेँ बढ़ैक दू रस्ता अछि। डारिसँ गाछ जोड़ि कऽ–जे कलम बनैए–जइमे आगूओ पुन: वएह आम रहैए, आ आँठीक जन्मल गाछ सेहो होइए जे दिनानुदिन अपन रूप बदलैत-बदलैत सभ किछु बदैल लैत अछि। खाएर.., एक हिस्सा रहितो भैयाकेँ पाँच गोरे खेनिहारो छैन आ तीनू भाए-बहिनकेँ पढ़बैयोमे खर्च होइ छैन। हमर तँ नापल-जोखल अढ़ाइ गोटेक परिवार अछि। एक सम्पैतमे भैयाक दोबर खर्च छैन। सहोदर रहैत जँ भैयाक दुख हम नइ बुझबैन तँ आन थोड़े बुझतैन? जइ धरतीपर राम-लक्ष्मण सन भैयारी भऽ चुकल अछि, की हम ओइ धरतीपर जन्म नइ लेने छी?

चुपचाप ओछाइनपर सँ उठि खरिहाँन जा धानक जाकमे सँ एक बोझ उठा भाइक खरिहाँन दिस विचारनाथ विदा भेल। तहीकाल शिष्टदेवो अपना खरिहाँनसँ धानक बोझ उठा विचारनाथक खरिहाँन दिस चलल। दुनू भाँइक खरिहाँनक मुँह दू दिस रहने किछु क्षणक रस्ताक दूरी बनि गेल।

..बीच बाटपर दुनू दिससँ दुनू भाँइ बोझ उठौने एक दोसराक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मुदा अन्हार रातिक दुआरे कियो केकरो चिन्हलक नहि, दुनूक मनमे चोरक शंका भेल। मुदा हल्लो केना करैत, दुनू तँ छल अखन चोरे। भलेँ अपने धान किए ने छेलइ। मक्खन चोर कृष्ण तँ नै छल जे चोरा कऽ खाइयौ लैत आ झूठ बाजि छिपाइयो लितए। ..खरहोरिक कड़ची जकाँ दुनू भाँइ सजीव रहितो

निर्जीव आ निर्जीव रहितो सजीव ठाढ़ रहल। किनको मुँहमे बोल नहि, आँखिमे नोर नहि। अमरलत्ती जकाँ दुनूक हृदए ओझरा कऽ लटपटा गेल। एक क्षण-ले जेना सरस्वती नदीक धार बहब छोड़ि असथिर भऽ मोटाए लगल।

मुड़ी उठा शिष्टदेव अकास दिस तकैत उतरे-दछिने डगहरकेँ देखैत माथसँ थोड़ेक निच्चाँ सतभैंयाकेँ पच्छिम दिस हिया-हिया कऽ देखए लगला। सतभैंयापर सँ नजैर निच्चे ने उतरैत रहैन। तैकाल उतरबरिया गाछपर चकबी-चकेबाक झूण्ड देह डोलबैत भोरक इशारा करैत बोली देलक। चकवीक अवाज सुनिते शिष्टदेवक मनमे उठलैन- हो-ने-हो कहीं पत्नी जागि ने गेल होथि! हाँइ-हाँइ मुड़ी निच्चाँ करैत शिष्टदेवक मुहसँ फुटलैन- “के?”

बोलीक अवाज अकाइन विचारनाथ बाजल-

“हम।”

‘हम’ सुनि शिष्टदेवक मन कहलकैन- ‘ई तँ विचारनाथ छी!’ मुदा तर्क कहलकैन- ‘एत्ती रातिमे बोझ उठौने केतए जाइए? ताड़ियो-दारू तँ नहियेँ पीबैए जे पसिखन्नो जाएत कि भट्ठीखाने जाइत हएत।’ सामंजस करैत शिष्टदेवक मुहसँ जहिना निकललैन- “बौआ!”

तहिना विचारनाथक मुहसँ बहराएल-

“भैया!”

‘बौआ’ ‘भैया’क पछाइत दुनूक मुँह एक्केबेर बाजल-

“हूँ!”

शिष्टदेव बजला-

“एहेन काजर सन कारी रातिमे बोझ केतए नेने जाइ छहक?”

जहिना सिनेह अपना हृदैसँ लगा कारीखमे चमक आनि दैत अछि, आ आँखिक गुण बढ़बैत अछि तहिना विचारनाथक हृदए-आँखि चमकल-

“भैया, अहाँक खर्च देख मन कहलक जे पाँच बोझ धान दए अबहुन।”

दुनू भाँइक मनमे उठल- “भीन किए.. ?”

जाधैर सदनदेव आ श्रद्धावती जीबैत रहैथ ताधैर स्वर्गक परिवार छेलैन। अपन अमलदारीए-मे सदनदेव दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा बिआह-

दुरागमन करा जिनगीक लीलासँ निचेन भऽ गेल छला। सोलह बीघा जमीनक किसान परिवार, बाढ़ि-रौदीक बीच रहितो दोसराक सेवाकेँ कर्ज बुझि अपन परिवारकेँ सालक आमदनीक भीतरे खर्च कऽ रखि उगरल आमदनीसँ कातिक मास भागवत-कथाक संग भोज कऽ अगहनसँ नव जिनगीमे पएर रखै छला। ने बेटाकेँ किछु अढ़बैत रहथिन आ ने पत्नीकेँ। अढ़बैक प्रयोजने नइ रहैन। परिवारकेँ संस्था बुझि अपन-अपन समैक उपयोग अपना-अपना शक्तिक अनुकूल सभ कियो काजमे लगबैत रहै छला। अपने अनुकूल परिवार देख सदनदेव दुनू भाँइक बिआह केने छला। शिष्टदेवक बिआह बीस बीघाबला लालबाबूक परिवारमे आ विचारनाथक बारह बीघाबला श्रमदेवक परिवारमे भेलइ।

तइ समए महिला शिक्षा अवैध रहने कैकेयी सेहो नियमक पालन करैत रहली। जइसँ पितो–लालबाबू–खुश भेला। माल-जाल पोसैले एकटा नोकर छेलैन आ खेती जने-हरबाहक हाथे होइन। अँगनाक मालिक पत्नीए रहथिन। खाइ-पीऐक चहैट पत्नीकेँ नैहरेसँ लगल रहैन जइ दुआरे बेटी-पुतोहुकेँ रहितो भानस अपने करै छेली। खाली गठुलासँ बेटी जारैन आनि दइ छेलैन आ घरसँ बरतन-बासन आनि पुतोहु चूल्हि लग दऽ दैन। अपने तँ तरकारीए बनबए, चाउरे फटकए आ दालियेक खोंइचा बीछैमे पसेना पोछैत रहै छेली। चूल्हिक एक भाग पुतोहुकेँ आ दोसर भाग बेटीकेँ बैसा बीचमे अपने बैस सभ दिन नैहरक खिस्सा सुनबैत रहली जेकरे चलैत ने बेटी परबाबाक नाओं आ ने ददिया ससुरक नाओं पुतोहु बुझै छेलैन।

बाढ़िक उपद्रवसँ परिवार चलब कठिन बुझि श्रमदेव पितियौत भायकेँ सातो बीघा खेत सुमझा परिवारक संग कलकत्ता चलि गेल। माए-बापक संग साते बर्खक दमयन्ती सेहो चलि गेली।

रिसरा जूट मिलमे श्रमदेव नोकरी ज्वाइन केलैन। पक्का आठ घन्टाक ड्यूटी रहैन। रस्ताक समए श्रमिकक। डेराक बगलेक स्कूलमे दमयन्तीक नाओं लिखा देलखिन। संगी-साथी सभसँ पँइच रूपैआ लऽ कऽ दस किलो दूधवाली गाए कीनि पत्नी-ले सेहो काज ठाढ़ कऽ लेलैन। बच्चेसँ माने साते बर्खसँ दमयन्ती थैर-गोबर करैत-करैत गाए पोसनिहारि भऽ गेली। आठ बर्ख नोकरीक उत्तर मिलमे वेतन-ले श्रमिक सभ हड़ताल केलक। मिलमे ताला लटैक गेल।

नोकरीक डगमगाइत स्थिति देख श्रमदेव अपन अरजल सभ किछु बेच पुन: घर घुमि एला। सस्त जमीन रहने पाँच बीघा जमीनो आ तीनटा गाइयो कीनि दोहरी काज ठाढ़ केलक।

..समैक संग चलि दुनू भाँइ शिष्टदेव सेहो परिवारक गाड़ीकेँ पटरीपर चढ़ा अपन गतिए चलबैत रहला।

अँगनाक मालिक कैकेयी आ सहयोगीक रूपमे दमयन्ती रहए लगली। जेठ होइक नाते कैकेयी मुँहक बले जुइतो चलबए लगली आ हाथ-पैरकेँ अरामो दिअ लगली। वएह अराम काल भऽ भीन करौलकैन..!

मुदा दुनू भाँइक बीचक सिनेह पुन: एकाकार कऽ देलकैन।

❍

शब्द संख्या : 1201

प्रेमी

फगुआक दिन। मुर्गाक बाँग सुनिते ओछाइन छोड़ि पक्षधर बाबा परिवारक सभकेँ उठबैत टोलक रस्ता धेने गौआँकेँ हकार दिअ विदा भेला। मनो गदगद रहैन। खुशी भीतरसँ समुद्रक लहैर जकाँ उफनैत रहैन। गौआँकेँ फगुआक भाँग पीबाक हकार दऽ दरबज्जाक ओसारपर बैस गर अँटबए लगला जे दस किलो चीनी, मसल्ला आ भाँगक ओरियान तँ काइए नेने छी। आब खाली बाजा-गाजाक संग लोककेँ एबाक छैन। ..एते बात मनमे अबिते पक्षधर बाबा उठि कऽ भाँगक पत्ती आ मसल्ला–मरीच, सौंफ, समतोलाक खोंइचा, गुलाब फूलक पत्ती, काबुली बदाम–लऽ आँगन जा पुतोहुकेँ सुनबैत बजला-

“कनियाँ, बुड़हीकेँ पुआ-मलपुआक ओरियान करए दियौन आ अहाँ भाँग पीसू। खूब अमैनियासँ पत्ती धुअब। तिनसलिया छी, जल्ला-तल्ला लगल अछि।”

कहि ओसारपर सभ समान सूपमे रखि दरबज्जा दिस घुमि गेला। ‘हूँ-हूँ’ केने बिना गन्धारी मसल्लाक पुड़िया निच्चाँमे रखि पत्तीकेँ सूपमे पसाइर आँखि गड़ा-गड़ा जल्ला ताकए लगली। मनमे उठलैन जे आइ बुढ़ा सनैक-तनैक तँ ने गेला हेन! एते भाँग लऽ कऽ की करता..? मुदा गन्धारी किछु बजली नहि। आँखि उठा कऽ देख बिहुँसि कऽ नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। ओना, मिथिलाक नारी अपन आँखिमे गान्धारी जकाँ पट्टी बान्हि धरती सदृश सभ किछु सहैत एली। दरबज्जापर बैस पक्षधरक मनमे उठलैन- जिनगीक एकटा दुर्गम स्थान दुर्गा टपा देलैन। मने-मन दुनू हाथ जोड़ि हृदैसँ सटा हुनका गोड़ लगला। सुकन्या अपना विचारसँ जिनगीक प्रेमी चुनलक। केना नहि आनन्दसँ जीबैक असिरवाद दैतिऐ। जइ फुलवाड़ीकेँ लगबैमे साठि सालक श्रम लगल अछि, ओइ श्रमकेँ जहिना छोट-छोट बेदरा-बुदरी टिकुली पकैड़ पुनः उड़ा दैत तहिना हमहूँ

उड़ा देब? नहि, कथमपि नहि!

रूपनगर हाइ-स्कूलक बोर्ड परीक्षाक सेन्टर प्रेमनगरक हाइ-स्कूलमे भेल। देहाती स्कूल रहितो परीक्षार्थीकेँ डेरा-ले मनमे कोनो चिन्ता नहि। सबहक मनमे एते खुशी जे डेरापर धियाने ने जाइत। सभ निसचिन्त जे गाम-घरमे अखनो विद्याकेँ देवी स्वरूप बुझि सभ मदैत करए चाहै छैथ। जँ मधुबनी सेन्टर होइतए तहन ने डर होइतए जे मेहता लॉजमे सभ समान चोरीए भऽ जाएत तँए असुरक्षित अछि आ प्रोफेसर कॉलनीक भड़े-किराया तेते अछि जे ओतेमे विद्यार्थी परीक्षाक सभ खर्च पूरा लेत।

ओना, प्रेमनगरक सैयोसँ ऊपरे कुटुमैती रूपनगरमे अछि, तँए किए केकरो मनमे रहैक चिन्ता होइतै। तहूमे प्रेमनगर हाइ-स्कूलक हेडमास्टर तेहेन छैथ जे स्कूलक समैमे स्कूलक काज करै छैथ बाँकी बारह बजे राति धरि विद्यार्थीक खोज-पुछारिमे लगल रहै छथिन जे केकरो कोनो तरहक असुविधा तँ ने भऽ रहल छइ। तहूमे आनन्दी बाबाक दरबज्जा तेहेन छैन जे इलाकाक लोक धर्मशल्ले जकाँ अपन रहैक ठौर बुझैए। धैनवाद यशोदिया दादीकेँ दिऐन जे बुढ़ाड़ियोमे अभ्यागत सबहक अँइठ-काँठ बारह बजे राति धरि उठैबते रहै छैथ।

परीक्षासँ एकदिन पहिने लोचन सभ समान शुटकेशमे लऽ साइकिलसँ प्रेमनगर पहुँचल। लोचनक परिवारकेँ पक्षधरक परिवारसँ साइठो बर्ख ऊपरसँ दोस्ती आबि रहल छैन। अजादीक हुर-बरेड़ाक समए रहइ। जहिना गामक धिया-पुता गुल्ली-डन्टासँ क्रिकेटक मनोरंजन करैए, आ शहरक धिया-पुता जगहक अभावमे खेलक स्कूलमे नाओं लिखा मनोरंजन करैए, तहिना पक्षधरो आ ज्ञानचनो अजादीक लड़ाइमे पढ़ाइ छोड़ि समाजक बीच आबि हुर-बरेड़ामे शामिल भऽ गेला, समाजक काजमे हाथ बँटबए लगला। समाजमे केकरो ऐठाम बेटीक बिआह होइ, बरियाती अबै तँ अपन बहिन बुझि, बिनु कहनौं पाँच दिन निसचित समए दिअ लगला। तहिना आरो-आरो काज सभमे हाथ बँटबए लगला। मुदा अस्सी बर्खक उपरान्तो पक्षधर पक्षधरे आ ज्ञानचन ज्ञानचने रहि गेला। कहियो कियो नेता नै कहलकैन। हँ, एते जरूर भेलैन जे भाए-भैयारी भेने गाममे तेते भौजाइ भऽ गेलैन जे बढ़ैत वसन्त ग्रीष्मक रस्तेकेँ घेर देलकैन। आब तँ सहजे बुढ़ाड़ीमे धिया-पुताक संग रंगो-रंग खेलै छैथ आ जोगीरो गबै छैथ। गाम स्वर्ग जकाँ लगि रहलैन अछि।

किएक नै मन लगितैन, जइ गाममे कालिदास सन विद्वान भेला जे जही डारिपर बैसब ओही डारिकेँ काटब मुदा ने तँ कुरहैरक धमक लगत, ने डारिए डोलत, ने दुनू हाथे कुरहैर भाँजब तँ देह डोलत-थरथराएत आ ने दुनू पैरक बाइलेंस गड़बड़ाएत। निसचिन्तसँ जखन डारि खसए लगतै तखन ओइपर बैसले-बैसल धरतीपर चलि आएब, एहेन विद्वान् सभसँ तँ गामे भरल अछि। एते दिन, अपराधीक संख्या कम रहने ओकरा सबहक नजैर निच्चाँ रहै छेलै मुदा आब केकरा कहबै, अपनो घरवाली धमकी देती जे माए-बाप आ भाय-भौजाइक पाछू लगल रहै छी आ अपना धिया-पुताले किछु करबे ने करै छी! ऐ जिनगीसँ जहर-माहुर खाए कऽ मरब नीक। हौ बाबू, हमरा एहेन भ्रममे नै दएह। ऐ दुनियाँमे ने कियो अप्पन छी आ ने बीरान। सीता जकाँ लक्ष्मणक रेखाक भीतर रहअ। नइ तँ रावण औतह आ लऽ कऽ चलि जैतह। अपन-अपन पैरपर ठाढ़ भऽ गंगोत्रीसँ निकलैत गंगाक पानि जकाँ, जे साथीक संग ऊपर-निच्चाँ होइत प्रशान्त महासागरमे मिलैए तहिना समैक संग चलैत रहअ।

पक्षधर बाबाक घर-दुआर लोचनकेँ देखले। केकरोसँ पुछैक जरूरते किएक होइतै। साइकिल हरहरौने दरबज्जापर पहुँच साइकिलसँ उतैर घरक देवालक पजरामे साइकिल ठाढ़ कऽ दुनू हाथे बाबाक पएर छुबि गोड़ लगलकैन। बाबाकेँ बुझले रहैन, बजला-

“भने अखने चलि एलह। सभ समान सेरिया सेन्टरपर जा कऽ देख-सुनि अबिहह।”

कहि पोतीकेँ हाक देलखिन। मुदा लोचनो तँ आँगन-घर जाइते-अबैत रहए। सुकन्याकेँ लोचन आँगनसँ बजा अनलक। भाए-बहिन जकाँ दुनूकेँ देख पक्षधर बाबा सुकन्याक कहबाक बात बिसैर दुनू गोरेकेँ कहलखिन-

“बाउ, आब तँ हम चलचलाउ भेलियह। तोरे सबहक पार ऐ दुनियाँमे एलह हेन। दुनियाँमे जेते मनुख अछि ओ अपना समैक जिम्मा लऽ जीबैए। अखन तूँ सभ सुकुमार कोमल-किसलय सदृश छह। मनुख बनि जिनगी जीबिहह। हम दुनू संगी–पक्षधर आ ज्ञानचन–दू जातिक रहितो संगे-संग जिनगी बितेलौं, जे समाजोक लोक बुझै छैथ। मुदा हुनको धैनवाद दइ छिऐन जे संगीक महत अदौसँ बुझैत आएल छैथ। एकरे फल छी जे जाति-कुटुमसँ कनियोँ कम दोस्तीकेँ नै बुझल जाइ छी। संगे-संग जहलो कटलौं आ एक्के ओछाइनपर सुतबो

करै छी। मिथिलांचलक कोनो राजनीतिक आकि समाजिक संगठनक बात हौउ, मुदा की ऐ संस्कृतिकेँ आँखिक सोझहामे नष्ट होइत देख सकै छी?”

पक्षधर बाबाकेँ मन पड़लैन गाड़ीक ओ दिन जइ दिन जहल जाइत-काल दुनू गोरेकेँ पैखाना लगि गेल आ हाथमे हथकड़ी छल। ट्रेनक पैखाना-कोठरीमे पानि नहि। की कएल जाए? जेबीसँ रुमाल निकालि दू टुकड़ीमे फाड़ि दुनू गोरे शुद्ध भेलौं। आँखि ढबढबाए गेलैन। भरल आँखिसँ पोतीकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, दरबज्जापर रहने बौआकेँ पढ़ि नै हेतइ। एक तँ पढ़बह की खाक। बहुत लिलसा छल जे परिवारमे इंजीनियर-डाक्टर देखिऐ मुदा से हमरा सन-सन परिवारबला-ले सपना नइ तँ आरो की अछि। एक दिस पनरह-बीस लाखक पढ़ाइ आ दोसर दिस दुइयो हजार मासक आमदनीक परिवार नहि। मुदा अखन बच्चा छह, आशासँ जीबैक उत्साह मनमे जगबैक छह।”

जहिना जनकजीक फुलवाड़ीमे राम आ सीताक प्रथम मिलन भेलैन तहिना सुकन्या आ लोचनक बदलल रूपक बीच भेल। अखन धरि जे बच्चा सदृश परिवारमे खेलौना छल ओकरा कानमे एकाएक जिनगीक बात पड़लै। जिनगी-ले प्रेम भरल संगीक जरूरत होइत अछि। जिनगीक बात सुनि दुनूक देह सिहैर गेलइ। ..सिहरैत देह देख पक्षधर कहलखिन-

“बुच्ची, लोचन तोहर पाहुन भेलखुन। अँगनेक ओसारक कोठरी दऽ दहुन। सभ देखभाल तोरे ऊपर। कोनो तरहक असुविधा पढ़ैमे नै होइन।”

पक्षधर बाबाक बात सुनि सुकन्या शुटकेस माथपर उठा लोचनक पाछू-पाछू विदा भेल। कोठरी खुजले रहै, अँटकैक केतौ जरूरते नै पड़लै। एकजनियाँ चौकी, कपड़ा-ले अलगनी, एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी रहइ। कुरसीपर शुटकेश खोलि लोचन कपड़ा निकालि चौकीपर रखलक। चौकीपर रखिते सुकन्या ओही अलगनीपर लोचनोक कपड़ा रखलक जैपर ओकर अपनो रखल कपड़ा छेलइ। सौनक झूला जकाँ दुनूक कपड़ा झूलए लगलै। किताब, कॉपी, कलम निकालि टेबुलपर रखलक। एक्के कोर्सक पोथी दुनूक। लोचन मैट्रिकक सेनटप केंडीडेट आ सुकन्या मैट्रिकक विद्यार्थी...।

टेबुलक बगलमे लोचन लग ठाढ़ भऽ सुकन्या पोथी फुटा कऽ नइ रखि, सभकेँ जोड़ा लगा-लगा रखलक। दुनूक नजैर दुनूक किताब-कॉपी-पेनक

जोड़ापर अँटैक गेल। पहिनेसँ दोबर पोथीक थाक भऽ गेल। ऐना जकाँ एक-दोसराक हृदैमे अपन-अपन रूप दुनू गोरे देखए लगल। पोथीक लिखाबट प्रेसक होइ छइ। तहूमे एक्के प्रेसक पोथी छेलइ। मुदा कॉपी तँ अपन-अपन हाथक लिखल होइ छइ। एक दोसराक कॉपी उलटा-उलटा देखए लगल। देवनागरी लिखाबट लोचनक सुन्दर मुदा रोमन लिखाबट सुकन्याक सुन्दर, एना किए भेल? एक्के हाथक लिखाबट दब-तेज केना भऽ गेल? मुदा उत्तर केकरो मनमे नहि अबइ। अनासुरती सुकन्याक मन नाँचल। एते-काल भऽ गेल, अखन धरि पानियोँ नै अनलौं। धड़फड़ा कऽ कोठरीसँ निकैल छिपलीमे जलखै आ लोटामे पानि नेने आबि चौकीपर छिपली रखि हाथ शुद्ध करैले लोटा बढ़ा, चौकीक गोड़थारी दिस पलथा मारि बाबाक पाहुनकेँ खुआबए बैस गेली। खाइकाल पुरुख चुप रहैत अछि तँए नोन-अनोनक प्रश्न किए उठितै। समदर्शी मिथिला छिऐ किने..! एक बजेसँ लऽ कऽ चारि बजे धरि परीक्षाक कार्यक्रम अछि। पहिल दिन लोचन दुर्ग टपैले जाएत तँए सुकन्याक मन मृगा जकाँ नचैत रहइ। भिनसरेसँ सुकन्या लोचनपर नजैर अँटकौने...। समैपर अपन काज पुरबैक अछि। हमरा चलते जँ शुभ काजमे बाधा होएत तँ भगवानक ऐठाम दोखी हएब। ..मास्टर साहैबक सिखौल बात सुकन्याकेँ मन पड़ल। काजक भार तँ लोचनक ऊपरमे छैन, हम तँ हुनकर मदैतगार मात्र छिऐन। तँए नीक हएत जे हुनकेसँ पुछि लिऐन। सुकन्या चँचल मनमे फेर उठलै, पूजाक तैयारीमे सभ किछु फुलडालीमे सजबैत होएत। बीचमे बाधा देब उचित नहि। हो-ने-हो फूल-पत्तीक जगहे बदैल जाइन। अनासुरती मनमे एलै- हाय रे बा, घड़ी तँ देखबे ने केलौं। अगर बारह बजि गेल हेतै तँ खेनाइ खुएबक दोखी के हएत? मन व्याकुल, अव्यवस्थित वस्त्र, केश छिड़ियाएल, कर्मक भारसँ भादबक अन्हरिया जकाँ सुकन्याक आँखिक आगू अन्हार पसैर गेलइ। केतए जाउ, केकरा पुछिऐ? गाछो-बिरीछ नै अछि जे पुछि लितिऐ। अस्त-व्यस्त अवस्थामे सुकन्या माए लग पहुँच बाजल- “भानस भेलौ?”

“अखने। अखन तँ आठो ने बजल हएत।”

“जलखै?”

“बच्चा कहलक एक्केबेर खा कऽ सबेरे जाएब।”

जहिना केचुआ छोड़ैत समए साँपकेँ कष्ट होइ छै, भलेँ नव जीवन किएक

ने प्राप्त करत, मुदा दरद तँ हेबे करै छइ। मीरा जकाँ सुकन्या, तहूमे राजस्थानक नहि, मिथिलाक बाला जे परिवार आ समाज-ले अदौसँ समरपित। बम्बइक गीतक धून बहुत मधुर होइए तहिना तँ समबेत स्वरमे माए-बहिनक चैताबर, बारहमासा आ समदाउनो तँ मधु सद्दश अछिए। जहिना मधुमाछी उड़ि-उड़ि कखनो आमक गाछपर चढ़ि सोझे अपन प्रेमी मंजर लग पहुँच जाइत अछि, आ लगले माटिपर ओंघराएल चमेलीक रसकेँ आमक रसमे महामिश्रण कऽ घोल बनबैए, तहिना ने हमहूँ आ लोचनो छी।

कोठरीसँ निकैलते लोचनक आँखि सुकन्यापर पड़ल। हजारो रश्मि रूपी तीर दुनूक बीच टकराए लगल। मुदा दू रंग। जहिना लड़ाइक मैदानमे वीर असीम बिसवासक संग मरैले नहि बलिदान होइले बढ़ैए, तहिना लोचनोक हृदैमे। कोढ़िक फुलाइत फूल जकाँ मुँह, मुदा सुकन्या मने-मन भगवानसँ अराधना करैत- "कुरुक्षेत्रसँ लोचन हँसैत आबए।"

उचंगल मन फेर उचैंग गेल। ओसारसँ निच्चाँ उतैरते सुकन्याक हृदए लोचनकेँ पाछूसँ ठेलए लगल। जहिना बच्चा सभ माटिक पहिया लगा कड़चीक गाड़ीपर धनखेतीक माटि उघि-उघि अँगनाक ओलतीमे दऽ खुशी होइत जे आँगन चिक्कन बनत, तहिना आगू-बढ़ैत लोचनकेँ देख सुकन्याकेँ खुशी भेलइ। मुदा खुशी अँटकलै नहि। लगले चारि बाजि गेलइ। मनमे उठलै- भूखल भायकेँ जलखै कहाँ खुएलौं। जहिना किसानक खेत दहा गेलासँ, बेपारीमे मन्दी आबि गेलासँ, बेरोजगारी बढ़लासँ भीखमंगोकेँ कियो भीख देनिहार नइ रहैत तहिना जे धरती करोड़ो पतिव्रता नारी पैदा केलक वहए धरती पतिहत्यारिनकेँ जन्म दऽ ओकरा जहल कटबैए...।

साढ़े चारि बजे बेर-बेर देखला पछाइत सुकन्याक नजैर मौकनी हाथीपर चढ़ल गणेशजी जकाँ लोचनकेँ अबैत देख लोटामे पानि, थारीमे जलखै परैस अँगनाक ओलतीमे ठाढ़ भऽ देखए लगल। अखन धरिक लोचनक सैयो मनोहर रूप सुकन्याक मनमे नाचए लगलै। कोठरी आबि लोचन गरमाएल देहक कपड़ा बदैल जलखै करए लगल। विस्मित भेल सुकन्याक मुहसँ निकलल-

"केहेन परीक्षा भेल भाय?"

"बहुत बढ़ियाँ। जरूर पास करब।"

'जरूर पास करब' सुनि सुकन्याक हृदए सीताक राम जकाँ गुण लोचनमे देखलक। मनमे आशाक सिहकी उठलै। संगीए तँ जिनगीक जीत दियबैए। अपन सुखद जिनगीक मनोहर रूप लोचनमे देख सुकन्या मोहित होइत बाजल-

"औझुका पेपर तँ नीक भेल मुदा आन दिनक जँ अधला हुअए, तखन?"

"ओ ओइ दिनक मेहनतपर निर्भर अछि। एकर जवाब हँ-नइ मे नै देल जा सकैए।"

आइ सातम दिन परीक्षाक अन्त भेल। स्कूलसँ आबि पक्षधरकेँ गोड़ लगि लोचन बाजल-

"बाबा, परीक्षा समाप्त भऽ गेल। गाम जाइ छी।"

असिरवाद दइसँ पहिनहि बाबाक मनमे उठलैन, जखन ऐठामक काज सम्पन्न भऽ गेलै तँ रोकब उचित नहि। सबेर-अबेर भेनौं अपन घर तँ पहुँच जाएत। बात बदलैत बाबा पुछलखिन- "केहेन परीक्षा भेलह?"

मुस्की दैत लोचन बाजल- "पास करब, बाबा।"

लोचनक मुस्की पक्षधरक हृदैक आनन्दक कोठरीमे सलाइक काठी जकाँ रगैड़ देलकैन। मन पड़लैन जनकपुरक धनुष यज्ञ। ठहाका दैत बजला-

"भाग्य केकरो लिखल नै होइ छै बनौल जाइ छै, बौआ।"

अँगनाक ओलती लग ठाढ़ सुकन्याक मन मृगा जकाँ व्याकुल भऽ नचैत रहइ। जहिना अपने नाभिक सुगन्धसँ मृगा नचैए तहिना सुकन्याक मन लोचनक मुहसँ परीक्षाक समाचार सुनैले नचैत रहइ। मुदा दरबज्जो तँ दोसराक नहियेँ छी, सोचि आगू बढ़ल। दुनू गोरे–सुकन्या आ लोचन–केँ देख पक्षधर बाबा बजला-

"लोचन, आइसँ तौं विद्याध्ययनसँ गृहस्ताश्रममे प्रवेश कऽ रहल छह। तँए बाबाक लगौल फुलवाड़ीक सूखल-मौलाएल डारिकेँ कमठौन कऽ खाद-पानिसँ सेवा करिहह। ओइमे नव-नव कलश चलतै जइसँ हँसैत-खेलाइत जिनगी चलतह।"

मुड़ी गोंतने लोचन आँगन आबि पानि पीब पोथी सेरियबैक विचार केलक। पोथीपर पोथी गेंटल देख हाथ कँपए लगलै। सुकन्याक मन कानि उठलै। जहिना कोनो धारक दुनू भित्तापर बैसल यात्रीकेँ होइए तहिना सुकन्याक

मनमे दूरीक भाव उठए लगलै। लोचन सफलताक जिनगीमे पहुँच गेल आ हम? आशा-निराशाक क्षितिजपर सुकन्या लसैक गेल।

सुकन्या लोचनकेँ सीमा धरि अरियातए विदा भेल। गामक सीमा बिला गेलइ। ने लोचन सीमा ठेकानि सकल जे घुमबाक आग्रह करितै आ ने सुकन्या बुझि सकल जे अन्तिम विदाइ दइतै। अजीब गामोक सीमा अछि। एक्को परिवारकेँ गाम मानल जाइए–जेना भोजमे–दसोगाम माला बनि गाम बनि जाइत अछि, जेना दस गम्मा जाति। अरियातने-अरियातने सुकन्या लोचनक घर धरि पहुँच गेल।

पनरह दिन बीतैत-बीतैत अनेको मौगियाही कचहरीमे फैसला लिखा गेल जे 'सुकन्या पक्षधरक घरसँ निकैल अजाति भऽ गेल।' कचहरीक फैसला सुनि सुकन्याक माए-बापक करेज दड़कए लगलैन। कनैत मन बाजए लगलै, मनो ने अछि जे कहियासँ दुनू परिवारमे दोस्ती अछि। सभतुर हमहूँ जाइ छी आ ओहो सभ आबि जाइ छैथ। मुदा आइ की देख रहल छी! जाधैर पिता जीबै छैथ ताधैर ऐ परिवारक हमसभ के? तँए समाजक लोकक जवाब ओ देथिन..।

पिताकेँ गामक लोकक बात कहलकैन। बेटा-पुतोहुक बात सुनि गरैज कऽ पक्षधर बजला- "जइ समाजमे मनुखक खरीद-बिक्री गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए, की ओइ समाजकेँ पंच-तत्त्वक बनल मनुख कहल जा सकै छइ? जँ से नहि तँ हमर कियो मालिक नइ छी। कियो ओंगरी देखौत तँ ओकर ओंगरी काटि लेबइ। आइए दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देख-सुनि अबै छी।"

जखन भाँग पानिमे अलैग गेल तखन पुतोहु बुझलैन जे भाँग पिसा गेल। पोछि-पाछि सिलौटकेँ धोइ बाटीमे रखलैन। दरबज्जापर बैसल पक्षधरक मनमे उठलैन जे नअ बाजि गेल, अखन धरि किए ने कियो आएल? फेर मन उनैट कऽ भाँगपर गेलैन। भाँगपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन जे बिनु भाँग पीनहि तँ ने सभ निशाँए गेल अछि! तखन भाँगक जरूरते की? किछु दिन पहिने धरि सभ गाममे एक-दिना फगुआ होइ छेलै मुदा आब तीन-दिना भऽ गेल। ओना तीन रंगक पतरो आबि गेल अछि। मुदा अपना गाममे तँ एकदिने अखनो धरि होइत आएल अछि आ जाधैर जीब ताधैर होइत रहत। कीर्तन मण्डलीक संग-संग आनो-आन मण्डली पक्षधर ऐठाम पहुँचला। अनगिनित थोपरी बजौनिहार आ अनगिनत गबैयाक समारोह। चीनीमे घोरल भाँग। सभसँ उमेरदार रहितो पक्षधर

भाँग परसनिहारकेँ कहलखिन-

"पहिने नवतुरिया सभकेँ पिआबह। वएह सभ ने बेसी-काल गेबो करतह आ नचबो करतह।"

मुदा एक्कोटा नवतुरिया बाबाक बात नै सुनलक। सबहक यएह कहब रहै जे बाबा गाममे सभसँ श्रेष्ठ छैथ, अनुभवी सेहो छैथ, तँए जँ ओ गोबरखत्तोमे खसता तैयो हम सभ नै छोड़बैन। नवतुरियाक बात सुनि पक्षधरक मनमे उठलैन अखन आँगनमे कहाँ छी दरबज्जापर छी। दस गोरेक बीच छी। तखन के छोट के पैघ? सभ तँ ब्रह्मेक अंश छी। तहूमे एते टुकड़ी एकठाम एकत्रित छी। ..दू गिलास भाँग पीब पक्षधर उठि कऽ ठाढ़ होइत फगुआ शुरू केलैन-

"सदा आनन्द रहे ऐ दुआरे मोहन खेले होरी हो।"

ढोलक, झालि, कठझालि, हरमुनियाँ, मजीरा, खजुरी, डम्फा, गुमगुमा-गुमगुमियाँक संग सैयो जोड़ थोपड़ीक महामिश्रणक धूनक संग कोइली सन मधुर अवाजसँ लऽ कऽ टिटहीक टाँहि धरिक बोल अकासमे पसैर गेल। ओना जमीनो खाली नइ रहल। इग्लिश डान्ससँ लऽ कऽ जानी धरिक नाच आ मेल-फीमेलक जोगीरा जोर पकड़नहि रहए। बजनियाँ सभ अपन-अपन बजो बजबैत आ कुदि-कुदि नचबो करैत।

गोसाँइ डुमैबेर पक्षधर बाबा फेर भाँग बनबौलैन। अपन शक्तिकेँ कमजोर होइत देख सभ कियो दोबरा-दोबरा पीलक। उत्साहो दोबरेलै। पुरनिमाक राति। हँसैत चान। फागुन मास रहने अकासमे केतौ बादल नहि। मुदा तरेगन मलिन भऽ अपन जान-ले झखैत। किएक ने तरेगन अपना जान-ले झखत? आखिर वसन्त-वसन्तीक समागमक दिन छेलै किने।

गामक दछिनबरिया सीमापर समन जरए लगल। समनक धधड़ाकेँ पक्षधर उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ कुदला। बाबाकेँ देखते सभ एका-एकी कूदए लगल।

धधड़ा मिझा गेल। मुदा जाड़क आगि चकचक करिते रहल। समदाउन गबैत सभ-कियो घरमुहाँ भेला।

❍

शब्द संख्या : 2526

बपौती सम्पैत

आसिनक अन्हरिया चौठ। गोटि-पँगरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनौमी-पितृपक्ष साझीए चलि रहल अछि। कियो-कियो बाप-दादा-परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो-दादी-परदादी निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीवे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा ईहो गोटि पँगरे। किछु गोरे ठेकिऔने जे एकादशी-के जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्ष-ले नौमी आ पितृपक्ष-ले एकादशी-के नोतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइए जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन खुअबैए। जेकरा ढढक कहैए आ किछु गोरे मातृपक्ष-ले महिलाकेँ आ पितृपक्ष-ले पुरुखकेँ नोत दऽ सेहो खुअबैए। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष 'मातृनौमी' आ दोसर 'पितृपक्ष'। नौमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि...।

दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खाइक मन भेलइ। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते छल कि पत्नी आबि कहलकै-

"घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि, भनसा बेर भऽ गेल, कखन आनब?"

"अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमैन बनाएब ताबे हम दौगले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबइ।"

गुलटेन हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लइते, मरचूनक दुआरे केनादन लगलै कि थुकैड़ कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौंड़ देलकै, दोसर काज पछुआइत देख गुलटेनक मन आरो घोर-घोर भऽ गेल। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठामक फाट सीने दोसरठाम मसैक जाइ छै तहिना परिवारोक

काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू-मुहेँ नै ससैर रूकि गेलइ। चिन्ताकेँ अँटैकते गुलटेनक मनमे खुशी भेलइ। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवताकेँ होइ छैन ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी? ई दुनियाँ केकरा-ले छइ? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी नइ कि उपभोग करैक...। गुलटेनकेँ देख आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना बाजल-

"तमाकुल खा लएह काका, तखन जइहह।"

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक-

"बौआ, अगुताएल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी-काल नइ अँटकब।"

"एह काका! तोहूँ हरिदम अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नइ रहै छह।"

कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल लइते गुलटेनकेँ रसगर लगलै, सुआद पाबि बाजल-

"बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन! एहेन टिपगर माल! कोन दोकानक छियौ?"

"काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक वेपारी साइकिलपर एक बोझ नेने बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीम रहल। एह! भरि राति ओ वेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला पछाइत एक्केटा तेहेन खिस्सा–रजनी-सजनीक–उठौलक जे ओरेबे ने करइ। जखन डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ- 'आब छोड़ि दियौ, बड़ राति भऽ गेल।' तखन जा कऽ छोड़लक।

भिनसर भने पोखैर-झाँखैर दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपर सँ साइकिल निकालि तमाकुल सेरियाबए लगल। हमहूँ गिलास धोइ चक्कापर रखि एलौं, जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल। कहलिऐ- 'ई की दइ छी?' ओ कहलक- 'हम वेपारी छी कोनो अभियागत नहि। तँए खेनाइक पाइ दइ छी।' आब तोंही कहह काका, ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत? की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पैत छी किने।

एकरा केना आँखिक सोझहामे मेटाइत देखब।"

थूक फेक गुलटेन बाजल- "एहनो कियो बुड़िबक्की करए। पाभैर खेने हएत कि नइ खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छूलह।"

अपन बड़प्पन देख मुस्की दैत भुखना बाजल-

"ऐँह की कहिय काका! ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल- 'से केना हएत। हम कि कोनो भूखल-दूखल छी कि वेपारी छी।' मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐ। तखन ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक- 'जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइए-ले दइ छी।' सएह छी।"

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल-

"बौआ, अखन औगुताएल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।"

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। दोकानपर गेल। गुलटेनकेँ देखते झिंगुर काका कहलखिन-

"अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअ!"

माथ हसोंथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल-

"अखन कटबै-जोकर कहाँ भेल हेन! जखन कानपर केश लटकए लगत तखन ने कटाएब।"

"बिसैर गेलह! काल्हिए ने बाबूक बरखी छिअ। हमरो चच्चा साहैबकेँ छिऐन। दुनू गोरे एक्के दिन ने मरल रहैथ।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेनकेँ धक्-दे मन पड़ल। बाजल-

"हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जँ अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छुटिए जाइत।"

"अखनो किछु नइ भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहेन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोरे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।"

"अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर वेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो

सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब कि ओरियान बात करब आकि ओकरा सभकेँ बजबैले जाएब...।"

"असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बरखी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैत अछि आ कम-सँ-कम एगारह गोरेकेँ खाइयोले दैत अछि। तोरा एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनौमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजी केँ तीर्थेपर बरखी पड़ि गेलैन, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नइ रहलैन। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकेँ खुअबै छहक तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना, ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलैनो तँ अपन महत रखैए किने।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेन दोकानदारकेँ कहलक-

"हे हौ घोघन साहु, झब-दे एक टकाक नून दएह।"

गमछामे नून बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस विदा भेल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदए पसीझ गेलइ। मन पड़लै, बाबू अनका जकाँ नै छला। आगू-पाछूक बात जनै छला। जँ से नहि, तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितैथ। कोनो कि कमाइ-खटाइ नै छला। जँ से नै छला तँ कातिक मासमे ओते खरचा करि कऽ भागवत केना करबै छला। तैपर सँ भोजो-भनडारा करिते छला। हमरे-ले की कम केलैन? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलैन। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नइ होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी! जँ खेते रहैत आ खेती करैक लूरिए नइ रहैत, तँ छुच्छे खेते लऽ कऽ की करितौं। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए कि दाही, अछैते खेते हाट-बजारसँ मोटा उघै छैथ। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि केकरोसँ अधला जीबै छी...। अपन खुशहाल जिनगीपर नजैर अबिते गुलटेनक हृदय आनन्दसँ ओलैड़ गेल। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नहि, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे जेकरा अ आ नै लिखए अबै छै ओ 'मुरुख' अछि? बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मटियो तेल आ चिन्नियों अनै छला। बड़का-बड़का सर्टिफिकेटोबला सभकेँ देखै छिऐन जे दारू पीब लेता आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंगरेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छैथ! तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छला।

खाइ बेरमे आँगनमे नइ रहै छेलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छला। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छला आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बुझि पड़ै छेलैन तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दइ छेलखिन नइ तँ ओते छोड़ि कऽ उठै छला। आ-हा-हा! एहेन बाप होएब की अधला छी। जखन काज करए जाइ छला तँ संगे नेने जाइ छला आ काजक लूरि सिखबै छला। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छेलैन। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नइ ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बाउल उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलैन जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समए होइ छइ। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदैत कऽ सकैए। जेकरा लूरिए ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत..?

अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहिबला गाछीक मचकीपर नजैर गेलइ। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि! बड़क गाछपर सँ बर्ड़ काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला, पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झूलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत..! असकरे कृष्ण-राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करै छला, बौसरियो बजबै छला आ आसो लगबै छला। मुदा अखन तँ देखै छी जे बजा कियो बजबैए, नाच कियो करैए आ गीत कियो गबैए। तेहने ने देखनिहारो अछि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैए तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैए तँ कियो ओकर कानक झूमकाकेँ। गौनिहारक अवाज सुनैए कि ओकर मुँह देखैए..!

नूनक पोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन बाजल-

"बाबूक बरखी काल्हिए छी। बिसैर गेल छेलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी-ले जे चाउर रखने छी, ओकरा निकालि रौदमे पसाइर दियौ। राहैड़ सेहो उलबए पड़त। बेरू-पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ

आनब। दूध तँ आइए पौड़ल जाएत। ओना अम्हौरपर सौंझुको दूध जनैम जाएत।"

पतिक बात सुनि मुनिया बजली-

"एहेन अहाँ बिसराह जे छी से सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत! ने कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाएकेँ खबैर देलिऐन।"

"अच्छा सभ हेतइ। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहैथ जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छैथ आ पारो लगौता।"

कहि, गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना नोत दऽ चोट्टे घुमि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर, माने लूरिगर तेहने बिसराहो। ई सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दूहब, डरबुक-सँ-डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पाँगब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांङ्गिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डाक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटैक नाथब, हर लगाएब इत्यादि काज समाजमे केकरो कऽ दइत। करबो केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पैत बुझैए।

बरखी-भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसैर गेल। अपन दायित्व बुझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लगली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइए तहिना समाजोक लोक आबए लगलैन...।

रवियापर नजैर पड़िते गुलटेन बाजल-

"रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइए-ले छेलौं। भने आबिए गेलह। बहुत दिन जीबह।"

रविया- "किए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी आँगनमे बजली; तब बुझलौं।"

"ठीके बुझलहक। बिसैर गेल छेलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलैन। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नइ हएत।"

"हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।"

"चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुएबैन से नीक हएत?"

"सौंझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। केते दूध पौड़बहक?"

"दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।"

"अदहा मन सँ हेतह?"

"अपना सभमे केते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आकि फल-फलहरी खाइयो चाहत से आनत केतए-सँ।"

"हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो किए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमैन-कदीमा आ बाड़ीमे भँट्टा अछिए। तइले पाइ किए खर्च करबह। औगताइमे अदौरी बनौल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?"

"मन होइए जे बड़-बड़ीक ओरियान करी।"

"तों सनैक गेलह हेन। बड़-बड़ीक घाटि केते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।"

"हँ, से तँ ठीके कहलह।"

"अखन जाइ छिअ। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह, आकि पुजौनिहारो औथुन।"

"अपना सभमे केते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छइ।"

भगिन-पुतोहु दालि दर्ड़ैले अबै छेली। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजैर पड़लैन। मुँह बिजकबैत बजली-

"बुढ़ा, अपनो मरता आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।"

कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़ली।

गोसाँइ डुमिते भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भाइक माथपर चाउर-दालिक मोटरी। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आँगन पहुँच सिंहेसरी कानल नहि, माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइ छइ। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खुट्टापर लगहैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत..?

ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक-

"अँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपए नइए जे काल्हि बाबाक बरखी छिऐन आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?"

तैबीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेल। माथपर मोटरी रहबे करै तखने मुनिया सिंगहेसरीकेँ कहलक-

"दाइ, हमर कोन दोख, मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहेन बिसराह छथुन जे बिसैर गेलखुन। आइए बुझलौं।"

माइक जवाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नइ बुझि माएकेँ अगुअबैत बाजल-

"जाबे बाबा जीबै छला ताबे केते मानै छला। आब जखन ओ नै छैथ तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबैन। एगारहो गोरेक तँ ओरियान करि कऽ अबितौं।"

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै-काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइ छइ। मुदा हम तँ बिसैर गेल छेलौं। ..सामंजस करैत गुलटेन बाजल-

"पाहुन किए ने एलखुन?"

सिंहेसरी बाजल-

"से तूँ नइ बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।"

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजली-

“ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिए जेहने ई तेहने उ। अहूठीम तँ दहीक ओरियान भाइए रहल हेन। तइले तोरा किए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइयेक छिऐ, आकि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-वौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोइ गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।”

पत्नी आ बेटीकेँ शान्त होइत देख गुलटेन मुस्की दैत बाजल-

“गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। केते भारी काजे अछि।”

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लगि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने बाजल-

“बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?”

हँसैत सिंहेसरी बाजल-

“बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन कटैए।”

भोजमे खूब जश गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एमहर-दौड़ तँ ओमहर-ताकमे दुनू परानी लगल रहल। मुनियाक छाती केराक भालैर जकाँ कँपैत रहलैन। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहली। जेना भुख-पियास केतौ पड़ा गेल। मुदा भोजक जश दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक-

“बाबू, सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।”

खेला-पीला पछाइत गुलटेनक मनमे सिनेमाक रील जकाँ सभ काज नाचए लगल- ठीके ने लोक कहै छथिन जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छेलैन तहिना ने हेतैन। आ-हा-हा! ओंगरी पकैड़-पकैड़ घर बन्हैक लूरि सिखौलैन! जीबले बारहो मासक काज सिखौलैन..!

मने-मन गुलटेन पिताकेँ स्मरण करैत गोड़ लगलक।

❍

शब्द संख्या : 2350

डंका

चुड़लाइ, तिलकुट आ चूड़ा-मुरही गमछाक एक भागमे बान्हि दोसर भाग दहिना-हाथे पकैड़ लटकौने जीवानन्द उत्तर-मुहेँक रस्ता डेग झाड़ने जाइत रहए।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया अखड़े-चौकीपर बाँहिक सोंगरक कान्हपर माथ अड़कौने भैयाकाका रस्ते दिस देखैत रहैथ कि नजैर पड़िते जीवानन्दकेँ किछु पुछए चाहलैन, मुदा मन रोकए लगलैन। सोगाएल मन। मुदा जीवानन्दक आकर्षित रूप मनकेँ धिक्कारलकैन जे सभ दिन एकठाम बैस नीक-बेजाए, गप-सप्प करैत एलौं। आइ तँ सहजे तिलासंक्रान्ति सन पाबैन छी। तखन जँ नै टोकब तँ केहेन हएत? गंभीर मन मुदा मुस्की दैत भैयाकाका बजला-

“केतए एते हड़बड़ाएल जाइ छह, जीवानन्द?”

भैया-कक्काक टोकबकेँ अनठा आगू बढ़ि जाएब जीवानन्द उचित नइ बुझि रस्तेपर ठाढ़ भऽ कहलकैन-

“की कहौं काका! ऐबेरक पाबैन रीब-रीबेमे रहि गेल!”

जीवानन्दक परेशानी मिलल बात सुनि भैया-कक्काक मनमे गुदगुदी लगलैन। जहिना आत्मा खुट्टा आकि रस्सी सदृश ब्रह्मसँ मिलैत तहिना भैया-कक्काक मन जीवानन्दक बेथा-कथा सुनैले सुरसुरेलैन। चौअन्नियाँ मुस्की दैत भैयाकाका पुछलखिन-

“तिलासंक्रान्ति सन खाइ-पीबैबला पाबैन, तखन तोरा केना रीब-रीबेमे जा रहल छह?”

भैया-कक्काक बातमे जीवानन्द ओझरा गेल। मनमे उपकलै नीक काज भेने खुशीसँ हँसी लगैए मुदा अधला काज भेने की हँसी नइ लगै छइ। रस्तापर

ठाढ़ भेल जीवानन्दकेँ किछु फुरबे ने करइ। जहिना खेतमे हाल कम रहने अँकुर नइ जनमैत तहिना जीवानन्दोकेँ भेल। असमंजसमे पड़ल मनमे उठलै जे भोरसँ अखन धरिक अपने बात सुना दिऐन। जँ किछु कहबैन नहि, तँ मनमे हेतैन जे कोनो उकडू काज जीवानन्द केने अछि। ..मुस्कियाइत जीवानन्द कहए लगलैन-

“काका, की पुछै छी। चारि बजे भोरे पोखैरक घाट परहक पी-पाह सुनि निन्न टुटि गेल। उठैक विचार करिते रही कि तखने पत्नी आबि कऽ कहलैन जे ‘रतुपारवाली दीदीकेँ भरिसक दरद उपैक गेलैन। पूर मासो छिऐन। भरिसक वएह कुहरै छैथ।’ सुनिते मन खुशी भऽ गेल जे खूब पाबैन हएत! मुदा अपन दियाद नइ रहने असथिर भेलौं। उठि कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जनानी सभ घेरने। मुदा हमरा देखते सिबावाली काकी कहलैन जे ‘बौआ, गामपर नै सम्हरतह, डाकडर लग लऽ जाहक।’ डाक्टरक नाओं सुनि लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे गाए-महींस जकाँ देहो-टाँग छिड़ियौने आ अर्रऽ-बोंऽऽऽ करैत...। एक्को क्षण बिलम करब उचित नइ बुझि खाटक ओरियान केलौं आ तमोरिया लए गेलौं। ..केकर मुँह देख कऽ उठलौं जे अखन धरि दू कप चाहेटा पीने छी। दतमैनो पछुआएले अछि!”

“की भेलैन?”

“बेटा।”

“बेसी तबाही ने तँ भेलह?”

“ऐंह की कहूँ काका, जनीजाति तेहेन भौनी होइए जे एकबर हेतै आ सातबर भभटपन करत! जखन खाटपर चढ़बैत रहिऐन तखन तेना ने हाथ- पएर कठुआ लेलैन जे बुझि पड़ल दाँती लगि गेलैन। मुदा मुँहमे बोल रहबे करैन। पकैड़-पकैड़ हाथ-पएर सेरियौलिऐन। मन तेहेन लहैर गेल जे हुअए दू-ऐँड़ ऊपरोसँ लगा दिऐन। मुदा फेर भेल जे अधिक दरद भेने लोकक बुधियो बाइत जाए छइ। हो-ने-हो कहीं सएह भऽ गेल होइन।”

मुस्की दैत भैयाकाका-

“डाक्टर लग ने तँ बेसी भँगठी लगलह?”

“नहि। संयोग नीक रहल जे एकमुहरी काज सुढ़ियाइत गेल। साते बजे निकास भऽ गेलैन। मुदा तेते ने काजक ओझरी रहए जे सम्हारैत-सम्हारैत डेढ़

बजे विदा भेलौं।”

“पबनौट केतए लऽ कऽ जाइ छह?”

“तीन पुश्तसँ यूनूसक परिवारसँ आवाजाही अछि। आइ भोरे हुनकर छोटकी बेटी एक मुजेला तरकारी दऽ गेल छेलए। सभ साल दइ छैथ। अपने कारोबार छैन। ओना, पाबैन सभमे सेहो पबनौट दइ छैथ। तहिना हमहूँ दइ छिऐन। सएह छी। आन बेर आठे-नअ बजे दऽ अबै छेलिऐन। मुदा आइ तँ दोसरे भाँजमे पड़ि गेल छेलौं।”

“हमर तिल-चाउर कखन खेबह, आकि अपने ताले-बेताल रहबह?”

“की कहूँ काका, मरैयोक पलखैत नइए। निचेन भऽ कऽ आएब। अखन ओहो बच्चा सभ बाट तकैत हएत। सभ भोरे नहाएल आ हम अखैन तक दतमैनो नै केलौं हेन।”

“अच्छा जाह। बाट तकबह!”

कहि भैयाकाका चुप भऽ गेला।

जीवानन्द फुसफुसाइत विदा भेल-

“तेहेन माया-जालक झमेल अछि जे विचारेकेँ घुसका-फुसका दैत अछि, जइसँ समैक झुट्टा बनि जाइ छी! काजक अपन गति छइ। समैक गतिसँ मिलि कऽ चलैले ओकरा केना छोड़ब?”

रस्तेपर जीवानन्दकेँ यूनूसक कोरैला बेटा आ छोटकी बेटी देखलक। देखते दुनू दुआरपर सँ आँगन जाए माएकेँ कहलक-

“जीवानन्द काका अबै छथिन! बड़ीटा मोटरी हाथमे छैन!”

हाटक कोबी सेरियौनाइ छोड़ि यूनूसक पत्नी अँगनाक मुहथैरपर आबि ठार भेली। तैबीच भाए-बहिनकेँ कहलक-

“बड़का लाइ हम लेबौ।”

बेटाक बात सुनि माए किछु बाजल नहि। मुस्कियाइत रहली। जीवानन्दकेँ पहुँचते सुनबैत बेटीकेँ कहलखिन-

“काका एलखुन, प्लास्टिकबला ओछाइन बैसैले ओछा दहुन।”

हाथक गमछा दैत जीवानन्द बाजल- “नै दाइ, अखन नै बैसब। झब-दे गमछा अजबारि कऽ लाबह।”

जीवानन्दकें गेलोपर भैया-कक्काक नजैर जीवानन्देक बात ‘मरैयोक पलखैत नै अछि’ पर नचैत रहैन। पाबैनो रहने दतमैन करैक पलखैत जेकरा नइ छै, ओकरा-ले पाबैने की? मन आगू बढ़लैन, ई दुनियाँ विचित्र रंगमंच छी। जेहने कलाकार तेहने रंगमंच। सुपात्र-ले जँ इन्द्रासन सदृश अछि तँ कुपात्र-ले गन्ध करैत नर्क जकाँ सेहो अछि, वीर-ले वीरभूमि, तपस्वी-ले तपोभूमि, साधक-ले साधना भूमि तँ चोर-डकैत-ले सोनाक चिड़इ। मधु चढ़ौनिहार-ले मधुशाला तँ इज्जतखोर-ले वेश्यालय सेहो छी! पार्ट खेलेनिहार सेहो अजीब अछि। केतौ पुरुख महिला बनि कला प्रदर्शित करैए तँ केतौ महिला पुरुख बनि सेहो करैए। मुदा तँए कि पुरुख पुरुख बनि आ महिला महिला बनि अपन पार्ट अदा नै करै छैथ? जरूर करै छैथ! मन आगू बढ़ि रामायण दिस बढ़लैन। हँसी लगलैन। जे मर्यादा पुरुषोत्तम राम दसमुहाँ रावणकें मारलैन, नाश केलैन वएह वोन जाइकाल कौशल्याक सम्बन्धमे की केलैन! माइक सेवा बेटाक धर्म नइ छी? पितासँ कम माए होइत?

..मन ओझराए लगलैन। मुदा कनी घुसैक कृष्ण दिस चलि गेलैन। कृष्णपर जाइते हँसी लगलैन। ठोर पटपटेलैन-

“नान्हि-नान्हिटा छौड़ा बड़का-बड़का जहलक छहरदेबाली तोड़ि बहरा जाइत अछि, मुदा जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकें नचौनिहार छैथ, हुनका बुते उक्खैरक बन्हन नै टुटलैन!”

छगुन्तासँ भैया-कक्काक नजैर निच्चाँ हुअ लगलैन मुदा लगले बदैल गेलैन। नजैर बदैलते जोरसँ हँसी लगलैन। मनमे एलैन शिवजी। हद केलैन ओहो, शिवसँ शिवानियोँ बनैमे देरी नै लगलैन!

फेर घुमि कऽ भैया-कक्काक मन जीवानन्देपर चलि एलैन। जाधैर जीवानन्द सन-सन बेटा समाजमे नै जन्म लेत ताधैर समाजक उन्नति कागतपर बनौल फूल-फलक गाछ सदृश रहत। जइ समाजक लोक पाबैनक पाछू पनरह-पनरह दिन पहिनहिसँ लागल रहैए। तहूमे एकटा नहि, केतेको पाबैन सालक भीतर अछि! जेकर खर्चाक बाट तँ चौड़गर देखै छिऐ मुदा आमदनीक बाटपर

नजरियो ने गेलै हेन। कियो चारि बजे भोरे स्नान कऽ लाइ-मुरही खेलक तँ कियो चारि बजे बेर झूकैत दतमैन करत। की चारि बजे भोरक सुरूज, चारि बजे अपराह्नोमे रहै छैथ? सुरूज तँ महाविशाल छैथ। तखन मौसम किएक बदलैए? की तइ सदृश मनुखक नइ अछि?

रस्ते कातक बँसबिटीमे दतमैन तोड़ि, रस्तेसँ दतमैन करैत जीवानन्द आँगन आबि बाल्टीन-लोटा लऽ सोझे कलपर पहुँचल। हाँइ-हाँइ कुड़ुर कऽ अदहे-छिदहे नहा आँगन आबि पीढ़ीपर बैस पत्नीकें कहलक-

“पहिने लाइ-मुरही आ तिलबा नेने आउ।”

“आब कल्लौ खाएब आकि भुज्जा-भरी खाएब।”

“हद करै छी अहूँ, भोरुका स्नान अखन केलौं आ खाइबेरमे साँझ पड़ि गेल। सभ सखी सासुर गेल हमरा लेखे चैत पड़ि गेल! ठीके लोक कहै छइ। भिनसरसँ बारह बजे धरि लोक जलखै बेर बुझैए आ बारह बजेसँ पहिल साँझ धरि कलौक समए। जइ समैक काज पछुआ गेल पहिने ओकरा ने पुराएब। जँ से नै करब तँ दुनियाँक संग केना चलि सकब?”

पतिक बात सुनि सुधा भरि थारी चूड़ा-मुरही आ लाइक संग-संग तरुओ-तरकारी घरसँ आनि आगूमे रखि ठाढ़ भऽ गेली। भरल थारी देख मुस्कियाइत जीवानन्द बाजल-

“एते किए अनलौं। वीधे पुरबैक अछि। जहिना ‘नहि पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलैए तहिना लाइ-मुरहीक वीधे पुराएब। मुदा खिचड़ियो तँ लइये भऽ गेल हएत?”

पतिक बात कटैत सुधा बजली-

“नइ, जखन अबैक चाल-चूल पेलौं तखन खिचड़ी बनेलौं। धिपले अछि।”

“तखन तरुआ किए पानि भेल अछि?”

“तरकारी आ तरुआ सबेरे बनेलौं, तँए सेराए गेल अछि।”

दू-तीन फँक्का फकिते जीवानन्दकें तरास जोर केलक। गिलास भरि पानि पीब निच्चाँमे रखिते रहए कि सुधा पुछलखिन-

“तिलासंक्रान्तिमे सभ अपन-अपन बहिन ऐठाम पबनौट लऽ कऽ जाइए, अहाँ छोड़ि देबइ?”

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन थारीसँ हटि बहिनपर पहुँच गेल। सासुर बसैसँ पहिलुका बहिनपर नजैर पड़िते मन पड़लै, गठुलाक टाटपर सँ केना तिलकोरक पात तोड़ि आनि माएकें तड़ैले दइ छल। जहन भानस करै-जोकर भेल तँ केते सिनेहसँ तरुआ तरि बहिन खुअबै छल। ..उझूक मारि-मारि पत्नीक बात मनमे उठए लगलै- जँ एक्के दिन अपनो बेटाक बिआह आ साढ़ूओक बेटाकें बिआह होइ, तँ की करैक चाही? विचारमे अबिते अपना दिस तकलक। पाबैनक दिन छी, बेर झूकि गेल मुदा नहाइयोक छुट्टी नइ भेल। अखनो धरि चैन नइ भेलौं। भैया-कक्काक तिल-चाउर पछुआएले छैन। की हमरा हिस्सामे पैघ लोक लग बैस एक्को घन्टा बुझै-सुझैले नै अछि? सदिखन काजक टिकटिकिया कपारपर चढ़ले रहैए! ..जीवानन्दक मन घुमि कऽ भरदुतियापर पहुँचल। ठाँउ कऽ अरिपन बना, पीढ़ी धोइ बहिन केहेन आसन बनबैए। तैपर बैस जोड़ल दुनू हाथ धोइ सिनुर-पिठार लगा फूल-पान रखि अराधना करैए! की ओइ बहिनकें बिसैर जाएब? कथमपि नहि। मुदा बहिनो की हमरासँ अधला जिनगी जीबैए। सभ तरहें ओ नीक अछि। भागिन कौलेजमे पढ़ैए। केहेन ठाठसँ भगिनियोंक बिआह केलक। अपन सभ लूरि सिखा माए अपने जकाँ बना देने छइ। कोनो चीजक कमी छइ। ओ कि हमरे पबनौटक भरोसे हएत? जीवानन्दक मनमे खुशी एलइ। मुस्की दैत बाजल-

“आइ तँ सभठाम पाबैन छीहे। कोनो कि दुइर होइबला वौस अछि। काल्हि भोरे गेलासँ एते तँ हएत जे सबहक एक-दिना तरुआ हमरा दू-दिना हएत।”

बाजि जीवानन्द हाँइ-हाँइ खा कऽ भैयाकाका ऐठाम विदा भेल।

अखन धरि भैयाकाका आँखि बन्न कऽ चौकीपर विचारमे डुमले छला। फरिक्केसँ जीवानन्द टोकलकैन-

“गोड़ लगै छी काका, तिल-चाउर खाइले एलौं हेन।”

जीवानन्दक बोली सुनि भैयाकाका आँखि खोलि असिरवाद दैत बजला-

“बहुत दिन जीवह जीवानन्द। हम तँ लटैक गेलियह। देहसँ कम्मो

लटकलौं मुदा मनसँ बेसी लटैक गेलौं। बुझि पड़ैए जे लहास ढोइ छी। अनेरे अनकर हिस्सा अन-पानि दुइर करै छिऐ। मुदा तरे-तर गणेशजी जकाँ पेट फुलल जाइए। भने तूँ आबिए गेलह। होइए जे टन-दे परान तियागि दी। मुदा पेटक जे औंकरी सभ अछि ओ जाधैर नै निकलत ताधैर परानो केना छुटत?”

हँसैत जीवानन्द कहलकैन-

“औंकरी तँ लोक छठिमे घाटपर खाइए। अहाँ आइयो खुआएब तँ खुआ दिअ।”

भैयाकाका- “जहिना जनमौटी बच्चाक मल मृत्युकाल निकलैए तहिना छोटका बाबाक खुऔल औंकरी तोरा दऽ दइ छिअ। अपन गामक चारिम बसान छी। शुरूमे दू परिवार धारक मुँह बदलने आबि कऽ बसल। खेती शुरू भेल। जानवरक उपद्रवक संग-संग मनुखोक उपद्रव शुरू भेल। अपन रच्छा-ले उपजौनिहार तैयार भेल। मुदा सोलहन्नी रच्छा तैयो नै भऽ सकल। पानिक सुविधा दुआरे गाम धुधुआ कऽ बढ़ल। जानवरो आ मनुखोक उपद्रवसँ बँचैले बलक जरूरत भेल। गाम-गाममे अखड़ाहा बनए लगल। लोक कुश्ती लड़ि अपन शक्तिक परिचय दिअ लगल। गामे-गाम डंको पड़ए लगलै। तहिए-सँ तिलासंक्रान्तिक दिन अपनो गाममे डंका शुरू भेल।”

भैयाकाका बजिते रहैथ कि जीवानन्दक मुहसँ निकलल-

“काका, अपन बात कनी रोकि कऽ राखू। हम बिसैर जाएब।”

मुस्की दैत भैयाकाका कहलखिन-

“बाजह?”

जीवानन्द बाजल-

“पाबैनक दिन रहने मन छनगल रहए। तमोरियामे इलाज शुरू होइते रतुपारवाली भौजीकें खलास भऽ किछु सुढ़ियाएल देख ड्योढ़वाली-काकीकें गाम पठा देलिऐन। मन खुशी रहबे करैन। होइन जे के पहिने भेँट हएत जेकरा सोझहामे पेटक गुदगुदी बोकैर दिऐ। संयोगो नीक रहलैन। मदनावालीकें आँगनसँ मुढ़ियारी दैत देखलखिन। छुतका दुआरे हाँइ-हाँइ अँगनेक चूल्हिपर लोहियामे तरकारी तड़ै छेली। सोझहामे देख ड्योढ़वाली-काकी ससैर कऽ आँगन बढ़ली।

नजैर पड़िते मदनावाली भौजी आग्रह करैत कहलकैन-

'एत्तै आबथु काकी।' बिना पएर-हाथ धोनहि चूल्हिक पाछूमे बैस गेली। तीनसल्ला अरूआक तरुआ बढ़बैत कहलकैन- 'काकी कनी नून देख लेथुन।' दुनू गोरे चूल्हिए लग बैस खाए लगली।"

जीवानन्दक बात सुनि ठहाका दैत भैयाकाका बजला- "अच्छा, तोहर बात भऽ गेलह। आगूक सुनह। केवल अपने गामटा मे नहि, आनो-आनो गाममे डंका होइ छेलइ। तीन बजे भोरेसँ ढोलिया गाछपर चढ़ि वा बड़की पोखैरक महारपर सँ ढोल बजबए लगइ। बेरुका समैमे डंका होइ छेलइ। किछु दिनक पछाइत रूपैआक प्रवेश भेने डंका दंगलमे बदैल गेल।"

बिच्चेमे जीवानन्द बाजल- "दू साल पहिने तक तँ होइ छेलैए।"

जीवानन्दक बात सुनि कनीकाल गुम्म रहि भैयाकाका कहए लगलखिन-

"जाधैर मालिककेँ[2] मालगुजारीए धरि होइ ताधैर गाम शान्त छेलइ। मुदा जखन मालगुजारी तरे लोकक खेत निलाम हुअ लगलै तखन ओ पएर पसारए लगल। महाजनी सेहो करए लगल। छपरिया सिपाहीक आगमन गाममे भेल। पहिने तँ ओ कचहरियेक हातामे अखड़ाहा खुनि लड़इ। मुदा किछु दिनक पछाइत गामक डंका अपना अखड़ाहापर लऽ गेल। साले-साल डंका करबए लगल। एकाएकी परोपट्टाक खलीफा पीठ देखबए लगल। अपन इज्जत बँचा हम मकरक रविकेँ डंका करबैत रहलौं। मुदा ओ सभ[3] डंकामे बलउमकी करए लगल। साले-साल झंझट हुअ लगलै।"

भैया-कक्काक बात सुनि जीवानन्दक आँखि भरि गेल। जीवानन्दक भरल आँखि देख भैयाकाका आगू बजला-

"जाधैर छोटका बाबा छला ताधैर कोनो गम नै छेलए। ओना समैयो करोट लेलक। समैकेँ दहिन होइते शक्ति बढ़ए लगल। तिला-संक्रान्तिसँ अढ़ाइ मास पहिने मन बेकाबू भऽ गेल। पुरने अखड़ाहाकेँ छील-छालि खुनलौं। लपटनिहार सभ संग दिअ लगल। मालिकक खलीफाकेँ माटि पठा कहलिऐ जे

[2] जमीन्दारकेँ
[3] छपरिया

जँ एक माइक दूध पीने हुअए तँ कचहरीक हातासँ बाहर आबि जेतए ओकरा फरियबैक होइ, फरिया लइत। देशक हवा देख बुझि पड़ल जे सभ जागल अछि, केवल हमहींटा मुरदा भेल छी।"

जीवानन्द बिच्चेमे टोकलकैन-

"तखन की भेल?"

भैयाकाका कहए लगलखिन-

"ओहो लक्ष्मण रेखा माने सरकारी हाता छोड़ि बाहर अबैक मानि लेलक। डंका भेल मुदा बाह रे संतोष ढोलिया। ओइ दिनक ओकरो हाथकेँ[4] धैनवाद दी जे जहिना कुरुक्षेत्रमे कृष्णक शंखक अवाज रहैन तइसँ मिसियो भरि कम ढोलकक अवाज नहि। कहैले तँ अधिक गामेक देखनिहार रहैथ, कुश्ती देखनिहार, रहैथ मुदा संख्या कम रहइ। तहूमे ओहन देखनिहार बेसी रहए जे ओइ खलीफाक पीठि ठोकैत। मुदा नजैर पड़िते देख लेलिऐ जे मुँहक ठोर कारी सियाह छइ। मुदा जहिना आगिमे घी देलासँ आगि उठैत तहिना मनमे उत्साह उठल। लंगोटो नै पहिरए लगलौं, धोतीए-क ढट्ठाकेँ बरहा जकाँ बाँटि कसि कऽ बान्हि लेलौं। एमहर ढोलपर संतोष अवाज दिअ लगल- 'चट-धा, गिड़-धा, चट्-धा गिर-धा...।"

'अवाज सुनि कूदि कऽ अखड़ाहापर गेलौं। मनमे उठल जे अनेरे हाथ की मिलाएब। बाँहि पकैड़ लेलिऐ!"

ढोलिया हाथ बदललक- 'ढाक्-ढिना, ढाक-ढिना, ढाक-ढिना..।' बजबए लगल। ढोलक अवाज तँ दहिन रहए मुदा देखनिहारक अवाज वाम भऽ गेल। फेर ढोलिया हाथ बदललक-

'चट्-गिड़-धा, चट-गिड़ धा, चट-गिर धा..!" हमरो साहस बढ़ल। भय मनसँ निकैल गेल। मुदा माटिपर चलि गेलौं। माटिपर जाइते संतोष फेर हाथ बदललक, मेही अवाजमे बजबए लगल-

'धाक्-धिना, तिरकट-तिना...। धाक्-धिना, तिरकट-तिना...।' माटि परहक दाउसँ ऊपर भेलौं। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। देखनिहारक आँखि सेहो

[4] बजबैक

बदलल। ऊपर होइते ढोलिया मोट अवाज आ भौड़ी अवाजमे बजबए लगल-

'चटाक-चट-धा, चटाक-चट-धाऽ ऽ।'

अवाजेक संग ओकरा उठा कऽ पटैक देलिऐ। मुदा पीठ गरे खसल। माटिपर खसिते ताल बदललक-

'धिक-धिना, धिक-धिनाऽ ऽ ऽ।'

अवाज सुनि धाँइ-दे चित केलौं। चित्त करिते ढोलसँ अवाज निकलए लगल-

'धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़..!'

भैया-कक्काक बात सुनि बिच्चेमे जीवानन्द बाजल-

"काका, अहाँ एहेन चैनक समुद्रमे पहुँच गेल छी जे मगन भऽ जीबैत हएब?"

'मगन' सुनि भैया-कक्काक हृदए बाढ़िसँ उमड़ल गंगा जकाँ जे अपन घर छोड़ि गाछी-बिरछी, खेत-पथारमे पहुँच पवित्र करए लगैत, तहिना भऽ गेलैन। विह्वल होइत भैयाकाका बजला-

"बौआ, तोरा देख हृदए शान्तसँ प्रशान्त भऽ जाइत अछि आब तँ तोरे सभपर छहरो-महर हएत आ दारो-मदार अछि। मुदा हवाक गन्दगी तेना ने बिहाड़िमे पसैर गेल जे एक्को क्षण जीबैक मन नै होइए। लीला सभ जे देखै छी तँ शूल जकाँ सदिखन हृदैकेँ बेधैत रहैए। आजुक पीढ़ी जीवनक रस्तासँ एते दूर हटि रहल अछि जे मनुखक औरुदा साए बर्खसँ घटि कुत्ताक औरुदा–बारह बर्ख–मे बदलल जा रहल अछि! दुख एतबे नइ होइए, जे औरुदेटा घटि रहल छै, मनुखक वृत्तियो टुटि-टुटि ओम्हरे जा रहल छइ। जइ रूपक बेवहार भऽ रहल छै ओइ सभसँ आगम बुझि पड़ैए जे माए-बाप, भाए- बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार ऐ रूपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना-भूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य...।"

❍

शब्द संख्या : 2401

संगी

बालिग-नबालिगक सीमापर पहुँचल सुशील सतरह बर्ख सात मास पार कऽ चुकल। पाँच मासक उपरान्त बालिग भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि किलासक आशासँ समैपर कौलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कौलेजक हातामे पहुँचते घन्टी बजल। वर्गमे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घन्टी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घन्टी पढ़ाइ नै देख कियो खुशीसँ समए बितबैत तँ कियो बन्न कोठरीमे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए। ओइमे सँ एक सुशीलो।

कनैत मने सुशील किलासक कोठरीसँ निकैल डेरा दिस विदा भेल। मनमे एलै, की हमरा सबहक जिनगी पोखैरक पानि जकाँ चारूभरसँ घेराएल अछि वा पहाड़सँ निकलैत नदी जकाँ समुद्र दिस बढ़ैए?

डेरा एलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत्त सुशील किताब-कॉपी रैकपर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पैरक चप्पल खोलनहि चौकीपर ओंघरा गेल। जेना मन काबुए-मे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घन्टीक पढ़ाइ किए ने भेल? नजैर दौड़ौलक तँ देखलक जे ओइ विषयक तँ शिक्षके नइ छैथ तँ पढ़ैबतैथ के? मनमे हँसी उपकलै, मुदा फेर मन घुमलै। बिनु शिक्षकक शिक्षण-संस्था केना चलि सकैए। की एकरा प्राइवेट संस्थाक बाट खोलब नै कहबै? की सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था तँ ने छी! मन घुसैक दोसर घन्टीक विषयपर पहुँचलै। एगारह साए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छैथ। तहूमे जहियासँ इन्चार्ज ओ भेला तहियासँ किलासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रूम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैसए लगला। जहिना ईंटाक देवाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नव वेतनक हिसाब दूरी बनौने। अधखिलल फूल जकाँ, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने

फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ल। मनमे उठलै मधु दइबला माछीकें विधाता ओहन डंक किए देलखिन? मुदा मन तेसर घन्टीक विषयपर गेलइ। तीन शिक्षक, तखन किए ने पढ़ाइ भेल। ई तँ ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकें बहुत अधिक कठिनाइ हेतइ। प्रोफेसरपर नजैर पड़िते देखलक जे के एहेन वेपारी हएत जे समए पाबि अपन सौदाकें महग करि कऽ नै बेचत। एहेन काज तँ वएह वेपारी कऽ सकैए जेकर मन वैरागी होइ। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होइ। जहिना जीरो डिग्री अक्षांससँ सुरूज मकर रेखा दिस बढ़ैत तँ कर्क रेखा दिस विपरीत समए हुअ लगैत, तहिना तँ ने भऽ रहल छइ? एक दिस घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसँ महग! जहिना गरीबक घरसँ सोनाकें दुश्मनी छै तहिना की शिक्षोक भेल जा रहल छइ? मन आगू बढ़ि चारिम घन्टीपर पहुँचलै। तीन शिक्षक तँ ओहू विषयक छैथ। तखन किएक ने पढ़ाइ भेल? एक गोरे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लगल छैथ मुदा तैयो तँ दू गोरे छैथे। एक गोरे तेरहम दिन रिटायर करता! मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समए किछु दिन लोक दुनियासँ कारोबार समेट घरक ओछाइन धड़ैए तहिना तँ हुनको धड़क चाहिऐन। सोगेसँ ने रोग होइए। तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा अदहा भऽ जेतैन। समए तँ अहिना जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नै एने बितलैन, रहतैन। तँए सोग होएब अनिवार्य आ काज नै करब आवश्यक छैन्हे। मुदा तेसर तँ ऐ सभसँ अलग छैथ। ओ किए ने एला? ..नजैर दौगैबते सुशील देखलक जे ओ तँ सप्ताहमे एक दिन आबि छबो दिनक हाजरी बनबै छैथ। शनि तँ काल्हि छिऐ आइ केना अबितैथ? एते मनमे अबिते सुशीलक आँखि झलफलाए लगल। मन खलियाएल बुझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूँगी बदैलते पानि पीऐक मन भेलइ। कोठरीसँ निकैल कलपर हाथ-पएर-मुँह धोइले गेल। पानि पिबते मन हल्लुक बुझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकें हर जोतब भरिगर बुझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक वोनाएल रूप देखलक। कौलेजकें बीचमे देख नजैर सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघरबला स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकैल अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जा मिलैए तहिना ने टटघरोक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अबिते गाछसँ गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकें छिटकैत देखलक। ई

लुत्तीक आगि तँ कोसक-कोस सूखल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फूलल-फड़ल गाछकें सेहो जरा दैत अछि..!

जहिना सघन वोनमे रस्ताक ठेकान नइ रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलइ। सतरह बर्खसँ ऊपर, अठारहमक बीच। अठारह बर्ख पुरलापर चेतन भऽ जाएब। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियाँकें अंगीकार करब, आकि देख कऽ छोड़ि देब? स्कूल-कौलेजक पढ़ाइक तँ यएह गति अछि। जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि विशाल अट्टालिका बनैए तहिना ने कनी-कनी सीख बाल चेतनाकें पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तँ अपने केने हएत। मन शान्त भेलइ। नजैर देलक गामक ओइ बच्चापर जे माइक मुहसँ 'लुक्खी' सीखैए आ स्कूलमे प्रवेश करिते 'गिलहरी'सँ भेँट भऽ जाइ छइ! की हमर मातृभाषा गामो धरि नै अछि? की हिमालय पहाड़सँ गंगा कूदि-कूदि रस्ता टपि समुद्रमे पहुँचैए आकि नीच-ऊँचक रस्ता टपैत समुद्रमे पहुँचैए। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। की बच्चाकें कर्मरूपी माएसँ सीख ज्ञान रूपी गुरुसँ मिलि पबैए। जँ से नहि, तँ माए-बाप गुरु केना..?

गामक स्कूलसँ सुशीलक नजैर हटि मिडिल स्कूल आ हाइ-स्कूलपर पहुँचलै। केतौ हाइ-स्कूलसँ किलास काटि मिडिल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तँ केतौ कौलेजक किलास हाइ-स्कूलमे। मनमे उठलै- जहिना किलास तँ कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत अछि? पढ़निहार तँ विद्यालय पैदा कऽ दैत अछि मुदा पढ़ौनिहार केना...।

आगू बढ़ैत सुशीलक मन कौलेजमे नै अँटैक विश्वविद्यालय पहुँच गेल। मनमे उठलै जिनगीक पाँचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यकता शिक्षा छी। ओना शिक्षण संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर पोथी उलटा प्रश्नक जवाब अपन परीक्षाक काँपीमे लिखैए तँ किओ पढ़ाइक अभावमे प्रश्नपत्रो ठीकसँ नइ बुझि पबैए। की ऐ दौड़मे के आगू बढ़त? किओ मार्कसीटे कीनि लैत अछि। की शिक्षा सन समस्याकें बेदरा-बुदरीक खेतमे बनौल गरदा-गुरदीक घर-आँगन छी? चिन्तासँ चिन्तित सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघराएले रहल। चिन्ताक वनमे चिन्तनक गाछ केतौ देखबे ने करए जइसँ आशाक फल देखैत। सूतल शरीर आरो सुति रहल।

कौलेजसँ आबि वसन्ती कोठरीमे किताब-कॉपी रखि सोझे माए लग पहुँचल। जलखैक छिपली वसन्तीक आगूमे बढ़बैत माए पुछलखिन-

"बुच्ची, उदास किए छह?"

अपनाकें छिपबैत वसन्ती बाजल-

"नहि, उदास कहाँ छी।"

वसन्ती अपन वसन्ती-बहारकें छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसबिसाइत रहैए तहिना मनक रोग वसन्तीकें बिसबिसाइत रहइ। मनमे नचैत रहै कौलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी...।

सुशील आ वसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नै हेबाक सोगसँ सोगाएल वसन्ती माएसँ आगू गप्प नै बढ़ा बिस्कुट खा चाह पीब चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओंघरा गेल। सिरमापर माथ देने दुनू बाँहि समेट कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस देखए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि, की ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नै बनैए जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए? आजुक शिक्षाक रूप एहेन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कौलेजमे पढ़ाइ नै भऽ रहल अछि। तैपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा-ले बाप-माए अपन जिनगी तोड़ि, खूनक घोंट पीब कऽ जीवन-बसर करै छैथ। जेकर परिणाम की भेटै छैन तँ जेहो अपन बनौल आकि पूर्वजक देल सम्पैत रहै छैन, बेटीक बिआह करबैमे देमए पड़ै छैन! बीस लाख रूपैआ खर्च कऽ डाक्टरीक शिक्षा बेटीकें दियाउ आ तैपर सँ बीस लाख बिआहोमे चाही। ओइ डाक्टर सभसँ पुछै छिऐन जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतो अपन अन्याय नै रोकि सकै छी तँ की आशा अहाँसँ कएल जा सकैए जे माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसँ ठिठुरल बच्चाकें जीबैक उपए अहाँ कऽ सकबै?

वसन्तीक मन आगू बढ़ि अपनापर एलइ। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तँ किसान, वेपारी आकि नोकरिहरे किएक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल अछि, ओइमे केते गोरे अपनाकें सुरक्षित बुझि रहल छैथ। की कौलेज-हाइ-स्कूलक विद्यार्थी अपन अध्यापिकाकें ओहने नजैरसँ देखैए जइ नजैरसँ अध्यापककें। की अदौसँ अबैत हमर संयुक्त परिवारक

समाजिक ढाँचा रूपी धरोहर, गाछसँ खसल पाकल कटहर जकाँ–आँठी उड़ि केतौ, कोह उड़ि केतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेल एकठाम आ नेरहा ओंघराइत केतौ–आँखिक सोझहामे नष्ट भऽ जाए! ऐ दुखद घटनाक जवाबदेह के? गामक बच्चाकें स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरि एते तरहक गाड़ीक अवाजसँ लऽ कऽ लॉडस्पीकरक अवाज धरि कानमे पड़ैए। जैठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ जाइत अछि तैठाम पढ़ाइक की दशा होएत!

एते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर वसन्ती अँटैक गेल। जहिना शिशिर-ग्रीष्मक बीच वसन्तक स्वागत गाछपर बैस कोइली अपन जुआनीक अगराइत राग-तानसँ करैए तहिना वसन्तीक स्वागत-ले होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कऽ रहल छैन। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुख देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहै छैथ तँ कृष्ण पाछू घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फेकए चाहै छैथ तँ कखनो हरिअरका। आँखिपर नजैर पड़िते कारी रंग तँ मनमे अबैन मुदा निशाने साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुँहपर फेक देलकैन। मुँहपर अबीर पड़िते दुनू हाथे कृष्ण मुँह-कान पोछए लगला, आकि हाथसँ पिचकारी खसि पड़लैन। खसिते राधा आगू बढ़ि दुनू बाँहि पसाइर हृदैसँ लगबैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हँसए लगला। ..नमहर साँस छोड़ैत वसन्तीक मनमे उठल- ऐ धरतीपर किछु करए लेल संगीक जरूरत अछि। जाधैर पुरुख-नारी मिलि अपन समस्या-ले अपन पौरुखकें नै जगौत ताधैर सपना साकार केना भऽ पौत..?

ओछाइनसँ उठिते सुशील सुरूजक किरिणकें देखए लगल। देवालक भुरकी-देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करै छल। सुरूजक ओ रूप नहि, जैठाम आँखि नै टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नहि, पातर-कोमल। ..बिजलौका जकाँ सुशीलक मनमे उठल पुरुख-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तखन जँ ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, केतेक लाजिमी छिऐ। कोठरीसँ निकैल सुशील वसन्तीसँ भेँट करैक विचार केलक।

प्राते भने सुशील किलासक संगी–वसन्ती–ऐठाम पहुँचल। टेबुलक एक कोणपर पोथी गेँटल। एकटा किताब आ कॉपी आगूमे पसरल आ पेन सेहो खोइल कऽ राखल, मुदा कुरसीपर ओंगैठ आँखि बन्न केने वसन्ती अपन वसन्ती-वहारपर नजैर अँटकौने। जहिना वसन्त साले-साल अबैए आ जाइए तहिना की

मनुखोक जिनगीमे वसन्त अबैत आ जाइत अछि? कथमपि नहि। मनुखक जिनगी तँ ओहन होइए जइमे वसन्त एलापर जाइ नै छइ। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जकाँ 'महा-वसन्त' बनि जाइत अछि। ..एते बात मनमे अबिते देह चौंक गेलइ। हृदए सिहरए लगलै। मुदा अपनाकेँ संयत करैत धियान वसन्त ऋतुपर देलक। ऋतुपर नजैर पड़िते देखलक जे एकठाम फसिल लागल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसँ सजल बगीचा, जैपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसँ वसन्तक स्वागत करैए, तँ दोसर कोसीक बाढ़िसँ नष्ट भेल ओ इलाका जइमे बाउलसँ भरल ढिमका-ढिमकी बनल खेत, गाछ बिरीछक अभाव देख कनैत चिड़ै रहैक ठौरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल। की ओइठाम चैत-बैशाखकेँ वसन्त ऋतु नै कहल जाइत अछि? ..अथाह समुद्रमे वसन्ती कखनो उगए तँ कखनो डूमए। अनासुरती नोरसँ आँखि ढबढबाए गेलइ। ओढ़नीसँ वसन्ती नोर पोछिते छल कि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सँ बाजल-

"वसन्ती।"

'वसन्ती' कानमे पड़िते औगता कऽ कुरसीसँ उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत वसन्ती बाजल-

"सुशील।"

कुरसीपर सुशीलकेँ बैसा, अपने बगलक कुरसीपर बैसैत वसन्ती पुछलक-

"पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?"

सुशील- "कौलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।"

सुशीलक बात सुनि अकचकाइत वसन्ती पुछलकै-

"किए?"

"कौलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देख रहल छी ओइसँ मन दुखी भऽ रहल अछि। ऊपरी ढाँचा किछु देख रहल छी आ भीतरी किछु आर छइ।"

सुशीलक बात सुनि वसन्ती बाजल-

"सिरिफ अहींटा दुखी छी कि आरो कियो?"

वसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमैक गेल। कनी रहि कऽ बाजल-

"अखन धरि जे देखलौं ओइमे नगण्य दुखी भेटला आ अधिकांशकेँ कोनो गम नहि।"

"किछु तँ भेटला?"

"मुदा ओ कहिया तक संग रहता तेकर कोन ठीक। जँ रस्तेसँ घुमि जाथि आकि हलुआइक कुकुर जकाँ रसगुल्ला-जिलेबीक रस चाटए लगैथ।"

"अहाँ जे कहलौं ओकरो हम नै कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छइ?"

"से की?"

"जँ पुरुख-नारी मिलि सृष्टिक निर्माण कऽ सकैए तँ की कोनो बेवस्थाकेँ नै बदैल सकैए?"

"बदैल सकैए मुदा ओकरा-ले...।"

"हँ। ओकरामे पौरुख चाही। पौरुख सिरिफ पुरुखेक धरोहर नहि, मनुख मात्रक छी। गललसँ गलल आ सड़लसँ सड़ल बेवस्थाकेँ हमहीं-अहाँ ने संग मिलि बदैल सकै छी।"

वसन्तीक बात सुनि, नमहर साँस छोड़ैत सुशील बाजल-

"ओहन संगी केतए भेटत?"

"संकल्प स्थलपर।"

"ओ स्थल केतए अछि?"

"दुनियाँक एक-एक इंच जमीनपर।"

"संकल्पक विधान की?"

"आत्माक मिलन।"

कहि दुनू गोरे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीबाक वचन एक-दोसरकेँ देलक।

❍

शब्द संख्या : 1849

ठकहरबा

भोरहरबेमे दादीक नीन उचैट गेलैन। लाख कोशिश केली मुदा दोहरा कऽ नीन नै घुमलैन। ओना, भोरुका समए वसन्ते जकाँ मधुआएल रहै छै मुदा ओहो की सबहक-ले एक्के रंग रहैए, दिन-राति काजक पाछू नचनिहारकेँ थोड़े वसन्त आ ग्रीष्मक भेद बुझि पड़ै छइ। दादीक मनमे एलैन जे अखने ललितक ऐठाम जा कऽ कहिऐ जे अखुनके माने भिनसुरके उखड़ाहामे चिमनीपर सँ पजेबा आ बेरुका उखड़ाहामे बजारसँ एस्वेस्टस आनि दिहह।

मुदा भोरुका अन्हारक दुआरे दादीकेँ रतिगर बुझि पड़लैन। तैसंग मनमे ईहो एलैन जे जँ कहीं बिछानपर जाइ आ निन्न आबि जाए तखन तँ पहपैट हएत। मुदा एत्ती रातिकेँ जेबो केतए करब?

गुन-धुन करैत दादी निर्णय केली जे से नहि, तँ घरसँ ओछाइन निकालि अँगनेमे बिछा कऽ पड़ब नहि, बैस कऽ काजक गर लगाएब। सएह केली। काजपर नजैर दैते पजेबापर मन गेलैन। एक नम्मर राँट ईंटा तँ तेते महग अछि जे कीनब थोड़े पार लागत। मन मन्हुआ गेलैन। जहिना दू-बट्टी, तीन-बट्टीपर पहुँचते बटोही अपन ऐगला बाट हियाबए लगैए तहिना दादियो हियाबए लगली। केते दिन जीबे करब जे एक नम्मर ईंटाक जरूरत पड़त? लऽ दऽ कऽ बीस-पच्चीस बर्ख आरो जीब। तइले तँ तीनियोँ नम्मर ईंटा नीके हएत। फेर मनमे एलैन जे कियो कि अपनेटा-ले घर बनबैए आकि बालो-बच्चा-ले बनबैए? मन ठमैक गेलैन। किछु फुरबे ने करैन। फेर मनमे उठलैन जे लोक काँच-ईंटाक घर केना बनबैए। ओहो तँ तीस-चालीस बर्ख चलिए जाइ छइ। ओइसँ नीक ने तीन नम्मर। कम-सँ-कम अध-पकुओ तँ रहैए। जेतबे नुआ रहए तेतबे टाँग पसारी। तीनियोँ नम्मर तँ ईंटे छी किने? हँ, हँ, तीने नम्मर ईंटा लेब।

दादीक मन आगू बढ़ि चदरापर माने एस्वेस्टसपर गेलैन। चदरापर नजैर

पड़िते मन झुझुआ गेलैन। सिमटीक तेहेन चदरा बनए लगल अछि जे सालो भरि चलत कि नइ चलत? जँ कहीं गोलगर पाथर खसल तँ चूरम-चूर भऽ जाएत। पहिने केहेन बढ़ियाँ टीनक चदरा अबै छेलै जे एक बेर घरपर दऽ देलासँ केते दिन ओहिना रहइ। मुदा ओहो बैशाख-जेठक रौदमे रहै-बला नै होइए। ओना जँ गतगर कऽ खरहीक छाड़ तरमे दऽ दियौ तँ कोठे जकाँ भऽ जाएत। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा बनियाँ सभ भऽ गेल अछि जे लेबालकेँ जे होउ अपन धरि तिजोरी भरल ताकी। खाएर जे हौउ, जे सबहक गति हेतै से हमरो हएत, तइले केते मगज चटाएब। पोह फटिते सुरूजक लाली देख दादी ओछाइन समेट घरमे रखि ललितक ऐठाम विदा भेली। मन पड़लैन, आठमे दिन अदरा नक्षत्र चढ़त। आठे दिनक पेसतर घर बनबैक अछि। जँ से नइ भेल तँ गिलेबापर जोड़ल देवाल ढहत-ढनमनाएत..! जे घर अखन अछि ओहो उजड़िए जाएत। तैबीच जँ बर्खा झहड़ल तँ जानो बँचब कठिन भऽ जाएत। ललितकेँ दरबज्जा नहि। भनसे घरमे सुतबो करैत। ठोकले दादी आँगन पहुँच ओलती लगसँ कहलखिन-

"गोसाँइ उगैपर भेलखिन आ तों सुतले छह?"

दादीक अवाज सुनि ललितक पत्नी–सुपती–उठि केबाड़क अदहा पट्टा खोलि चुपचाप बाड़ी दिस विदा भेली। ओसार टपि केबाड़क दुनू पट्टा खोलि ललितक देह डोलबैत दादी कहलखिन- "ललित, ललित! उठह, केते सुतै छह!"

पड़ले-पड़ल आँखि मुननहि ललित बाजल- "की कहै छी?"

"अखन धरि सुतले किए छह?"

ओछाइनपर सँ उठि दादीकेँ बैसबैत ललित अपनो बैसल आ बाजल-

"बड़ी रातिमे पुलिसक गाड़ी खोइर-बन्हामे लसैक गेलइ। भरि गाड़ी पुलिस रहए। केतबो बाप-बाप केलक मुदा गाड़ी नै निकललै। जेना जानि कऽ अनठा देलकै।"

बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, गालक मसुहैरपर दूटा इंच-इंच भरिक पाकल केश, सोन सन उज्जर धप-धप केश, गरदैनक चमड़ा घोकैच कऽ लटकल दादीक। ठहाका मारि बजली-

"तोरा सन-सन लोकसँ की बेसी बुत्ता ओकरा सभकेँ होइ छइ। गाँजा पीब-पीब छाती फोंक कऽ नेने रहैए।"

मुँह चटपटबैत ललित बाजल- “बड़ मोटगर-सोटगर सभ रहए?”

“धु: बतहा कहीं के, एतबो नइ बुझै छहक जे तखन थालमे सँ गाड़ी किए ने उखड़लै।”

मुँह डेढ़बरा कऽ ललित बाजल- “उ सभ हाकिम रहै किने।”

“अच्छा, ई सभ छोड़ह। पाइ केते देलकह?”

“पहिने वएह पुछलक जे केते दिअ, ओना हमहूँ सभ सात-आठ गोरे रही मुदा हमरा छोड़ि सभकेँ होइ जे कहुना जान छोड़ए। सभकेँ सुक-पाक करैत देखिऐ। एक गोरे बाजि देलकै जे हुजूर सरकारीए पाइ छिऐ किने। एतबे सुनैत-मातर तरैंग कऽ एक गोरे बाजल- ‘रौ, बहिं, तुम पहचानता नहीं है।’ कहि पाइ आगूमे फेक विदा भऽ गेल।”

“सुआइत तोरा ओंघी दबने छह। हमहूँ काजे एलौं हेन। अखन तँ तूँ भकुआएल छह। पहिने मुँह-हाथ धुअ। काजक गप छी, तँए कनी असथिरसँ विचार करब। ओना अपनो मुँह-कानमे पानि नहियेँ नेने छी।”

“एह, तँ की हेतै दादी। एक दिन टुटलहो-फटलाहा घरक चाह पीब कऽ देखियौ।”

सुपतीकेँ कानमे फुसफुसा दादी चौमास दिस विदा भेली। जाबे दादी मुँह-कान धोइ कऽ तैयार होथि तइसँ पहिने ललित सुपतीकेँ चाह बनबैले कहि ओसारक बिचला खुट्टा लग पिढ़ी रखि दादीक बाट देखए लगल। अबिते दादी बजली-

“कलक पानि बड़ सुन्नर छह।”

कहि खुट्टामे ओंगैठ पिढ़ीपर बैस गेली। सुपती चाह नेने आबि आगूमे रखि देलकैन। चाहक रंग देख दादीक मन खुशी भऽ गेलैन। एक घोंट पीब बजली- “तेहेन चाह छह जे एक्के उपे जलखै बेर तक रहब।”

ललित- “आइ काज अनठा दियौ दादी।”

मुस्की दैत दादी-

“किए, घरमे सिदहाक ओरियान छेबे करह...। (मुदा लगले बात बदैल) कोन एहेन हलतलबी काज आगूमे छह जे आइ मनाही करै छह?”

मुँह दाबि सुपती बाजल-

“हिनका नै बुझल छैन जे आइ अलेक्शन छिऐ।”

सुपतीक बात जेना दादीक अँतरीमे छुबि देलकैन। जहिना आम तोड़निहार सरंगोलिया गोला आमपर फेकैत तहिना दादी फेकब शुरू केली-

“कोन फेरमे पड़ए चाहै छह, अपन दुख धन्धामे लगल रहह। सभटा ठकहरबा छी। एते दिन अपनो सएह बुझै छेलौं, मुदा आब बुझै छी जे ठकाइत-ठकाइत जिनगीए ठका गेल। (मुड़ी निच्चाँ कऽ) जहिया समाज खादी-साड़ी पहिरा ‘माए जी’ कहलक तहिया बुझि पड़ल जे समाज की छी। स्वर्गोसँ ऊपर। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा सभ भऽ गेल अछि जे बाजत ढेरी, करत किछु ने!”

ललित-

“अहाँकेँ किए समाज खादी पहिरौलैन?”

ललितक प्रश्न सुनि दादी विस्मित भऽ गेली। जहिना वोनमे जानवरक छोट-छोट बच्चा बौआ कऽ हरा जाइत तहिना अजादी समयक वोनमे दादी हरा गेली।

दादीकेँ विस्मित देख ललितकेँ बुझि पड़लै जे दादी फेर केतौ औना गेली। तँए दोहरा कऽ नै पुछि जवाबक प्रतीक्षा ओइ रूपे करए लगल जइ रूपे माए बच्चाकेँ विद्यालयसँ अबैक आशा-वाटी करैत रहै छैथ। ..चौअन्निया मुस्की दैत दादी बजली-

“दुरागमन करि कऽ आएले रही। बुड़हा-बुड़ही माने सासु-ससुर जीविते रहैथ। बेटा मात्रिक गेलैन। ओइठीनक लोक सभ झण्डा उठा खूब हुर-बड़ेरा करैत रहए। अपनौं हुनके सभ संगे वौर गेला। तीन मास बिता कऽ गाम एला।”

ललित-

“बाबा बिगड़बो केलखिन?”

अपसोच करैत दादी बजली-

“ओ सभ स्वर्ग गेला, हम नर्कमे छी। आगि नै उठेबैन। हँ, ई भेलै जे बुड़हो जोगारी छला। तरे-तर सरहोजिसँ सभ भाँज लगा लेने छला। जाबे गाम घुमि कऽ एला ताबे तँ एम्हरो लोक झण्डा उठा हरबिड़ों करए लगल छल।

अजादीक दस-बारह बर्खक पछाइत गाममे मलेरिया आएल। चारि अन्नासँ बेसीए लोक मरल। अपनो घर धंस भऽ गेल। तीनू गोरे-सासु-ससुर आ पति-मरि गेला। मात्र अपने आ छह मासक बच्चा-टा बँचलौं। ओही बेटाकेँ पोसि-पालि जुआन बनाएब अपन देशसेवा बुझलिऐ। खादी साड़ी पहिरैक यएह कारण रहए।”

मुस्की दैत सुपती पुछलकैन- “नेता सभ जकाँ भाषणो करथिन?”

“बेसी तँ नै बाजल हुअए मुदा मंचपर दुनू हाथ जोड़ि एते जरूर कहिऐ जे ‘हे बरहमबाबा गामक रच्छा करिहह।’ मुदा सभ झूठ भऽ गेल! ने बरहमबाबा सुनलैन आ ने केकरो रच्छा भेलै!”

सुपती-

“खादीबला सभ भरि दिन झूठे बजैए?”

सुपतीक बातसँ दादीकेँ दुख नइ भेलैन। मुस्की दैत बजली-

“ओहिना कनी कऽ मन अछि। शुरूक तीन भोँटमे बहरबैया नेता सभ संग करि कऽ गाम घुमलैथ। जेतेकाल संगमे रहिऐन तेतेकाल गामेक गप-सप्प करैथ। गाममे ने नीक सड़क अछि आ ने बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल। ने पानि पीऐक समुचित बेवस्था अछि आ ने दबाइ-दारूक। गाड़ी-सवारीक नाओंपर बैलगाड़ी अछि। एहेन समस्या सिरिफ अपने गामक नहि, इलाकेक अछि। सरकारक अपने बेवस्था लटपटाएल अछि। हरितक्रान्तिक पूर्व धरि पेटक दुआरे आन-आन देशसँ जनेर-गहुम मंगबए पड़ै छेलइ।”

कनी चुप भऽ मन पाड़ि फेर-

“तही बीच भूदानी आन्दोलन जागल। नारा देलक- ‘जमीनक छबम हिस्सा दान दिअ’ जइसँ गरीब लोककेँ बासक संग जोतो जमीन भेटतै। गामक-गाम दान हुअ लगल। मुदा अखन की देखै छहक जे जोतक कोन बात जे घराड़ियो सभकेँ नै छइ। (ठहाका मारि) सभटा मदारी नाच केलक।”

पटरीपर सँ दादीक बातकेँ उतरैत देख ललित पत्नीकेँ कहलक-

“दादी बुढ़ छथिन, थकबो करै छथिन किने। शिखरक पुड़िया खोलियापर सँ नेने आउ?”

शिखरक नाओं सुनि दादीक मनमे उठलैन जे शिखर केहेन होइ छइ। आइ धरि नामो ने सुनने छेलिऐ। मुदा बजली नहि। चकोना होइत देख ललित बुझि गेल जे भरिसक दादी ‘शिखर’ नै खेने छैथ। मुस्कियाइत बाजल-

“जहिना चाह पीलापर देहमे फुनफुनी आबि जाइ छै तहिना शिखरो खेने होइ छइ। इस्कुलिया विद्यार्थी सभ तँ भरि-भरि जेबी रखने रहैए।”

सुपतीक हाथसँ एकटा पुड़िया लऽ ललित दादी दिस बढ़ौलक। जहिना खच्चा-खुच्चीमे पानि देख बकरी पाछू हटैत रहैए, तहिना शिखरक पुड़िया देख दादीक मन पाछू हटलैन। मुदा नव चीज रहने सेहन्तो भेलैन। एक चुटकी मुँहमे दैते बुझि पड़लैन जे सरसरा कऽ कण्ठसँ निच्चाँ उतरल जाइए। तखने ललित पुछलकैन- “अपनो गामक लोक जमीन दान केलक?”

ललितक बात सुनि खौंझा कऽ दादी बजली-

“कहबे तँ केलियह जे सभटा बानरक नाच केलक। एक गोरे समस्तीपुर दिसुका भूदानी नेता खोज करैत अपने ऐठाम एला। की कहिय हुनकर हाल। साँझू पहर जखन गप-सप्प करए लगैथ तँ बुझि पड़ए जे जहिना त्रेता युगमे रामराज रहै तहिना फेर कलयुगोमे भऽ जाएत। ने केकरो पेटक चिन्ता रहतै आ ने रोग-बियाधिक। मुदा ले सुथनी! भिनसरसँ दुपहर धरि ओकरा साबुन रगौड़-रगौड़ नहाइए आ कपड़े साफ करैमे लगि जाइ। बेरू-पहर सभ कपड़ा सुखा, पहिर कऽ दिन लहसैत निकलै आ खाइ-पीऐ राति धरि भाषण करइ। एक पनरहियासँ बेसीए रहल। तैबीच अकच्छ-अकच्छ भऽ गेलौं। खादी भण्डारक मंगनी कपड़ा पबइ, सदिकाल बगुला जकाँ उज्जर धप-धप चेहरा बनौने रहए।”

ललित- “खादी भण्डारमे मंगनीए कपड़ा बँटबारा होइ छेलइ?”

“मंगनी केतौ होइ। गाम-गामक उद्योगकेँ उला-पका कऽ खा-पी कऽ चौपट कऽ देलक। गामक गाम लोकक रोजगार मरि गेल। एक तँ कोसी-कमलाक उपद्रव तैपर सँ जेहो छोट-छीन रोजगार गाममे चलै छल सभ चलि गेल। जखन लोककेँ गाममे पेटे ने भरत तखन केते दिन पेटमे जुन्ना बान्हि कऽ रहत। गामक-गामकेँ पड़ाइन लगि गेलइ। ने बच्चा सभकेँ पढ़ैक स्कूल अछि आ

ने रोग-बियाधि-ले डरबाना[5]।"

बजैत-बजैत दादी विस्मित भऽ गेली। आँखि बन्न भऽ गेलैन।

गुम-सुम देख ललित टोकलकैन- "पहिलुका बात तँ छुटिए गेल, दादी?"

ललितक प्रश्न सुनि दादी मन पाड़ैत बजली-

"चारिम भोँट अबैसँ किछु पहिने मारिते-रास पाटी फड़ि गेल। कखनो कोनो रंगक झण्डा लऽ कऽ जुलुशो निकले आ सभो होइ तँ कखनो कोनो रंगक। जहिना आखिरी लगनमे छुटल-बढ़ल, बुढ़-पुरान, लुल्ह-नाँगर सभ पालकीपर चढ़ि लइए, तहिना भदबरिया बेंग जकाँ गामे-गाम नेता फड़ि गेल। ओना हम लिखा-पढ़ी करि कऽ कोनो पाटीक मेम्बर नइ भेल रही मुदा लोको बुझै आ अपनो मानैत रही। तँए मनमे अरोपने रही जे जेकरा जे मन फुरह से करह मुदा जहिना शुरूसँ रहलौं तहिना रहब। भोँट होइसँ पहिने केतेको गाममे मारि भेल। अपना गाममे भोँट दिनसँ पहिने तक तँ मारि नइ भेल मुदा भोँट दिन तेहेन मारि भेल जे लोककेँ पड़ाइन लगि गेलइ।"

बिच्चेमे सुपती पुछलकैन- "हिनको कियो मारलकैन?"

"नै कनियाँ, हाथ तँ नै उठौलक, मुदा भोँट खसबै नै दिअए। हमर भोँट केदैन खसा नेने रहइ। केते कहा-सुनी भेलापर अनके नाओंपर भोँट खसेलौं। भोँट खसा कऽ जखन घुमलौं तँ मनमे आएल जे आब भोँट खसबैले नै जाएब।"

अकचकाइत ललित कहलकैन- "पाटीबला सभकेँ नै कहलिऐ?"

दादी बजली- "की कहितिऐ। संयोगो नीके बुझहक। ऐगला भोँटमे पार्टीक उम्मीदवारे ने ठाढ़ भेल। जान हल्लुक भेल। आन पाटी तँ मारिते रहै मुदा केकरा भोँट दितिऐ आ केकरा नै दितिऐ। तइसँ नीक जे बूथपर जाएबे छोड़ देलिऐ।"

हँ-मे-हँ मिलबैत ललित बाजल-

"केकरो नफ्फा-नोकसान होउ, अहाँ तँ बँचलौं किने?"

ललितक बात सुनि दादीक आँखि नोरा गेलैन। मुहसँ बकारे ने फुटैत रहैन। कनीकाल चुप रहि बजली- "बौआ, पटना दिल्ली तँ कहियो मनोमे ने

[5] अस्पताल

आएल मुदा गामोमे जहुना छेलौं तहुना नइ रहलौं। जइ समाजक लोक 'माए जी' कहै छेलए ओइ समाजमे लोक 'राँड़ी' कहए लगल। ऐ बातक दुख सदिखन मनकेँ बेथित केने रहैए!"

आँखि बन्न कऽ सोचमे डुबि गेली। किछु समए गुम्म रहि पुन: बजली-

"गामे-गाम तेहेन अगराही लगि गेल छै जे शान्त हएब कठिन अछि। पुबारि गाममे खेतक झगड़ामे मारि भेल। से खूब मारि भेल। दुनू दिस केते गोरेकेँ कान-कपार झड़लै। एकटा खूनो भेलइ। मुदा अचरज ई भेल जे एहेन सना-सनी रहितो गौंआँमे सुबुधि जगलै। कियो कोट-कचहरी नै गेल। गाममे फरिया गेल। अखन जँ ओना होइत तँ गाम उजैर जाइत। तेहेन-तेहेन मनुख सभ बनि गेल अछि। जे सदिछन फोंसरीए तकने घुरैए।"

मुड़ी डोलबैत ललित बाजल- "भोँटक दिन छी दादी। भोँटो खसबैक अछि। मुदा जखन अहाँ आबि गेलौं तखन पहिने अहाँक काज सम्हारि देब।"

दादी- "भोँट खसबैले थोड़े मनाही करबह। भिनसरसँ साँझ धरि भोँट खसैए। पाँच बजेमे भोँट खसा लिहह।"

"ताबे तक भोँट बँचले रहत?"

"जे लड़ैए, ओकरा एतबो बुत्ता नै छै जे बूथ सम्हारि कऽ राखत। ओना भोँटे खसेने की हेतह। देखते छहक जे कियो बक्से हेरा-फेरी कऽ लइए तँ कियो रिजल्टे बदैल लइए।"

"बेस कहलौं दादी। काका (दादीक बेटा) केतए रहै छैथ?"

बेटा-दे सुनिते दादीक मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत बजली-

"बौआ, पनरह-बीस बर्खसँ वौआइते-ढहनाइते छेलए। पहिने दिल्ली गेल। ओइठीन काज नइ भेलै तब बम्मै गेल। ओतौ नोकरी नइ भेलइ। तखन हारि-थाकि कऽ पाँच बर्ख पहिने कलकत्ता गेल। मुदा जहिना बम्मै पाइबलाक छी तहिना कलकत्ता गरीब लोकक छी। ओइठीन एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकानमे नोकरी भऽ गेलइ। दरमाहा तँ बेसी नै दइ छै मुदा साइकिल बनबैक सभ लूरि भऽ गेलइ। अपने दिगारक मिस्त्री छी। अपने बहिनसँ बिआहो कऽ देलकै। सुनै छी जे पुतोहुओ मिस्त्रियाइए करैए। दुनू बेकती एते कमा लइए जे अपनो गुजर करैए आ घर बनबैले रूपैओ पठा देलक हेन। सएह रूपैआ छी।"

"असकर-ले तँ अहाँकेँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाएत?"

"हँ, से तँ चलि जाएत। मुदा पुरजीमे लिखने अछि जे आब गाममे रहब। पुरना जेते मिस्त्री अछि ओ सभ मोटर साइकिलक मिस्त्री भऽ गेल। जखन कि गामे-गाम साइकिलक पथार लगि गेल हेन। तहूमे तेहेन साइकिल अछि जे छह मासक उपरान्ते मिस्त्रीक काज पड़तै।"

ललित पत्नीकेँ कहलक- "एकबेर आरो चाह बनाउ, दादीक संगे जाएब।"

सुपती- "घरमे दूध कहाँ अछि। नेवौओ सभटा चोराइए कऽ तोड़ि लइ गेल।"

दादी- "कनियाँ अहाँकेँ नै बुझल हएत। नइ नेबो अछि तँ नेबोक दूटा पाते दऽ दियौ।"

चाह बनल। एक घोंट चाह पीब ललित दादीकेँ पुछलक-

"दादी केहेन घर बनेबै?"

"बौआ, गिलेबापर जोड़ि तीन नम्मर ईंटाक देवालपर सँ एसबेस्टसक छत देबइ। कहुना-कहुना तँ बीस-पच्चीस बर्ख चलबे करत।"

"से तँ बेसियो चलि सकैए आ सालो भरि नै चलि सकैए।"

"से की?"

"तेहेन सिमटीक घटिया एसबेस्टस बनैए जे पाथरक चोट बरदाश करत।"

मुड़ी डोलबैत दादी- "हँ, से तँ ठीके कहलह।"

कहि गुम्म भऽ गेली। दादीकेँ गुम्म देख ललित बाजल- "दादी, जँए अस्सी तँए निनानबे। चदरा तरमे खूब गतगर-के खरहीक छाड़ दऽ देबइ। जँ पथरो खसत तँ चदरे ने फुटत, जान तँ बँचत किने। बेसीसँ बेसी देहपर पानि चुअत, सएह ने।"

❍

शब्द संख्या : 2349

अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डुबि गेल रहै मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच हुअ लगल रहइ। झामलालकेँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटकीलाल डिबिया बारि चाहक चूल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चूल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइए बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहै जे पनरह दिनसँ राहैड़क दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नै खेने रहए, तइ खातिर रातिमे खाइए-काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेलइ। बिनु खेनहि पिढ़ीपर सँ खिसिया कऽ भुटकीलाल उठि गेल। माटिए-सँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड़ुड़ कऽ दोकानपर आबि गेल।

दोकान लग पहुँच झामलाल बाजल-

"भुटकी भाय, रौतुका सोठियाएल छिअ। खाइक किछु नइ रखने छह?"

"अच्छा पहिने अदहा-अदहा कप चाह पीब लिअ। जहिना अहाँ सोठियाएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज की भेटत। बिस्कुट सभमे कोनो लज्जैत रहै छै मुदा छाल्ही अछि।"

"चलह हुन्डे दाम कहि दहक।"

"सभटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?"

"पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोरे अदहा-अदही।"

'अदहा-अदही' सुनि भुटकीलाल उछैल कऽ बाजल-

"अदहा किलोसँ बेसीए हएत मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।"

"एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देख लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रूपैआ ऊपरसँ देबह। खाली भरि दिन संग पूरह।"

"हम तँ पेटबोनियाँ आदमी छी भाय। जेतए पेट भरत तेतए रहब।"

"चौकक खर्च हम देलियह आ मालिक तूँ भेलह। मुदा पहिने खा लएह किएक तँ भरि दिन बहह पड़तह।"

अदहा-अदहा छाल्हीमे सँ उठा-उठा दुनू गोरे मुहँमे दैत आ गप्पो करैत झामलाल बाजल-

"टटके छाल्ही बुझि पड़ै छह?"

"हँ। कौल्हुके छी।"

"हँ, छाल्हीक रस तँ तेसर दिनसँ बनब शुरू होइ छइ। मुदा टटकोक अपन रस छइ। आइ गामक झण्डा गाड़ि देलियह।"

"से की, से की?"

-बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटकीलाल झामलालसँ पुछलक।

पानि पीब झामलाल बाजल-

"हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरेसाइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना सालमे पाँच लाख पीटिए दैत हेबइ। बान्हल तँ अछि नहि। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी, जेकर जाल सगरे देशमे छइ। एते पहूँच सेहो बनौने छी। जहिना आइ खच्चरपुरबलाक खचरपनी झाँड़ि, मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि, कथा-कुटुमैती सेहो ढाठि देबइ। तइले नअ पड़ै आकि छह।"

"ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ अहिना हुअए।"

भुटकीलाल मुड़ी डोलबैत पुष्टि केलक।

चाह पीब झामलाल बाजल-

"भाय, ऐपर सँ जे पान-साए नम्मर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जइतए।"

"भाय, पान तँ तेहेन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। वसन्ती नीन छोड़ि कऽ औत। सात बजेसँ पहिने नइ अबैए। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।"

"तोहूँ भारी इस्की छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेबह। जेना-जेना तूँ

कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने ऐ दुआरे कहि दइ छिअ जे बिर्ड़ोमे झण्डा उड़िया देलिऐ मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त किने।"

बिच्चेमे भुटकीलाल बाजल-

"अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू, एक्के घन्टामे चौकक चकचकी देखा दइ छी।"

भुटकीलालक जोश देख उत्साहित भऽ झामलाल बाजल-

"भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूटा पाइयो देखै छी आ दूटा लोको लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइए-खेनाइए-टा तँ जिनगी नै ने छिऐ। फेर दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जन्म लेब। तँए जहिना गामक झण्डा अकासमे उड़ियाएल तहिना बँचबैले जे करए पड़त से करब।"

"अच्छा छोड़ू ऐगला बात, अखन की करब से विचारू।"

"तोहीं बाजह?"

"दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मेजरौटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।"

"की कहलहक?"

"मेजरौटी, एक मैजरौटी गाँजा पिआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबलाक अछि आ तेसर इंग्लिस पिआकक अछि।"

"तीनूमे केते खर्च हेतह?"

"अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहियौ। सभ गप ने कऽ लेब।"

"सभ तँ फुट-फुट बैसत तखन रौतुका बात कहबै केना?"

"मामूली लोक सबहक मेजरौटी छिऐ। कलाकार सबहक छिऐ। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबह तखने चौकक ताल देख लिहक।"

"किछु कहबहक नहि?"

"कहबै आकि मंत्र देबइ। दुइए-टा मंत्र दइक काज छइ। अकासमे

झण्डा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाक सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दइ छिऐ जे जेतए फरियबैक मन होइ फरिया लिअ हमरा समाजसँ..!"

घन्टे भरिक पछाइत चौकक जुआनी आबि गेल। गाँजाक मंचसँ फगुआ शुरू भेल-

"एक दिस खेले कृष्ण कन्हैया, एक दिस राधा जोड़ी होऽऽऽ!"

तँ ताड़ीक मंचसँ महराइक धून निकलल-

"किसकी मैया बाघिन जनमे जो रूदल पर फेरे हाथ..!"

तेसर मंचसँ अंगरेजी डान्स शुरू भेल।

सात बजैत-बजैत चौकपर गदमिशान हुअ लगल। रविशंकर चाह पीऐले अबैत रहैथ, दस लग्गी पाछूए-सँ चौकक मस्ती देखलैन। गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ हियासए लगला तँ देखलैन जे सौंसे गामक लोक नाचि-गाबि रहल अछि। मुदा लगले जेना पवनसुत किछु कहि देलकैन। मुस्की दैत भुटकीलालक चाहक दोकानक सोझहे पहुँच भुटकीलालकेँ पुछलखिन-

"भुटकी भाय, बड़ चहल-पहल देखै छिऐ की बात छिऐ?"

"पहिने चाह पीबू ने। गप केतौ पड़ाएल जाइ छइ। निचेनसँ चाहो पीबू आ गप्पो सुनू।"

"कनियोँ तँ इशारोमे कहह।"

"एतबे बुझि लिअ जे खच्चरपुर बलाकेँ मुता-मुता भरेलौं।"

भुटकीलालक बात सुनि रविशंकर अचम्भित भऽ गेला जे आखिर बात की छिऐ! तैबीच झामलाल कहए लगलैन-

"भाय, मास दिनक कमाइक फल छी। जड़िए-सँ कहि दइ छी। तैंतीसम दिनक गप छी। एक लाख रूपैआक पार्टीक काज करि कऽ आएले रही। बारहसँ ऊपर दिन चढ़ि गेल रहइ। कपड़ा खोलि कलपर बाल्टीन-लोटा रखि लताम गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ ऊपर हियासैत रही। तखने हिरदेकाका दछिनबरिया बाधसँ अबैत रहैथ। नजैर पड़िते कहलयैन-

'काका, गोड़ लगै छी। बड़ रौद छै, कनी ठंढा लिअ।' जहिना कहलयैन तहिना ओहो लतामेक गाछ लग आबि गेला।

लताम देखलाहा आँखि हिरदे-कक्काक रहबे करैन, मुँहक सुरखी देख कहलयैन-

'काका, एना हकोपरास किए छी।'

सूखल मुँहकेँ मुस्कियबैत बजला-

'नै बौआ, नै कोनो। रौदमे सँ एलौंहें ने।'

कहलयैन- 'पहिने दूटा लताम खाउ?'

तैपर कहलैन- 'नै बौआ, नै खाएब।'

कहलयैन- 'नइ खाएब तँ दूटा अँगने नेने जाउ।'

अँगनाक नाओं सुनि औटोमेटिक बम जकाँ कखन छाती फटि गेलैन, से नइ बुझलौं। मुदा आँखिसँ टघरैत नोर गालपर चमकए लगलैन। मन गरमाएले रहए। पुछलयैन- 'काका, जहिना परिवारमे भैया, काका, बाबा, होइए तहिना ने समाजोमे होइए। बीरान किए बुझै छी। अहाँ सबहक असिरवादसँ कमाइयोक आ दस गोरेकेँ चिन्हैयोक लूरि भऽ गेल अछि। बाजू अहाँ किए एते पीड़ित छी, जँ उठैबला हएत तँ जरूर... ।'

नोर पोछैत काका बजला- 'बौआ, देखैए-टा ले बुझि पड़ै छिअ जे मनुख छी। मुदा से नहि, मुइल मनुख छी। अपनो परिवारक रच्छा करै-जोकर नइ छी । तखन तँ देखा-देखी आँखि तकै छी।'

पुछलयैन- 'खुलि कऽ बाजू, काका?'

तब कहए लगला-

'बौआ, ऐ जुगमे हम सभ महापापी छी, किएक तँ भगवान पाँचटा बेटी दऽ देलैन। चारिटाक तँ कोनो धरानी खेत बेच-बेच पार लगेलौं। सात बीघाक किसान मात्र पनरह कट्ठापर आबि गेल छी। तेहेन हवा-पानि देखै छी जे ओहूसँ पाँचमक पार लगत कि नहि।'

हिरदे-कक्काक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। जेना बकारे बन्न भऽ गेल। छाती असथिर करैत पुछलयैन- 'काका, केते खर्च हएत?'

कहला- 'बौआ, गरथाह बात केना बाजब।' आँखिक नोर पौछैत पुन: बजला, 'बौआ, ई पाँचम बेटी तेते दुलारू अछि जे हृदैमे सटल अछि। एक तँ

कोरि-पच्छू बेटी, तैपर सँ माइक तेते सिनेही जे सुग्गा जकाँ किछु बाजत। जेठकीकेँ दादीए पोसलकै। कहियो ओकरा कोरा कऽ नै लेलिऐ। जखन टेल्हुक भेल तखनसँ संगे मेला-तेला लऽ जाए लगलिऐ। छोटकी माइक तेहेन दुलारू बेटी अछि जे सैयोसँ ऊपरे नाओं रखने छथिन।'

बातकेँ बुझैत कहलयैन-

'काका, छोड़ू ई सभ। अपन बहिन बुझि बिआह पार लगा देब। जेहने जेठकी बेटीक परिवार अछि तेहने परिवार भँजियाउ। खर्चक चिन्ता अहाँ जुनि करब। ई पहिल दिनक गप छी...।'

ओना, तँ गामे-गाम अतहतह होइते अछि मुदा खच्चरपुर बलाकेँ तँ कोनो सीमे-नाँगैर नै छइ। ऐ साल पाँचटा बिआहमे अभरल। तेते दोस-महीम भऽ गेल अछि जे एकटा बिआहक खर्च नोत पुराइमे होइए। तइले नै कोनो। दस सेरे नै नितराइ दस सगे नितराइ। पाँचो बिआहमे ओकरा सबहक खच्चरपनी देखिलऐ से एड़ीसँ टिकासन तक नेस देने अछि। मुदा कोनो बिआहमे कोनो समाज (बरियाती-घरवारी) तँ नै छेलौं तँए आँत-मसोसि कऽ रहि गेलौं। गर चढ़ा खच्चरपुरेमे कथा ठीक केलौं। कक्कोकेँ पसिन भेलैन। लेन-देन तँए भऽ गेल। समए बना ओहू गामक समाज आ अपनो समाजक बैसार केलौं। बैसारेमे बजलौं, 'अखन धरिक काज दुनू घरवारीक छेलैन मुदा आब समाजक भऽ गेल। चाहै छी जे आन गाम जकाँ थूका-थुकी बिआहमे नै हुअए। तँए किछु समस्या अछि जैपर अखने विचार विमर्श भऽ जाए-

(1) बिआह पद्धतिक अनुकूल हुअए आकि जयमाला करि कऽ हुअए?

(2) पलाउक चलैन भऽ गेल, से मखानक खीर खाएब आकि पलाउ?

(3) खेला-पीला उत्तर लगले विदा भऽ जाएब कि अरामक पछाइत?"

प्रश्न सुनि चुप्पी पसरल। जहिना चूल्हिमे खोरनासँ जारैन घुसकौल जाइ छै तहिना घुसकेलौं-

'कन्यागत समाजक कन्हापर भार देने छथिन तँए समाज चाहै छैथ जे आन-आन गाम जकाँ बरियाती-घरवारीक बीच कोनो तरहक राग-द्वेष नै हुअए। किएक तँ बरियाती घरवारीकेँ निच्चाँ देखबए चाहै छैथ आ घरवारी बरियातीकेँ। जइसँ जहिना खेतमे कोनो चीजक बीआ छीटल जाइत अछि, तहिना हम सभ

झगड़ाक बीआ समाजमे छीट देने छी जे दुखद अछि। नै चाहब जे समाजमे एना हुअए। बिआह सृष्टिक सिरजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ अनुचित। अपने लोकैन जे कहि देब ओइ अनुकूल बिआह हएत।'

घमरथन शुरू भेल। घमरथनक कारण भेल किछु देखौआ काज आ किछु चोरौआ। मुदा सुमति एलैन, बजला-

'लड़का-लड़कीक बिआह समाजिक पद्धतिक अनुकूल हुअए। ई भार अहाँपर रहल। जहिना कोनो काजक प्रक्रिया होइ छै तहिना भोजनक प्रक्रियाक अंग अरामो छी। जानल बात अछि जे नियमित भोजनसँ भिन्न भोजन बरियातीमे होइ छै, तँए अराम आरो जरूरी अछि। प्रात:काल नअ बजेमे चाह-पान खा असिरवाद दैत आपस हएब। पलाउ आ खीर खेनिहार दुनू रहता। बाजा-बूजीक बेवस्था घरवारीक। नै चाहब जे रस्ता-बाटमे अनगौंआँ सभसँ झंझट हुअए। मोटा-मोटी यएह बुझू जे साएक धतपत बरियाती रहता, जिनका-ले अहाँ दू-ठाम बेवस्था करब। अहूँ सभ बुझिते छिऐ आ हमहूँ सभ बुझिते छिऐ। एक भागक जे बरियाती रहता हुनका-ले जहिना भोजनक वृहत् बेवस्था रहतैन तहिना अरामोक हेबा चाही। ई नै जे मधमन्नी जहल जकाँ मुड़ी-पएर दुनूक पतियानी लगि जाए।'

पुछलयैन-

'जखन दरबज्जापर पहुँचबै तखन कोन रूपे शुरू करबै?'

कहलैन-

'जे सभ भाँग खेनिहार छैथ ओ सभ घरेपर भाँग खेता आ रस्ते-बाटमे केतौ झाड़ा-झपटा करता। पएर धोबसँ शुरू करब। एमहर बरियातीक सनोमान शुरू हएत आ ओमहर आँगनमे बिआहक प्रक्रिया शुरू हएत। आठ बजे दरबज्जापर पहुँच जाएब। दस बजेमे खुआ-पिआ कऽ अराम करए छोड़ि देबइ।'

हँसैत सभ निर्णए कऽ लेलैन। विदा भेलौं...।'

रस्तामे झगड़ाक जड़ि ताकए लगलौं। एते तँ बिसवास रहबे करए जे जहिना चोर फँसबैले सिपाही घेराबन्दी करैए तहिना जाल तँ लगबै पड़त। मन पड़ल दोसक गप। दोस कहने रहैथ जे अपना सभ कारोबारी छी, तँए कोट-कचहरीसँ सदिकाल बँचैत रहक चाही। नइ तँ अनेरे ओझरा जाएब। कारोबार

कारोबारे रहि जाएत। मुदा उक्खैरमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर केने काज चलत। तखन तँ जहाँ धरि संभव हएत तहाँ धरि बँचब। अखनो समाजमे कहाँ कियो खुलि कऽ ताड़ी-दारू करै छैथ। चोरनुकबा जरूर करै छैथ। मुदा की हुनका सभकेँ अपना आँखिमे लाज नै छैन? जरूर छैन। खाएर जे हौउ, जिनगी भरि जहलेमे किए नइ रहह पड़ए मुदा खच्चरपुरबला सभकेँ सिखाएब जरूर। तेहेन कऽ नाँगैर सुरड़बै जे इलाकामे मुँह उठाएब मोसकिल भऽ जेतैन। बेसीसँ बेसी दसटा बदमास गाममे हएत, पचासटा आनि कऽ रखि देबइ। मुदा सिखेबै जरूर...।'

आठ बजे गामक सीमामे बरियाती प्रवेश कऽ गेल। हमहूँ सभ साकांच रही। दरबज्जापर पहुँचते स्वागतक संग बैसारक कार्यक्रम शुरू भेल। दाइ-माइ बरकेँ अरियाति आँगन लऽ गेली। बरियातीक बीच प्लेटमे फ्राइ कएल मखान पहुँच गेलैन। दुनू समाजक बीच मखानक मिठासक संग गप-सप्प शुरू भेल। गाममे केते सार्वजनिक स्थल.., कोन-कोन शिक्षण-संस्थान.., अस्पतालक की स्थिति.., गाममे केते किसान परिवार.., केते नोकरिहारा.., जोतसीम जमीन केते.., बोरिंगक संख्या केते.., खेतीसँ अलग कारोबारी परिवार केते.., केते परिवार गामसँ पड़ाइन कऽ रहला अछि आ केते दोखतरीपर आबि-आबि बैस रहला अछि...। बड़ी जुमा कऽ महावीरजी लंकासँ आम फेकने रहैथ से ने तँ खास भेल अछि। मुदा किछु गोरेकेँ भाँगक मातल मनमे उठए लगलैन जे मखानक लाबा आ पानिए पीब भेल! ओ तँ अपने जिनगी भरि पानिए-मे रहल अछि तँ तइमे नीक जे दू घोंट बेसीए कऽ पानि पीब लेब। बिना मुंगबे मन थोड़े मानत। पेटेटा भरने नइ ने होइ छै, मनो ने भरक चाही। मुदा फेर मनमे उठैन जे अखन कोनो उसैर गेल...।'

अँगनाक ओसारपर बैस हिरदेकाका आँखि खिरा-खिरा तकैत तँ देखथिन पाँचो बेटीक सिनेह। जेठकी बहिन माइक पीठपर अँगनाक चीज-वौसकेँ उठा-उठा घरमे रखैत, तँ घरसँ निकालि आँगनमे रखैत। मझिली तँ चारू बहिनक लेधे-गोधक आइ-पाइमे भिनसरसँ अखन धरि लागल अछि। सझिलीए-केँ की कहबै, वेचारीकेँ लगले हाथमे नीपौन देखै छी तँ लगले सिनुर-पिठार। चारिमकेँ तँ गीतिहारियेक आगू-पाछू करैत-करैत नाको-दम भेल छइ। घुमैत नजैर हिरदे-कक्काक बेटी-जमाएपर गेलैन। ओना देखिए कऽ केने रहैथ। तँए देखैक ओ रूप

नहि। देखैक रूप रहैन मौलाएल गाछक पोनगल सराइरमे खिलैत फूलकेँ। हारल मनुखक जीत। जे कहियो कन्यादानकेँ उच्च कोटिक श्रेणीमे गनल जाइ छल ओ आइ समाजमे बेटियाह वंश बुझि बिआहसँ वंचित भऽ रहला अछि। वाह रे हमर समाज...।'

हम अपना काजक पाछू तबाह। पच्चीसो काजकर्त्तापर मलेटरीक नजैर। तीन कदम आगू तँ एक कदम पाछू भऽ सावधान। ओना अगुआएल-पछुआएल बरियाती समैपर गाममे प्रवेश कऽ गेल छला मुदा समाज दरबज्जापर जहाँ-तहाँ छिड़ियाएल। दू-चारि मिलि-मिलि अड्डा जमौने। जइ पाछू एक-एक काजकर्त्ता लगल रहए। ताड़ी जकाँ तँ इग्लिशक गोष्ठी नमहर नै ने होइए। रंग-बिरंगक पीनिहार रंग-बिरंगक वस्तु।

साढ़े नअ बजे बरियाती भोजन कऽ ओछाइन पकैड़ लेखा-जोखा करए लगला। हराएल-बरियातीक खोज शुरू भेल। साढ़े दस बजे घरवारी बरियातीक बीच समझौता भेल जे जेते समए आगू बढ़ि गेल ओइसँ पैछलाकेँ छोड़ि भोजने हुअए। सएह भेल। मुदा कमाल भऽ गेल। भोजन शुरू भेल, पेशाब करैले उठब शुरू भेल। पेशाब खोलैबला दबाइ पानिमे मिला टीपि-टापि कऽ दस गोरेकेँ पिआ देल गेल। एक गोरेकेँ देख छोड़ि देलौं, दोसरोकेँ छोड़ि देलौं। मुदा जहिना चुट्टीक धाड़ी चलैत तहिना चलए लगल। जखन शुरू भेल आकि बुढ़हा सबहक बीच जा कहलयैन-

'अखन धरि घरबैया समाजसँ कोनो तिरोट भेल हुअए से कहू?

एक्के-दुइए पान-सात गोरे उपदेश दैत बजला- 'अखन जे हवा-बिहाड़ि उठि गेल अछि तइमे अहाँ लोकैनकेँ धैनवाद दइ छी। हमहूँ सभ यएह गप करै छेलौं जे गणेशजीक भक्त सभ ने छेनाक मिठाइ खाइ छैथ मुदा ओ तँ अखन धरि लड्डुए खाइ छैथ। जुग बढ़ि गेने लोको उधिया जाएत। जे सुआद खाजा-मुंगबाक अछि ओ डिब्बाबला रसगुल्लाक हएत। ओ तँ भाँज पुराएब छी।'

कहलयैन-

'जाधैर अपने लोकैन ऐठाम छी ताधैरक नीक-अधलाक जवाबदेह घरवारी हेता मुदा अहाँ सभ जे उकठ करब, तखन..?'

पुछै गेला-

'की भेल, की भेल?'

कहलयैन-

'दोसर बरियाती सबहक छिछा-बीछा चलि कऽ देखयौन? बामा करे पड़ि जे जाँघ कुड़ियबैत रहैथ से उठले ने होइन। मुदा कासपरक दहीक ढेकार फुर्ती आनि देलकैन। सभ कियो उठि दोसर पण्डालमे पहुँचला तँ देखलैन जे एना किए रेलबे स्टेशनक टिकट-खिड़की जकाँ दुनू दिस पाँति लगल अछि! मुदा से दसे-बारहे गोरेकेँ देखै छी। खाइ-पीबैक वस्तुमे जँ किछु गड़बड़ी रहितए तँ सहरगंजा होइतै। सेहो ने देखै छइ। ..एक-दोसरासँ आँखि मिला प्रश्न पुछैत तँ मुड़ी डोला जवाब भेटैन। मुदा किछुओ दोख जाबे केकरो नै अछि ताबे एना भऽ किए रहल अछि। आनठाम कहाँ भेल? मुदा बिना आधारे कोनो बात मानियोँ लेब से उचित नहि। आमपर फेकल गोला जकाँ जे लगियो सकैए आ हुसियो सकैए। एमहर अराम करैले सेहो मन कछमछाइन। दोहरौलिऐन-

'जँ अपने लोकैन समाजक सीमा रेखा तोड़ि घिनबए चाहब तँ समाजोकेँ ई अधिकार बनै छै जे सीमाक सिपाही जकाँ अपन मातृभूमिक रच्छा करए।'

कबछुआ जकाँ भकभका कऽ तँ लगलैन मुदा घिनबैक कारण बुझबे ने करैथ। खिसिया कऽ एक गोरे बजला-

'कोन-कहाँ बोतल पीब-पीब बरियाती औता आ सभ किछुकेँ[6] खेने-पीने चलि जेता! एक्को क्षण ई सभ जीबए नै देत।'

कहि छोटका भाएकेँ कहलखिन-

'बौआ, जिनका जे मन फुरतैन से करता। अपन इज्जत-आबरू अपना हाथमे लऽ चलह।"

तेकर बाद की भेलै से बुझबै केलिऐ, बस..!'

एक्के-दुइए ससैर-ससैर घरमुहाँ हुअ लगला।"

❍

शब्द संख्या : 2486

---

[6] समाजिक गुण

अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़ैनकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलैन। हाथ-पएर धोअल बुझि नजैर फूल तोड़ैपर गेलैन। ओना, लालकाकी एहेन नियमित छैथ जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छैथ तहिना दिन भरिक काजोक छैन। मुदा मन पाड़ैक जरूरत अइले रहि जाइ छैन जे पति गाममे छैथ कि नहि। गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छैन आ नइ रहने कमि जाइ छैन। गाममे रहने फूल तोड़ब बुझलैन। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनी-गन्धापर हाथ दइते छेली आकि नजैर अपराजितपर पड़लैन। मेल-पाँच करैक विचार मनमे अबिते लालकाकी रजनी-गन्धासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलैन। आँखि पड़लैन फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देख विचारली जे पाँचटा बेलीमे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली कि नजैर पतिपर गेलैन। पतिपर नजैर पड़िते मन दुखाए लगलैन। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कण्डीशन गाड़ीमे बैस सराफा बजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकैबतौं। मुदा तेहेन भेला जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलैन आ कहलयैन जे साइकिल कीनि लिअ सुभितगर हएत, तँ कहलैन जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलशतर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलैन एक मानेमे नीक...।

मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ उतरलैन नहि। मन गेलैन दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीज सड़ि गेलैन, जखन घरे चुबै छेलैन तखन जँ सड़िए गेलैन तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलैन तखन किए ने फेर किनलैन। जइ घरमे पोथी नइ रहत ओ घर केहेन हएत? लालकाकीक क्रोध

कमलैन। क्रोध कमैक कारण भेलैन अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा-ले करै छी, परिवारे-ले ने। फेर तामस मुड़ि गेलैन, कहैले आठ घन्टा ड्यूटी करै छैथ, चारि घन्टा बाटेमे लगै छैन। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नइ रखबैन तँ पारो ने लगतैन। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैथ? फुलडाली रखिते लालकाकीक मनमे एलैन, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घासरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि घड़ी दिस देखली। अखन तक समए आ काजमे तल-बितल नइ देख मनमे खुशी भेलैन। फेर नजैर पतिपर गेलैन। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना लालकाकीक मन करुआ गेलैन। बुदबुदेली-

"एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू-मुहेँ ससरत?"

बुदबुदाइते लालकाकीक मनमे उठलैन आन दिन जकाँ जारैन सुखाएल नइ अछि। भानसमे देरी लागत, से नइ तँ पानि चढ़ा पहिने चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत।

बाड़ी पहुँच पतरका जारैन सभ बीछ कऽ चूल्हि लग आनि कऽ रखली। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि◌-काटि थारीमे राखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लैन। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लैन। मनमे एलैन, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छइ। फेर मन पतिपर गेलैन। उमैक कऽ मन कहलकैन, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलैन। हृदए बिहुँसि गेलैन। 'जइ मर्दकेँ आनि नहि आ जइ बरदकेँ पानि नहि, ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मन पड़लैन दुरगमनियाँ पिढ़ी। जहिना बाबू सतपुड़ैन खोधाएल कटहरक पिढ़ी देलैन आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छैथ...।

थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देख लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन-काल जे बजबे ने करता हुनका कहले की जाए। तँए लालकाकी चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिर पढ़ुआकाका घरसँ निकैलते रहैथ कि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलैन। पत्नीक काज देख मन मानि गेलैन जे सिपाही जकाँ छैथ। मनमे खुशी उपकलैन। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-पाछू लालकाकी आँगनसँ निकैल डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआकाका पुछलकैन-

"किछु कहबोक अछि?"

लालकाकी कहली-

"अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोरे दुनू दिस विदा भेलैथ। मुस्कियाइत पढ़ुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुमि कऽ देख डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी लगलैन। भेलैन जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नहि। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द 'तनदेही'पर गेलैन। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द, विशारद पास पढ़ुआकाकाकेँ ओझरा देलकैन। पाछू घुमि पत्नी दिस तकलैन तँ देखलैन जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कण्ठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलैन। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चन्दन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलैन केतए-सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नइ केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलिऐन कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिए-सँ पुछि लिऐन। ओहो तँ आन नहि, अर्द्धांगिनीए छैथ। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने छी। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रूपैआ हाथमे दऽ दइ छिऐन। मुदा ओइ रूपैआकेँ नचबै तँ वएह छैथ। तैसंग पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छैथ...।

पढ़ुआकाका जेते दुनू गोरेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बुझि पड़ैन। मन वौआ गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबा चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलैन। किए ने दुनू गोरे

विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलैन। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजैर गेलैन, सवुर भेलैन जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास तँए थकान नइ बुझि पड़ैन मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहैथ कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखलैन। सीढ़ी लग पहुँच पढ़ुआकाका आगू तकला जे चपरासी घुमि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नै देख काकामे पौरुख जगलैन। मनमे उठलैन अखन तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तखन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब! सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलैन आगूसँ घेर लेलकैन। जे चपरासी 'बाबा' कहैए, ऑफिसोक सभ 'भैये-काका' कहै छैथ मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए? जँ से नहि, तँ परिवारमे किए कहल जाइए? नजैर ठनकलैन, अगर बीस बर्खक अधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए..! पढ़ुआ-कक्काक मन हल्लुक भेलैन। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलैन...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतैन। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसैर गेल छल।

स्टाफ-रूम पहुँचते पढ़ुआकाकाकेँ एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलैन। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहैन। मुदा कुरसीपर बैसते तह दैत मनसँ हटौलैन। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़ैन। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहैथ तँ ओहन बेवहारे नै छेलैन। चालिसँ थाकल रहबे करैथ, आँखि झल-फलाए लगलैन। गमे-गम नीनो आबए लगलैन। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलैन। पढ़ुआकाकाकेँ आँखि मूनल देख इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआ-कक्काक आँखि बन्न, तँए किछु बुझबे ने करैथ।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन अछि तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ पसैर गेल, सबहक देह-हाथ चुलचुलाए लगलैन। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला, ऑफिसक बड़ाबाबू आबि पढ़ुआकाकाकेँ

कहलकैन-

"अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?"

कहि बड़ाबाबू ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगियो सभ निकैल गेलैन। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजैर गेलैन। आन दिनक जे बोली रहै छेलैन, तइ हिसावे औझुकामे किछु करुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला..! पढ़ुआ-कक्काकेँ नौकरीक एहसास भेलैन। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकैड़ पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहिए-सँ विद्यालयक सरकारीकरण भेल तहिए-सँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नइ भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि, अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बन्हनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगूमे बढ़ा देलकैन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पैत टुटैए तहिना पढ़ुआकाकाकेँ नौकरी टुटि रहलैन हेन। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआकाका हतास भऽ गेला। मनमे उठलैन सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं तइमे-सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नइ भेल। आ जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हेरलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल! की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि..?

आगूमे प्रश्न ठाढ़ होइते पढ़ुआ-कक्काक मोन पड़लैन, अपना संग किनको

हाथो पकड़ने छिऐन किने? दू परानीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै, ओ हमरा बुते कएल हएत? अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलिऐन। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत? की जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै-जोकर हम नइ छी..?

द्वन्द्वमे पड़ल पढ़ुआ-कक्काक छाती दलकए लगलैन। तैबीच चपरासी आबि टोकलकैन-

"कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।"

अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआकाका कोठरीसँ निकैल पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठैन। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगैठ कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलैन। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि, तेसर मासक अन्तिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब। ..निचला पाँती पढ़ौ ने लगला, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछैरक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत तहिना पढ़ुओ-कक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलैन। मनक लहैरसँ पएर तनेलैन। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घुमि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहैन। फुरलैन, जखन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तखन मरैयोक तँ ढेरी उपए अछिए। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत! जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु-ले अपराध...।

बीच रस्तापर आबि पढ़ुआकाका क्रोधक लहैरमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते फुरलैन, जखन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तखन एक्केटा उपए अछि जे जिनकर हाथ पकैड़ भार नेने छिऐन तिनका लग पहुँच कहिऐन जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मन्दिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबैन। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब...। तखने एकटा छुछुनैर दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआइत टपैत रहए, कि पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। ताबे

छुछुनैर ससैर कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलैन जे छुछुनैर पैरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलैन। मन मानि गेलैन जे छुछुनैर काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलैन। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलैन। सभ चलि गेल छला। मनमे एलैन छुछुनैरक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटैक कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। मुदा असगरे पढ़ुआकाका, तँए मनमे उठलैन- ताधैर अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।

मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि दैथ। अबैत-अबैत गामक सीमापर आबि गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहैन। किसाने परिवार देख लालकाकीक पिता कुटुमैती केलैन। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदए जुड़ा गेल रहैन जे लक्ष्मीक संग सरस्वतियो छैन।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बुझि पड़लैन। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकैन। पानि जकाँ बुधि पसैर गेलैन। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलैन। थुस-दे बैस रहला। मन पड़लैन अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्युक शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक अछि, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि..! पढ़ुआ-कक्काक मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलैन। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बहए लगलैन। हृदए पसीज गेलैन। मन पड़लैन अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलिऐन। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज,

हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिऐन। अपनो एते होश नै केलौं जे साए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत! आब शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं! निराश मनमे सासुर मन पड़लैन। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा-ले रूसैए! मुदा सासु मन पड़िते पढ़ुआकाका मधुआए लगला। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पघिल गेलैन। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छैथ। मुदा फेर मनमे उठलैन जे रूसबो तँ केतेको रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलैन जे सियानी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ सुतैर जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटैक जाएब। फुरफुरा कऽ उठि पढ़ुआकाका घर दिस विदा भेला। चारूभर चकोना होइ छला जे कियो देखए नहि। मुदा से सुतरलैन। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला-

"ई घर मनुखक रहैबला छी! एमहर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओमहर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि..!"

कहि, रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि पड़ि रहला। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देख नेने रहैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीए-मे छोड़ि लालकाकी आँगन दिस बढ़ली तँ किछु अवाज सुनि पड़लैन, मुदा नीक नहाँति नइ बुझि सकली। ओना, लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ बाजल छला। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला-

"एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाइर करैबला...।"

पढ़ुआ-कक्काक बात लालकाकी बुझि गेलखिन जे केतौ किछु भेलैन हेन। दू बीघा हटल अवाजमे लालकाकी बजली-

"एलौं।"

'एलौं' सुनि पढ़ुआकाकाकेँ सबुर भेलैन। आ लालकाकी मने-मन सोचै छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी वौस कऽ शान्त कऽ देबैन। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलैन।

पत्नीक अवाज सुनि पढ़ुआ-कक्काक छाती दहैल गेलैन। नाँगैर सुरैर कऽ विद्यालय घर धरौलक! केतौ-के ने रहलौं। मन गरमेलैन। बमैक कऽ बजला-

"काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइए-सँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हेतै तँ मनिआर्डर कऽ रूपैआ पठा देत, नइ तँ नै पठबऽ।"

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना पढ़ुआ-कक्काक लगले मन थलथला गेलैन। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि..? विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौं हेन? आकि अर्थशास्त्र पढ़ैक अभाव रहल?

पढ़ुआ-कक्काक लग आबि लालकाकी पुछलकैन-

"चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला रखने छी, नेने आएब?"

पत्नीक बात सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलैन। मुदा आस लगिते मन दोसर दिस भऽ गेलैन। खिसिया कऽ बजला-

"हूँह! चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा!"

मुस्की दैत लालकाकी पुछलखिन-

"हमरे छी, अहाँक नइ छी?"

पत्नीक बात सुनि मन सिहैर उठलैन। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पढ़ुआ-कक्काक गरमी कमलैन। बजला-

"एकटा गप कहए चाहै छी?"

"भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि, पहिने हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अन्डी-तेलसँ घुट्ठियो ससाइर देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदिकाल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहैरक गप छी।"

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन आगिमे पकैत भँट्टा जकाँ असुआ गेलैन। असुआइते लजबिजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलैन। कल पड़ल रोगी जकाँ पतिकेँ देख लालकाकी सहैट कऽ निकैल, ठोकले बाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसैर गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा

धियानमे रहलैन। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोल्होअना लूरि छैन, ओना, अन्नक खेती तँ बटाइ लगा नेने छैथ, मुदा पाँच कट्ठा चौमास आ गाछी-बिरछीक सेवा टहल अपने करै छैथ। दूटा गाइयो पोसियाँ लगौने छैथ, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छैन। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छैथ।

लालकाकी हँसुआ, खुरपी आ कोदारिकेँ आँगनमे रखि, झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पिबते रहैथ आकि मन पड़लैन पतिक रूसब। फेर मन पड़लैन अपन जिनगी। जाधैर माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोरेक इच्छा सदिकाल यएह रहैन जे धिया-पुता कखनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बुढ़ी–सासु–सदिकाल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छैथ। तँए आँगनमे सदिछन बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती-धर्मक पालन करैत एली। मन पड़लैन सावित्री, दमयन्ती...। करुआ कऽ किछु बाजब उचित नहि। तैबीच दरबज्जा परहक अवाज सुनलैन। "हे भगवान, जानह तूँ।"

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलोके-मे जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िए-मे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे केते जीब सकै छी..?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पढ़ुआ-कक्काक टुटल मन कलैप उठलैन। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन-

"पएर सोझ करू।"

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढ़ुआ-कक्काक बोल निकललैन-

"पएर नै टटाइए, हृदैक बेथा छी।"

पतिक बात सुनि फरैक कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

"साँचे स्त्रीगण सबहक-मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नँगरकट होइ छैथ! कुत्ता जकाँ सदिकाल नाँगैर टेढ़े रहै छैन।"

"जे बुझी।"

"तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोरेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पढ़ुआ-कक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलैन। जाधैर ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधैर सत्ती साध्वी तँ...।

लालकाकीकेँ चौकीपर बैसते पढ़ुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

"सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।"

'अहाँ छी' बजिते पढ़ुआकाकाकेँ मन पड़लैन छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भारी भूल भेल जे अहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ-मुहेँ सूनब।"

अवसर पाबि लालकाकी पुछि देलखिन-

"अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैवक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब। अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछैल कऽ चौकीपर ठाढ़ होइत पढ़ुआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जखन अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तखन तँ...।"

❍

शब्द संख्या : 3057

ऑपरेशन

पत्नीक बढ़ैत बेमारी देख चेतानन्द डाक्टर ऐठाम जाइले रूपैआक ओरियान करए लगला। अपना हाथमे तीनेटा पचसटकही रहैन। कम-सँ-कम तँ पाँचो हजार चाही। जहिना गाराामे उतरी नेने लोक घराड़ी लिखैले रजिष्ट्री ऑफिस जाइत तहिना चेतानन्द चौमासपर रूपैआ उठा पत्नीकेँ संग नेने डाक्टर ऐठाम पहुँचला। ओना सुनियाकेँ गैस्टिकक शिकाइत चारि-पाँच बर्खसँ छैन मुदा आने-सभ जकाँ एकटा-दूटा गोटी खा-खा रोगकेँ दबने रहैथ।

जाँच-पड़ताल केलापर डाक्टर बुझि गेलखिन जे सात दिनक अभ्यन्तरे दुनियाँ छोड़ि देती। मुदा जखन कियो मृत्युक बाट पकड़ैए तखने डाक्टर ऐठाम जाइत अछि। बोल-भरोस दैत चेतानन्दकेँ डाक्टर कहलकैन-

"हिनका आँतमे पत्थल-गोला भऽ गेल छैन, ऑपरेशन करए पड़त। मुदा शरीर तेते अब्बल भऽ गेल छैन जे ऑपरेशन करैसँ पहिने पाँच-छह दिन दबाइ खाए पड़तैन। देहमे खून बनतैन तखन ऑपरेशन असान हएत।"

कहि दबाइक पुरजी बना देलखिन। भाड़ाक कोठलीमे पहुँच पत्नीकेँ चौकीपर सुता, दुनू बच्चा–मांगैन आ बिलटी–केँ पत्नीक लगमे बैसा चेतानन्द बजार विदा भेला। पहिने दबाइक दोकानपर पहुँच दबाइ कीनि, फूट-पाथेक दोकानमे रोटी-तरकारी कीनि डेरा एला। डेरा आबि समान रखि कलपर सँ पानि अनलैन। दबाइ खुआ दुनू बच्चाक संग अपनो खाए लगला। ओना, चेतानन्दकेँ खाइक मन नै होइन, कण्ठसँ निच्चाँ धँसबे ने करैन। मुदा पानि पीब-पीब खाए लगला। मन कहैन जँ अदहो पेट खाएब नहि, तँ दिन-राति दौड़-बरहा केना कएल हएत! जी-जाँति कऽ चेतानन्द तरकारीक संग तीनटा रोटी खाए दू गिलास पानि पीलैन। पानि पीब चेतानन्द बिलटीकेँ पानि पिआ पानिक हाथे मुँह पोछि देलखिन। मांगैन अपने हाथे मुँह धोइ उठि कऽ ठाढ़ भेल। आ थारी उठा

अचोनामे धोइ कोणमे रखलैन।

पड़ल-पड़ल सुनिया सभ किछु देखै छेली। पतिक मनमे सटि थारी धोइत अपन रूप देखली। जहिना ऐनामे अपन चेहरा लोक देखैए तहिना सुनिया देखए लगली। दुनू भाए-बहिनकेँ पाँजर लगा सुतबैत सुनिया पतिकेँ कहलैन-

"अहूँक देह-हाथ बथैत हएत, पड़ि रहू।"

बात बदलैत चेतानन्द बजला-

"मन केहेन बुझि पड़ैए?"

"अखन की कहब।"

बिनु बात दोहरौने चेतानन्द जाजीम बिछा निच्चेमे पड़ि रहला। बिलटीक देहपर हाथ सहलबैत सुनिया बजली-

"डाक्टरे साहैब जकाँ बुच्चीकेँ डॉक्टरी पढ़ाएब। जखन बुच्ची डाक्टरी पढ़ि लेत तँ अहिना कुरसी-टेबुल लगा कऽ काज करत, किने बुच्ची?"

तीन बर्खक बिलटी बाजल-

"नहि। खजुरिया दीदी जहाइन हमरो बिआह कऽ दे?"

बेटीक-मुहेँ बिआहक बात सुनि सुनिया हरा गेली। मनमे उठलैन घुमि कऽ घर जाएब तखन ने। बेमारी छुटत की नहि से के कहलक। दिन-राति तँ निच्चे-मुहेँ भेल जाइ छी। खेनाइयो-पीनाइ छुटले जाइए! विचार बदललैन- जँ मरि जाएब तँ बेटीक बिआह केना हएत? की बिलटी बिलैटिए जाएत? जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरो बिआह हएब भारी भऽ गेल छइ। ई तँ सहजे मइटुग्गर भऽ जाएत। मइटुग्गर बेटीकेँ कियो अपना घर लैयो जाइले तैयार हएत कि नहि। हे भगवान! एहेन युगमे बेटी किए देलह? जँ देबे केलह तँ ऐ बेटीक कोन दोख भेल जे मइटुग्गर भऽ दुनियाँक नजैरमे खसल रहत? यएह ने भानस-भात करैक लूरि नै हेतइ। की मनुख माटि सदृश छी जे एकबेर आगिमे पकलापर अपन स्वरूप बदैल दइत। मनुख तँ ओहन होइए जे अनाड़ी-सँ-जीवनी, भोगी-सँ-जोगी आ डाकू-सँ-साधू बनि जाइत अछि। की विधाता हमरा कपारमे यएह लिखलैन जे संगीक संग छोड़ि असकरे वोनमे वौआइले छोड़ि दिऐन। जँ सएह लिखैक छेलैन तँ एक उमरिया देख किए ने जोड़ा लगौलैन! तैबीच आँतमे दरद

उठलैन। चिचियाइत कऽ बजली-

"हौ बाप, आब नै बँचब!"

खालीए सिमटीपर जाजीम बिछा, कपड़ाक मोटरी मुड़ीतर रखि उतान करे] बन्न दुनू आँखिकेँ बामा बाहिसँ झाँपि चेतानन्द पड़ल छला। मनमे उठलैन। अखन सीमाक सिपाही जकाँ ड्यूटीमे छी। ड्यूटीमे अराम कहाँ होइ छइ? अरामो तँ केते रंगक होइए। ओहनो अराम होइए जे निन्नसँ प्रेम करैए आ एहनो होइए जे अपन दुख निवारणक बाट जोहैए। फेर भेलैन भरिसक पत्नी नै बँचती! दुनू गोरेक बीचक अन्तिम समए गुजैर रहल अछि। अन्तिम समैपर नजैर पड़िते चेतानन्दकेँ मनमे उठलैन- लड़का-लड़कीक माने कोनो बर-कन्याक बिआह स्थापित करैमे उमेरक मानदंड किएक बनौल जाइत? जँ सन्ताने-ले होइए तँ तइमे उम्रक लगीचक कोन प्रयोजन? पनरह बर्खसँ पचास बर्खक सुविधा अछि। उम्रक बरबैर तँ अइले मानल गेल अछि किने जे दीर्घ जिनगी संग-संग चलैत रहए। तखन एना किए भेल? विद्यार्थी जीवनमे सपना देखै छेलौं जे मातृभूमिक सेवा करब। तँए नोकरी नै केलौं। ओना, नोकरी केतए करितौं? जैठाम जन्म भेल अछि ओइठाम ने शिक्षण संस्थान अछि आ ने कल-कारखाना, ने सरकारी कार्यालय अछि आ ने अस्पताल। की ऐठाम ऐ सबहक जरूरत नै छइ? की हमसभ सप्पत खेने छी जे अपना माटि-पानि परहक कारखानाक वस्तुक उपयोग नै करब, आकि शासनमे सहयोग नै करबै, आकि शिक्षा-स्वास्थक लाभ नै लेब? मुदा अखन धरि ऐसँ आगू बुझैक ने अवसर भेटल आ ने करैक जमीन। देश-सेवा की? यएह ने जे अपनो देशकेँ एक्कैसम शताब्दीक दुनियाँक कतारमे ठाढ़ करी। मुदा कतार तँ एकसँ लऽ कऽ साए तकक होइए। तइमे केते? एक दिस दुनियाँक गनल-चुनल धनवान, तँ दोसर दिस सड़कपर भीख मंगनिहारक संख्या ओते अछि जेते कताक देशक जनसंख्या नै छइ। तैकाल पत्नी मन पड़लैन। जहिना अन्हार रातिमे माइक पाँजर लग सूतल बच्चा निन्न टुटिते उठि कऽ माइक सूतल मुँह देख पुन: गर लगा कऽ सुति रहैत तहिना चेतानन्द पत्नीक मूनल आँखि देख पुन: ओछाइनपर आबि पड़ि रहला।

ओछाइनपर पड़िते चेतानन्दकेँ मन पड़लैन कौलेजक ओ दिन जइ दिन सरस्वती पूजा स्थलपर सुनियासँ पहिल भेँट भेलैन। मुदा लगले मनमे आबि गेलैन कौलेजक डिग्री आ पी.एच-डी.क रजिष्ट्रेशन। पाँच बर्ख भऽ गेल मुदा

एक्को अक्षर अखन धरि लिखि नै पेलौं। लिखियो केना पबितौं? अखन धरि तँ यएह ने बुझि पेलौं जे देश सेवा की? मुदा आब तँ सहजे पत्नीक भार कपारपर पड़ने बच्चाक माइयो हुअ पड़त। दोबर भार पड़त। बच्चाकेँ पढ़ाएब आकि अपने पढ़ब। कौलेज छोड़ला पछाइतसँ अखन धरि 'गृहसूत्रो' धुरझाड़ पढ़ल आ ने सीखल भेल। 'धर्मसूत्र' तँ पछुआएले अछि! खाली मंगलाचरण रटि नेने नै ने हएत। विधातोक अजीब खेल छैन। जहिना गणेशजी मुसो आ बाघोकेँ नाँगैर पकैड़ लड़बै छैथ तहिना विधातो रंग-बिरंगक जगहपर रंग-बिरंगक बानरक नाच, मदारी जकाँ ठाढ़ केने छैथ। एक दिस हार-पाँजर टुटल मनुखकेँ अपन देहक सोनित दऽ कियो देशसेवा करैत तँ दोसर दिस एक लबनी ताड़ी पिआ देशभक्त बनैत। कियो असमसानमे अपन बेटाक लहास जरबैत जिनगी देखैत तँ दोसर सजल-धजल विशाल भवनमे बैस मस्तीक जिनगीमे पलड़ैए! तैबीच सुनियाक बाजब सुनलैन- "हौ बाप, आब नै बँचब!"

सुनिते हृदए चहैक गेलैन। मनकेँ थीर करैत आगूक बात सुनैले कान ठाढ़ केलैन। मुदा आगूक बात नै सुनि चेतानन्दक मनमे उठलैन- जहिना मिझेबैकाल डिबिया भुक-दे जोरसँ बरि जाइए, तहिना तँ ने भऽ गेल! मन गुन-धुनमे पड़ि गेलैन। एक मन कहैन जे जँ पत्नीक परान छुटि गेल होनि तखन की करब? आ दोसर मन कहैन जे परान नै छुटल हेतैन तखन की करब? ऐठाम तँ चारिए गोरे छी। तहूमे दूटा बच्चे अछि। जँ एक्कोरत्ती आँखिसँ नोर बहत तँ बच्चा सभ अनेरे चिचियाए लगत। गाममे तँ नइ छी जे समाजक लोक आबि कऽ मदैतो करता। मुदा ई जानि लेब तँ जरूरी अछि किने जे परान छुटि गेलैन आकि बँचल छैन। ओछाइनेपर सँ चेतानन्द पुछलखिन-

"एना किए बजलौं?"

पतिक बात सुनि सुनिया बजली-

"दर्दक धक्का लगि गेल छेलए, मुदा अखन असथिर भऽ गेल।"

साँझक आठ बजे डाक्टर साहैब क्लिनिकसँ आबि सोझे वाथरूम विदा भेला। साँझू पहर टहलए नै जाइथ। स्पष्ट विचार रहैन जे टहलब तँ हुनकर छिऐन जे अपना पएरे चलै छैथ, गाड़ी-सवारीमे बैस टहलब मन बहलाएब छी। जाधैर वाथ रूमसँ निकलला ताधैर पत्नी टेबुल सजा, चौकीदार जकाँ केवाड़क

परदा लग ठाढ़ छेलखिन। कुरसीपर बैस डाक्टर साहैब रस-पानि कऽ अराम कुरसीपर बैस गेला। मन फुहराम हुअ लगलैन। टेबुल सम्हारि पत्नी चलि गेलखिन। भरि दिनक हिसाब जोड़ए लगला। नापल रोगी, नापल फीस तँए जोड़ैमे देरी नै लगलैन। आमदनीक हिसाब जोड़ि काजपर नजैर दौड़ौलैन। काजक ऊपर होइत मन छिछलैत सुनियापर आबि अँटैक गेलैन। मुदा लगले काज हरा गेलैन। मन उड़ि कऽ अपनेपर चलि एलैन। अपनापर अबिते खुशीसँ मन ठहाका मारलकैन। अँइ, कहू जे आठ घन्टा ड्यूटीक नियम अछि, तैठाम बारह घन्टा खटै छी तखन किए लोक बजैए जे 'फल्लाँ डाक्टर दरमहे उठबैटा-ले अस्पताल जाइ छैथ!' यएह ने जे खानगी रोगी देखै छी! मुदा जाधैर अस्पतालक समुचित बेवस्था नै हएत ताधैर डाक्टरे की करता? जैठाम अखन धरि रोगोक गिनती–पहचान–सेरिया कऽ नइ भेल अछि तैठाम रोगीक हिसाब जोड़ब औगताइमे बाजब हएत। फेर मन घुमि सुनियापर पहुँच गेलैन। आइ धरि एक्कोटा रोगी इलाजक बीच मरल नहि, मुदा...। आखिर कमी की अछि? जे दोख लगत? डाक्टर साहैबक मन नचलैन। गंजीए-लूंगी पहिरने चेतानन्दक कोठरी दिस विदा भेला। सोगमे डुमल चेतानन्दकेँ पुछलखिन-

"कहाली जगले छैथ आकि सूतल?"

डाक्टर साहैबक बात सुनि देह-हाथ समैट सुनिया बजली-

"जगले छी डाक्टर साहैब।"

सुनियेँक चौकीपर बैस डाक्टर साहैब पुछलखिन-

"केते दिनसँ दुखित छी?"

"ठीक-ठीक तँ नै कहि सकै छी मुदा पान-छह बर्खसँ पेटमे गैस बनए लगल। गाममे बहुतो गोरेकेँ ई रोग छैन। वएह सभ दबाइ बता देलैन। एकटा-दूटा गोटी सभ दिन खाइ छेलौं, नीके रहै छेलौं।"

नजैर दौगबैत डाक्टर साहैब पुछलखिन- "उपासो करै छी?"

"केना नै करब! अहीपर तँ आंग-समांग, बाड़ी-फुलवाड़ी लहराइए।"

"मासमे केतेक दिन सहै छी?"

"सात दिनमे रवि, मंगलवारी, शुक्रवारी तँ करिते छी। एकर बादो

पाबैनक उपास सेहो करिते छी।"

"देहक काट-खोंट करए पड़त, ऑपरेशन हएत।"

"दोसर उपाय नै छइ। अपरेशनक कोनो ठेकान नै छै, बाल-बच्चा बिलैट जाएत।"

"हँ, उपाय छइ। दबाइ लिखि दइ छी। साँझ-परात खाइत रहलासँ नीके रहब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

चौकीपर सँ डाक्टर उठि चेतानन्दकेँ बाँहि पकैड़ कोठरीसँ बाहर लऽ जा कहलखिन-

"आँतमे एहेन गोला बनि गेल छैन जे बिना काटने नै हेतैन। तहूमे रोग बढ़ैत-बढ़ैत एते जुआ गेलैन जे देहक कोनो लज्जैते नइ रहलैन। अंग-अंग बैस गेलैन। तीनसँ चारि दिनक जिनगी बँचल छैन। नीक हएत अहाँ भोरे गाम चलि जाउ। ऐठाम पहपैटमे पड़ि जाएब। बजारमे सभ सुविधा रहितो कियो केकरो बेरपर ठाढ़ नै होइ छइ।"

कहि डाक्टर साहैब घरमुहाँ भेला। कोठरी आबि चेतानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- "डाक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलैन।"

"बड़बढ़ियाँ। भोरे विदा भऽ जाएब।"

चेतानन्दक नजैर सुनियाक परोछ भेलापर गेलैन। मनमे उठलैन माइक मृत्यु बेटा-बेटीकेँ कलंकक मोटरी कपारपर देने जाइ छइ। जँ से नहि, तँ मइटुग्गरकेँ ओछ-आँखिए किए देखल जाइए। पत्नीक मृत्युपरान्त जँ परिवार ठाढ़ करैले दोसर बिआह करब तँ आरो पहपैट बढ़त। कियो एहेन नइ हएत जे भूखल बच्चाकेँ खाइले कहत आकि पुछबै करत जे बच्चा भूखल अछि कि खेने अछि। मुदा ई जरूर पुछतै जे सतमाए खाइले दइ छथुन कि नहि। रंग-बिरंगक अबलट जोड़ब शुरू कऽ देत..!

❍

शब्द संख्या : 1616

धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस सालक पछाइत धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेला जइसँ निकलब कठिन भऽ गेलैन। सुसम्पन्न परिवारमे जन्म भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव नइ भेल छेलैन। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघ-सँ-पैघ काज उपस्थित भेने निपैट जाइन। लोप होइत जमीन्दारी बेवस्था, ढेरो सम्पैत गाम-सँ-बाहर धरि रहैन। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलैन। मन्दिर, स्कूल, खेत, पोखैर सभ बँटा गेलैन। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठौंस तरे भेटलैन। रघुनाथकेँ चारि कन्या तीन पुत्र। दू कन्याक बिआह साझीए-मे भेल छेलैन। बाँकी दुनू कन्याक बिआहमे आठ बीघा खेत बिकलैन। घरक बरतन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लगि गेलैन। तैयो पहिलुका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुके भेलैन।

बच्चेसँ धर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलैन। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखन धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे आब बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ, तँए परिवारक भविस मात्र अनुमानसँ करैथ। अखन धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बीतल। जहिना गंगामे सुरूजक प्रकाश पड़लासँ चमकैए तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पष्ट झलकैत रहैन।

आरम्भमे कम वेतन आ छोट परिवारो धर्मनाथकेँ रहैन। जे आस्ते-आस्ते परिवारो बढ़लैन आ वेतनो। पाछू-पाछू महगियो पछुऔलकैन। बासी बँचए ने कुत्ता खाए। मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन।

परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने छला जे वेतनक भीतरे चलि

जाइन। मुदा संगी-साथीक बीच पैंच-पालट सेहो चलैत रहैन। कर्ज लेब आ सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझैथ। सदिखन परियास रहैन जे परिवार मेहनती बनए। पत्नी समैक उपयोग नियमबद्ध भऽ करैन। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-बस्तरपर विशेष धियान राखैथ। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सुइया-डोराक छोट-छीन काज इत्यादि अपने कऽ लइ छेली। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-कलापसँ प्रभावित छल। सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गाममे सपरिवार बितबै छला। छुट्टीए मासक वेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबै छला।

रघुनाथ मने-मन सोचै छला जे गामक अज-गज देख धर्मनाथकेँ होइत हेतैन जे कोनो वस्तुक कमी नहि, मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन अछि। जेते खेत बिकाइ छेलैन ओते उपजो कमिते जाइ छेलैन।

नमहर-नमहर घर। जेकर मरम्मत आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइ छेलैन। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अन्डीक गाछ सौंसे घरमे जन्मल। जँ टुटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेच लितैथ तैयो केते काज ससैर जैतैन मुदा जँ घरक पजेबा बिकाएत तँ बाँकीए की रहत! घरक आगू झील जकाँ पोखैर। पोखैरक चारू महारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनौल। पुरान भेने चारू घाट टुटि गेल छल, जइसँ नहाइयो-जोकर आब नइ रहल। पजेबा गुड़ैक-गुड़ैक निच्चाँ-पानिमे छिड़िया गेल। पैरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइए छोड़ि देलक। सौंसे पोखैर समाढ़ आ कुम्ही तेना वोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल। बीघा भरिक फुलवाड़ी, जइमे सैयो रंगक फूल लगौल छल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करै छल जे अखन गाए-महींसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मनमे विचारि आएल छला जे जेठ बेटीक बिआह करब। आशा बी.ए. आनर्सक परीक्षा देने छल। कन्यादान माए-बाप-ले ओहने होइत जेहने बेटा-ले वृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बर्ख आशा टपि गेल, तँए बिआह करब आवश्यक छेलैन। मने-मन धर्मनाथ सोचै छला जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जइ सम्बन्धमे किछु ने बुझै छी। केना हएत? की करब? किनका कहबैन? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल रहैन। हमहूँ तँ समाजमे केकरो कोनो उपकार नै केलिऐ

तँए कियो हमरे किए करत? गुनधुन करैत कोठरीसँ निकैल, असकरे टहलबो करैथ आ सोचबो करैथ।

गामक बेरोजगार युवक सभ, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देख कियो साइकिलपर चढ़ि तँ, कियो मोटर साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिर केश फहरबैत, बामा हाथे रुमाल आदहिना होथे साइकिलक हेण्डिलपर पकड़ने, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटैत। ओना धर्मनाथ मुड़ी निच्चाँ केने चलैथ मुदा अफसरक आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथमे कोनो करुआहट नहि, जे प्रतिष्ठाकेँ मिसियो भरि डगमगैबतैन। मने-मन यएह सोचैथ जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु छी जे ने केकरो देने होइ छै आ ने केकरो लेने जाइते छइ। ओ अपने केने होइ छै आ अपने केने जाइ छइ।

गाम एला धर्मनाथकेँ सात दिन भऽ गेलैन। मुदा अखन धरि बिआहक कोनो चरचो नइ भेल।

आठम दिन धर्मनाथ आशाक बिआहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगला जे अखन धरि जेहेन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एते पढ़ल-लिखल बर भेटब मोसकिल अछि। जँ भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नइ रहत। धर्मनाथ केते खर्च करता से कहबे ने केलैन। पुछबैन केना? हमरो तँ पोतीए छी। खाएर.., बोल-भरोस दइक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकेँ जानकारी दैत भँजियबैले कहलखिन।

जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचारकेँ बदैल देलकैन। जखन पहिलुका सुख-भोग मन पड़ै छेलैन तँ आँखिसँ नोर टघड़ए लगैन। मुदा आब पछतेनहि की, चिड़िया तँ चुकि गेल! जेतबो दिन मृत्युक शेष छैन ओहो केते निच्चाँ ढड़कतैन सेहो ठीक नहि। सिरिफ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़का भाँजपर चढ़लैन मुदा कुल-मूल दब।

जमा केलहा सहित बिआहक खर्च लेल धर्मनाथ एक लाख रूपैआ लऽ कऽ आएल छला। दरमाहापर जिनिहारकेँ परिवारक खर्च पुरौलापर जेतेक बँचैत ओ जँ जिनगियो भरि जमा तरता तैयो आइक युगमे एकटा बेटीक बिआह पार

लगब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बुझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहैन। इमान आ चरित्रकेँ बँचबैत धर्मनाथ ऊपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसा आसानीसँ ऑफिसक काज निपटा लइ छला। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फुरबे ने करैन। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैथ जे कियो मदैत करैबला छैथ कि नहि! एकाएक धर्मनाथकेँ पच्चीस-तीस साल पहिलुका बात मन पड़लैन। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ समाजिक लोक सेहो छैथ, गुरुओ छैथ, दू साल पढ़ेनौं छैथ, हुनका जा कऽ कहिऐन। हमरासँ तँ कहियो हुनका मुहाँ-ठुट्ठी नइ भेलैन मुदा पिताजीसँ बक्क-झक्क होइते रहै छैन। सायंकाल धर्मनाथ राधाकेँ कहलखिन-

"काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जँ काकाजी भेँट भऽ जेता तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।"

एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहली। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकैत रहैन, पछाइत राधाक नजैर चन्द्रमुखी आशापर पड़लैन, जे अखन धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छल। अनासुरती कमी बुझि पड़ए लगलैन। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैए आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइए, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बुझि पड़ए लगलैन। मने-मन सोचए लगली। यएह छी आजुक समाज। जे बेटी समाजक बुझल जाइए वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दइए। ..गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहली।

माइक खसल मन देख आशा पुछलकैन-

"माए, मन किए एते खसल छौ?"

अपनाकेँ छिपबैत राधा बजली-

"नइ- नइ, कहाँ! क...।"

राधा अपन बेथाकेँ छिपबए लगली, मुदा मलिन मुँह आ बोलक ध्वनि बेथाकेँ अढ़े-अढ़ निकालैत रहैन।

प्रोफेसर रामरतनक दरबज्जा सुन्न देख धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगला जे भरिसक नै छैथ। मुदा बिना भाँज लगौने घुमबो उचित नहि। असगरे धर्मनाथ

प्रोफेसर रामरतनक दुआरपर ठाढ़ रहला। थोड़े-कालक पछाइत तीन-चारि गोरेकेँ अबैत देख बोली अकानैत धर्मनाथक हृदैमे आशा जगलैन। एक गोरेक हाथमे दूधक लोटा। प्रोफेसर रामरतनकेँ देखते जेना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सुरूज हवाक सिहकीसँ छँटि जाइए आ भुक-दे सुरूज देख पड़ैत तहिना धर्मनाथकेँ भेलैन। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकेँ गोड़ लगलैन।

धर्मनाथकेँ असीरवाद दैत बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसबैत प्रोफेसर रामरतन अपने हाथ-पएर धोइले कलपर गेला। पत्नी चित्रलेखा लालटेन नेस आँगनसँ नेने एली। चित्रलेखोकेँ देखते धर्मनाथ गोड़ लगलैन।

असिरवाद दैत चित्रलेखा बजली-

"भगवान, एक-सँ-एक्कैस करैथ। बौआ, अखन केतए छी?"

"चाची, छी तँ बड़ दूर, जनिते हेबै केरल।"

"परिवार आनन्दसँ रहै छैथ किने?"

"हँ, अपने सबहक दयासँ सभ आनन्द अछि।"

"बच्चा?"

"तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।"

"आशा बिआह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ।"

"अपनो सएह विचार अछि। तखन तँ...।"

"भगवान थोड़े अधला करता। जे मनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकेँ देथुन।"

चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलैन जे नोरक बून बनि निकलए चाहै छल, जेकरा अपन बामा हाथसँ धर्मनाथ पोछि लेलैन। मुदा बोली फुटिते धर्मनाथक हृदैक बेथा निकलए लगलैन। एकाएक धर्मनाथक मनमे एलैन जे एते पैघ पदपर रहनिहारकेँ जँ आँखिसँ नोर खसैन जे देशक सभसँ पैघ बुझल जाइए! तखन खुशीसँ के रहैत हएत। ताबे प्रोफेसर रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पएर धोइ खराम पटपटबैत दरबज्जापर एला।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा एली। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगला। प्रोफेसर रामरतन चाहक चुस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पुछलखिन। कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा बिआहक चर्च केलैन।

प्रोफेसर रामरतन कहलखिन-

"केकर बाँकी रहलैए जे अहाँक नै हएत।"

"चाचाजी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज छी तँए अगम-अथाह बुझि पड़ैए।"

मुड़ी डोलबैत रामरतन बजला-

"हँ, ठीके कहलौं। अहाँ हमर समाजे नहि, छात्रो छी तँए अहाँक बेटी की हमर बेटी नहि?"

प्रोफेसर रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक हृदैमे आशाक अँकुर उदित हुअ लगलैन। जहिना धारामे भँसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइ छै तहिना धर्मनाथोकेँ भेलैन।

पच्चीस-तीस बर्ख पहिलुका प्रोफेसर रामरतनक रूप धर्मनाथक हृदैमे नाचए लगलैन। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल छला, जैठामसँ आगूक रस्ता की हएत से बुझबे ने करैथ। अपन बेथा व्यक्त करैत धर्मनाथ बजला-

"दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी बिआहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीति गेल।"

"सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत आ समैपर चलियो जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखन धरि जमीनदार खनदानमे रहलौं, जेकर पतन भऽ गेल। सिरिफ ओकर ढाँचा ठाढ़ छइ। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़ब बुधियारी होएत।"

"अपनेक ऊपर बिआहक भार दऽ रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।"

"दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जेकरे चलैत अहाँक पिताजीक संग

मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहियो कोनो अधला केलौं से अखनो मन नइ अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!"

जोशमे बजैत प्रोफेसर रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेला। ..अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रोफेसर रामरतन ऐठाम एली। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहैथ कि प्रोफेसर रामरतनकेँ जोरसँ बजैत सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगली। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू एली। दरबज्जा लग चारू गोरेकेँ देख प्रोफेसर रामरतन पुछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते उठि कऽ चारू गोरेकेँ आँगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन-

"जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबैन?"

चारू गोरेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलैन।

प्रोफेसर रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"जहिना आशाक बिआहक चिन्तासँ हृदए थरथराइ छल तहिना चाचाजीक आश्वासनसँ मन हल्लुक भऽ गेल। ओ सभ भार लऽ लेलैन।"

हँसैत राधा बजली-

"निर्बलकेँ बल राम होइ छइ। नीकक फल कखनो अधला नै होइ छइ। थोड़े-काल-ले समाजिक परिवेशमे भाइयो जाइ छै मुदा ओकर परवाह मनुखकेँ नै करैक चाही।"

प्रोफेसर रामरतन दीनानाथसँ बिआहक सम्बन्धमे सभ बात केलैन। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नहि, मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घराड़ियो नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भऽ गाममे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मकेनिक। आशा आ श्यामक बीच बिना दहेजक बिआह पक्का भऽ गेल।

बिआहसँ पहिने समाचार पसैर गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलैन जे एकाएक अचेत भऽ गेला। होश होइते सोचए लगला। एक दिस प्रोफेसर रामरतनक अगुआइमे बिआह होएत जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे धर्मनाथ फेक रहल अछि! ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"जइ आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं ओ सभ पानिमे चलि गेल!"

पत्नी पुछलकैन-

"किए एते करुआएल छी?"

"बोलीए-टा करुआएल अछि, होइए जे लोढ़ीसँ कपार फोड़ि मरि जाइ!"

"एना बताह जकाँ किए बजै छी?"

"हम बताह नइ छी, करेजमे चोट लगल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बुझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नइ रहब। चलू, कल्हिए दुनू परानी काशी। ओत्तै रहब। जखन बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक, तखन जीविए कऽ... ।"

"बड़ीटा दुनियाँ छै, नै हरिअर गाछ भेटत तँ सूखलो गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।"

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलैन, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेली। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत रहला। बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगला। रघुनाथक कानब सुनि चारूकातसँ लोक दौगल आएल। डाक्टर बजौल गेल। जाँचि कऽ डाक्टर कहलकैन-

"दिमागक नस फटि गेलैन। अखने लहेरियासरए लऽ जैयौन।"

गाममे हल्ला भऽ गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेला।

जनिजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लगि गेलैन..! नवकी कन्या सभ बाजए लगली- "बाबाकेँ चुड़ीन लगि गेलैन..!"

धिया-पुता सभ थपड़ी बाजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत-

"बाबा मुइला पुड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।"

❍

शब्द संख्या : 1968

सरोजनी

मझोलका किसान भेलोपर जमीन्दारीक ठाठ-बाठ आ रूआब अखनो हरदेवकेँ छैन्हे। वएह हथिसार सन-सन घर, बीघा भरिक फुलवाड़ी, घरक आगूमे झील सन पोखैर, जेकरा चारू महारमे मेड़हौल घाट। कलम-गाछीक कमी नहि, सभ रंगक आम फुटा-फुटा लगौने। सरही फुटे, कलमी फुटे। एक भागमे सभ रंगक इलची पाँच कट्ठामे। आसामक वोन जकाँ बँसबाड़ि जइमे हजारो बाँस सूखल। शीशोक गाछक डारि सभ मोटा-मोटा गाछे जकाँ भऽ गेल। लताम, बेल, धात्री, सपाटू, शरीफा, आँता, कटहर, बरहर इत्यादिक बगीचा सेहो छैन्हे। सालो भरि कोनो-ने-कोनो फल गाछमे लुबधले रहै छैन। अनेको रंगक देशी-विदेशी केराक करजान। बनसी खेलै दुआरे पोखैरक बीचो-बीचो पुल जकाँ सेहो बनौने। दोसराक खेतमे पएर नै देब, एहेन रूआब हरदेवक बाबाक अमलदारीमे रहैन।

जमीन्दारी टुटलोपर बाहरसँ तँ नइ बुझि पड़ैत मुदा भीतरे-भीतर फोंक भऽ गेल छैन। महाजनी चलि गेलैन। बखारी टुटि गेलैन, नोकर-चाकर नइ रहलैन, मुदा मनमे अखनो ओ टेंरही छैन्हे। पाँच भाँइक भैयारीमे सभ किछु बँटा गेलैन। अपन समांग सभ तँ अधिक पढ़ल-लिखल नहि, मुदा पढ़ल-लिखल नोकर रखि सभ कारोबार चलबै छैथ। एते दिन झाँपि-तोपि निमहलैन। मुदा आब ने दोसर रूआब मानैले तैयार आ ने अपना दम, जे दोसरपर रूआब करब।

हरदेव बच्चेसँ बाबाक संग कोट-कचहरी अबैत-जाइत रहला। तइ क्रममे कानून-कायदा, लड़ाइ-झगड़ाक भाँज बुझने छला। घरोपर हरदेव नियमित क्रिया-कलाप बनौने छला। भोरे उठि दतमैन आ कुर्रा-आचमैन कऽ भरि छाँक पानि पीब, पान खा, लोटा लऽ मैदान दिस जाइ जाइथ। घन्टो भरि सिनुरिया आमक गाछक निच्चाँमे लोटा रखि सौंसे गाछी टहैल-बुलि देखै छला। पाकल

फल तोड़ि-तोड़ि गमछामे बान्हि घुमै-काल घरपर नेने अबै छला। सभ दिन टटका फल खेने दुनू परानीक शरीर बुलन्द रहलैन। चारिटा गाए पोसने छला। गाए तँ देहातीए मुदा नमहर कदक। एकवर्णा कारी। डेढ़ियापर बाहैत-बिआइत तँए सभ दिन दूधक लाट रहबे करैन। सभ दिन बेरू-पहरमे असेरी गिलाससँ दू गिलास दूधमे भाँग घोड़ि पीब हरदेव बनसी खेलए जाइथ। बीच पोखैरमे चौखुट बनसी खेलैले जे बनौने छला ओइपर जा कुरता निकालि कऽ रखि, पान खा बनसी खेलै छला।

एयर कण्डीशन जकाँ जलहवा तहूमे झूलैत झिझड़ीदार परदा जकाँ भाँगक निशाँ, हरदेवक हृदैकेँ झूलबैत रहै छल। हरिअर-हरिअर कुमही हवाक सिहकीक संग जलक सवारीपर सपरिवार सवार भऽ रसे-रसे पोखैरमे टहलै छल। बहुत पहिने हरदेवक पिता पोखैरभिंडासँ ललका कमल आ बेरमाक बड़की पोखैरसँ उजरा कमलक गाछ आनि लगौने रहैथ। दुनू रंगक कमलक शोभा देखैमे अद्भुत लगै छल। आनन्दक समुद्रमे असकरे हरदेव सभ दिन मगन भऽ झूमैत रहै छला। छोटकी माछ सभ बनसी बोर निचेनसँ खा लइत। लूक-झूक गोसाँइ होइते हरदेव बनसी समेट घुमि कऽ घर अबै छला। घरपर आबि चाह पीब टहलैले निकलैथ।

बच्चेसँ घुरन हरदेव ऐठाम नोकरी करैत। साते-आठ सालक जखन रहए, बाप मरि गेलइ। बपटुग्गर घुरन माइक संग नमहर जिनगी जीबैले दुखक पहाड़सँ संघर्ष करए लगल। जखन घुरन छँटगर भेल, बिआह-दुरागमन भेलै, तखन पाँच रूपैआ मासक नोकरी छोड़ि बोनियाती काज हरदेव ऐठाम करए लगल।

घुरन आ हरदेव एकतुरिया। हरदेव सुखक बीच आ घुरन दुखक बीच जिनगी जिबैत। एकतुरिया रहने दुनूमे घनिष्ठ प्रेम। एकठाम रहने घुरनपर हरदेवक असीम बिसवास। जँ कहियो हरदेव केतौ बाहर जाइ छला तँ घुरनेपर खेती-बाड़ीक भार दऽ जाइ छला। घुरनक पत्नी–सोमनी–हरदेवक आँगनाक सभ काज जेना बरतन-बासन धोनाइसँ लऽ कऽ पानि भरनाइ, चूल्हि-चिनमार निपनाइ इत्यादि करै छेली, जइसँ खेनाइ-पीनाइ चलि जाइ छेलैन। बेटा–रमेश–माइक संग हरदेवक आँगनमे खाइत-खेलाइत। सरोजनी–हरदेवक बेटी–आ रमेश कहियो अटकन-मटकन खेलए तँ कहियो चोरा-नुक्की।

गाममे स्कूल रहने रमेशक नाओं घुरन लिखा देलक। सरोजनी सेहो स्कूल जाए लगल। पढ़ैमे रमेश चन्सगर। हरदेवक परिवारसँ लाट रहने रमेशक गरीबी छिपल। रमेश दू बर्ख सरोजनीसँ जेठ। बच्चेसँ रमेश रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। कियो बाल-ग्रह कहै छेलै तँ कियो पछुआ लागब। घुरन आ सोमनी केते गहवर रमेशकेँ लऽ लऽ गेल मुदा रोग नइ छुटलै। दिनानुदिन रोग बढ़िते गेलइ। अन्तमे निराश भऽ घुरन सोने वैदसँ बेटाक इलाज करौलक। साते दिनमे बेमारी छुटि गेलइ। मुदा रमेशक शरीर खिदखिदाहे रहल।

परसूए माघक पूर्णिमा। गंगा नहाइले गामक मरद-स्त्रीगण उमड़ल। सुशीला सेहो पति–हरदेव–केँ चलैले कहलकैन। दुनू परानी हरदेव गंगा-नहाइले रौतुके गाड़ीसँ सिमरिया विदा भेला। हरदेव अँगनाक भार सोमनीकेँ आ माल-जालक भार घुरनकेँ दऽ गेला। सिरिफ सरोजनीए-टा रहल। सोमनीकेँ सरोजनी चाची कहैत।

चारि साल पहिने गामक स्कूलसँ निकैल सरोजनी आ रमेश हाइ-स्कूलमे पढ़ैत। संगे दुनू गोरे स्कूल अबैत-जाइत।

रमेश आ सरोजनी ओसारक चौकीपर बैस पढ़ै-लिखैक गप-सप्प करैत छल। सोमनी आँगन बहारि बाढ़ैन रखिते छेली कि सरोजनी पुछलकैन-

"चाची, ऐगला मासमे मैट्रिकक परीक्षा हएत। मैट्रिक पछाइत रमेशकेँ पढ़ेबै की नहि?"

सोमनीक मनक आशापर गरीबीक चद्दैर झँपने। ठाढ़ भऽ एकटक सरोजनीकेँ देख, बजली-

"बुच्ची कहलौं तँ बड़ नीक बात। कोन माए-बापकेँ बेटा-बेटीक पढ़बैक मनोरथ नइ होइ छै, मुदा खरचा जुमतै? गरीब लोक कोनो लोक होइए। सभ मनोरथ संगे जाइ छइ।"

सोमनीक बात सुनि सरोजनीक मुँहक हँसी बिला गेल। कनीकाल चुप भऽ बाजल-

"कहलौं तँ ठीके चाची। हमहीं अखन बाप-माइक ऐठाम छी, सुख करै छी। जँ हमरे गरीब घरमे बिआह हुअए तँ अखुनका सुख रहत।"

"जेकरा जे भाग-तकदीरमे लिखल रहै छै से होइते छइ। रमेशक भागे

खराप छै तँ सुख केतए-सँ औत।"

"चाची, गाममे तँ नोकरी नहियेँ हेतै, तब तँ बाहरे जाए पड़तै?"

"कियो चिन्हारक संग लगा दिल्ली पठा देबइ। कोठीमे कोनो काज भाइए जेतइ।"

"रमेश दिल्लीमे नोकरी करत आ अहाँ दुनू परानी ऐठाम रहब। तखन बर-बेमारीमे केकरा के देखबै?"

"जेकरा जे दुख आकि सुख लिखल रहै छै से आन थोड़े बाँटि लइ छइ।"

सरोजनीक नजैरमे आशाक किरिण चमकैत रहइ। जखन कि सोमनी निराशाक पहाड़ तर दबाएल छेली। बच्चेसँ जुड़ल सिनेहकेँ जेना वीणाक ध्वनिकेँ हथौरीक चोट भग्न कऽ दइ छै तहिना सरोजनीक स्वरकेँ सोमनीक अवाज ध्वस्त कऽ देलक।

पाँचतारा होटलमे डेरा। जहाजसँ देश-विदेशक एनाइ-गेनाइ। नीक नोकरीक संग नीक दरमहो, तैपर सँ चोरा-नुका कऽ दोहरी धंधो। ऐश-मौजक जिनगी जीबैत, पुष्ट गोर शरीर हृदयनारायणक। ने घरक चिन्ता आ ने परिवारक बोझ। होटलक मालिक अंगरेज, जिनका दुइ गोट कन्या। दुनूकेँ एक-एक होटल दऽ अपन भार हटौने। अपने–अंगरेज साहैब–दुनू बापूत लोहाक कारखाना चलबैत रहैथ। होटल चलौनिहारि रोजी। जखन हृदयनारायणकेँ होटलमे अबैत रोजी देखै तँ आँखि गड़ा एकटकसँ निच्चाँ-ऊपर निहारए लगइ। कोठरीमे अबिते, रोजी अनेरे लगमे जा-जा हृदयनारायणकेँ पुछैत-

"कोनो वस्तुक दिक्कत ने तँ अछि?"

बी.ए.पास रोजी। बीस बर्खसँ ऊपरे उमेर। सोनहुल केश, भुल्ल गोर। छरहरा शरीर, फुर्तीसँ छट-छट करैत।

हृदयनारायण क्लबक सदस्य सेहो छला। मन-माफित मनोरंजन करैथ। वसन्तक बहार छोड़ि पतझड़क अनुभूतिसँ अनभुआर रहैथ। देहाती जिनगीसँ गुजरल हृदयनारायण, छल-प्रपंचसँ कोसो दूर छला। ड्यूटीसँ आबि कपड़ा बदैल स्नान-जलखै कऽ, सोफापर लेटि ऐगला जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। बिआह करब.., परिवार बनाएब...।

हृदयनारायणक कोठरीमे प्रवेश कऽ रोजी कुरसीपर बैसैत बाजल-

"चिन्ताक पहाड़क तरमे किए दबल छी?"

सूखल मुस्की दैत हृदयनारायण बजला-

"थाकल छी।"

रोजीक मुस्की भरल मधुर स्वर हृदयनारायणक हृदैमे चुभए लगलैन। प्रेमक अँकुर अँकुरित हुअ लगलैन। हृदयनारायण मुस्कियाए लगला। रिंग बजा रोजी नोकरकेँ कौफी आनैक आदेश देलक। नोकर कौफी-सिगरेट-सलाइ नेने आएल।

जखने हृदयनारायणक आगू कौफीक कप रखलक कि रोजी कप-सँ-कप भिरा कौफीक चुस्की लिअ लागल। दू-चारि चुस्की लऽ, कप रखि रोजी दूटा सिगरेट सुनगौलक। एकटा हृदयनारायणक हाथमे आ दोसर अपने कौफीक संगे पीबए लगल।

पाँच साल पहिने रोजी बी.ए. पास केने छल। पसिनगर संगी नइ भेटने अखन धरि अविवाहिते। बिना हिचक केने हृदयनारायणसँ पुछलक-

"बिआह भऽ गेल अछि?"

"नहि। परिवारमे माता-पिता छैथ।"

"अखन धरि बिआह किएक ने केलौं?"

"नोकरीसँ पहिने सोचैत रही जे जाधैर अपना पैरपर ठाढ़ नै भऽ जाएब ताधैर बिआह नइ करब।"

"तीन सालसँ तँ नोकरियो करै छी?"

"वएह सोचि रहल छी।"

हृदयनारायणक हृदैक आँखि रोजीकेँ देखए लगल। धड़फड़ा कऽ उठि रोजी हँसैत चलि गेल। हृदयनारायणकेँ आरो गप्प करैक इच्छा छल जे अखन नइ भऽ सकलैन। गामक पछुआएल जिनगीकेँ शहरक अगुआएल जिनगीमे बदलैक विचार हृदयनारायणक मनमे एलैन। मुदा गंगाजल ताबे धरि गंगेजल रहैए जाबे धरि गंगा नदीक बीच रहैए मुदा वएह अथाह समुद्रमे मिललापर बदैल जाइ छइ। ऐ द्वन्द्वमे हृदयनारायण पड़ल-पड़ल सिरमापर माथ दऽ कछमछ करए

लगला।

दस बजे रातिक घन्टी घड़ीमे टनटनाएल। बाहरक गँहिकीक आएब बन्न भऽ गेल। मुख्य दरवाजामे ताला लगि गेल। रोजी सिगरेटक डिब्बा, सलाइ आ ह्विस्कीक बोतल नेने हृदयनारायणक कोठरीमे पहुँच गेल। दूटा गिलासमे ह्विस्कीक बोतलक मुन्ना खोलि ढारलक। एकटा गिलास हृदयनारायणक आगूमे बढ़ा देलक आ दोसरमे अपने पीबए लगल। दू-दू गिलास दुनू गोरे पीब सिगरेट पीबए लगला। सिगरेटक धुआँ रोजी दिस उड़बैत हृदयनारायण पुछलखिन-

"हमर परिचय तँ बुझलौं, अपन कहू?"

मुस्कियाइत रोजी बाजल-

"दू गोट होटल दुनू बहिनकेँ पिताजी देने छैथ। पिताजी अपने दुनू भाँइ लोहाक मिल चलबै छैथ।"

"अखन धरि अहाँ बिआह किए ने केलौं?"

"मनगर जोड़ीक अभावमे।"

"केते दिन प्रतीक्षा करब?"

"बरिसो-बरिस, अखनो।"

"की मतलब?"

"जँ अहाँ 'हँ' कहि दी तँ लगले भऽ जाएत।"

"पितासँ बिना पुछने?"

"अपन पसिनक उपरान्त हुनका कहि देबैन।"

"जाउ हम तैयार छी, हुनकासँ पुछि लियौन।"

दोसर श्रेणीमे सरोजनी आ रमेश मैट्रिक पास भेल। नीक विद्यार्थी रहितो रमेश कम अंक पौलक। उत्साह आ लगने एहेन जे रमेश पढ़ि सकल। सरोजनी वय:सन्धिक सीमा पार करैत किशोरीक सीमामे प्रवेश करैत रहए। लज्जाक आगमन भऽ गेल रहइ। किशोरीक विशेषता अंग-प्रत्यंगसँ हुलकी देमए लगलै।

अपन रिजल्टक जानकारी रमेश पिताकेँ देमए पहुँचल। ओना सरोजनी पिताकेँ पहिने कहि देने छल।

हरदेव दलानक कुरसीपर ओंगैठ कऽ बैस सरोजनीक बिआहक सम्बन्धमे आँखि मूनि सोचैत रहैथ। मैट्रिक पास बेटीले बी.ए. पास बर चाही। घरो अपनासँ दब नइ हुअए...। समए एहेन भऽ गेल जे खर्चक कोनो हिसाब नइ रहत। जमीन्दारी चलि गेल मुदा ठाठ-बाठ तँ वएह अछि।

बेटाक रिजल्ट सुनि घुरन हँसैत आबि हरदेवकेँ पुछलकैन-

"मालिक, एना मन्हुआएल किए छी?"

आँखि खोलैत हरदेव बजला-

"नइ-नइ, मन्हुआएल कहाँ छी। सरोजनीक सम्बन्धमे सोचै छेलौं। तोरो रमेश तँ बिआह करै-जोकर भऽ गेलह।"

"मालिक बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बाप-ले करजे छी। ऐ देहक कोन ठेकान, तँए जँ भऽ जाएत तँ अहीबेर कऽ लेब।"

दछिनबरिया घरमे पलंगपर पड़ल सरोजनी अपन भविस दिस तकै छल। भैया कलकत्तासँ गाम नहियेँ औता। माए-बाबू रसे-रसे बुढ़े होइत जेता। दुनू गोरेकेँ बुढ़ाड़ीमे के सेवा करतैन? अछैते बेटा-बेटी दुख हेतैन! रमेश गुरु जकाँ पढ़बैए। माए-बाप नोकर जकाँ सेवा करैए। दुनू गोरेक बीच धन आ जातिक अन्तर अछि। सरोजनी चिन्तित हुअ लगल।

मनमे उठलै- राजा दशरथोकेँ स्त्री तीन जातिक छेलैन। हुनका कहाँ अधर्म भेलैन! जिनगी हँसैत शान्तिसँ चलए, यएह तँ सबहक इच्छा होइ छइ। रमेश दिल्ली-बम्बइ जा कोठी आकि मिलमे नोकरी करत। आइ धरिक जे सिनेह रहल ओ टुटि जाएत।

हरदेवकेँ गोड़ लागि रिजल्टक जानकारी दैत रमेश आँगन गेल।

सरोजनी घरसँ निकैल आबि रमेशकेँ पुछलक-

"कौलेजमे नाओं लिखाएब की नहि?"

"पढ़ैक इच्छा तँ अछि मुदा...।"

'मुदा' सुनि भगवतीक रूप जकाँ आँखि निहारैत सरोजनी बाजल-

"रमेश, हम निश्चय कऽ लेलौं जे अहींसँ बिआह करब। तखने दुनू परिवारक कल्याण हएत।"

सरोजनीक बात सुनि रमेशक करेज डरसँ काँपए लगल। आँखिमे डर सन्हिया गेलइ। मुदा सरोजनी बजिते रहल-

"दुनू गोरे एम.ए. तक पढ़ि, गाममे हाइ-स्कूल बना शिक्षक बनब।"

कँपैत ह्रदैसँ रमेश पुछलक-

"पिताजी विरोध करता, तखन?"

"अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझैबैन। पुतोहु इसाइ भेलैन से बड़ बढ़ियाँ आ..! अखन धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैए, नाँगैटकेँ वस्त्र नै दऽ सकैए, बेघरकेँ घर नै बना सकैए, मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैए, लुटैत इज्जतकेँ बँचा नै सकैए, ओइ समाजकेँ विरोध करैक कोन अधिकार छइ?"

तैपर रमेश बाजल-

"सभ रहलाक बादो समाजमे मिलि कऽ रहब आवश्यक होइ छइ।"

"हँ होइ छइ। जे समाज अछि ओ हमरा अहाँ छोड़ि कऽ नै अछि। जे समाज हमरा विचारकेँ महत नै देत ओहो अपन विचार थोपि नै सकैए। तँए समाज सोचऽ जे हमर कल्याण केना हएत।"

सरस्वतीक फोटोमे पहिरौल फूलक माला धरसँ उतारि सरोजनी रमेशक गरदैनमे पहिरा देलक।

❍

शब्द संख्या : 1810

सुभद्रा

सुरूजक किरिण अन्हारकेँ धकलैत, संघर्ष करैत, पाछू-मुहेँ ठेलए लगल। जीव-जन्तुक गाढ़ निन्न पतराए लगल। चिड़ै-चुनमुन्नी प्रभात बेलाक धूनमे मस्त, गाए-महींस घर-सँ-बाहर होइले डिरयाइत...। एकाएक कमलनाथक ऐठाम कन्नारोहट शुरू भऽ गेल। गाएकेँ डोरी पकैड़ रविया बाहर करै छल तखने कानब सुनलक। कानब सुनि अकानए लगल कि गाइक डोरी हाथसँ छुटि गेलइ। गाए पड़ा गेल। गाए पकड़ैले रविया पाछू-पाछू दौगबो करए आ कानबो अकानए। बेहटवाली कलपर पानि भरैले अबै छेली आकि गाए हुरपेट देलकैन। रस्ताक किनछैरमे बनल खाधिमे गिर पड़ली। चोट तँ कम्मे लगलैन मुदा सड़ल थाल-पानि सौंसे देहमे लेबहैर गेलैन। ..चुट्टीक धाड़ी जकाँ लोक कमलनाथक ऐठाम जाए लगल।

एक तँ ब्लड-पेसरक रोगी दोसर दुखद समाचार सुनि कमलनाथ दलानक ओसारपर अचेत पड़ल छला। बेधरक गिरने कमलनाथक ऐगला दुनू दाँत टुटि गेलैन, जइसँ खून बहए लगलैन। जिज्ञासा केनिहार हुनके मृत्यु बुझि आँखिसँ नोरो बहबैत आ नाक लग आँगुर दऽ, छातीपर हाथ दऽ, परेखबो करैत। छातीक धुकधुकी आ साँस ठीके रहैन।

मोतीहारी अस्पतालमे डाक्टर चन्द्रकान्त कार्यरत छैथ, अखन ओ गाममे आएल छैथ। समाचार सुनिते चन्द्रकान्तो एला। अबिते कमलनाथकेँ देख बिऐन होंकैले कहि, बेटीकेँ कहलखिन-

"बौआ, कनी बैग नेने आबह?"

आँगन जा, टेबुलपर रखल बैग लऽ बेटी दौगल आएल। आला निकालि चन्द्रकान्त जाँच कऽ, एकटा सुइया लगा देलकैन। दसे मिनटक पछाइत कमलनाथ होशमे एला। होशमे अबिते कानि-कानि बाजए लगला-

"अन्याय भऽ गेल! जुलुम भऽ गेल! बाप-रे-बाप, एहेन विपैत केकरो नै दिहक! हे भगवान, हमरा कोन सन्ताप देखैले रखने छह!"

बजैत-बजैत कमलनाथ फेर बेहोश भऽ गेला। आँगनमे पत्नियोँ कपार पटैक-पटैक फोड़ि कऽ अचेत भऽ ओंघराएल। एक्के-दुइए आँगनसँ दरबज्जा धरि लोकक करमान लगि गेल। दछिनबरिया घरमे सुभद्रा बताहि जकाँ ओंघरनियाँ दइत।

अगहनक बिआह-पंचमी दिन सुभद्राक बिआह इंजीनियर बरक संग भेल। दू भाँइक बीच एकटा बेटी रहने कमलनाथ ह्रदए खोलि बिआहमे खर्च केने छला। आगू पढ़ैले जमाए अमेरिका जाइत रहथिन। हवाइ जहाज दुर्घटना भऽ गेल। यात्रीसँ चालक धरि कियो ने बँचल। वएह खबैर टेलीफोनसँ चारि बजे भोरमे कमलनाथकेँ एलैन। से सुनिते परिवारमे, जेना पहाड़ टुटि केकरो देहपर खसैत, तहिना भेल। खरचाक सोच नहि, मुदा सुभद्रा विधवाक जिनगी बितौत सोच तेकर। अखन धरि समाजो जेकरा अधला बुझैत, अशुभ बुझैत।

जेहने सुभद्रा हँसमुख तेहने सुन्नैर। जोरसँ बजैत कियो ने सुनने। पढ़बोमे चन्सगैर। घरक सभ काजक लूरि माएसँ सिखने। भोरे उठि, फुलडाली धोइ, फूल तोड़ि सभ दिन नहा कऽ पूजा करैत। सालो भरि जे उपास होइत ओ सभ सुभद्रा करैत। पिताकेँ खुऔने बिना मुँहमे पानियोँ ने लइत। भगवानकेँ कोसैत नवटोलवाली बाजल-

"भगवानो नीकेकेँ अधला करै छथिन। पपियाहा सबहक बेरमे सुति रहता!"

ओसारक खुट्टा लगल ठाढ़ भेल सुशील सभ देखैत-सुनैत। किछु-काल देख गुम्मे अपना ऐठाम विदा भऽ गेल। अपना ऐठाम आबि कोठरीक चौकीपर पड़ि रहल। सुशीलक मनकेँ, जेते घटना नै झकझोड़ैत तइसँ बेसी समाजक बेवहार। अखन धरि सुशीलक विचार पढ़ाइ समाप्त कऽ राँचीए-मे नोकरी करैक छल। मुदा औझुका घटना विचारकेँ बदैल देलकै। जहिना भुमकम भेलापर खाधि ढिमका बनि जाइत आ ढिमका खाधि, तहिना।

सुशीलक पिता समाज शास्त्रक प्रोफेसर। दू तल्ला कोठा राँचीमे बनौने छैथ। दस कट्ठा वाड़ियो कीनने छैथ, जइमे तीमन-तरकारी उपजबै छैथ।

एकाएक शुशीलकेँ गामक आकर्षण आ संकल्प जागल, जे कुबेवस्थाकेँ मेटौने बिना समाजक नीक नै भऽ सकै छइ। जेकरे चलैत ढेरो बहिन सभ पापिनी बनि समाजमे मुँह नुका-नुका जीबै छैथ। परीक्षा लग रहने, दोसर दिन सुशील बससँ राँची विदा भऽ गेल।

सुशीलक मन्हुआएल मुँह देख माए-पिता सन्न भऽ गेला। बिना किछु बजने सुशील दुनू गोरेकेँ गोड़ लागि नहाइले गेल। माए थारी परोसलक। चिन्तित भऽ पिता कुरसीपर बैसल, टेबुलपर केहुनीक बले मुँहपर हाथ दऽ सोचए लगला। नहा कऽ आबि सुशील खेनाइ खाए लगल, मौका बुझि माए पुछलखिन-

“बौआ, बसमे बेसी झमार भेल जे मुँह सूखल अछि?”

“नहि।”

“तखन मन्हुआएल किए छी?”

“आब ऐठाम–राँचीमे–नइ रहब। परीक्षा दऽ गाम चलि जाएब।”

माए-बेटाक गप-सप्प कान पाथि पिता सुनैत रहैथ। मनमे उठलैन- सुशील पढ़ाइसँ किएक विमुख भऽ रहल अछि? ऐ तारतममे प्रोफेसर तरूणक दिमाग ओझरा गेलैन। रंग-बिरंगक सवाल-जवाब मनमे उठए लगलैन। सिरिफ तीन साल अपन नोकरी बँचल अछि। अखन धरिक कमाइक मकानेटा अछि, के रहत? अपन इच्छा छल जे सुशील एम.ए. कऽ अहीठाम नोकरी करत, सभ मिलि कऽ रहब। मुदा सभ विचार धूरा बनि हवामे उड़िया रहल अछि! सुशील नवयुवक अछि जे निर्णए कऽ लेत तइमे पाछू नै हटत। जिद्दी तँ ओ शुरूहेसँ अछिए। जँ हम दुनू परानी राँचीमे रही आ सुशील गाममे, तखन केकर सेवा के करत? राँचियोक वातावरण जे पहिने छल ओ धीरे-धीरे अधला भेल जा रहल अछि। सेवा-निवृत्ति भेलापर पेंशन भेटत। पिताजीक देल गाममे बहुत सम्पैत अछि। ऐठामक सभ किछु बेच गाममे बना लेब। सुशीलोक बिआह नइ ऐ साल तँ आगू साल करबे करब। गाममे सभ गोरे मिलि रहब।

सुभद्राक समाचार रूपलाल बाबाक कानमे सेहो पड़लैन। शरीरसँ असमर्थ बाबा। 1934 ईस्वीक भुमकममे सेवाक इमानदारीक चलैत सभ गाँधीजी कहए लगलैन। लोकक बीच बाजब, गोलबन्द करब इत्यादि रूपलाल

बाबा जहलमे सिखलैन। अजादीसँ पहिने बकास्त सिक्कमी जमीनक लड़ाइ लड़ि गरीबक बीच सेहो बँटौलैन। जमीन्दार सबहक विरोध ऐ रूपे केलैन जे सस्तेमे बेच-बेच सभ जमीन्दार गामसँ पड़ाएल। रूपलाल बाबाकेँ समाजमे केकरोसँ कोनो भेद-भाव नहि। ने जाति-पाति आ ने छोट-पैघ, आ ने कहियो ई-धरम-उ-धरमक पछड़ामे पड़ला। सबहक ऐठाम एनाइ-गेनाइ, नीक-बेजाएक गप-सप्प केनाइ शुरूहेसँ रहलैन। अजादीक उपरान्त जखन गाँधीजी गोलीक शिकार भेला, रूपलाल बाबाक मन टुटि गेलैन। अपन जीवन-यापन-ले समाजसँ सिकुड़ि परिवारमे समा गेला। जवानीक सभ अरमान आ क्रिया-कलाप बुढ़ाड़ीमे चूर-चूर भऽ गेलैन।

आनर्सक परीक्षा समाप्त होइते सुशील गाम चलि आएल। बसक झमारसँ भरि दिन घरमे सुतले रहल। गामक जानकारी पबैले भोरे चाह पीब रूपलाल बाबा ऐठाम गेल। पाकल आम जकाँ जिनगीसँ लड़ैत रूपलाल बाबा दलानेपर बैस सुइया-डोरासँ धोती सीऐत रहैथ। एकटा पतरे ठेंगा बगलमे रखल रहैन। आँखिक ज्योति सेहो कमि गेलैन। पएर छुबि सुशील गोड़ लगलकैन। अनचिन्हार बुझि बाबा पुछलखिन- “नइ चिन्हलौं?”

विस्तारसँ अपन परिचय दऽ सुशील आगूमे बैसल। पहिलुका सभ वृतान्त रूपलाल बाबा कहलखिन। जिज्ञासा भरल स्वरमे सुशील पुछलकैन-

“समाज कल्याणक सम्बन्धमे अपनेक की विचार अछि?”

“बौआ, हमर नेता गाँधीजी छला। जाबे जीबैत रहला आ जे कहथिन जान-परान लगा लड़ैत रहलौं। कहियो पाछू घुमि नै तकलौं। मुदा जखन हुनका गोली लागब सुनलौं तँ मन टुटि गेल। जखन गाँधीजी सन तियागी-तपस्वी नेता गोलीसँ दागल गेला तखन समाजक कल्याण केना हएत। पढ़ल-लिखल नइ छी। हुनकर लिखल पोथी जे कीनलौं ओहिना बक्सामे राखल अछि। जेकरा हाथमे देशक शासन गेल, अपन सुख-भोगक खातिर, अपना-अपना ढंगसँ गाँधीजीक विचारकेँ व्याख्या करए लगल। बेइमानी-शैतानी बढ़ैत गेल।”

बिच्चेमे सुशील-

“बड़ अनुभवक बात बाबा कहलौं।”

“जहलमे बड़का नेता सभ कहथिन जे गामक भीतरक सभ किछु

गौंआँक छी। ओकरा अधिक-सँ-अधिक उबजाए गामक विकास करब। छोट-छोट कारोबारक जन्म हएत। आमदनी बढ़ैत जेतइ, छोट कारोबार पैघ बनैत जाएत। जेते पैघ कारोबार होइत जेतै गाम ओते खुशहाल होइत जाएत। छोट-छीन झगड़ा अपनेमे फरियाएत। सबहक धिया-पुता पढ़त-लिखत। दबाइ-दारूक जोगार सरकार करतै। स्वस्थ समाज, स्वस्थ देशक निर्माण करब। मुदा सभ सपना भऽ गेल। जेते दिनका दाना-पानी अछि, जीबै छी। सभकेँ सभ जाल बुनि-बुनि फँसबए चाहैए। शान्तिक जगह अशान्ति लए लेलक आ प्रेमक जगह कटुता। समाज टुटि-टुटि कमजोर बनैत जा रहल अछि!”

जे विचार सुशीलक मनमे आइ धरि नै उठल छल, ओकर जमीन हृदैमे तैयार हुअ लगल। गुम-सुम्म सुशील एक टकसँ रूपलाल बाबा दिस देखैत रहल। जहियासँ सुभद्राक सम्बन्धमे बाबा सुनलैन तहियासँ राति कऽ निन्न नै होइन। भादो मास जकाँ सदिखन आँखिसँ नोर झहैरते रहैन। सोगाएल स्वरमे सुशील पुछलकैन-

“बाबा जइ विपैतमे सुभद्रा फँसि गेल, ओइसँ उबरबाक कोनो रस्ता छइ?”

“हँ अछि। जइ विपैतक चर्चा केलौं ओ बनौआ छी। ओकरा सुधारल जा सकैत। सुधारलासँ ओइ विपैतक अन्त भऽ जेतइ।”

“सुधारैक की रस्ता हेतइ?”

“समाजमे सभ-ले ई विपैत नै अछि मात्र किछु जातिक बीच अछि। अइले नौ-जबानकेँ डेग उठबए पड़त। मेहौता बरद जकाँ हमहूँ सभ पाछू-पाछू चलब।”

उत्साहित भऽ सुशील पुछलकैन-

“बाबा, अइले जे करए पड़त, करब। अहाँक असिरवाद चाही।”

“बौआ, जेना लोक जीबैए तेना हम मरि गेल रहितौं। अस्सीसँ ऊपरे वएस भऽ गेल। दधीचिक हड्डी जकाँ जे जरूरत होएत अखनो तैयार छी।”

“अखन जाइ छी, काल्हिखन फेर आएब।”

कहि सुशील विदा भेल। सूतल जवानी रूपलाल बाबाक पुन: जागि

गेलैन। देहमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलैन। थरथर कँपैत शरीर, हाथमे ठेंगा नेने बाबा कमलनाथ ऐठाम विदा भेला।

सोनपुरवाली दादी चौपारिपर सोँफ बिछा बारहोटा पोता-पोतीकेँ खेलबैत रहैथ। कोरामे केतेकेँ रखितैथ। सभ धिया-पुता खेलाइत। खेलबैले दादी एकटा छिपली आ कड़चीक टुकड़ी रखने छेली। जहाँ कोइ कानए लगै छल तँ दादी छिपली बजा गीत गाबए लगै छेली। बच्चो चुप भऽ दुनू हाथे थोपड़ी बजा दादीक संग गीत गाबए लगै छल। दादीक लाटमे आनो-आनो गोरे अपना बच्चाकेँ आनि ओतइ खेलबैत।

महरैलवाली हँसमुख। सदिखन हँसिए कऽ बजैत। मुदा आइ मन्हुआएल देख ननौरवाली चुटकी लैत टोकलकैन-

“दीदी, बड़ मन्हुआएल छैथ, भैया किछु कहलकैन?”

बिच्चेमे कछुबीवाली टपैक गेली-

“भैयाकेँ तँ दीदी खेलौना बनौने छैथ, ओ की कहथिन।”

कछुबीवालीक बात सुनि महरैलवाली उत्तर देलखिन-

“नै कनियाँ, सुभद्रा दाइक दुख मन पड़ि गेल। भरि दिन अन्नो ने नीक लगल।”

सुभद्राक नाओं सुनि ठाढ़ीवाली च्यू,च्यू करैत बजली-

“कनियाँ, तूँ सभ नव-नौतुक छह। नइ बुझल हेतह। हमर जे मझिली पुतोहु अछि, ओ दोती अछि। पहिलुका घरबला जे रहै ओ वौर गेलइ।”

कछुबीवाली पुछलक-

“केतए वौर गेलइ?”

ठाढ़ीवाली-

“दिल्लीमे नोकरी करए गेल, से घुमि कऽ नै आएल। बेटा तँ हमर कुमार रहए। बापक मन दोती लड़कीसँ बिआह करैक नइ रहैन। मुदा विदेसरक मेलामे जे कनियाँ देखलौं, देख कऽ मनमे गड़ि गेल। हमरे जोरसँ बिआह भेलइ। अखन ओकरेपर गिरथाइन बनल छी। जेठकी तँ तेहेन अछि जे कहिया ने झोंटिया कऽ बैला देने रहिताए।”

सोनपुरवाली दादीकेँ सभ बुधियारि आ बेसौह बुझैत। ओ बजली-

"कनियाँ, तोरा सभकेँ नै बुझल हेतह। हमर बिआह ढेरबामे भेल। दादी जीविते रहैथ। ओ दोसर बिआहकेँ अधला बुझैत रहथिन। बाबू हमर बड़ विचारक। साल भरिक पछाइत माएकेँ कहलखिन, 'बुच्चीक दोसर बिआह कऽ देबइ। जाबे अपना दुनू गोरे जीबै छी ताबे ने। जखन मरि जाएब तँ ओकरा के देखतै। गाममे तँ देखते छिऐ जे केहेन-केहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि। खानदानक नाक कटि जाएत।' हम सुनलौं तँ बुकौर लगि गेल। माए पोलहा-पोलहा बुझौलक। हम 'हँ' कहि देलिऐ। अखन देखते छहक जे भगवानक दयासँ केहेन फड़ल-फुलाएल परिवारमे सुख करै छी। भगवान सभकेँ सुख-भोग देथुन। केकरो मन कलपै नहि।"

रूपलाल बाबाकेँ अबिते देख कमलनाथ आगू बढ़ि बाँहि पकैड़ दुआरपर अनलकैन। दुनू आँखिसँ कमलनाथकेँ नोर टघरए लगलैन। कानि-कानि अपन दुखनामा बाबाकेँ सुनबए लगलखिन। बबोक आँखिसँ नोरक टघार गालपर होइत चौकीपर ठोपे-ठोप खसए लगल। कनैत रूपलाल बाबा कमलनाथकेँ कहलखिन-

"कमल, समाज एहेन नाशक रस्ता धेने अछि जे केकरो नीक नै हेतइ। आइ तोरा जे भेलह केते दुखद अछि। हमर नेता गाँधीजी कहथिन मर्द-औरतक बीच जे विषमता अछि ओकरा मेटबए पड़त। तखन समाज एकरंग बनत। अखनो देखै छी जे मरद तीन-तीनटा बिआह करैए मुदा औरत जिनगी भरि बैधव्य भारसँ कलंकित जरैत रहैए। ने कोइ देखिनहार आ ने कोइ ओकरा मनुख बुझिनिहार अछि।"

"भाय, एकर उपए?"

"हँ छइ। लकीर-क-फकीर बनब नीक नहि। पैघ-पैघ समाज सुधारक समाज सुधारलैन। अखनो किछु बाँकी छइ। जे हमहीं-तोहीं ने सुधारबै।"

कमलनाथक हृदैमे जे बेथाक पहाड़ बनल अछि आस्ते-आस्ते पघिलए लगलैन। चेहरामे चमक आ मुँहमे मुस्कान आबए लगलैन। उत्साहित भऽ बजला-

"भाय, समाज अहाँकेँ गुरु मानै छैथ। जिनगीमे केकरो नीक छोड़ि

अधला नै केलिऐ। हमहूँ अहाँसँ बाहर नइ छी। जे कहब मानि लेब।"

कमलनाथक बदलल विचार रूपलाल बाबाकेँ जुआनीक उमंग आनि देलकैन। ठहाका मारि दुनू गोरे हँसला। गदगद हृदैसँ रूपलाल बाबा बजला-

"कमल, तोरा कोनो तर्दुत नै करए पड़तह। सभ भार हमरा ऊपर। हमहूँ जिनगीक अन्तिम घड़ीमे जुआनिक कएल कीर्तिकेँ पुन: जोड़ि जीब। समाजक बीच ढोलहो दऽ कहबै जे पढ़ल-लिखल नौजबान 'सुशील' अछि। देखबोमे भव्य, विचारो उत्तम छइ। ओकरा संग सुभद्राक बिआह होएत।"

हँसैत कमलनाथ बजला-

"सुभद्रा हमरे बेटी नै समाजक छिऐ। तँए नीक-अधलाक भार समाजक ऊपर।"

उठि कऽ ठाढ़ होइत रूपलाल बाबा बजला-

"कन्यादान हम करब।"

गाममे फगुआक उमंग जकाँ रंग-अबीर उड़ए लगल। मुरझाएल सुशील एकाएक प्रफुल्लित भऽ गेल। जहिना जाड़क मासमे ठंढसँ गाछ-बिरीछ मरनासन्न भऽ जाइत अछि। मुदा वसन्तक बयार पबिते लहलहा उठैए, तहिना समाजमे भेल।

सौंसे गामक लोक बरहम स्थानमे जमा भेला। की मरद, की औरत, की बुढ़, की बच्चा सभमे खुशीक आनन्द। समाजक बीच सुशील-सुभद्राक बिआह परस्पर माला पहिरा सम्पन्न भेल।

लोक नारा लगबए लगला-

"रूपलाल बाबा- अमर रहे-2"

"विधवा बिआह- अमर रहे-2"

❍

शब्द संख्या : 1922

सोमनाकाका

भरि राति ओछाइनपर एक कड़सँ दोसर कड़ उनटैत-पुनटैत सोनमाकाका कखनो उठि कऽ बैसै छला, तँ कखनो पेशाब करैले बाहर निकलै छला। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि डिबिया नेस कुट्टी काटए लगला। पत्नीक इलाज करबैले डाक्टर ऐठाम जाएब छैन। काल्हिए डेढ़ साए-मे खस्सी बेचला। सबेरे विदा हएब तखन ने समैपर पहुँच बेर धरि घुमि कऽ आबि सकब। तँए सोनमाकाका औगताइ करैत गाम परहक काज सम्हारए लगला। घरवालाक चाल-चूल पाबि रूपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चूल्हि लग पानि छीट पजारली। रोटिपक्का धिपै दुआरे चूल्हिपर चढ़ौली। चिक्कसमे लसिए ने पकड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी ठोकि रोटिपक्कामे देली। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर रखल मौनीसँ चारिटा अल्लू निकालि चूल्हिमे घोंसिया देलखिन। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनि गेल। सोनमाकाका नादिमे कुट्टी दऽ पानि छीट दुनू हाथे मिला गाएकेँ घर-सँ-बाहर केलैन आ लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोइ पानि नेने एला। अपनेसँ पिढ़ी लऽ जलखै करैले बैसला। पतिक आगूमे थारी दऽ रूपनी कलपर जा हाथ-पएर धोइ आबि चूल्हिए लग बैस खाए लगली। जलखै खा धोती, गोल-गला आ पैरमे चट्टी पहिर सोनमाकाका पत्नीकेँ कहलैन-

"केते दूर जाए पड़त से नइ बुझै छिऐ, फुर्ती करू!"

पत्नीकेँ कहि सोनमाकाका काँख तर छाता, कान्हपर तौनी आ धोतीक खूटमे रूपैआ बन्हलैन आ विदा भेला। ..रूपनीकेँ हुक्काक चहैट छैन। बिना हुक्के भरि दिन केना कटतैन, मुदा हुक्का लैयो केना जेती, तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेली। आगू-आगू सोनमाकाका पाछू-पाछू रूपनी बजार दिसुका बाट पकैड़ विदा भेल।

तिनमहला भारी-भरकम मकान देख सोनमाकाकाकेँ फाटकसँ भीतर जाइक साहसे नै होइन। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्शाबलाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, डाक्टर साहैब ऐठाम जाएब?"

"जा-जा वएह मकान डाक्टर साहैबक छिऐन।"

रिक्शाबला हाथक इशारा दैत बाजल।

पीचसँ उतैर फाटक लग सोनमाकाका जाइते छला कि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलैन। सोनमोकाका पाछू-पाछू बढ़ला। लोकक करमान लगल देख रूपनीक दिल दहैल गेलैन। मने-मने बजली-

"बाप रे बाप, एते दुखता केतए-सँ एलइ! असकरे डाक्टर साहैब केना इलाज करथिन!"

सोनमाकाका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलैन। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमाकाकाकेँ कहलकैन-

"ताबे बाहर जा बैसू। जखन नम्मर औत तखन सोर पारि लेब।"

सोनमाकाका बाहर निकैल फुलवाड़ीमे घुमि-घामि फूल देखए लगला। रंग-बिरंगक फूल फुलवाड़ीमे। कोनो-कोनो सुगन्धितो आ कोनो-कोनो बिना सुगन्धेक। किआरी बनल। पतियानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैले पनिबट बनल। टहलै-बुलैले दू हाथ चाकर रस्ता। रस्तापर गदगर दुभि...।

पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमाकाका तमाकुल चुनबए लगला। चून झाड़ि तमाकुल मुँहमे लऽ आगू तकलैन कि दस-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौगैत देखलखिन। कोनो उज्जर, कोनो कारी, कोनो भटरंग खढ़ियाकेँ देख दुनू परानी सोनमाकाकाकेँ खुशी होइत रहैन। हवा सिहकैत छल। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमाकाका पड़ि रहला। थोड़े-कालक पछाइत कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोरे डाक्टर लग पहुँचला। रूपनीकेँ ब्रेंचपर बैसा डाक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बेमारीक भाँज नइ बुझि डाक्टर साहैब सोनमाकाका दिस ताकि पुछलखिन-

"केते दिनसँ बेमार छैथ, की सभ होइ छैन?"

मिरमिरा कऽ सोनमाकाका बजला-

"पौरूँका साल गाममे हैजा भेलइ। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझिली बेटी मरि गेल। तहिए-सँ बेमारीक परबेस भऽ गेलइ।"

"कएटा बाल-बच्चा अछि?"

"आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।"

डाक्टर साहैब एकटा टॉनिक लिखि कागत दऽ देलखिन।

कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पच्छिम दबाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमाकाकाकेँ देखा देलकैन। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देख सोनमाकाका पुछलखिन-

"भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?"

माथ कुरियबैत ओ बाजल-

"की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। आँगनमे दुनू सौतिन झगड़ा करए लगल। छोटकी बुफगर, ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटैक देलकै आ मुकियाबए लगलै। मुकियबैत-मुकियबैत बेहोश कऽ देलकै। जाबे भैयाकेँ खबैर होइ आ आबै ताबे थारी-लोटा-नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा गेल। हमहूँ गामपर नइ रही। जखन एलौं तँ देखलिऐ। लगले एक साए रूपैआ पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।"

दबाइ-फीस लगा सोनमाकाकाकेँ साए रूपैआ खर्च भेलैन। रूपैआ गनि देखला तँ पचास रूपैआ बँचल रहैन। मने-मन सोचलैन जे कहिया बजार आएब कहिया नइ। से नइ तँ बिछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीनि लेब। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सिऐन उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सूखत आ सुतबो करब...। जखन बजारसँ बहरेला आकि धक-दे सोनमाककाकाकेँ मन पड़लैन जे बजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घुमि कऽ कनी आगू बढ़ला कि मुरही-कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलैन। पाँच रूपैआक मुरही-कचड़ी मिला सोनमाकाका कीनि लेला। अदहा अपने गमछाक खोचैड़ बना लेलैन आ अदहा रूपनीकेँ देलखिन।

रूपनी खोंइछामे लऽ लेली। दुनू गोरे रस्तो चलैथ आ खेबो करैथ। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमाकाका मिला देने रहथिन। थोड़े दूर आगू बढ़ला तँ

मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़ि गेलैन। कड़ू मिरचाइ रहने सोनमाकाकाकेँ हुचकी उठि गेलैन। दुनू आँखिसँ नोर सेहो झहड़ए लगलैन। जहाँ हाथसँ नोर पोछला कि आँखियोमे लगि गेलैन। पानिक केतौ पता नहि। सोनमाकाका सुसुएबो करैथ, आँखिसँ नोरो चुबैन आ हुचकबो करैथ। मील भरि जखन बढ़ला तँ रस्ताक बगलोमे उतरबारि भागमे इनार देखलैन। इनार देखते सोनमाकाकाक हूबा जगलैन। इनारक चारूकात सिमटीक लहरा बनल अछि, ओहीपर चारि-पाँच गोरेकेँ पानि भरैत देख हुचकैत सोनमाकाका बजला-

"बुच्ची, कनी पानि पिआबह, कड़ू लगल अछि!"

बिच्चेमे फेर हुचकी उठलैन। हुचकैत आ सुसुआइत सोनमाकाकाकेँ देख पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसबो करए। करिया डोलमे पानि भरि सोनमाकाकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमाकाका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहैरमे बैस खाए लगला। तैबीच करिया भूल्लीकेँ कहलक-

"हे गै पितरिया आँखिवाली बाबाकेँ देख-देख हँसै छीही?"

आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक-

"हे गै जरसी गाए, अनके टेटरे सुझै छौ। देखै छीही रूपनीदादीकेँ अखनो बाबाक संग हाट-बजार घूमैले जाइत अछि।"

बिच्चेमे नेंगरी बहिरीकेँ कहलक-

"अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठियाए दही। नहेबो ने केलौं हेन।"

सोनमाकाका पानि पीब तमाकुल चुनबए लगला। रूपनी बीड़ी नेस पीबए लगली। दुनू गोरे रस्ता धेलैन। अपना गामसँ कोस भरि पाछूए दुनू परानी रहैथ कि रौदक गरमी लगलैन। रस्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देख दुनू परानी सुसताइक विचार केलैन। भोलबाकेँ पहिनेसँ सुसताइत देख सोनमाकाका पुछलखिन-

"तूँ केतए-सँ अबैत छेँ भोला?"

उठि कऽ बैसैत भोलबा कहलकैन-

"तेल पेरबैले गेल छेलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ केतए लऽ गेल छेलहक?"

"की कहबौ भोला। तीन सालसँ विपैतमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुचिया-माए तरे-तर खियाएल जा रहल अछि। पहिने होइ छेलए जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै, मुदा डाक्टर लग गेलौं तँ बेमारी ठहरल।"

"देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे परान रहै छै ताबे तक सेवा करैक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह तेतबे-काल ई दुनियाँ अछि आ स्वर्ग-नर्क सभ एतै छइ।"

"बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहै छइ।"

"काका, हमर विचार अछि जे दोसर बिआह कऽ लएह। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छइ।"

"भोला तूँ चौल करै छँह। बुढ़ाड़ीमे दोसर बिआह कऽ गरदैनमे ढोल बान्हब! जाबे थेहगर छी, कहुना-कहुना दिन कटिए जाएत, बादमे बुझल जेतइ।"

तीनू गोरे गाम दिसक बाट पकड़लैन। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलैन। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ कियो अकानए जे हल्ला कथीक होइ छइ। ओना गामे छिऐ, कोनो-ने-कोनो हल्ला होइते रहै छइ। हल्ला सुनि सभ अपन-अपन डेग नमहर केलैन। गाममे प्रवेश करिते हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलैन। कियो कहै 'नीक भेलै' तँ कियो कहै 'अधला भेलइ।' तीनू गोरेकेँ कोनो भाँजे ने लगैन। रस्ताक दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देख तीनू गोरे रस्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पुछलैन।

मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि पहिने तीनू गोरेकेँ बैसैले कहि कहए बाजल-

"बजैत लाज होइए। मुदा जब पुछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचनकाका छला! कहियो केकरो अधला नै केलैन आ ने केकरोसँ कहियो मुहाँ-ठुठी भेलैन। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौआँकेँ खुआबै छला। कोनो चीजक कमी नहि। वेचारे मरला आकि तेहेन चालि-चलैन बेटा धेलकैन जे सभ सम्पैत बोहौलक। चैला-चैले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियेबो करइ। घराड़ियो नै बँचलै। बापक रखल नाओं 'रामकिसुन' रहै जेकरा सभ बतहा कहए

लगलै। वएह मुइल, तँए कोइ नीक कोइ अधला कहै छइ।"

सोनमाकाका मुनेसरसँ पुछलक-

"परिवारमे के सभ छइ?"

"एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छइ। ओहो मइटुग्गर अछि। समदौआ बौह जे छेलै ओ मास दिन पहिने भागि गेलइ। अन-अनकेँ बतहा मुइल। अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत आ ने कपड़ा छइ। लगमे बैस बेटा कनै छइ।"

मइटुग्गर सुनि रूपनी काकीक आँखिमे नोर आबि गेलैन। सोनमा-कक्काक हृदए पसीज गेलैन। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। सोनमाकाका मुनेसरकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ, चरबाहिओ करि कऽ जीबे करतै।"

सोनमा-कक्काक विचार सुनि मुनेसरक मन बदैल गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल-

"सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जँ कोनो जोगार हेतै तँ अँगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबइ।"

रामकिसुन बतहाक बेटाक नाओं भुखना। जहिना पूब-मुहेँ बतहा सूतल तहिना अछि। भुखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। केते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलइ। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सूखि जाइत तहिना मुनेसरक क्रोध भुखनाक दशा देख सूखि गेल। हृदए पघिल गेलइ। डेन पकैड़ मुनेसर भुखनाकेँ उठा कहलक-

"बच्चा, अखैन सँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।"

मुनेसरकेँ देख टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमाकाकाकेँ जे बीस रूपैआ बँचल छेलैन ओ डाड़सँ निकालि कपड़ा-ले देलखिन। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जारैन आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिलि बतहाकेँ जरौल गेल। समाज समुद्र होइ छइ। अधला-सँ-अधला आ नीक-सँ-नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइ छइ।

गरमी मास रहने सोनमाकाका भोरे हँसू-छिट्टा लऽ घास-ले विदा भेला। कनी आगू बढ़ला तँ मनमे एलैन जे भुखनाकेँ अपने ऐठाम आनि बेटीक संग बिआहो कऽ देबै आ रखियो लेब। घुरि कऽ आबि हँसू-छिट्टा रखि छाता लेलैन आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकेँ कहलखिन-

"भाय, हमरो बेटा नै अछि, एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे भुखनाकेँ बेटीसँ बिआह कऽ जमाए बना राखी। ओहू बच्चाकेँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकेँ।"

हँसैत मुनेसर-

"तेलोसँ चिक्कन। अखने भुखनाकेँ नेने जाउ।"

सोनमाकाका भुखनाकेँ संग केने अपना ऐठाम एला। गाममे जेते घरहटिया अछि, सभकेँ घरहटाइक एक-एकटा काज करैक लूरि सोनमाकाका सिखौने छथिन, तँइ सभ काका कहै छैन।

❍

शब्द संख्या : 1572

दोती बिआह

पचास वर्षीए प्रोफेसर उमाकान्त दोहरा कऽ बिआह काइए लेलैथ। केना नै करितैथ? संयमी रहने पचास बर्खक चेहरा पैंतीस-चालीससँ ऊपर नइ बुझि पड़ै छैन। पत्नीक मुइने घर सुनसान लगए लगलैन। चौघारा कोठरी सभ ढन-ढन करैत रहैन। अपना छोड़ि ने दोसर भैयारी आ ने कियो आन परिवारमे रहैन। दुइए-टा सन्तानो। जेठ बेटी प्रोफेसर पतिक संग बनारसेमे रहै छैन जे दुरागमनक पछाइत आइ धरि मात्र तीन बेर माए-बापसँ भेँट करए एली। बेटो तहिना छैन। डाक्टरीक अन्तिम साल, बंगलोर मेडिकल कौलेजमे पढ़ै छैथ जे सालक दुर्गापूजाटा मे गाम अबै छैथ।

किरिण फुटिते तीनू बकरी घरसँ निकालि बाहरक खुट्टीमे बान्हि, कटहरक पात आगूमे दऽ बगलमे बैस अपने फुरने असकरे बैसल बहिरी बाजए लगली-

"घोर कलयुग! घोर कलयुग आबि गेल! जेते दिन ई दुनियाँ चलैए, चलैए, नइ तँ धरती फाटत, सभ ओइमे चलि जाएत। सुआइत लोक कहै छै जे मनुख तेते पपियाह भऽ गेल अछि जे खिआइत-खिआइत चुट्टी-पिपरी जकाँ भऽ गेल। हमरा सभकेँ भगवान पार लगौलैन जे एतेटा मनुख भेलौं। आबक लोक थोड़े एते-एतेटा हएत। तेहेन हएत जे लग्गी लगा-लगा भँट्टा तोड़त।"

ओना बिआहसँ दू दिन पहिनहिसँ स्त्रीगणक बीच गुन-गुनी शुरू भऽ गेल छेलै मुदा कियो खुलि कऽ नै बाजए चाहै छेली। मुदा आइ सबहक मुँह खुजि गेलैन।

टोलक बीच सरकारीक चापाकल तीनेटा अछि। बाँकी पाँचो अपन-अपन अँगनेमे लोक गड़ौने छैथ, जैपर आन-आन नइ जाइत। तीनूमे सँ एकटाक हेडे खोलि तड़िपीबा सभ बेच कऽ ताड़ी पीब गेल। दोसराक फील्टरे फुटि गेल

छै, जइमे पानिसँ बेसी गादिए अबैए। खाली चौराहा परहक कल बँचल अछि। मुदा ओहो कोन जन्मक पाप केने अछि जे भरि दिनमे कखनो अराम नइ भेटै छइ। चारू दिससँ पनिभरनी सभ अपन-अपन बाल्टीन-घैल लऽ आबि-आबि चारू दिससँ घेर बेरा-बेरी पानि भरैत रहैए। तँए गप-सप्प करैक नीक अवसरो आ जगहो फइल।

चिक्कारी मारैत मझौरावाली सोनरेवाली दिस देख कऽ बाजल-

"सौनक लगनक गीत अबै छैन, दीदी?"

मुस्की दैत सोनरेवाली उत्तर देलखिन-

"जहिना एक्के लोढ़ीसँ सिलौटपर मिरचाइयो पीसल जाइ छै आ मिसरियो, तहिना ने डहकनो फागुनोक लगनमे गौल जाइत अछि आ साउनोमे।"

दुनू गोरेक चिकारी सुनि बेलौंचावाली बाजल-

"अपना भैंसुरकेँ नै देखै छुहुन जे काठपर जाइ बिना दुइर भेल जाइ छथुन आ तैपर पुट्ठा खलीफा घर लऽ अनलखुन, से बड़बढ़ियाँ बड़ चिक्कन आ प्रोफेसर भैयाकेँ अखन की भेलैन हेन। मारे दरमहो कमाइ छैथ आ उमेरे केते हेतैन। तीस-पैंतीस बर्खसँ बेसी थोड़े भेल हेतैन।"

मझौरावालीक पछ लैत, मुँह चमकबैत मोहनावाली बाजल-

"जानियेँ कऽ तँ पुरुख छुद्दर होइए। तइमे उमाकान्ते जँ छुद्दरपना केलैन तँ कोन जुलुम भऽ गेलइ!"

मोहनावालीक करुआएल गप सुनि बेलौंचावालीक मन जरए लगलैन। तुरैछ कऽ बजली-

"सभ पुरुख तँ छुद्दरे होइए मुदा मौगी तँ सभटा गिरथाइने होइए, सएह ने। सत-सतटा मुनसा देखैए मौगी आ छुद्दर होइए पुरुख! हिनके पुछै छिऐन जे प्रोफेसर भैयासँ नीक अपन घरबला छैन?"

घरबलाक नाओं सुनि मोहनावाली काँख तरक घैल निच्चाँमे रखि आगू बढ़ए लगली। मुदा तैबीच साठि बर्खक झबरीदादी जोरसँ बजली-

"मरदक कमाएल खाइ जाइ छह आ गरमी चढ़ै छह तँ कलपर झाड़ैले अबै छह। एक्को दिन कोइ उमा बौआकेँ भानसो कऽ दइ छहक आकि एक लोटा

पानियोँ भरि कऽ दऽ अबै छहक, से कियो नहि! आ मुदा उल्लू जकाँ मुँह दुसल सभकेँ होइ छह! वेचारा नोकरीपर सँ अबै छैथ, अपने हाथे बरतन-बासन धोइ, पानि भरि भानस करै छैथ से बड़बढ़ियाँ, मुदा बिआह कऽ लेलैन से बड़ अधला।"

झबरीदादीक गप ओते मोहनावाली नै सुनैथ जेते तरे-तर बेलौंचावाली जरैत रहैथ।

छह मास पूर्व प्रोफेसर उमाकान्तक पत्नी स्वर्गवास भऽ गेलैन। जाधैर जीबै छेलखिन ताधैर घरक कोनो भार प्रोफेसर साहैबकेँ नइ बुझि पड़लैन। जहिना कोसीक धार अनवरत बोहैत रहैए तहिना उमाकान्तोक परिवार अपना गतिसँ छह मासक पछाइत धरि चलैत रहैन। ओना दस बर्ख पूर्व धरि माए-पिताक नजैरमे उमाकान्त बच्चे आ पत्नी कनियेँ छेलखिन। घरक भार दुनूमे सँ किनकोपर नइ छेलैन। सोल्होअना माइए-बाबू सम्हारै छेलखिन। पढ़नाइ-पढ़ौनाइ उमाकान्तक आ दुनू साँझ भानस केनाइ पत्नीक काज रहैन।

मुदा पत्नी-मुइला पछाइत उमाकान्तकेँ घर-आँगन सून-मशान बुझि पड़ए लगलैन। चौघारा घरक आँगन, नमहर दरबज्जा, तैबीच असकरे उमाकान्त रहै छैथ। परिवारकेँ डगैत देख उमाकान्तक मनमे बेचैनी बढ़ए लगलैन। जहिना भुमकमक समए धरतीक संग-संग ऊपरक सभ किछु काँपए लगैए तहिना मनक संग-संग उमाकान्तक बुधि-विवेक डोलए लगलैन, हृदए चहकए लगलैन, मन मसकए लगलैन। मसकैत-मसकैत एहेन चिरक्का लगि गेलैन जे उपयोग करै-जोकर नइ रहलैन। अनासुरती धैर्यक सीमा बाउलक मेड़ जकाँ ढहए लगलैन। ढहैत-ढहैत सहीट भऽ गेलैन। सहीट होइते बर्खा-पानि जकाँ उमाकान्तक हृदयमे रस्ता बनबए लगलैन, जइसँ नव-नव विचारक जन्म भेलैन। नव-नव विचारकेँ जनैमते आँखि उठा आगू तकला तँ मेला-जकाँ दुनियाँ बुझि पड़लैन। सभ रंगक देखनिहार। सभ तरहक वस्तुक दोकानपर एका-एकी एबो करैत आ जेबो करैत। अपन-अपन धुनिमे सभ बेहाल। दोसर दिस देखैक केकरो समए नहि। अपने ताले सभ बेताल, जइसँ केकरो-केकरो आँखिसँ नोरो खसैत आ कियो-कियो ठहक्को मारैत। अनका दिससँ नजैर हटा उमाकान्त अपना दिस मोड़लैन तँ जिनगी-ले संगीक जरूरत अनिवार्य बुझि पड़लैन। मन पड़लैन पत्नीक मृत्यु। मृत्युक उपरान्त सोग परगट करैले तँ बहुतो एला, मुदा की सबहक नोरमे एक्के

रंगक वेदना रहैन? एक घटना रहितो एक रंगक विचार आ वेदना कहाँ छेलैन? भरिसक सभ भाँज पुरबैले आएल छला। मुदा प्रोफेसर हरिनारायणक नोर किछु आरो छेलैन। की हुनकर नोर पत्नीक प्रति छेलैन आकि पढ़ैत बच्चाक प्रति, आकि हमर विधुर जिनगीक प्रति..?

उमाकान्तक मनपर भार पड़लैन। भारक तर मन दबेलैन, जइसँ सोचै-विचारैक रस्तो अवरुद्ध हुअ लगलैन। मुदा तरमे दबल मन कहलकैन-

"समाजक लोक की कहत?"

फेर मनमे उठलैन, की कहत समाजक लोक! जेते लोक तेते विचार। जहिना ताड़ीक गन्धसँ केकरो उल्टी होइ छै तँ कियो सुगन्ध बुझि आत्म-तुष्टि करैए तहिना अछि। बुढ़-बुढ़ानुस परम्परानुसार कहता जे संयुक्त परिवारमे बेकती-विशेषक वेदना परिवारक बीच हरा, फुलाएल फूल जकाँ हँसैए, जइसँ अभाव कोनो वस्तु नइ रहि जाइत अछि। फेर मनमे उठलैन, जइ कौलेजमे शिक्षक रूपमे छी, बेटा-तुल्य विद्यार्थीकेँ जिनगीक बाट देखबै छी, ओ की कहत? मुदा कोनो घटनो तँ अनिवार्य नै होइत आकष्मिको होइ छइ। जे सबहक संग घटबे करत, तेकर गारंटी नहि, घटियो सकैए, नहियोँ घटि सकैए। ..मन ओझड़ेलैन। किछु-कालक पछाइत मनमे एलैन, जे मनुख ऐ धरतीपर जन्म लैत अछि ओ मृत्युपर्यन्त हँसैत जीबए चाहैए, मुदा से कहाँ भऽ रहल अछि? पहिलुका जकाँ परिवारो नइ रहल। असकर जीबो कठिन अछि। दोसराक जरूरत सदिकाल पड़ैए। भलेँ जिनगीक क्रिया निमाहि लेब मुदा मनक बेथा के सुनत? सभठाम ने तँ लोक कानि सकैए आ ने हँसि सकैए। मुदा परिवार तँ हँसै-कनैक जगहे छी। जँ से नइ भेटए तँ गुड़-घा जकाँ तरे-तर सड़ैन करैत रहत। जेते सड़ैन करत तेते शरीरसँ गन्ध निकलबे करत, जइसँ कष्टो हएत आ औरुदा घटत। जखने औरुदा घटत तखने जिनगी सिकुड़त। जेते जिनगी सिकुड़त तेते मृत्यु करीब औत...। उमाकान्तक मन फेर ओझरा गेलैन। ओझराइते नजैर घुमौलैन तँ कौलेजक इतिहास विभागक प्रोफेसर हरिनारायणपर पड़लैन। हरिनारायणे बाबूटा एहेन जिज्ञासु भेला जिनका आँखिसँ हृदैक वेदना, पहाड़पर सँ खसैत झरनाक पानि जकाँ अनघोल करैत रहैन जे "बाप रे, अन्याय भऽ गेल। उमाकान्त ठूठ गाछ सदृश भऽ गेला। जइमे फूल-फड़क संग छाहैरो अलोपित भऽ जेतैन। अपने जानटा लऽ कऽ पत्नी नै गेलखिन। असीम वेदनाक पहाड़ सेहो

माथापर पटैक गेलखिन। सभ किछु छिड़िया जेतैन। केना समेट पौता उमा भाय! की एकरे जिनगी कहबै?"

चेतना शून्य उमाकान्त दुनियाँक बजारमे हरा गेला। चारू दिसक बाट बन्न बुझि पड़ए लगलैन। केमहर जाएब से रस्ते नहि। की उमाकान्त खरहोरिक गाड़ल ओइ कड़ची सदृश भऽ गेला जेकरामे कोनो क्रिया नइ भेनौं लोक ओगरवाह बुझैए? अनासुरती मनमे जगलैन जे दुनियाँमे कियो अप्पन नहि। जाधैर आँखि तकै छी ताधैर दुनियोँ अछि नइ तँ ओहो नै अछि। अपने करनीसँ कियो दुनियाँकेँ सुन्दर बनबैए आ कियो अधला। आगू जीबैले संगीक जरूरत सभकेँ होइ छइ। आनक अपेक्षा हरिनारायणबाबू लग बुझि पड़ै छैथ। अखने हुनका ऐठाम जा अपन मनक बात कहबैन।

उमाकान्तकेँ देखते दुनू हाथसँ दुनू बाँहि पकैड़ हरिनारायण अरियाति कऽ अपन कोठरीमे बैसा पत्नीकेँ पानि नेने आबए कहलखिन।

बामा हाथमे लोटा दहिना हाथमे पानिसँ भरल चमकैत स्टीलक गिलास उमाकान्त दिस बढ़ौलखिन। पत्नी विहिन उमाकान्त नजैर निच्चाँ केने शोभाक हाथसँ गिलास लऽ पानि पीबए लगला। मुदा दू घोंटक पछाइत पानि कण्ठसँ निच्चाँ धँसबे ने करैन। दोसर गिलास भरैले शोभा बामा हाथक लोटा दहिना हाथमे लैत उमाकान्तपर नजैर गाड़ने रहली। ने उमाकान्त मुहसँ गिलास हटबैत आ ने पानि पीबैथ। उमाकान्तक बेथा हरिनारायण बुझि गेला। शोभा हाथक लोटा अपना हाथमे लैत कहलखिन-

"अहाँ चाह बनौने आउ। भायकेँ हम पानि पिआ दइ छिऐन।"

चाह बनबैले शोभा कीचेन रूम चलि गेली।

मुँहमे गिलास सटल उमाकान्तक मनमे आबए लगलैन। जँ कहियो हरिबाबू हमरा ऐठाम जेता तँ किनका चाह बनबैले कहबैन। उमाकान्तकेँ विचारमे डुमल देख हरिनारायण बजला-

"भाय, अपनेसँ हम छोट छी मुदा एकरा धृष्टता नइ बुझि दिलक धड़कन बुझू। अपने बेसी दुनियाँ देखलिऐ मुदा...।"

चौंक कऽ उमाकान्त पुछलखिन-

"मुदा की?"

आइसँ पहिने मनुख जेते असुरक्षित जिनगी बितबै छल ओइमे बहुत कमी आएल अछि। सोलहन्नी सुरक्षित तँ नहि, मुदा पहिलुका अपेक्षा सुरक्षित भेल अछि। ओना खतरा पहिनेसँ अधिक भऽ गेलै हेन। मुदा बदलल रूपमे। पहिलुका रूपमे सुरक्षित भेल अछि। जइसँ जिनगीक नमती सेहो बढ़ि रहल अछि। ओना पूर्वज शतायुकेँ सही औरुदा बुझै छला। मुदा ईहो बुझिनिहार तँ छैथ जे चालीसकेँ घपचालीस बुझै छैथ, ओहो ओहिना नइ बुझै छैथ। अखनो चालीस बर्खसँ ऊपर केते गोरे छैथ जे पूर्ण स्वस्थ छैथ? मुदा किछु बर्ख पूर्व धरि अस्सी बर्खसँ ऊपर गोटि-पँगरा पहुँचै छला। से आब अदहासँ बेसी पहुँचए लगला अछि। तँए, मोटा-मोटी नब्बेकेँ अधार बना हरिनारायण पुछलखिन-

"अपनेक आयु केतेक अछि?"

'आयु' सुनि उमाकान्त विस्मित भऽ गेला। हृदए बमकैत रहैन मुदा मुहसँ बोली निकलबे ने करैन। किछु-काल बिलैम बजला- "पचास बरख।"

'पचास बर्ख' सुनि हरिनारायण उछैल कऽ बजला-

"अदहासँ किछु अधिक भेल अछि मुदा अदहा तँ बाँकीए अछि। अदहा-ले...।"

नमहर साँस छोड़ि, उमाकान्त आँखि उठा कखनो हरिनारायणपर दैथ आ कखनो निच्चाँ कऽ धरती देखए लगैथ। मुस्कियाइत हरिनारायणे बाबू बजला-

"अपने दोसर बिआह कऽ लेल जाउ। जरूरी नहि, जे सभ औरत कुल्टे होइए। एहनो औरतक कमी नइ अछि जिनकामे मानवीय संवेदना गंगाक धार जकाँ सदिखन उमड़ैत रहै छैन। नारीक पहिल गुण मातृत्व छी, जेकरा प्रवल बनेबैले पुरुखक सहयोग जरूरी अछि। जखने अनुकूल परिस्थिति नारीक प्रति बनत तखने दुनियाँक रंग-रूप बदलल-बदलल बुझि पड़त।"

चाह पीब, विदा होइत उमाकान्त बजला-

"अहाँक विचारसँ सहमत छी, मुदा काजक भार अहाँपर।"

दुनू गोरे दू गामक। मुदा कोसे भरिक दूरी दुनूक बीच छैन। अपने गामक पच्चीस बर्खक यशोदियाक संतप्त जिनगी हरिनारायणक सोझहेमे छैन। सोलह बर्खक देहैरपर जखन यशोदिया पहुँचल, अट्ठारह बर्खक गुणेश्वर, फूलक सुगन्धकेँ भौरा जकाँ झपैट लेलक। जिनगीक हरियर-हरियर प्रलोभन देबाक

संकल्प करैत, लोक-लाजसँ बँचैले गाम छोड़ि दिल्ली चलि गेल। मुदा दिल्लीक सड़कपर जखन दिन-राति बितए लगलै तखन यशोदियाकेँ छोड़ि निपत्ता भऽ गेल। असकर यशोदिया वौआए लगल। हारि-थाकि यशोदिया एकटा कोठीक शरणमे गेल। आठ बर्खक पशुवत् जिनगी यशोदियाकेँ बदलैले बाध्य केलक। नव बाट ताकए लगल। अपनाकेँ मृत बुझि एक राति सभ किछु छोड़ि पड़ा कऽ गाम आबि गेल। गाम आबि हरिनारायणक पएर पकैड़ ताधैर कनैत रहल जाधैर ओ बाँहि पकैड़ मनुखक जिनगी जीबैक भरोस नै देलखिन।

हरिनारायण परिवारमे यशोदिया रहए लगली। यशोदियाक मनमे तँ चैन आबि गेल मुदा हरिनारायणक बेचैनी बढ़ए लगलैन। समए पाबि, बिलटैत दू जिनगीकेँ जोड़ि एक परिवारकेँ लहलहाइत देखलैन। मनमे खुशी एलैन।

अखन धरि उमाकान्त यशोदियाकेँ प्रोफेसर हरिनारायणक बहिन बुझै छला। यशोदियाक असली परिचय नै छेलैन तँए मनमे खुशी रहैन जे सभ्य परिवारक लड़की घरमे औती, जइसँ पहिलुके जकाँ फेर परिवार अपन पटरीपर आबि आगू-मुहेँ ससरए लगत।

दिन-बेरागन छोड़ि हरिनारायण उमाकान्तकेँ पुछलखिन-

"अखन तँ बिआहक समए नै अछि तखन..?"

"एक-एक दिन पहाड़ लगि रहल अछि। बिआहक जे कोनो बन्हन अछि से काँच सूतसँ बान्हल जाइत अछि। जइसँ सदिखन टुट-फाट होइत रहैए। तँए दुनूक माने पुरुख-नारी हृदैक योग हेबा चाही?"

हरिनारायणक प्रश्नसँ उमाकान्त गुम्म भऽ बजला-

"समए आ परिस्थितिकेँ देखैत...।"

उमाकान्त यशोदियाक बीच साउनेमे बिआह भऽ गेल।

❍

शब्द संख्या : 1822

पड़ाइन

पछुलका बाढ़िमे खेतक फसिल तँ धुआइए गेल जे मालो-जाल गामसँ उपैट गेल। अपनो दुनू बरदो आ महींसो मरि गेल। जहिना जंगलक जानवरकेँ मेघसँ खसैत पाथरक चोट छटपटबैत तहिना ऐ साल आन-आन किसानक संग अपनो भेल। बाधसँ लऽ कऽ घर धरिक दशा सहाज करै-जोकर नइ रहल। बाढ़ि अबिते खेतक धान डुबि गेल। मोटाइत-मोटाइत पानि आँगन-घरमे सलाढ़ लगि गेल। नारक टाल पानिक बेगमे भँसि गेल। भुसकाँर खसि पड़ल जइसँ गहुमक भूसी भँसिया गेल। आश्रमक घरक संग-संग मालो घरमे पानि पहुँच गेल। जहिना लाठीपर लाठी खाइत दशा होइत तहिना भेल।

चढ़िते कातिक ऐगला खेतीले सभ सूर-सार करए लगल। मुदा खेतीक तँ प्रमुख अंग बरद छी। बिनु बरदे खेत जोताएत केना। अपनेटा गामक एहेन दशा नहि, परोपट्टाक एक्के रंग दशा। किसानक बीच एक्के रंग समस्या पसैर गेल, जइसँ बँचल-खूचल माल-जालक दाममे आगि लगि गेल। बरदक दाम दोबर-तेबर भऽ गेल। एक तँ भेटैबला नहि, दोसर पैकार सभ जे बाहरसँ आनि-आनि बेचै ओकरो वएह हवा।

अपन इलाका छोड़ि दोसर इलाकासँ बरद कीनि अनैक विचार भेल। मुदा असगर-दुसगर आननाइयो भारी बुझि पड़ल। गाममे गप्प चलेलौं। एक्के-दुइए आठ-नअ गोरेक विचार भेल। जोड़ा कीननिहार तीन गोरे भेलौं। बाँकी छबो- गोरे पल्ले-पल्ला कीननिहार। हुनका सबहक विचार जे एकटा बरदसँ हर नै जोतल जाएत मुदा जोड़ा लगा लेलासँ भजैती नीक रहत। बेजोड़ बरद रहने एकटाकेँ बेसी भीड़ होइ छै आ एकटाकेँ कम, जइसँ साले भरिमे बरद टुटि दाम बुड़ा दइ छइ।

तेसर दिन नअ गोरे लौकहावाली गाड़ी झंझारपुर हॉल्टपर पकड़लौं। साढ़े

बारह बजे लौकहा स्टेशन उतैर मेन रोड छोड़ि धनबदहेक उत्तर-मुहेँ रस्ता पकड़लौं। करखन सीमा टपलौं से बुझबे ने केलिऐ। एक्के रंग बाध आ बाधक उपजा। नमहर-नमहर बाध, खेतमे लहलाहइत धान। दुधाएल धानक सीस, जहिना धानक गाछक रंग तहिना सीसोक। ऊँचगर-चौड़गर खेतक आड़ि, जैपर राहैड़ फुलाइतो आ छीमियोँ भेल। टाट जकाँ राहैड़क गाछ खेत सबहक परिचय करबैत। अपन सभ जकाँ चनकी राहैड़क गाछ नहि, मझोलका गाछ...।

खेसारी छिटैत एक गोरेकेँ पुछलिऐ तँ कहलक जे ऐ दिगारमे बेसी पये राहैड़ होइ छइ। धानेक संग-संग अगहनेमे कटाइ छइ। सोहरी लगल घुरछा-घुरछे ओ राहैड़ फड़ल। छीमियोँ नमहर। कोला-कोली गिरहस्त खेसारी, मौसरी छिटैत। आड़ि सभपर जेरक-जेर ढेरबा-सँ-सियान धरि घसवाहिनी घास छिलैत। उपजा देख माटि निहारलौं तँ सोलहन्नी खसिआइ माटि बुझि पड़ल, देखैमे कारी। माटि देख मन गदगद भऽ गेल। मुदा अपन इलाका मन पड़िते मन तिता गेल। कमला-कोसीपर खौंझ उठल। दुनू तेहेन हेहर अछि जे इलाकाक माटिकेँ बिगाड़ि देलक। बाउल भरि खेतकेँ बलुआह बना देलक। रस्ताक पछबारि भाग एकटा नमगर-चौड़गर परतीपर पचासो महींस चरैत देख मन खुशी भऽ गेल। चरवाह सभ महींसकेँ अनेर चरैले छोड़ि अपने सभ खेलाइत। खेलो अजगुत, ठेंगा-ठेंगा। कनी अँटैक देखए लगलौं। एकटा सीमा देने। ओइ सीमापर सँ रागक तर देने उनैट कऽ दुनू हाथे ठेंगा फेकैत। जेकर ठेंगा जेते दूर जाए ओ ओते सुरक्षित। जेकर लग रहै ओ हारइ। जे हारै ओकरा घुघुआपर चढ़ि ठेंगा लग तक जाए। फेर दोहरा कऽ खेल शुरू होइ। गोबरबिछनी सेहो बैस कऽ खेल देखैत। कोनो धड़फड़ी रहबे ने करइ। तीनिए चारि गोरे रहए, पथियामे केते अँटितै। जहिना एकाधिकार पूजीपतिक कारोबार निचेनसँ चलैत, कोनो प्रतियोगिता रहबे ने करैत, तहिना पचास महींसक गोबरक बीच तीनू-चारू गोबरबिछनी। मुदा एकटा देखलिऐ जे एकबेर एकटा महींस धानक खेत दिस बढ़ए लगलै तँ एक गोरे माने एकटा ढेरबा गोबरबिछनी उठि कऽ महींस घुमा देलकै।

कोसक अन्दाज आगू बढ़लौं तँ हाट लगल देखलिऐ। समैयो चारिक करीब भऽ गेल। मनमे भेल जे कोनो ठेकानल जगहपर थोड़े जाइक अछि जे अबेर हएत। जखन एलौं तँ देखैत-सुनैत जाएब। हाट देखए बढ़लौं। गमैया हाट। कट्ठा डेरहेक परतीपर लगल। तीन-चारि पल्लाबला दू-तीनटा अन-पानिक

दोकानदार, दस-बारहटा तीनम-तरकारीक, एक-एकटा माछ-मासुक दूटा झिल्ली-कचड़ी-मुरहीवाली, एकटा मनिहारा, एकटा माटिक बरतन, एकटा छिट्टा-पथियाक, एकटा चाहक दोकान आ एकटा पान-बीड़ीक। मुदा खरीदारी बढ़ियाँ होइत। अन्दाज केलौं तँ बुझि पड़ल जे जेते किनिनहार अछि ओतबे समानो आ बेचनिहारो। चाहक दोकानपर बैस चाह दइले दोकानदारकेँ कहलिऐ। चूल्हिक छाउर झाड़ि, डोमौआ बीऐन होंइक, चूल्हिपर केटली चढ़ौलक। दोकानदारसँ पुछलिऐ-

"हाट सभ दिन लगैए?"

दोकानदार कहलक-

"ऐ पँचकोसीमे चारिटा हाट लगै छइ। सोम आ शुक्रकेँ ई हाट लगैए। रवि आ बुधकेँ बिस्टौल लगै छै, मंगल आ वरसपतिकेँ चिकना आ शनि-मंगलकेँ परसा।"

चाह बनल। सभ कियो पीब दोकानदारकेँ पाइ दऽ विदा भेलौं। अपने गाम जकाँ गामो, अपना सबहक तँ पोखैर-इनार या तँ बाउलमे भोथा गेल वा मरने भऽ गेल अछि, ओइ सभमे अखनो अछिए। गोटि-पँगरा ईंटाक घर। रस्ता-पेरा कच्चीए। उत्तरे-दछिने गाम सभ। जइसँ आगि-छाइसँ सुरक्षित। जँ केतौ पुरबा-पछबामे आगि लगबो कएल तँ कम घर जरल। जहिना गाम उत्तरे-दछिने तहिना अँगनो सभ। अपने सभ जकाँ लोकोक बगए-बानि आ बोलियो। जइसँ अनभुआर जकाँ बुझिऐ ने पड़ए। गोसाँइ लूक-झूका गेला। जहिना पछबा सबेर-सकाल अपन बोरा-बिस्तर समेट लैत तहिना ने परदेसियोकेँ सबेर-सकाल ठौर पकैड़ लेबाक चाही। मनमे उठिते अँटकैक गर लगबए लगलौं। एक गोरेसँ पुछलिऐ-

"कोन गाम छी?"

"रोहितपुर।"

मुदा कोनो निसचित गाम तँ जेबाके नै छल जे दोहरा कऽ पुछितिऐ। तैकाल एक गोरेकेँ दोसर गोरे सोर पाड़लक-

"मधेपुरबला हौ, हौ मधेपुरबला। कनी एमहर आबह।"

मधेपुर सुनि मन चौंकल। मुदा लगले असथिर भऽ गेल। नाम-गामक

कोनो ठेकान अछि। एक-एक नामक केतेक लोको आ केतेक गामो होइए। मुदा मनमे तैयो घुरियाइते रहि गेल। मधेपुरबलाक घर पुबारि भाग रस्ताकातेमे। घास झाड़िते मधेपुरबला उत्तर देलक-

"हाथ लगल अछि, लगले अबै छी।"

कहि घास झाड़ब छोड़ि मधेपुरबला उत्तर-मुहेँ विदा भेल। लगमे अबिते पुछलिऐ-

"कोन मधेपुर रहै छी?"

गामक नाओं सुनि बाजल-

"अहाँ सभ केतए रहै छी?"

कहलिऐ-

"हमहूँ मधेपुरे रहै छी। तँए पुछलौं।"

मधेपुर सुनि ओ चौंक गेल। जेना किछु भेट गेल होइ तहिना। मुस्कियाइत बाजल-

"झंझारपुरसँ पूब-दच्छिनक जे मधेपुर छै, ओही मधेपुर रहै छी।"

अपन मधेपुर सुनि हमहूँ हँसैत बजलौं-

"हमरो सबहक घर तँ ओही मधेपुर अछि।"

हमरा सबहकेँ दरबज्जापर बैसबैत बाजल-

"लगले अबै छी। ओइ वेचारा ऐठाम पाहुन सभ औत डेढ़िया परहक टाट लगौत ओकरे गर धरौने अबै छी। हमर भाग जे गौंआँ-घरूआ सभ एला।"

अपन भेटैत ठौर देख कहलयैन-

"हँ, हँ भेल, आउ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छइ।"

काजक बोझसँ अपनाकेँ लदल देख चेथरू रस्तेपर सँ सोर पाड़ि पत्नीकेँ कहलक-

"लगले अबै छी। ताबे अहाँ एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा आनि पएर धोइले दियौन।"

कहि चेथरू आगू बढ़ल। भरि बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा नेने चमेली

दरबज्जापर आबि पुछलैन-

"बौआ, अहाँ सबहक घर केतए अछि?"

कहलयैन-

"मधेपुर।"

जहिना अनचोकमे देहपर खढ़ो गिरिते लोक चौंक जाइए तहिना मधेपुर सुनि चमेली चौंक गेली। अदहा मुँह झँपैत बजली-

"औक्सी महादेव मन्दिरसँ थोड़बे हटि कऽ हमरो नैहर अछि।"

चमेलीक बात सुनि दुभिक मुहसँ छोड़ैत नव पत्ती (पात) जकाँ हृदैमे भेल। अपन तीस बर्ख पहिलुका जिनगीमे ओ डुबि गेली। मुँह शिथिल भऽ गेलैन, जइसँ किछु आगूक बकार नै निकललैन। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथि-ले घरवारीक रहब अनिवार्य बुझि खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहली। बेरा-बेरी हमहूँ सभ पएर धोइ-धोइ चौकीपर बैसए लगलौं। जहिना देवालयमे दर्शकक नजैर एकाएकी मुरती सभपर पड़ैत तहिना चमेलीक आँखि हमरा सभपर नाचए लगलैन।

घुमि कऽ अबिते चेथरू पत्नीकेँ कहलखिन-

"जलखै नेने आउ। रस्ताक झमाड़ल सभ छैथ। भूख लगल हेतैन।"

हमहूँ सभ बेरा-बेरी कुर्रा कऽ बैसलौं। चँगेरा भरि मुरही, नोन-मिरचाइ आँगनसँ आनि चमेली बीचमे रखि देलैन। जलखै देख चेथरू बजला-

"अहाँ सभ जाबे जलखै करब ताबे छिड़िएलहा काज सभ समेट लइ छी।"

कहि एकटा छिट्टा आ हँसुआ नेने बाड़ी दिस चेथरू आ आँगन दिस चमेली बढ़ली। कातिक मास रंग-बिरंगक तरकारीसँ सजल चौमास। बिना तजबीज केनहि चेथरू आठो-नओ रंगक तरकारीक छिट्टा आँगनमे रखि, लगमे आबि बैसला। बैसते कहलयैन-

"अपन इलाकाक जहिना खेती-पथारी उपैट गेल तहिना मालो-जाल। मुदा बिना बरदे खेती केना करितौं। तँए एलौं। सुनै छी जे ऐ इलाकाक लोक अपना इलाकाबलाकेँ कहै छैथ जे अपन कमाएल रूपैआ लऽ कऽ एलौं आकि

बाप-दादाक, से ठीके छिऐ?"

हमर बात सुनि चेथरू तरे-तर हँसए लगला। मुदा अपनाकेँ दुनू ठामक पाबि कनीकाल गुम रहि बजला-

"खिस्सा-पिहानी अहिना लोक जोड़ती-जोड़ि बना लइए। एहनो-एहनो बात हुअए। कोनो धरती कर्मभूमिसँ धर्मभूमि बनैए। देखै छी जे गामोमे दिल्ली-बम्बइसँ घुमि कऽ आएल कनियाँ सभ अतिथि-अभ्यागतकेँ ओतुक्के चालि-ढालिसँ स्वागत करै छैथ तँ एहनो सभ छैथ जे केरल-मद्रासमे रहितो गाम-घर जकाँ स्वागत करै छैथ। हम-अहाँ भैयारी भेलौं। तँए भैयारी जकाँ दुख-धन्धाक गप-सप्प करू।"

चेथरूक विचारसँ मन खनहन भऽ गेल। हृदए बाजि उठल जे सहारा भेटल। अखन तँ धान फुटबे कएल, जखन पाकत तँ बीयो-बालि लऽ जाएब। ऐठामक बरदो अपना ऐठामक बरद तँ सक्कतो होइ छै आ बेसी दिन जीबो करै छइ। अपना ऐठामक माल गदियाह भऽ गेल। ऐठामक जमीनक माल निरोग अछि। चुप्पा-चुप्पी देख पुछलयैन-

"अहाँ केना ऐठाम आबि गेलौं?"

हमर बात सुनि चेथरूक मन पसीज गेलैन। गपकेँ आगू नै बढ़ा बजला-

"भानसो भऽ गेल हएत। अहूँ सभ थाकल छी। जखन बरद कीनए एलौं तँ हेबे करत। कोनो की अनतए एलौं। अपन घर छी। पाँच दिनमे इलक्को घुमा कऽ देखा देब। मन मोताबिक बरदो कीनि देब।"

चेथरूक बात सुनि हुँहकारी भरैत बजलौं-

"हँ, हँ, से तँ ठीके। देस-कोस ने बदलैए। मनुख तँ मनुक्खे रहैए किने।"

खेला-पीला पछाइत संगी सभ नीनसँ सुति रहला। मुदा अपना नीने ने हुअए। अदहा घन्टा बाद चेथरू खा-पी, मालक घरक घूर सेरिया, खाइले दऽ बरका बाटीमे शुद्ध तोड़ीक तेल नेने आबि बजला-

"सुति रहलौं।"

आरो गोरेक साँसे कहैत जे सूतल छी। बजलौं-

"नइ, जगले छी।"

हमरा लग आबि चेथरू तेलक बाटी बढ़बैत कहलैन-

"थाकल-ठेहियाएल छी, पैरमे तेल औंस लिअ।"

दहिना हाथ तेलमे डुमा बजलौं-

"भऽ गेल। एकरे मिला लइ छी। रखि दियौ।"

एकेठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन-

"ऐठाम एला केते दिन भेल?"

कनीकाल चुप रहि चेथरू बजला-

"जहिना बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक (टिप्पणि दुआरे) बेटा-बेटीक जन्मोक ठेकान नइ रहैत तहिना हमहूँ छी। अन्दाज पच्चीस बर्खसँ ऊपरे भेल हएत?"

"ऐठाम बेसी नीक लगैए आकि ओइठाम, मधेपुरमे?"

प्रश्न सुनि चुप भऽ गेला। जहिना दुबट्टी-तिनबट्टीपर पहुँच अपन रस्ता लोक हियाबए लगैत तहिना चेथरूओ हियाबए लगला। उठि कऽ तमाकुल थुकैड़ आबि बैस बाजए लगला-

"जेतए बसी वएह सुन्दर। भने अखन दुइए भाँइ जागल छी। अपन गाम मन पड़ैए तँ छाती दहैल जाइए। बाबाक रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। बाबाक कहल सभ बात तँ मन नै अछि मुदा गोटे-गोटे मन अछि। कहने छला जे केना अपन गाम बसल आ अखन धरि केना परिवार चलैत रहल। दैवी चक्र एहेन चलल जे बिगड़ैत-बिगड़ैत एते बिगैड़ गेल जे बास होइ-जोकर नइ रहल।"

कहैत-कहैत हुचकी उठए लगलैन। गरा -कण्ठ- बाझए लगलैन। चुप होइत देख पुछलयैन-

"से की? से की?"

आँगुरसँ अपन मौसाक घर दिस देखबैत बजला-

"हमरा अबैसँ पहिने ऐठाम मौसा एला।"

मौसाक नाओं सुनि पुछलयैन-

"ओ किए एला?"

चेथरू-

"आब तँ अपने नै छैथ, बेटा छैन। वएह ऐठामक गाम-परधान छी। ओकरा दुआरपर पाँचटा धरम बखारी छइ। सौंसे गौआँ बेर-बेगरता-ले धान जमा केलक। साले-साले बढ़बैत गेल। अखन तेते जमा भऽ गेल अछि जे जेकरा जेते बेगरता होइ छै ओ ओते लइए आ पीठक-पीठ आपस करैए।"

मुहसँ निकैल गेल-

"वाह! अच्छा, ओ किए एला?"

चेथरू-

"मौसाकेँ अनटेटल गप आ अन्ट-सन्ट काज पसिन नै छेलैन। सोभावे ओहने छेलैन। जेकरा चलैत चारि-पाँच बेर गौआँ सभ मारलकैन। अन्तिम मारिमे बेसी चोट लगलैन। मन टुटि गेलैन। जहिना एक घटनासँ कियो वैरागी बनि जाइत तँ कियो अपराधी, कियो निरमोही बनि घर-परिवार छोड़ि दैत तँ कियो सिंह सदृश गर्जन करैत रहैए, तहिना गामक मोह छोड़ि खेत-पथार बेच चलि एला।"

"अहाँकेँ की भेल?"

"कोनो एक्के गाम ओहन अछि। हमर गाम तँ आरो बेसी बिगैड़ गेल। एक दिस महाजनक अतियाचार तँ दोसर दिस खेत-पथारक बेइमानी-शैतानी। बलजोरी अपन नमहर खेतमे छोटका खेतक आड़ि तोड़ि जोइत लइत। तहिना चोराइयो आ देखाइयो कऽ खेतक जजात गाए-महींससँ चरा लइत। आम तोड़ि लैत, दोसराक माए-बहिनक इज्जत-आबरूपर हाथ बढ़बैत तँ आगि-पानि ढाठि भागैले उड़ी-बिड़ी लगबैत। सेन्ह काटि-काटि घरक वस्तु-जात लऽ भागैत तँ बिना किछु बजनौं दसटा बात-कथा कहि दइत।"

चेथरूक बात सुनि, जहिना भुम्हुर आगिक धुआँ निकलैए तहिना लहरल हृदैक गर्म सांस निकलल।

पुछलयैन-

"शुरूमे (एलापर) तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?"

"नहि। अपना तीन कट्ठा खेत रहए। दू साए रूपैए कट्ठा बेच लेलौं। घरो

बेच लेलौं। खाली अपन देहक कपड़ा आ रूपैआ लऽ कऽ मौसे ऐठाम एलौं। वएह दस कट्ठा खेतो कीनि देलैन, एकटा घरो बना देलैन आ कहलैन जे जइ चीजक बेगरता हुअ, से लिहह। घरक बिचला खुट्टा जकाँ ठाढ़ भऽ गेला। आब तँ अपने सभ किछु भऽ गेल। जाबे सासु-ससुर जीबै छला ताबे सासुर जाइ छेलौं, मामा-मामी धरि मात्रिक। बहिन-बहनोइ ऐठाम जाइते छी। ओहो सभ अबिते अछि।"

चेथरूक बात सुनि मन औनाए लगल। कछ-मछी आबि गेल।

कहलयैन-

"नीनसँ देह भँसियाइए। बड़ राति भऽ गेल। अहूँ सुतैले जाउ।"

"एतै ने हमहूँ सूतब।"

पाँच दिन मेहमानी केलौं। छठम दिन बरद नेने गामक रस्ता धेलौं।

❍

शब्द संख्या : 1970

केतौ नै

चारि-पाँच बर्खसँ जनकपुरक बिआह पंचमी देखैक विचार मनमे उठैत रहल मुदा माए कहै छेली, 'अखन बाल-बोध छह, केतौ हरा-तरा जेबह, नइ जा।'

माइक बात नीक नै लगए। हुअए जे जहिना गाम-घरमे लोक नै हराइए तहिना ओतौ किए हराएत? ई नइ बुझिऐ जे ओइठीम दूर-दूरक लोक देखए अबैए, जइसँ भीड़-भाड़ बढ़ि जाइ छइ। भीड़े-भाड़मे बालो-बोध आ चेतनो हराइए।

चौदहम बर्ख टपिते पनरहमक शुरूए-मे अगहन-इजोरियाक पंचमी आएल। गामक लोकमे मेला देखैक सुन-गुनी शुरू भेल एक्के-दुइए सौंसे गाम पसैर गेल। एक गामक कोन बात सगतैर भेल। हमहूँ सुनलौं। माइक बात मन पड़ल। भलेँ भोँट खसबै-जोकर नइ भेलौं मुदा बालो मजदूर-जोकर तँ नइ रहलौं। हराइयो जाएब तँ की हेतइ? अपन खेबा-खरचा ने तीने दिनमे सधि जाएत मुदा तैयो तँ कमाइत-खटाइत, खाइत-पीऐत दस दिनक पछाइतो तँ आबिए जाएब। आशा जगल। बिसवास बढ़ल। माएकेँ कहलयैन-

"गामक लोक उनैट कऽ जा रहल छैथ, हुनके सभ सेने हमहूँ जाएब।"

माए किछु बजली नहि, कहली-

"नुआ-बस्तर खीच लिहह।"

माइक बात सुनि बिसवास भऽ गेल। मनमे उठल, आब टिकुलाक बीआ जकाँ थोड़े खिच्चा छी, भलेँ पाकल जकाँ सक्कत आँठी नइ भेलौं मुदा कोशाएल जकाँ तँ जरूर सकता गेल छी। अगुआएल-पछुआएल दुआरे गामक बीच यात्रीक गिनती नइ भेल। ओना गिनतीक महत बुझबो ने करिऐ। गामक सिमानपर पहुँचते ऐगला यात्री रूकि कऽ पैछला सभकेँ हाथक इशारासँ शोरो

पाड़थिन आ आँखि उठा-उठा देखबो करथिन। हमहूँ पहुँचलौं। पतराइत रस्ता देख गिनती हुअ लगल। मर्द-औरत मिला सताइस गोरे भेलौं।

गिनतीमे सभसँ उमेरगर सुचितादादी रहैथ। बजली-

"सभ कियो सुनि कऽ कान धरब! तीर्थ-वीर्त करए जाइ छी, तँए रस्ता-पेरामे केकरो कोनो चीज-वौस नै छुबै, आ ने झूठ-फूस बाजि केकरो ठकबै! भाए-बहिन जकाँ सभकेँ बुझबै। आ जँ कियो अगुआ-पछुआ जाएब तँ ठाढ़ भऽ कऽ संग करैत चलब।"

दादी गपक असर भेल। सभसँ कम उमेरक रही। बिना कहने-सुनने कफलाक टहलू बनि गेलौं। दादीकेँ कहलयैन-

"दादी, अपना कम्मे समान अछि, एक अढ़ैया चूड़ा आ कपड़ा झोरामे अछि, अहाँकेँ भारी लगैत हएत, लाउ नेने चलै छी।"

बात सुनि दादी, छिट्टा भरि असिरवाद दैत अपन मोटरी दऽ देलैन। आ दादी अपन पुरना खेरहा सभ कहैत चलए लगली-

"बौआ, अहिना कुशेसर जाइत रही। तीन बर्खसँ नियारैत रही, घरमे गाइक घी पड़ल रहए। केना चौदह कोस डेरहे दिनमे चलि गेलौं से बुझबे ने केलिऐ। तइ दिनमे समरथाइयो रहए।"

पुछलयैन-

"केतए-केतए गेल छिऐ दादी?"

कनीकाल गुम रहि मन पाड़ि बजली-

"अपन गामक तीनू स्थान- दच्छिनमे कुशेसर, पूबमे सिंहेसर आ उत्तर-पच्छिमक बीचमे जनकपुर पड़ैए। कनीए रस्ताक तरपट हेतइ। हँ, तँ कहए लगलयह, अहिना आठ-नअ गोरेक कफलामे सिंहेसर स्थान विदा भेलौं। अखन तँ चढ़न्त जाड़ अछि मुदा शिवरातिक समए जाड़ फटए लगै छइ। सबहक विचार भेल जे घोंघररिया तक टेनसँ जाएब, फेर सुपौल तक पएरे जाएब आ सुपौलसँ बस पकैड़ जाएब।"

बिच्चेमे पुछलयैन-

"कोसी-धार सेहो टपए पड़ल हएत किने?"

"हँ, हँ। पहिने टेनक बात सुनि लएह। जखन गाड़ीमे चढ़लौं तँ खाली सीट सभ देखलिऐ। दुनू कातक सीट मिला कऽ तीन-चारि गोरे बैसल रहइ। हमरो सभकेँ जगह भऽ जाइत। मुदा तेहेन ऐंठल सभ रहै जे नहियेँ बैसए देलक। पुरुख सभसँ मुँह केना लगैबतौं। सभ स्त्रीगणे रही।"

"किए ने बैसए देलक?"

"तेहेन-तेहेन छुद्दर पुरुख सभ भऽ गेल अछि, जे केकरोमे पुरुखपाना छइहे नहि। अपना ऐठीमक पुरुख अनको माए-बहिनकेँ अपन बुझैए। ओइ इलाकाक थोड़े बुझै छइ। ठाढ़े भेल घोंघररिया तक गेलौं। निच्चाँमे बैसबो करितौं से तेते सिकरेट-बीड़ीक अधजरुआ टुकड़ी आ चिनियाँ बदामक खोंइचा रहै जे बैसैक परपन नइ भेल।"

"मोटरी की केलिऐ?"

"मथेपर रखने गेलौं। ऊपरका सीटपर गेंड़ा जकाँ दूटा मुनसा सूतल रहै, किन्नो नै मोटरी राखए देलक। जखन कोसी धारमे नावपर चढ़लौं तँ घटवारक संगे कहा-कही हुअ लगल। मुदा बाबापर सुरैत लगा कहुना पहुँच गेलौं।"

स्टेशन पहुँचते गप-सप्प बन्न भेल। गाड़ी आएल। सभ कियो चढ़ि गिनती कऽ जयनगर पहुँचलौं। जयनगरक प्लेटफार्म यात्रीसँ भरल। तिल रखैक जगह नहि। मुदा एते बिसवास भऽ गेल जे एते दूर देखलो भाइए गेल। आब तँ बालो-बोध नहियेँ छी जे बिसैर जाएब। जँ कहीं छुटियो जाएब आकि हराइयो जाएब तैयो घुमि कऽ गाम चलिए जाएब।

नेपालक गाड़ियो छोट आ इंजिनो कमजोर, मुदा तैयो निच्चाँ-ऊपर लादि यात्रीकेँ पहुँचाइए दइ छइ। गाड़ीमे चढ़ै-दुआरे केते यात्री एक स्टेशन पएरे चलि उनटामे चढ़ि पहुँचै छैथ। मुदा सीमा कखन टपलौं से बुझबे ने केलौं। लोको एक्के रंग आ बोलियो तहिना। जनकपुर पहुँच गेलौं।

यात्री-सभकेँ देख मन उधिया गेल। मन मानि गेल जे ऐ भीड़मे केतौ जरूर हराइए जाएब। मुदा लोकक भीड़मे लोक अपनाकेँ हराएल केना बुझत। सभ तँ लोके छी। सबहक मुँहमे बोलो अछिए। सभ तीर्थे करए आएल छैथ तखन हराइक प्रश्न केतए? मुदा तैयो मन थरथराइते रहल। फेर भेल जे हराएब तखन ने, आ जँ नै हराइ। तइले अनेरे चिन्ता किए करै छी...।

खाइत-पिऐत एक फेरा लगबैत तीन बजि गेल। बिआहक प्रकरण तँ रातिमे हएत मुदा बिआह होइक कारण तँ धनुष टुटब अछि। तँए पहिने धनुखा जेनाइ उचित हएत। घुमैत-फिरैत एकठाम बैस सभ विचारए लगलौं। बिआह प्रकरण देखए एलौं अखन धरि बरियातियो पछुआएले अछि। पछुलके धरमशल्लामे अँटकल अछि। ऐठाम अबैमे चारि-पाँच घन्टा लगत। से नहि, तँ अपनो सभ ताबे धनुखासँ भऽ आबी। एक स्वरमे विचार भेल। बसक भाँजमे विदा भेलौं। सभ आगू-आगू, हम आ दादी सबहक पाछू-पाछू। यात्रीकेँ देखबैत दादी बजली-

"बौआ, तूँ ने अखन तक दोसर कोनो स्थान नै गेल छह, मुदा हम तँ बहुत ने देखने छी।"

एते बात सुनिते मनमे भेल जे दादी कोनो ठेकनगर बात कहए चाहै छैथ। हुँहकारी दैत कहलयैन-

"हँ से तँ ठीके। अखन हमरा भेबे की कएल, जनैम कऽ ठाढ़ भेलौं हेन।"

आगू दादी बजली-

"देखहक ई स्थान भगवान राम आ सीताक छिऐन। अयोध्यावासी राम आ मिथिलाक जनकक कन्या सीता दुनूक मिलन स्थल छी। तँए देखै छहक जे सभ रंगक यात्रियो अछि, स्त्रीगण-पुरुखमे बेरौल हेतह जे पुरुख बेसी अछि आकि स्त्रीगण। तहिना देखै छहक जे सभ रंगक मुँह-कानबला यात्री अछि। केकरो मान-अपमानक बात अछि। मुदा आन-आन स्थानमे से कहाँ देखबहक। जहिना एकचलिया लोक तहिना एकचलिया चालि।"

मैक्सीपर बैस सभ-कियो धनुखा विदा भेलौं। घन्टा भरि लगैत-लगैत धनुखा पहुँचलौं। गाड़ीक ड्राइवर आ खलासी उतैर देखबए विदा भेल। मन्दिरक हाताक भीतर पहुँचते ड्राइवर बाजल-

"भगवान राम जे धनुष तोड़लैन ओ तीन टुकड़ी भऽ गेल। एक टुकड़ी एतै खसल। सएह स्थान छी। देखै छिऐ, धनुषेक टुकड़ी छिऐ किने!"

दर्शन केलौं। सबहक विचार भेल जे बिना किछु खेने-पीने आ सनेस नेने केना जाएब। हमहूँ चाह पीब पान खेलौं आ हनुमानी-बद्धी कीनि कऽ गरदैनमे पहिर लेलौं। किरिन डुबि गेल। मुदा केकरो औगताइ नहि। किएक तँ घन्टे भरि

जाइमे लगत आ आठ बजेमे बरियाती दुआर लगता।

गाड़ी चलल। करीब चारि माइल आगू बढ़ल आकि अपने ठाढ़ भऽ गेल। पंचमीक चान, ओसेसँ घेराएल। झल-अन्हार। गाम-घर केतौ नै देखिऐ। बीच पाँतरमे गाड़ी रूकल। ड्राइवरो आ खलासियो रिंच-हथौरी निकालि ठोक-ठाक शुरू केलक। हमहूँ सभ गाड़ीसँ उतैर देखए लगलिऐ। केतबो ठोकि-ठाकि ड्राइवर गाड़ीमे बैस चलबए चाहै, मुदा चलबे ने करइ। फेर उतैर कऽ ठोकै मुदा फेर ओहिना होइ। समए बीतल जाए। मोबाइल देख ड्राइवर बाजल-

"आठ बजल!"

दुआर लगैक समए बुझि सुचितादादी बजली-

"केतए एलौं तँ केतौ नहि?"

मन हुअए जे कहिऐ- 'पाइ घुमा दएह।' दोसर गाड़ीसँ चलि जाएब।' इजोरियो डुबि गेल। दिसम्बरक अन्तिम समए तँए जाड़ो बढ़ैत गेल। मुदा सभकेँ ओढ़ना रहबे करै, ओढ़ि लेलौं। होइत-हबाइत भोरमे गाड़ी ठीक भेल। घुमि कऽ जनकपुर एलौं। ताबे बिआहक सभ प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल छल। रौतुका जगरनासँ यात्रियो सभ ओंघाएल। हमहूँ सभ तहिना रही।

यात्री सभ ट्रेन पकैड़ घुमए लगला। हमहूँ सभ नहा कऽ एकबेर सौंसे मेला घुमि, डोरि-सिनुर आ सनेस कीनि आबि, खेनाइ खेलौं आ गाड़ी पकड़ैले विदा भेलौं। भरि बाट दादी रटैत रहली-

"केतए एलौं तँ केतौ नहि! केतए एलौं तँ केतौ नहि! केतए एलौं तँ केतौ नहि!"

❍

शब्द संख्या : 1203

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

`251

ISBN : 978-93-87675-15-5